CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रजिस्टर्ड नं० ए० २०८२

३१

* श्री हरिः *

गौड़ महासभा पत्रिका

अखिल भारतवर्षीय गौड़ ब्राह्मण महासभा की

मासिक मुखपत्रिका।

वर्ष १} मुरादाबाद—नवम्बर, दिसम्बर सन् ३०ई० {सं० ५,६

सर्वेषां प्राणिनः श्रेष्ठाः प्राणिनां बुद्धिजीविनः।
बुद्धिमन्सु नराः श्रेष्ठाः नरेषु ब्राह्मणाः स्मृताः॥ मनु०॥

सम्पादक और प्रकाशक—

पं० प्यारेलाल गौड़ 'हिन्दीरत्न'

मन्त्री, अखिल भारतवर्षीय गौड़ ब्राह्मण महासभा

मुरादाबाद।

वार्षिक मूल्य २) रुपया | एक प्रति का मूल्य तीन आने | महासभाके सभासदों को विना मूल्य

अखिल भारतवर्षीय गौड़ ब्राह्मण महासभा कार्य्यालय—मुरादाबाद से प्रकाशित

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गौड़ महासभा पत्रिका के नियम।

(१) यह पत्रिका "अ० भा० गौड़ ब्राह्मण महासभा" की मासिक मुख पत्रिका है। इस लिये यह सदैव उक्त महासभा कार्य्यालय से प्रति अङ्गरेज़ी मास की अन्तिम तारीख को प्रकाशित हुआ करेगी।

(२) इस पत्र में केवल गौड़ ब्राह्मण जाति के हित के अतिरिक्त और कोई लेख स्थान नहीं पावेंगे।

(३) नमूने को पाकर जो सज्जन अस्वीकारी की सूचना न देंगे वे ग्राहक समझे जावेंगे और दूसरा अङ्क उनकी सेवामें एकवर्ष के मूल्य के वी० पी० में पहुँचेगा

(४) "पत्रिका" का वार्षिक मूल्य २) रु० है जो सब ग्राहकों से पेशगी लिया जावेगा।

(५) महासभा के वे सभासद जो अपना वार्षिक सदस्य शुल्क ६) रु० भेज चुके हैं उनको यह पत्रिका उस समय तक बिना मूल्य मिलेगी कि जब तक के लिये वे महासभा के सभासद हैं।

(६) जो ग्राहक और महासभा के सभासद अपना पता बदलवाना चाहें उनको पता बदलवाने के पत्र में अपना पुराना और नया पता स्पष्ट लिखना चाहिये।

(७) यदि किसी सज्जनके पास किसी मास की "पत्रिका" दूसरे मासके पहिले सप्ताह में न पहुँचे तो उनको तुरन्त अपने यहां के डाकखाने में पूछना चाहिये और जो उत्तर उनको पोस्टआफ़िस से मिले उसको कार्य्यालय को भेजना चाहिये। तो उनको उस अङ्क की दूसरी प्रति बिना मूल्य पोस्टिंग सार्टिफिकट पर भेजी जावेगी।

(८) गौड़ ब्राह्मण जातिके विवाह योग्य लड़के और लड़कियों के पते पत्रिका में निःशुल्क छाप दिये जावेंगे।

(९) लेख, सूचनाएँ, बदलेके समाचार पत्र, पत्रिका का मूल्य आदि पत्रिका संबंधी समस्त बातें "सम्पादक "गौड़ महासभापत्रिका" अखिल भारतवर्षीय गौड़ ब्राह्मण महासभा कार्य्यालय—मुरादाबाद" के पते से आनी चाहियें।

(१०) लेखों के छापने अथवा न छापने, घटा बढ़ा कर छापने, लौटाने या न लौटाने का पूर्ण अधिकार सम्पादक पत्रिका को है।

(११) सम्वाददाता तथा पत्र प्रेरक सज्जन अपने लेख और समाचारों के स्वयं उत्तर दाता होंगे।

(१२) विज्ञापनकी छपाई और क्रोड़ पत्र बटाई सम्पादक से पूछ कर तै होगी।

(१३) सब प्रकार के पत्र व्यवहार का पता:——

पं० प्यारेलाल गौड़ 'हिन्दीरत्न'
सम्पादक और मन्त्री—
अ०भा० गौड़ ब्राह्मण महासभा
मुरादाबाद (यू० पी०)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2 .

श्री गणेशाय नमः

❀गौड़ महासभा पत्रिका❀

अखिल भारतवर्षीय गौड़ ब्राह्मण महासभा की मुख पत्रिका

वर्ष १ | मुरादाबाद—नवम्बर, दिसम्बर सन् ३० ई० | संख्या ५,६

ईश्वर—प्रार्थना ।

नीलाम्बुजश्यामलकोमलांगं सीतासमारोपितवामभागम् ।
पाणौ महासायकचारुचापं नमामि रामं रघुवंशनाथम् ॥

(२)

मूकं करोति वाचालं पंगुं लंघयते गिरिम् ।
यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्द माधवम् ॥

(३)

जे चरण शिव, अज, पूज्य रज शुभ परसि मुनि पतनी तरी ।
नख निर्गता मुरवंदिता त्रैलोक्य पावनि सुर सरी ॥
ध्वज कुलिश अंकुश कंज युत वन फिरत कंटक जिन लहे ।
पद कंज द्वंद्व मुकुन्द राम रमेश नित्य नमामहे ॥

(४)

गिरि को उठाय व्रज गोपों को बचाय लीन्हों, अग्नि ते उबारे पांडु बालक मंजारी को ।
गज की अरज सुन ग्राह ते छुटायो शीघ्र, राख्यौ व्रत नेम धर्म्म पांडव की नारी को ॥
राख्यौ गज घंटा तले बालक विहंगम को, राख्यौ प्रण भारत में भीष्म ब्रह्मचारी को ।
त्रिविधि तापहारी, निज सन्तन सुखकारी, है मोहि तो भरोसो वाही साँवरे बिहारी को ॥

(५)

पाई न गति केहि पतित पावन राम भजु सुन शठ मना ।
गणिका, अजामिल, गृध्र, व्याध गजादि खल तारेउ घना ॥
आभीर, यवन किरात खल श्वपचादि अति अघ रूप जे ।
कहि नाम बारक तेऽपि पावन होत राम नमामि ते ॥

———

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महासभा का ३३ वां वार्षिकोत्सव !

श्रीकृष्णचन्द्र,-आनन्दकन्द की असीम कृपा से "अखिल भारतवर्षीय गौड़ ब्राह्मण महासभा" का ३३ वां वार्षिकोत्सव गत ता० २७ और २८ दिसम्बर सन् ३० ई० को रुहेलखंड कमिश्नरी के प्रधान स्थान बरेली नगर में सानन्द, निर्विघ्न सम्पन्न हुआ।

गत १ अगस्त सन् ३० को कि जिस दिन महासभा कार्य्यालय मुरादाबाद में बरेली के ५ प्रतिष्ठित भूदेवों के हस्ताक्षर से "महासभा का ३३ वां वार्षिकोत्सव" बरेली नगर में किये जाने का निमन्त्रण पहुंचा था उस दिन महासभा के संचालक फूलेअंग न समाये थे, कारण कि बरेली यद्यपि कमिश्नरी और एक बड़ा शहर है, तथापि वहां गौड़ ब्राह्मणों की संख्या बहुत ही थोड़ी है, ऐसे स्थान से कि जहां गौड भाई उंगली पर गिने जाने योग्य संख्या में बसते हों वे अखिल भारत वर्षीय गौड़ ब्राह्मण महासभा को निमंत्रित करें यह कम साहस प्रशंसा और हर्ष की बात नहीं परन्तु वे पाँच प्रभाव शाली नाम ऐसे थे कि यदि केवल वेही पांचों वार्षिकोत्सव का प्रबन्ध करते तो महासभा का यह वार्षिकोत्सव गौड़ जाति के इतिहास में सुवर्ण अक्षरों से लिखे जाने की समता रखता। लेकिन खेद है कि उन पांच में से केवल दो ही सज्जन स्वागत समिति में उत्साह पूर्वक काम करते नज़र आये।

जो दो श्रीमान् स्वागत समिति का पूरा भार अपने ऊपर उठाये हुए थे उनमें एक तो स्वागताध्यक्ष परम उदार शान्ति की प्रत्यक्ष मूर्ति, गम्भीर विचारोंके भंडार श्रीमान् पं० चतुर्भुजजी शर्मा अध्यक्ष श्री शंकर फ्लोर एण्ड राइस मिल्स-शाहामत गञ्ज वाले और दूसरे कीर्त्तन कलानिधि, श्री० पं० राधेश्यामजी कथावाचक कविरत्न जिन के नाम को आज साधारण पढ़ा लिखा भी उनकी रामायण के कारण जानता है, थे।

स्वागत के प्रबन्ध में स्वागत मन्त्री का पूरा हाथ रहता है परन्तु जहां स्वागताध्यक्ष साक्षात् चतुर्भुज (चार भुजा वाले) हों वहां किसी दूसरे की क्या जरूरत। वही बात इस महोत्सव में दिखलाई पड़ती थी। जिस समय महासभा के वार्षिकोत्सव का विचार श्रीमान् पं० चतुर्भुज जी महाराज के कानों में पहुँचा, पहिला शब्द उनका यह था कि जितने भाई बाहर से पधारें उन सब के भोजन का प्रबन्ध मैं करूँगा। कितने बड़े प्रेम और कितने ऊँचे सेवा भाव का ज्वलन्त प्रमाण था। जहां आज कल के समय में घर पर एक मिहमान की खातिरदारी एक समय करने में गृहपति और गृहलक्ष्मी में अनबन हो जाती है, जहां आज कल विवाह से महीनों

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पहिले बरातियों का संख्या निश्चय होने में दोनों पक्ष से बड़ा भारी पत्र व्यवहार चलता है और जब तक दोनों समधी बरात की संख्या पर सन्तुष्ट नहीं होजाते तब तक और बातें निश्चय ही नहीं होती तो ऐसे समय में समस्त भारतवर्ष के गौड़ भाइयों को निमंत्रण देकर बुलाना और बिना इस बात के अनुमान किये कि महासभा में न मालूम बाहर से हजार आदमी आजावें या दो हजार आदमी आजावें इस बात की प्रतिज्ञा करना कि जितने भाई आवेंगे उन सबको भोजन मैं समर्पण करूँगा कम हिम्मत की बात नहीं। परन्तु जिन भाइयों को उक्त श्रीमान् पंडितजी से पूर्व परिचय है या जिन्हों ने इस महोत्सव में उनके दर्शन किये हैं वे अवश्य मेरे इस लेख का समर्थन करेंगे कि वास्तव में श्री० पं० चतुर्भुजजी महाराज बड़े ही उदार, प्रेमी और सच्चे जाति सेवी निकले। उनका ध्यान केवल दो दिन ता० २७ और २८ दिसम्बर कि जो महोत्सव की तारीखें थीं, के प्रबन्ध करने का था मगर ता० २६। १२। ३० को मैनेजिंग कमेटी और प्रतिनिधि समिति के भी बृहद् अधिवेशन थे इस लिये प्रतिनिधियों का आना ता० २५। १२। ३० से ही प्रारम्भ होगया था और उधर महासभा का कार्य्य ता० २७ और २८ दो दिन में समाप्त न हुआ वह ता० २९ को और हुआ अतः बजाय दो दिनके ४ दिन तक भोजन का सर्वोत्तम प्रबन्ध रहा जिसका एक मात्र कारण श्रीमान् पं० चतुर्भुजजी महाराज का चार भुजाओं से सेवा करना था। हमारे प्रेमी पाठक चार भुजा के वाक्य को हंसी, मज़ाक या अत्युक्ति (मुबालग़ा) समझेंगे। मगर मान्यवरो! यह बात नहीं हमने श्रीमान् पं० चतुर्भुजजी महाराज को चार भुजा का इस कारण लिखा कि उनके सहोदर छोटे भाई श्रीमान् पं० हरकरणलालजी स्वागत समिति के कोई पदाधिकारी न होते हुए अपने ज्येष्ठ सहोदर भ्राता में तन्मय होकर ऐसा सुन्दर प्रबन्ध कर रहे थे कि सब लोगों को यही विदित होता था कि श्री० पं० चतुर्भुज जी महाराज के इस समय चार हाथ होगये हैं कि जिनसे वह इस प्रकार शीघ्रता से सब प्रबन्धों को जुटा रहे हैं। इस लिये दोनों सहोदर भाइयों के दो दो हाथों को मिला कर श्री० पं० चतुर्भुजजी महाराज को चार हाथ वाला कहना कोई अत्युक्ति (मुबालग़ा) नहीं है।

इस बड़े इन्तिज़ाम के अलावा बाकी सब प्रबन्ध श्रीमान् कविरत्न पं० राधेश्यामजी कथावाचक स्वागत मंत्री जी का था। लेकिन योगीराज भगवान्कृष्ण ने अपने नाम 'राधेश्याम' की लाज रखने के लिये इस काम में इनको भी चतुर्भुज बनाया। क्यों कि सर्वान्तरयामी प्रभु घट घट की जानने वाले भगवान् से कोई बात छिपी नहीं है जिस समय ता० १७।१०।३० को बरेली के समस्त भाइयों की सर्वसम्मति से स्वागत समिति' का निर्वाचन एवं संगठन हुआ और उसमें श्री०कविरत्नजी स्वा० मंत्री बनाये गये तो उनकी सहायता को उपमंत्री भी राधेश्याम हीको बनाया मगर यह कथावाचक न थे बल्कि 'पाठक' थे। अतः स्वा० स० के स्वागत मंत्री पं०राधेश्याम जी कथावाचक और स्वागत उप-मन्त्री पं० राधेश्याम पाठक, क्या सुन्दर निर्वाचन हुआ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कि मज़ा आगया। स्वागत समिति रूपी भारी गाड़ी को इन दो वीरों ने बिल्कुल परिश्रम से खींच कर बिहारीपुर और ब्राह्मणपुरी से ई० आई० एम० हाई स्कूल शहामतगंज तक जो २ मीलके लगभग होगा ऐसी सुन्दरतासे पहुँचाया कि विरोधी दल भौचक रह गया। हम इन दोनों भाइयों के प्रेम, साहस और सेवा भाव को किन शब्दों में लिखें यह समझ में नहीं आता। मगर परमात्मा का हज़ार २ धन्यवाद कि इन दोनों को पूर्ण बल दिया।

महासभा के वार्षिकोत्सव की सफलता की चिन्ता जितनी स्वागत समिति को होती है उतनी ही, बल्कि किन्ही अंशों में उससे अधिक महासभा के महामंत्री को भी होती है मुझे खूब याद है कि स्वनाम धन्य स्वर्गीय श्रीमान् पं० रामचन्द्रजी बी० ए० जगाधरी निवासी जब तक वह महामंत्री रहे वार्षिकोत्सवों पर ४।४, ६।६ दिन पहिले जगाधरी से चल कर वार्षिकोत्सव वाले नगर में पहुँच जाते थे और स्वागत समिति के प्रबन्ध में पूरी सहायता देते थे। वही दृश्य इस वर्ष देखने में आया। जाति के कर्णधार नेता श्रीमान् मिश्र वंश उजागर, रायबहादुर पंडित बनारसीप्रसाद जी मिश्र बी० ए० एडवोकेट—मुरादाबाद कि जो महामंत्री न होते हुए भी गत १ वर्ष से महासभा का कार्य महामंत्री पद से भी अधिक जिम्मेदारी के साथ कर रहे थे, नवम्बर मास से ही वार्षिकोत्सव के लिये चिन्तित दिखाई पड़ रहे थे। बरेली के नित्य के आये हुए समाचारों से उनकी चिन्ता अहर्निश बढ़ती जाती थी। वहां की परिस्थिति देखने के लिये २। ३ बार उन्हों ने मुझे बरेली भेजा, अन्त को ता० २१। १२। ३० को मिश्र जी महाराज स्वयं पधारे तो जो उनका अनुमान था वही सामने नज़र आया कि उस दिनसे केवल ६ दिन तो वार्षिकोत्सव के बाकी रहगये थे और इस बात का निर्णय नहीं होपाया था कि वार्षिकोत्सव किस स्थान पर हो। बरेली की परिस्थिति को देखते हुए स्वागत मंत्रीजी सभामंडप और प्रतिनिधियों के ठहरने का इन्तिजाम स्वागताध्यक्षजी की "श्रीशंकर फ्लोर मिल" में रखना चाहते थे, परन्तु स्वागताध्यक्षजी वहां स्थान पर्याप्त न होनेके कारण ई०आई० एम० हाई स्कूल जो "मिल" के पास शहामत गञ्ज ही में था करना चाहते थे। मिश्र जी महाराज ने पहुँचते ही दोनों सज्जनों के विचारों को सुनकर स्वागत मंत्री जी को ई० आई० एम० हाईस्कूल में वार्षिकोत्सव मनाने की सम्मति दी, अतः महासभा के वार्षिकोत्सव का किया जाना उक्त हाई स्कूल ही में निश्चित रहा।

निदान श्रीमान् मिश्रजी महाराज २२ और २३ दिसम्बर दो दिन कचहरी का काम निबटा ता० २४। १२। ३० को मय नौकर चाकर और उपदेशकों, क्लर्क तथा समस्त महासभा कार्य्यालय को लेकर बरेली पहुँचगये और उसी समय से सब कार्यों को अपनी देखरेख में कराने लगे।

बजाय शामियाने के नीचे महोत्सव किये जाने के पिंडाल बनाने की सम्मति

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

होचुकी थी और पिंडाल बनाने का ठेका भी दिया जा चुका था। दरियां, फर्श, कालीन आदि आरियतन आगये थे। तत्व यह कि थोड़ा बहुत कार्य्य प्रारम्भ था। मिश्र जी महाराज ने पहुंचते ही तम्बू, डेरे, कनात और शामियानों का मंगवाना उचित समझा और जो जो आवश्यकीय प्रबन्ध थे वह प्रारम्भ किये और ता० २५। १२। ३० में सब प्रबन्ध हो गये। और उसी शाम से प्रतिनिधियों का आना प्रारम्भ होगया जो निरन्तर २५ की रात्रि, २६ के दिन और २६ की रात्रि तथा २७ को दिन-भर आते रहे। इस वर्ष प्रतिनिधि गण भारत के सभी कोनों और प्रांतों से पधारे यद्यपि वे संख्या में २०० के लगभग थे मगर वह उत्तर में काशमीर से दक्षिण में सागर (सी० पी०) तक और पूर्व में बंगाल से पश्चिम में राजपूताने के अन्तिम सिरे तक से पधारे थे। यदि इस उत्सव में बरेली निवासी गौड़ भाइयों की हठ न होती तो यह वार्षिकोत्सव गौड़ महासभा के जीवन में एक नई स्फूर्ति उत्पन्न करता।

ता० २६। १२। ३० को मध्याह्न में मैनेजिङ्ग कमेटी महासभा का अधिवेशन तथा सायंकाल को प्रतिनिधि समिति का अधिवेशन. पूर्व सूचनानुसार सानन्द सम्पन्न हुआ कि जिनके विवरण आप लोग अन्यत्र इसी अङ्क में पढ़ेंगे।

ता० २७। १२। ३० महोत्सव का प्रथम दिवस था आज ही प्रातःकाल ब्रह्म मुहूर्त में महासभा के मनोनीत सभापति, गौड़ वंश के सूर्य, राजपूताना की गौड़ जाति के परम आदरणीय नेता, श्रीमान् धर्मभूषण पं० गोविन्दप्रसाद जी कौशिक बी० ए०, एच० एल० एस०, महाराजा सिरोही के अटेची ब्यावर निवासी मय अपने लघु सहोदर भ्राता श्री० पं० उपेन्द्रनाथ जी कौशिक-रईस और म्यूनिस्पेल कमिश्नर ब्यावर (अजमेर) के, आगरा-बरेली ई० आई० आर० ट्रेन से बरेली पधारे। श्रीमान् कौशिक जी जैसे उच्च विचार, आदर्श चरित्र और गुणों के पुंज हैं वह आप लोगों को केवल इसी दृश्य से पता चल जायगा कि कौशिक जी बरेली स्टेशन पर अपना स्वागत करवाना नहीं चाहते थे। इसी कारण शिशिर के भयंकर शीतमें आपने बरेली पहुंचने का वह कठिन समय निर्धारित किया कि जिस में प्रयत्न करने पर भी स्वागत समिति के महानुभाव न पहुंच सकें। आगरे से बरेली E. I- R. और R. K. R की दो ट्रेन आया करती हैं उनका विचार दूसरी ट्रेन से आने का था परन्तु पहिली ट्रेन से ही आगये। प्रेमका स्रोत निराला ही होता है। स्वागत समिति के संचालकों को चैन कहां। दूसरे ताड़ने वाले भी ग़ज़ब के होते हैं रात को जो कौशिकजी ने आगरेमें सोचा था वही बरेलीकी स्वागत समितिने बरेलीमें भी सोचा कि कहीं ऐसा नहो कि आर०के०आर० ट्रेनका समय देकर ई०आई०आर० ट्रेनसे आजावें क्यों कि दोनों आगरे से सीधी बरेली आती हैं, इस लिये श्रीमान् पं० राधेश्याम जी पाठक, स्वागत उपमंत्री जी की ड्यूटी तो पहिली ट्रेन ई० आई० आर० पर निश्चित हुई और पं० राधेश्याम कथावाचक स्वागत मंत्री जी की ड्यूटी दूसरी ट्रेन

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आर० के० आर० पर हुई कि जिस के लिये तार था । सभापति जी पहिली ट्रेन ई० आई० आर० से प्रातःकाल ५ बजे बरेली स्टेशन पर उतरे, उतरते ही श्री० पं० राधेश्याम जी पाठक स्वागत उप-मंत्री जी ने सभापति जी के गले में पुष्प हार पहिनाया और दो घोड़े की गाड़ी में बिठाकर श्रीमान् स्वागताध्यक्ष जी के निवास स्थान पर पहुंचाया ।

आज महोत्सव के प्रारम्भ होने का समय मध्याह्न के १२ बजे से था परन्तु नगर निवासी गौड़ भाई १० बजे से ही पधारने शुरू होगये और १२बजे तक सभामंडप पूर्ण होगया । प्रतिनिधियों और दर्शकों के बैठने के लिये कुर्सियों का प्रबन्ध था बीच में सभापति जी के विराजने को मंच बनाया गया था जिस पर तीन कुर्सियाँ और आगे मेज़ लगाई गई थीं । ठीक मध्याह्नोत्तर १ बजे अंग्रेजी बाजे और जुलूस के साथ जोड़ी गाड़ी में श्रीमान् सभापति जी का सभा मंडप में पदार्पण हुआ उसी में महासभा के उस समय तक के सभापति श्रीमान् श्रद्धेय पूज्य पं० ऋषिराम जी महाराज लाहौर निवासी स्वागताध्यक्ष श्रीमान् पं० चतुर्भुज जी महाराज और माननीय गौड़कुल भूषण श्रीमान् पं० प्रभुदयाल जी बी० ए० एडवोकेट—आगरा थे । उपस्थित विप्र मंडली ने खड़े होकर अपने इन आदरणीय नेताओं का अभिवादन किया और सर्व श्रेष्ठ सिंहासन पर विराजमान कर अलौकिक सुख प्राप्त किया ।

सभापति जी, स्वागताध्यक्ष और भूतपूर्व सभापति श्री० पं० ऋषिराम जी महाराज के विराजते ही मंत्री महासभा ने आज का कार्य्य विवरण श्रीमान् सभापति जी के सम्मुख उपस्थित किया कि जिसके अनुसार वार्षिकोत्सव का कार्य प्रारम्भ हुआ । सब से प्रथम विद्वान् शास्त्री महानुभावों ने रुद्री और वेदपाठ की सुमधुर ऋचाओं से परमात्मा का स्मर्ण किया और मंगलाचरण स्वरूप गणपति स्तुति आदि प्रारम्भिक कार्य्य सम्पन्न हुए ।

तदनन्तर महासभा के प्राण श्रीमान् रायसहिब पं० प्रभुदयालजी शर्म्मा बी०ए० एल० एल० बी०, ई० ए० सी० होशियारपुर ने सूचित किया कि जिन श्रीमान् कौशिक जी को बरेली की बिरादरी ने सभापति निर्वाचित करके बुलाया है वे हमारे सौभाग्य से और परमात्मा की अपार कृपा से आपहुँचे हैं अतः हम सब आप लोग उन से प्रार्थना करते हैं कि अब वह सभापति के उत्तरदायित्व पद को सम्हालें और कार्य प्रारम्भ करें श्रीमान् राय साहिब के इस प्रस्ताव का अनुमोदन पटियाला निवासी परम जाति हितैषी, पटियालास्टेट के एकाउन्टेन्ट जनरेल ओफिस के एग्ज़ामिनर साहिब गौड़ कुल भूषण श्री० पं० आत्मारामजी महाराज ने किया जिस पर कौशिक जी ने एक मिनट में सबको धन्यवाद देते हुए इन शब्दों को अपने मुखारविंद से उच्चारण करते हुए कि 'भूदेवो, भाइयो, बांह गहे की लाज रखना" विराज कर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कार्य क्रम की बागडोर हाथ में ली और स्वागताध्यक्षजी से प्रार्थना की कि "श्रीमन्! आप अपना वक्तव्य प्रारम्भ कीजिये"

सभापतिजी की आज्ञा शिरोधार्य्य कर स्वागताध्यक्ष श्री० पं० चतुर्भुजजी महाराज ने अपना लिखित भाषण सुमधुर शैली से पढ़ना प्रारम्भ किया जो बड़े ही सेवा भावों से परि पूर्ण था और जो रिपोर्ट में यथा तथ्य प्रकाशित किया गया है "रिपार्ट बरेली" शीघ्र ही प्रकाशित होने वाली है।

इसके अनन्तर श्रीमान् सभापतिजी महाराज ने अपना वक्तव्य प्रारम्भ किया कि जो सभापतिजी ने बम्बई से आबू रोड और आबू रोड से आगरा और आगरे से बरेली के रास्ते में पैंसिल से ट्रेन में लिखा था और अनेकों जगह सुधारा हुआ था। मगर वह भाषण था कि ग़ज़ब का उपदेश था। समस्त उपस्थित जन समुदायको चकित होना पड़ा कि आज तक हमने ऐसा भाषण सुना ही नहीं समस्त भूदेवों को यह मानना पड़ा कि सभापति जी का भाषण अपूर्व, अलौकिक और चमत्कारी है। एक स्वर से मुक्त कंठ से सभी ने प्रशंसा की। उस जन समूह में कि जिस में भिन्न २ ख्यालों के महानुभाव विराजमान थे एक भी तो ऐसा व्यक्ति नहीं था कि जिसे सभापतिजी का भाषण सुनकर प्रसन्नता न हुई हो। सब के चेहरों पर अत्यन्त उत्साह प्रेम और श्रद्धा थी सब लोग वाहवाह के शब्द उच्चारण कर रहे थे और ऐसा अद्भुत आनन्द ले रहे थे कि जिसका वर्णन करना लेखनी की शक्ति से बाहर है। हमारा विचार था कि हम उस भाषण को पत्रिका के द्वारा आप लोगों की भेंट करें, परन्तु वह इतना बड़ा है कि पत्रिका के सम्पूर्ण पृष्ठ उसी से पूरे होजावेंगे और बाकी हालात जो हम को संक्षेप में आपके सन्मुख निवेदन करने है रह जावेंगे कि जिससे पत्रिका का ढंग ही बिगड़ जावेगा। इस लिये पाठक गण! क्षमा करेंगे, वह श्रीमान् सभापति जी का भाषण अक्षरशः महासभा की रिपार्ट में छपने के वास्ते सम्मिलित कर दिया है जो शीघ्र ही प्रकाशित होकर आप की सेवा में पहुँचेगा। सभापति जी का भाषण पूरे एक घंटे में समाप्त हुआ। पढ़ने की शैली ऐसी ओजस्वी थी कि समस्त पिण्डाल में सन्नाटा छाया हुआ था और सब लोग इकटक ध्यान लगाये हुए उस अमृत रस को गटा गट पीरहे थे।

श्री० सभापति जी के भाषण समाप्त होते ही मंत्री महासभा ने बाहर से आये हुये सहानुभूति के तार और पत्र सुनाने की आज्ञा मांगी कि इसी समय श्रीमान् स्वागत मंत्री श्री० पं० राधेश्यामजी महाराज कथावाचक के सुयोग्य पुत्र श्री० पं० घनश्यामजी शर्म्मा इकाइक शहर से अभिनन्दन पत्र लिये हुये आपहुँचे। अतः स्वागत मंत्रीजी ने स्वनिर्मित "अभिनन्दन पत्र" जो सुमधुर कविता में लालित्य से भरा हुआ और सेवा भाव से ओतप्रोत था बड़े मधुर स्वर से गान किया जिसको सुनकर श्रोताओं के हृदय प्रेम से गद्गद् होगये, पढ़ने के बाद कांच में जड़ा हुआ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अभिनन्दन पत्र श्रीमान् सभापति जी को भेंट किया गया और साधारण परन्तु अत्यन्त सुन्दर पतले कागज़ पर छपे हुए अभिनन्दन पत्र सभा मंडप में बांट दिये गये। अभिनन्दन पत्र की कविता रिपोर्ट में आप लोग देख कर प्रसन्न होंगे।

इसके बाद सहानुभूति के तार और पत्र सुनाये गये। जिन से लोगों को पता चला कि हमारी इस जातीय महासभा का विस्तार भारत से बाहर पोर्चुगीज़ राज्य तक में बसने वाले गौड़ भाइयों के पास तक पहुँच गया है क्यों कि सहानुभूति के तार और पत्रों में भारत से बाहर गोआ टापू तक से अपने भाइयों ने सहानुभूति भेजी थी और महासभा की सफलता पर प्रसन्नता प्रगट की थी।

इसके बाद 'मंत्री महासभा' ने महासभा का वार्षिक विवरण सुनाया जो फुलिसकेप साइजके बीस पेजोंमें लिखा हुआ था और जिसके साथ हिसाब किताब के कई गोशवारे थे। रिपोर्ट के सुनने से पता चला कि इस साल केवल ८ महीनों में इतना अधिक काम हुआ है कि उतना गत ३२ वर्षों में किसी वर्षमें नहीं हुआ। सबसे आश्चर्य जनक बात जो लोगों ने सुनी वह था "महासभा के सभासदों का सदस्य शुल्क" जो पिछले वर्षों में कभी १००) रु० से अधिक वसूल नहीं होता था इस वर्ष १०००) रु० वसूल हुआ और उस दशा में जब कि देशकी हालत बड़ी ही नाजुक रही। छात्र वृत्ति कभी १०००) रु० वार्षिक से अधिक नहीं दी गई मगर इस वर्ष १५००) रु० की छात्र वृत्तियाँ महासभा ने दी। कभी २। ३ उपदेशकों से अधिक उपदेशक नहीं रक्खे गये, मगर इस वर्ष ८ उपदेशकों ने प्रचार कार्य्य किया। सन् १९२८ में जब पत्रिका के लिये ३०) मासिकका सम्पादक रक्खा गया और पूरे साल भर तक पत्रिका प्रकाशित भीहुई तब पत्रिकाके ग्राहकोंसे केवल २०)वसूल हुए इस साल जब कोई वैतनिक सम्पादक नहीं केवल ३ अङ्क पत्रिका के प्रकाशित हुये किसी ग्राहक से न तो मूल्य माँगा गया और न वी० पी० ही भेजे गये। उस दशा में पत्रिका की उपयोगिता देख कर ५५ ग्राहकों ने अपने आप सहर्ष ११०) रु० भेजे यह भी कम प्रसन्नता की बात नहीं। सब से विशेष आनन्द पैदा करने वाली जो बात थी वह यह थी कि तारीख १९ अप्रैल सन् ३० को जब महा सभा कार्य्यालय मुरादाबाद आया तो उस समय महासभा के कोष में एक कौड़ी भी धन न था बल्कि ५३॥=) महासभा को कोषाध्यक्ष जी के देने थे ऐसी दशा में १९ अप्रैल सन् ३० से ३१ दिसम्बर सन् ३० तक ८ मास और १० दिन में ४७५१।-)। की आमदनी हुई और ३९९५।)। का खर्च हुआ और ७५९-) वर्षकी समाप्ति पर महासभाके कोषमें जमा रहे। इन सब कार्यों को श्रवण कर समस्त उपस्थित समुदाय ने बड़ा हर्ष प्रगट किया और सभापतिजीके यह पूछने पर कि इस रिपोर्ट में किसी को एतराज़ तो नहीं है सब सज्जन चुप रहे। बाद को यह पूछने पर कि यह रिपोर्ट पास की जावे सब भाइयों ने उच्च स्वर से "पास की जावे" की ध्वनि दी। निदान सर्व सम्मिति से महासभा का सन् १९३० का हिसाब

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और विवरण पास हुआ। उसी समय श्रीमान् रायबहादुर पं० बनारसीप्रसादजी मिश्र बी० ए० सं० महामंत्रीजी ने खड़े होकर समस्त उपस्थित समुदाय को सम्बोधन कर कहा कि इस रिपोर्ट में एक बात बेकार लिखी गई है और एक बात जरूरी छोड़ दी गई है और वह यह है कि जहां इस रिपोर्ट में मेरा जिक्र आया है वह फिजूल है और इस रिपोर्ट में हिन्दी रत्न पं० प्यारेलालजी गौड़-मंत्री महोदय कि जिन्होंने गत ८ महीने निरन्तर प्रातः काल ४ बजे से रात के ८ बजे तक बड़े प्रेम, परिश्रम और मन लगा कर काम किया है उनकी बाबत एक अक्षर नहीं है जिसका कारण यही है कि यही रिपोर्ट के लिखने वाले हैं और वही इसको सुनाने वाले हैं। इस लिये मैं आप लोगों को यह बतला देना चाहता हूँ कि इस वर्ष के कार्य्य का पूरा श्रेय श्री० पं० प्यारेलालजी गौड़ मन्त्री महोदय को प्राप्त है।

पाठकों को मैं यह स्पष्ट बतला देना चाहता हूँ कि श्रीमान् मिश्रजी महाराज की यह योग्यता ही का नमूना है जो उन्हों ने मुझे इस प्रेम से सम्बोधन किया और वास्तव में उनकी कृपाओं ने ही महासभा का इतना अत्यधिक कार्य्य मुझसे कराया। अन्यथा मेरा रोगी और जर्जर निर्बल शरीर इतना परिश्रम करने के योग्य ही न था। अतः मैं श्रीमान् रायबहादुर पं० बनारसीप्रसादजी मिश्र सं० महामन्त्री जी को जितना धन्यवाद दूं वह थोड़ा है।

इसके बाद प्रोग्राम के अनुसार महासभा की सहायता के लिए महासभा के प्राण श्रीमान् रायसाहब पं० प्रभुदयाल जी शर्मा बी० ए० (डिप्टी कलेक्टर) होशियारपुर (पञ्जाब) वालों ने धन के लिए अपील की। चूँकि समय बहुत ही अतिकाल का हो गया था सब लोग नित्य कर्म सन्ध्या वन्दनादि को जाने के लिये आतुर हो रहे थे, इसलिये बड़ी शीघ्रता में १३४४) रुपये छात्रवृत्ति के लिये, ६००) उपदेशकों के लिये और १५२) जनरल फण्ड के लिये इस प्रकार २१००) रुपये के लगभग उक्त विभागों के वचन मिले। ११२) जनरल फण्ड में, २) पत्रिका विभाग, २१६) रुपये सदस्य शुल्क और ११७) इतिहा निमित्त इस प्रकार क़रीब ४५०) नक़द प्राप्त हुए। इस प्रकार २५५०) रुपया अपील में आया जो परम हर्षकी बात है। रात्रिको ६ बजे विषय निर्वाचिनी की बैठक की सूचना देकर आज का कार्य्य सानन्द सम्पन्न हुआ और समस्त प्रतिनिधिगण तथा दर्शक महोदय प्रसन्नता पूर्वक अपने अपने स्थानों को गये।

रात्रि को १० बजे हाई स्कूल के एक विशाल कमरे में विषय निर्वाचिनी सभा का अधिवेशन प्रारम्भ हुआ। श्रीमान् सभापति पं० गोविन्दप्रसाद जी कौशिक निरन्तर कई रात्रियों के जगे हुए थे अतः १।२ प्रस्तावों का निर्णय कर वह अपने स्थान पर श्रीमान् परम माननीय रायसाहब पं०प्रभुदयाल जी शर्मा बी० ए० एल-एल० बी० - एक्स्ट्रा असिस्टेण्ट कमिश्नर को सभापति नियुक्तकर चले गये और शेष कार्य्य-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वाही उक्त श्रीमान् रायसाहब की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। रात्रि के २ बजे तक १० प्रस्ताव स्वीकृत हुये। इसके बाद ११वाँ प्रस्ताव श्री० एं० रामकृष्णदास जी पेन्शनर कानूनगो - बरेली का उपस्थित हुआ कि जो प्रस्ताव महासभा ने अपने ३२वें वार्षिकोत्सव इलाहाबाद में पास किया है कि "अखिल भारतवर्षीय गौड़ ब्राह्मण महासभा निश्चय करती है कि देशवाली गौड़, पछादे गौड़, सनाढ्य, चौरासिया गौड़ और पालीवाल गौड़ ब्राह्मणों में आपसमें रोटीबेटी का सम्बन्ध होना चाहिये तथा छन्याति के साथ राजपूतानेके नियमानुसार भोजन संबन्ध सब गौड़ ब्राह्मणों का होना चाहिये।" यह रद्द किया जावे।

इस पर श्रीमान् रायसाहब ने कहा कि कल महासभा की प्रतिनिधि सभा ने यह निर्णय किया है कि "कोई ऐसा प्रस्ताव जो पिछले किसी महोत्सव में पास हो चुका है, के विरुद्ध कोई प्रस्ताव सीधा महासभा के वार्षिकोत्सव में उपस्थित नहीं हो सकेगा कि जब तक उस पर महासभा की मैनेजिङ्ग कमेटी में विचार न हुआ हो और मैनेजिङ्ग कमेटी ने उसको प्रतिनिधि सभा में न भेजा हो और प्रतिनिधि समिति ने महासभा के वार्षिकोत्सव पर उसको प्रस्तुत किये जाने की सम्मति न दी हो। लेकिन इस उचित उत्तर को विरोधी पार्टी कब मानने वाली थी। उसने रात्रि के ३ बजे तक बराबर वादविवाद किया। जिस पर श्रीमान् सभापति जी ने सब प्रकार से उनको भली भाँति समझाया और इस बात को ज़ोर से कहा कि जो नियम बन जाता है उसका पालन करना सब लोगों का कर्त्तव्य हुआ करता है। विरोधी दल इस बात पर हठ कर रहा था कि जैसे हो वैसे इस प्रस्ताव को आज ही प्रस्तुत किया जावे। परन्तु नियमानुसार ऐसा नहीं हो सकता था। इसलिए श्रीमान् सभापतिजी ने इस प्रस्ताव को प्रस्तुत होने से इनकार कर दिया। रात्रि के ३ बजे विषय-निर्वाचिनी सभा का कार्य समाप्त हुआ।

दूसरे दिन प्रातःकाल से ही विरोधी दल के महानुभावों ने क्रमशः श्रीमान् सभापति जी महाराज कौशिक जी की सेवा में जाना प्रारम्भ किया और यहाँ तक उनको घेरे रहे कि ३ बजे मध्याह्न तक उन्हें सभा मंडप में आने का अवकाश ही न दिया। इधर महासभा का कार्य्य आज दिन के १२ बजे से प्रारम्भ होने वाला था, इसलिए प्रतिनिधिगण तथा दर्शक सज्जन ठीक समय पर आगये। आज प्रस्तावों के ऊपर विचार और उनकी स्वीकृति अथवा अस्वीकृति का दिन था, इसलिये आज सभा मंडप में सभासदों के बैठने को दाहिने हाथ तथा दर्शकों के विराजने के लिए बायें हाथ की ओर प्रबन्ध किया गया था। विरोधी दल जो आज उपद्रव करने पर तुला हुआ था प्रथमतो इसी प्रबन्ध पर खिन्न हुआकि यह बैठनेके प्रबन्धमें ऐसी कैद क्यों लगाई गई है। जबतक पूज्य सभापतिजी नहीं पधारे तब तक सभा मंडपमें बड़ा कोलाहल होता रहा। मध्याह्नोत्तर ३ बजे जब विरोधी दल ने सभापति जी को अवकाश दिया, वे शीघ्र ही सभा मंडप में आपहुँचे। उनके आते ही शान्ति हो गयी।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उन्होंने सभापति आसन ग्रहण करने से पूर्व उपस्थिति विप्र मंडली से क्षमा माँगी कि जो दृश्य आज सुबह से मैं अपने स्थान पर देख रहा था और जिसके ही कारण. मुझको यहाँ आने में इतना विलम्ब हुआ उसीका नमूना मैं इस समय भी देख रहा हूँ। ऐसी दशा में मुझे यह अनुभव होता है कि मैं इस आसन पर बैठने योग्य नहीं हूँ; इसलिये यदि आप लोग शान्ति से आज के कार्यक्रम को पूरा नहीं करना चाहते हैं तो सबसे पहिले मैं आप से विदा चाहता हूं और मैं अपने लघु सहोदर भ्राता प्रिय पं० उपेन्द्रनाथ जी कौशिक म्यूनिस्पेल कमिश्नर-ब्यावर जो इस समय मेरे साथ मौजूद है छोड़े जाता हूं इसको पंचायतें करने का बहुत अभ्यास है। यह आपकी आज की सेवा कर सकेगा ।

सभापति जी के इस समयोचित वक्तव्य पर उपस्थित समुदाय ने उच्च स्वर से श्रीमान् सभापति जी से प्रार्थना की कि आप जैसी तपोमूर्ति के सामने कोई अशान्ति नहीं होने की आप कृपाकर मंच पर विराजिये और कार्यारम्भ कीजिये। यह विप्र मंडली धैर्य, सन्तोष और शान्ति से आपकी आज्ञाओं का पालन करेगी। भूदेवों की इस आज्ञा को शिरोधार्य कर श्रीमान् सभापति जी अपने स्थान पर विराजे, और तत्काल उसी समय "मन्त्री महासभा" ने आजका कार्यक्रम सभापति जी के सामने उपस्थित किया ।

सबसे प्रथम श्रीमान् पं० विष्णुदत्त जी शर्मा-भजनोपदेशक चन्दौसी निवासी ने भगवान् के गुणानुवाद गाते हुए ईश्वर स्मरण किया तत्पश्चात् बरेली निवासी श्रीमान् पंडित लक्ष्मीनारायण जी ने हारमोनियम पर एक मंगलाचरण का पद गान किया। इनके अनन्तर श्रीमान् पं० वासुदेव जी शर्मा, कथावाचक चन्दौसी निवासी ने "ब्राह्मणों को चेतावनी" के रूप में एक बहुत ही सुन्दर भावपूर्ण गायन किया। जिसको सुनकर समस्त श्रोतागण प्रसन्न हुए। इसके पश्चात् एक विप्र देवता ने जिनका पवित्र नाम उस समय ज्ञात न हो सका। श्रीमान् सभापति जी को प्रेमस्वरूप स्वरचित दो श्लोक पढ़कर सुनाये। जिसपर सभापति जी ने उनको धन्यवाद दिया और इसके अनन्तर बंगाल गौड़ाद्य वैदिक ब्राह्मणों की ओरसे कि जिनके ५ प्रतिनिधि उस समय विराजमान थे श्री० पं० सूर्यकुमार जी उत्थासनिक बी० ए०—मेदिनापुर ने स्वरचित संस्कृत भाषा में अभिनन्दन-पत्र पढ़कर सुनाया जिसका धन्यवाद श्रीमान् सभापतिजी ने प्रेमपूर्वक दिया ।

इन प्रारम्भिक कार्यवाहियों के अनन्तर मन्त्री महासभा ने बाहर से आये हुये भाइयों के सहानुभूति सूचक तार और पत्र पढ़कर सुनाये कि जिनके शुभ नाम रिपोर्ट में छापे जा रहे हैं । इन सब सज्जनों को धन्यवाद देकर प्रस्तावों के उपस्थित किये जाने का कार्य प्रारम्भ हुआ, कि इसी समय एक सज्जनने कुछ सज्जनों के हस्ताक्षर युक्त वही प्रस्ताव सभापति जी को दिया कि जो कल रात्रि को विषय निर्वाचिनी में

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नियम विरुद्ध होने से रोक दिया गया था। इस पर सभापति जी ने बड़े कोमल शब्दों में उन सज्जन से निवेदन किया कि जो कार्य क्रम मेरे सामने है मैं उस कार्य-क्रम से कार्य प्रारम्भ करता हूं परन्तु यह मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि आपकी इस आज्ञा का मैं अन्त में अवश्य पालन करूँगा आप निश्चिन्त रहे। इस पर वे आगन्तुक महाशय सन्तुष्ट हो अपने स्थान पर जा विराजे और सभापति जी ने खड़े होकर प्रस्ताव उपस्थित किये।

सब से प्रथम श्रीमान् सभापति जी ने शोक प्रस्ताव उपस्थित किया और उसके अनन्तर क्रमशः ६ प्रस्ताव और उपस्थित किये गये। यह दसों प्रस्ताव अत्यन्त सीधे सादे निर्विवाद साधारण थे इस लिये श्रीमान्सभापति जी ने समय की न्यूनता के कारण स्वयं ही उपस्थित करने का कष्ट उठाया। परन्तु श्रीमान् पं० प्रभूदयाल जी जठेड़ी (रोहतक) निवासी ने आवश्यकता और अनावश्यकता को बिना सोचे हुए लगभग सभी प्रस्तावों पर विरोध करके अपनी विद्वत्ता दिखलाई यहां तक कि "गौड़ जाति का इतिहास" अभी तक कोई पूर्ण नहीं है इसलिये एक सर्वाङ्ग सुन्दर "गौड़ जाति का इतिहास" बनाया जावे कितना सुन्दर और निर्विवाद प्रस्ताव था परन्तु हमारे मित्र पं० प्रभूदयाल जी जठेड़ी ने इसका भी विरोध किया। क्योंकि उनका तो सिद्धान्त ही यह था कि 'अगर बदनाम होंगे तो क्या नाम न होगा" ऐसे नाम के भूखे सज्जन ने अगर ऐसा किया तो आश्चर्य ही क्या ? परन्तु तो भी भगवान् की कृपा और श्रीमान् सभापतिजी की कोमल वाणी ने जठेड़ी जी को पिघला कर मोम कर दिया और वे अपने विरोधों को तत्काल वापिस लेते रहे। इस प्रकार सिवाय दो प्रस्तावों के शेष सभी प्रस्ताव बड़ी प्रसन्नता पूर्वक सर्व सम्मति से पास होगये जिनका पूरा विवरण वार्षिक रिपोर्ट में छापा जा रहा है।

अन्त में उस ग्यारहवें प्रस्ताव को कि जो गत रात्रि को विषय निर्वाचिनी में नियमानुसार उपस्थित नहीं होसका था, और जिसको प्रारम्भ में ही कुछ हस्ताक्षरयुक्त सज्जनोंकी ओरसे सभापतिजी को दिया गया था। श्रीमान् सभापतिजीने हाथमें लिया और बड़ी सुमधुर वाणी से कहा कि यह प्रस्ताव बड़ा ही सुन्दर है मैं इस प्रस्ताव को देखकर बड़ा प्रसन्न हुआ हूं। इस प्रस्ताव पर खूब विचार कर रहा हूँ तथा करूंगा परन्तु मैं यह सोच रहा हूं कि इसका निर्णय करने का अधिकार किसको है तो मुझे मेरी आत्मा से यही उत्तर मिलता है कि इसके निर्णय का अधिकार उन उत्तरदायित्व गौड़ ब्राह्मण भाइयों को है कि जो वास्तव में अपने अपने नगर के प्रतिनिधि कहलाने का अधिकार रखते हैं तो यह बड़ी कठिन समस्या उत्पन्न होती है कि वास्तविक प्रतिनिधि कौन है। क्या मैं अपने आपको व्यावर या आबूरोड का प्रतिनिधि कह सकता हूं ? कदापिनहीं। क्योंकि व्यावर या आबूरोड के गौड़ भाइयों ने मुझे यह अधिकार नहीं दिया कि मै जो यहां बात पास कर जाऊं उसे वे सब लोग

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साथ जावें। हां यदि मैं उनकी ओर से निर्वाचित प्रतिनिधि आता तो उनको वह बात मालूम पड़ती कि जो मैं यहां पर तै कर आता। यह उदाहरण है इसी प्रकार आप सब लोग आये हुए हैं कोई वास्तविक प्रतिनिधि नहीं है। इस लिये पहले महासभा का Constitution, (निर्माण) ठीक बनाइये उसके बाद ऐसे जिम्मेवार मामलों पर विचार कीजिये और फिर आप जो निर्णय करेंगे वह सर्वमान्य होगा। वह ऐसा निर्णय होगा कि जिसके सामने सब को सिर झुकाना होगा। इसलिये इस प्रस्ताव को उस समय तक स्थगित कीजिये कि जब तक महासभा का नया Constitution न बने।

इस विषय को श्रीमान् पूज्य सभापति जी ने ऐसी सुन्दरता से समझाया कि समस्त उपस्थित जनता मुग्ध होगई और पक्ष, विपक्ष के सभी सज्जन श्री सभापति जी के आजके भाषण को भी सुनकर उतने ही प्रसन्न हुए कि जितना कलका भाषण सुन कर प्रसन्न हुए थे। सभापति जी का यह भाषण बड़ा गम्भीर युक्ति युक्ति से भरा हुआ ओजस्वी, और इतना मधुर था कि "पत्थर को पिघला देने की शक्ति रखता था" इस भाषण में सभापतिजी को १ घंटे से भी अधिक लगा और यही उनका समाप्ति (Closing pseech) भाषण था तथा इसी भाषण की समाप्ति पर श्रोतागण प्रस्थान करना प्रारम्भ करने लगे। अतः रात्रि के १०बजे पर ब्रह्म परमात्मा को धन्यवाद देकर और श्री सभापतिजी को अनेक बधाई इस महोत्सव के सानन्द समाप्त होने पर देकर महासभा का आज का कार्य्य भी सानन्द निर्विघ्न समाप्त हुआ।

इस समय अति काल होजाने से रात्रि को अन्तरंग सभा का समय न रहा, साथ ही दो दिन से समस्त प्रतिनिधि ई० आई० एम० हाई स्कूल में ही श्रीमान् पं० चतुर्भुजजी महाराजका प्रेम पूर्वक आतिथ्यस्वीकार करते थे परन्तु आज श्रीमान् सभापति जी ने विनम्र प्रार्थना की कि आज श्री० पं० चतुर्भुजजी महाराज की इच्छा है कि आप लोग श्रीमान् के स्थान "श्री शंकर फ्लोर एण्ड रायस मिल" में ही उनका आतिथ्य स्वीकार करते हुए श्री भगवान् का प्रसाद पावें, कि जिस पर समस्त प्रतिनिधियों ने 'मिल' ही पर भोजन करना स्वीकार किया अतः वहां जाने में भी घंटा डेढ़ घंटा लगा इस लिये अगले वर्ष का निर्वाचन, बजटका पास होना तथा अन्य प्रबन्ध सम्बन्धी कार्य्य दूसरे दिन ता० २९ दिसम्बर सन् ३० को दिन के १० बजे किये जाने की घोषणा की गई।

रात्रि को समस्त प्रतिनिधि सज्जनों ने श्री० पं० चतुर्भुजजी की मिल पर पधार कर प्रेम पूर्वक भोजन किया कि जो अत्यन्त ही स्वादिष्ट गर्मागर्म और मिष्टान्न सहित था। इस प्रकार आज का समस्त कार्य्य सागों पांग समाप्त हुआ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आज ता० २६ । १२ । ३० को दिन के १० बजे "श्री शंकर फ्लोर एण्ड राइस मिल्स" के सुविशाल, भव्य कमरे में महासभा की अन्तरंग सभा का कार्य्य प्रारम्भ हुआ । सबसे प्रथम श्रीमान् पं० प्रभूदयाल जी बी० ए०-एडवोकेट-आगराने निवेदन किया कि जो सज्जन कल अन्तिम समय तक इस लिये असन्तुष्ट थे कि उनका मंसूखी वाला प्रस्ताव पेश नहीं हुआ उनका अब यह कहना है कि यदि महासभा की प्रतिनिध समिति ने ता० २६ । १२ । ३० को जो दो प्रस्ताव अपने अधिवेशन में पास किये हैं यानी बिना ६) रु० दिये सम्मति देने का अधिकार और दूसरा प्रस्ताव वह कि जो पिछले पास किये हुए प्रस्तावोंके विरुद्ध महासभाके वार्षिकोत्सवपर किसी प्रस्ताव के प्रस्तुत करने के सम्बन्ध में हैं वह उस समय तक के लिये स्थगित कर दिये जावें अर्थात् उनके द्वारा उस समय तक कोई कार्य्य न हो कि जब तक महासभा का नया Constitution न बने, तो वे लोग पूर्ण सन्तुष्ट हो जावेंगे और इस समय से आगे के समस्त कार्य्य सब लोग पूर्ण प्रेम से मिल जुल कर करेंगे ।

इस पर श्रीमान् रायबहादुर पं० बनारसीप्रसादजी मिश्र ने श्रीमान् पं० प्रभूदयालजी बी० ए० एडवोकेट साहिब के प्रस्ताव का अनुमोदन करते हुए कहा कि मेरे ख्याल से विपक्षी सज्जनों की इस बात को मानने में किसी को आपत्ति नहीं है इस लिये उनका यह प्रस्ताव अवश्य स्वीकार कर लिया जावे । श्री० जठेड़ी जी महाराज के समर्थन पर यह प्रस्ताव सर्व सम्मति से स्वीकार होगया । सन् १९३१ के लिये अनुमानिक बजट उपस्थित हुआ । सर्व सम्मति से ८२२४॥।-) का बजट स्वीकृत हुआ ।

तत्पश्चात् महासभा की मैनेजिंग कमेटी का निर्वाचन प्रारम्भ हुआ । सब से प्रथम महामंत्रीजी के निर्वाचन का प्रश्न उपस्थित हुआ । श्री० रायबहादुर पण्डित बनारसीप्रसादजी मिश्र ने महामंत्री पदके लिये श्रीमान् पं० चतुर्भुजजी महाराज-बरेली का नाम प्रस्तुत किया जो सर्व सम्मति से प्रसन्नता पूर्वक पास होगया । तदनन्तर नीचे लिखे १२ पदाधिकारी सर्व सम्मति से निर्वाचित होगये । शेष १५ सभासदों का निर्वाचन होना इस प्रकार तय हुआ कि पंजाब के प्रतिनिधि ५ सभासदों के नाम पंजाब प्रान्त से चुन कर दें और यू० पी० के प्रतिनिधि ५ सभासदों के नाम यू० पी० प्रान्त से चुन कर दें और शेष ५ सभासदों के चुनने का अधिकार श्रीमान् पूज्य सभापति जी को दिया जावे । यह विवरण प्रकाशित होने के समय श्री० सभापति जी ने ५ सभासदों में से ३ के नाम निश्चय करके भेज दिये हैं अतः मैनेजिंग कमेटी के २५ पदाधिकारी और सभासदों के नाम इस प्रकार निर्वाचित हो गये । अब शेष २ सभासदों के नाम बाकी रह गये हैं जो जिस समय सभापति जी महाराज भेजेंगे उस समय प्रकाशित कर दिये जावेंगे । आप लोगों की जानकारी के लिये मैनेजिंग कमेटीके पदाधिकारी और सभासदों के नाम प्रकाशित किये जाते हैं ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(१) धर्म भूषण श्री० पं० गोविन्दप्रसाद जी कौशिक बी० ए०, एच० एल० एस०-आबूरोड सभापति।

(२) श्री० पं० नानकचन्द्र जी शर्मा एम० ए० एल-एल० बी०, एडवोकेट—प्रयाग यू० पी० के उपसभापति।

(३) श्री० पं० लक्ष्मीचन्द्र जी बी० ए०-आनरेरी मजिस्ट्रेट-हरसाणां कलाँ (रोहतक)—पंजाब के उपसभापति।

(४) श्री० रावबहादुर पं० वासुदेव अनन्त वाम्बर्डेकर-चीफ़ सुपरवाइज़र-करंसी-नोट प्रेस—बम्बई, पोर्चुगीज इण्डिया और सी० पी० के उपसभापति।

(५) श्री० पं० जादौप्रसाद जी मिश्र-रईस—मुंगेर (बिहार) बङ्गाल, आसाम बिहार और उड़ीसा के उपसभापति।

(६) श्री० पं० हरिहर स्वरूप जी शर्मा शास्त्री बी० ए०, इन्स्पेक्टर जनरल शिक्षा विभाग—अलवर, राजपूताना के उपसभापति।

(७) श्री० पं० चतुर्भुज जी शर्मा अध्यक्ष "श्री शंकर फ्लोर एण्ड रायस मिल्स" शहामतगंज - बरेली महामंत्री।

(८) श्री० पं० प्रभूदयालजी बी० ए० एडवोकेट- आगरा-यू०पी० के उपमंत्री और संयुक्त महामंत्री।

(९) श्री० पं० ऋषिप्रकाश जी शर्मा रईस सोनीपत (पंजाब) पंजाब प्रान्त के उपमन्त्री।

(१०) श्री० पं० शरद्चन्द्र जी चक्रवर्ती - नं० १४ हेवर स्ट्रीट-कलकत्ता—बंगाल, आसाम, बिहार और उड़ीसा प्रान्तके उपमन्त्री।

(११) श्री० पं० जगन्नाथप्रसाद जी पचौली-गवर्नमेंट पेन्शनर सागर (सी०पी०) बम्बई, पोर्चुगीज़ इण्डिया और सी०पी० प्रान्त के उपमन्त्री।

(१२) श्री० पं० गिरधारीलाल जी शर्मा-वकील—जयपुर राजपूताने प्रान्त के उपमन्त्री।

(१३) श्री० रायसाहिब पं० प्रभुदयाल जी शर्म्मा बी० ए० एल-एल० बी०, ई० ए० सी० होशियारपुर (पजाब)

(१४) श्री० रायसाहिब पं० मदनगोपालजी महाराज-रईस महिपालपुर सूबा देहली

(१५) श्री० पं० लक्ष्मीचन्द्र जी सुपरिंटेन्डेंट, पञ्जाब सिविल सेक्रेट्रियेट - लाहौर

(१६) श्री० पं० रामचन्द्र जी शर्मा बी०ए० एल-एल० बी०—प्लीडर—हिसार

(१७) श्री० पं० अमरनाथ जी कौशिक बी० ए० एल-एल० बी०-वकील—खरड़ ज़िला अम्बाला।

(१८) श्री० रायबहादुर पं० बनारसीप्रसाद जी मिश्र बी० ए०-एडवोकेट—मुरादाबाद (यू० पी०)

(१९) श्री० पं० राधेश्याम जी पाठक--रईस-मुहल्ला ब्राह्मणपुरी - बरेली (यू०पी०)

(२०) श्री० पं० रामरत्नजी शुक्ल बी०ए०--रईस-सम्भल जि०मुरादाबाद (यू०पी०)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(२१) श्री०पं०लालमणिजी पूठिया महोपदेशक-मु०दीनादरपुरा-मुरादाबाद (यू०पी०)
(२२) श्री० पं०रामकृष्णदासजी शर्मा पेन्शनर कानूनगो--बिहारीपुर-बरेली (यू०पी०)
(२३) श्री० पं० ऋषिराम जी महाराज--रईस आजम- ऋषिभवन लाहौर
(२४) श्री० पं० मौलिचन्द्र जी शर्मा एम० ए० एल-एल० बी० मिनिस्टर धौलपुर स्टेट-धौलपुर ।
(२५) श्री० पं० नीरदवर्ण मिश्र चक्रवर्ती-सेक्रेटरी गौड़ अनुसन्धान समिति—हवडा (बङ्गाल) ।

ओडीटर-१ श्री० पं० आत्माराम जी शर्मा—एग्ज़ामिनर एकाउन्टेन्ट जनरेल्स ऑफिस-पटियाला ।
२ श्री० पं० रामप्रसाद जी शर्मा--मुख्तार—बुलन्दशहर ।

कोषाध्यक्ष - इलाहाबाद बैंक लिमिटेड—

अन्त में श्रीमान् रायसाहिब पं० प्रभूदयाल जी शर्मा ने नियम कमेटी के लिये सभासद निर्वाचित करने का प्रस्ताव किया । सर्व सम्मतिसे निश्चय हुआ कि मैनेजिंग कमेटी इस उपसमिति को अपने किसी अधिवेशन में बनाले ।

इस अन्तरङ्ग सभा में यह भी सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि मैनेजिंग कमेटी के जो सभासद लगातार ३ मैनेजिंग कमेटी के अधिवेशनों में उपस्थित न होंगे वे मैनेजिंग कमेटी से पृथक कर दिये जावेंगे और उनके स्थान पर दूसरे सज्जन निर्वाचित किये जावेंगे।

इस प्रकार महासभा के ३३ वें वार्षिकोत्सव का कार्य बड़ी उत्तमता से निर्विघ्न सानन्द समाप्त हुआ । परन्तु इस बरेली के दृश्यको देख कर श्रीमान् पूज्य रायबहादुर पं० बनारसीप्रसाद जी मिश्र का हृदय जैसा दुःखी हुआ वैसा शायद किसी का न हुआ होगा । आप लोगों को यह भली भाँति विदित है कि मिश्र जी महाराज न केवल स्वयं वरन् उनके पूज्य पिता जी श्रीमान् स्वर्गीय पं० शीतलप्रसाद जी मिश्र महासभाकी जन्मकाल से तन मन. धनसे सेवा करते चले आये हैं । और सन् १९२६ कि जिस वर्ष भिवानी महोत्सव में श्रीमान् रायबहादुर साहिब सभापति निर्वाचित हुए थे, से इस समय तक तो महासभा की मिश्र जी ने वह सेवा की है कि जैसी आज तक किसी ने नहीं की । सभापति होजाने के बाद उपमंत्री जैसे छोटे पद को स्वीकार कर प्रेम से जातीय सेवा करना श्रीमान् मिश्र जी महाराज ही जैसे उच्च ख़याल और गम्भीर विचार के पुरुष का काम था नहीं तो प्रत्येक महानुभाव सब से पहिले अपने गौरवका ख़याल रखते हैं फिर कोई दूसरा कार्य्य करते हैं । परन्तु जातीय सेवा के लक्ष्य से श्रीमान् मिश्र जी महाराज को अपनी प्रतिष्ठा का कभी ध्यान नहीं हुआ । ऐसे साक्षात् ऋषि की तो गौड़ जाति को पूजा करनी चाहिये थी लेकिन दुःख है कि बरेली के दृश्य ने इस बहुमूल्य रत्न को इतना

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दुःखी किया कि उन्होंने ता० २६। १२। ३० को निर्वाचन से पूर्व स्पष्ट निवेदन कर दिया कि कोई सज्जन मुझे किसी पद के लिये सम्बोधित न करेंगे। मैं कोई पद नहीं लेना चाहता इस लिये जिन लोगों की इच्छा उनको उपसभापति या महामन्त्री पद पर देखने की थी वह नष्ट होगई और सब से बड़े दुःख की बात यह है कि श्रीमान् पूज्य कौशिक जी ने श्रीमान् रायबहादुर साहिब को एक वर्ष तक और महासभा कार्यालय अपने पास रखकर इस कार्य को सुदृढ़ बनाने का अनुरोध किया था उस को भी मिश्र जी महाराज ने स्वीकार नहीं किया। प्रसन्नता इतनी ही है कि श्रीमान् मिश्र जी महाराज ने बड़ी दूरन्देशी से इस आपकी महासभा को महामना पूज्य श्री० पं० गोविन्दप्रसादजी कौशिक जैसे उद्भट विद्वान् सभापति, श्रीमान् परमोदार पूज्य श्री० पं० चतुर्भुज जी महाराज जैसे ४ भुजा से काम करने वाले महामंत्री और अत्यन्त बुद्धिमान् एवं पूर्ण विद्वान् परमादरणीय पूज्य श्री० पं० प्रभुदयालु जी बी०ए० एडवोकेट-आगरा जैसे संयुक्त महामंत्री उत्साही सज्जनों के हाथ में सौंप दी है। इसलिये आशा तो यही है कि आपकी महासभा का काम और भी उत्साह से चलेगा आगे ईश्वर की इच्छा।

अन्त में यह निवेदन कर इस विवरण को समाप्त करूँगा कि बरेली के दृश्य को देख कर मेरा भी हृदय क्लेश से भर गया है यद्यपि यह मेरे लिये कोई नई बात नहीं है क्यों कि सन १९०३ महासभा के सप्तम वार्षिकोत्सव मेरी जन्म भूमि श्री मथुरापुरी से लेकर इस ३३वें वार्षिकोत्सव बरेली तक मैंने ऐसे दृश्य कई बार देखे और गत कलकत्ता और प्रयाग के महोत्सव मेरे मंत्रित्व काल ही में सम्पादन हुए परन्तु हमारे उन भाइयों के कि जो न तो कभी इस जातीय सेवा में एक पैसा दान करना चाहते हैं और न कभी १ मिनट अलग समय ही देना चाहते हैं। घृणित विचार और ईर्षा द्वेष की अग्नि उस मनुष्य के प्रति बढ़ती ही देख कर कि जो तन, मन, धन और प्राण से इस जातीय सेवा को सम्पादन करता हो और जाति में सब से अधिक बलिदान कर रहा हो इस जातीय सेवासे अलग हो जाना ही श्रेयस्कर समझा। ऐसे भाइयों का एक मात्र लक्ष्य जातीय महासभा को विध्वंस करना और जाति को कभी उन्नत न होने देना है। मगर दुःख है कि हमारे जातीय नेताओं के पास ऐसे उपद्रवी महात्माओं के लिये कोई अंकुश नहीं इसी लिये वह प्रति वर्ष आकर दो दिन खूब उद्दंडता करते हैं और कार्यकर्त्ताओं को दुरदुरा कर अपना माल सस्तवें सवारों में लिखाते हैं। इस लिये ऐसे लोगों से असहयोग करना ही अब इस युग का एक मात्र सिद्धान्त है अतः मैं दुःख से अपनी प्राण प्यारी महासभा की सेवा से विमुख होता हूं और अपने प्रेमी भाइयों और महासभा के शुभ चिन्तकों से उन सेवाओं की क्षमा चाहता हूँ कि जिनसे किसी अंशों में उनके हृदयको जरासी भी ठेस लगी हो क्यों कि मेरा स्वभाव, मेरा वर्ताव और मेरा कोई कार्य्य कभी किसी को अप्रसन्न करने का नहीं रहा है और न भविष्य में रहेगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मेरे जिन पूज्य श्रीमानों ने मेरे इस विचार को सुन कर मुझे अपने प्रेम पत्रों से ऐसा करने का अनुरोध किया है उनकी कृपाओं का मैं कृतज्ञ हूँ परन्तु मैं अपने दुःखी हृदय को किस तरह समझाऊँ यह मेरे ध्यान में नहीं आता अतः वे भाई मुझे क्षमा करें। कि मैं जिनकी आज्ञा का उल्लंघन कर रहा हूं।

विनीत सेवक—

प्यारेलाल गौड़

सम्पादक और मंत्री ।

महासभा की मैनेजिंग कमेटी ।

हमारे पाठकों को यह तो विदित ही है कि इस "अखिल भारतवर्षीय गौड़ ब्राह्मण महासभा" का समस्त कार्य्य मैनेजिंग कमेटी द्वारा संचालित होता है सन् १९३० से पहिले इसके अधिवेशन उस समय हुआ करते थे कि जब अधिवेशन की आवश्यकता प्रतीत होती थी। इस प्रकार किसी किसी पूरे वर्ष में २ या ३ ही मैनेजिंग कमेटी की बैठकें हुआ करती थीं। परन्तु गत वर्ष कि जब से महासभा कार्य्यालय मुरादाबाद में आया और महासभा का समस्त कार्य्य श्री० रा० ब० पं० बनारसीप्रसादजी मिश्र की संरक्षकता में होने लगा। श्रीमान् मिश्रजी महाराज ने प्रति मास मैनेजिंग कमेटी करने की प्रणाली प्रचलित की और वह भी हर महीने नवीन स्थान पर। इससे यह लाभ हुआ कि एक तो रुपये पैसे का हिसाब प्रति मास परताल होता रहा जिससे हिसाब किताब में कभी गड़बड़ हो ही नहीं सकती दूसरे महा सभा के उन सभासदों में कि जिन पर पूरा उत्तर दायित्व था पूर्ण उत्साह प्रेम और सौहार्द रहा क्यों कि वह जल्दी २ मिलते और महासभा के कार्य्यों से परिचित होते रहे।

इस सिद्धान्त के अनुसार इस वर्ष सन् १९३० में अप्रैल से दिसम्बर तक ८ मास में ८ मैनेजिंग कमेटी होनी चाहिये थी परन्तु सितम्बर में तो श्रीमान् मिश्रजी महाराज के पहाड़ चले जाने से और श्री०पं०केदारनाथ जी भूतपूर्व महामंत्रीजी के अनवकाश से कोई मैनेजिंग कमेटी न होसकी और अक्टूबर में २६ ता० को देहली में मैनेजिंग कमेटी निश्चित करके भी देहली की परिस्थिति उस समय अत्यन्त नाजुक होनेसे अधिकांश मेम्बरोंने वहां मैनेजिंग कमेटी करनेकी सम्मति नहीं दी। इस प्रकार ६ ही मैनेजिंग कमेटी हो पाई। लेकिन यह संख्या भी पिछले सालों के १२ महीने में ३। ४ होने के मुकाबिले इस साल ८ महीने में ६ होना सफलता का ही सूचक है।

गत सितम्बर की पत्रिका में चार मैनेजिंग कमेटी के अधिवेशनों की पूरी कार्य्यवाही प्रकाशित की जा चुकी है अतः शेष दो मैनेजिंग कमेटी के अधिवेशनों का विवरण इस अंक में आम लोगों की जानकारी के लिये प्रकाशित किया जाता है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कार्य्य विवरण

अखिल भारतवर्षीय गौड़ ब्राह्मण महासभा की मैनेजिङ्ग कमेटी।

स्थान—श्री राधेश्याम प्रेस—बरेली

तारीख २३ नवम्बर सन् १६३० ई० समय दिन के १ बजे

उपस्थिति—

(१) श्री० रायबहादुर पं० बनारसीप्रसाद जी मिश्र बी० ए० एडवोकेट मुरादाबाद
(२) श्री० पं० आत्माराम जी शर्म्मा एग्जामिनर - ए० जी० ऑफ़िस—पटियाला
(३) श्री० पं० लक्ष्मीचन्द्रजी शर्मा—सुपरिण्टेण्डेण्ट पञ्जाब सिविलसेक्रेट्रियेट लाहौर
(४) श्री० हिन्दीरत्न पं० प्यारेलालजी गौड़ - मन्त्री महासभा—मुरादाबाद

चूँकि कोरम पूरा नहीं हुआ इसलिये इस समय यह अधिवेशन स्थगित किया गया और दिन के २ बजे स्थगित मीटिङ्ग हो।

स्थगित अधिवेशन मैनेजिङ्ग कमेटी

समय दिन के २ बजे।

उपस्थिति :—उक्त लेखानुसार।

चूँकि सभापति और उपसभापतियों में से कोई भी आज उपस्थित नहीं हैं इसलिये श्रीमान् पण्डित आत्माराम जी शर्मा पटियाला निवासी आज की सभा के सभापति निर्वाचित हुए।

कार्य्यवाही निम्न लेखानुसार प्रारम्भ हुई।

(१) गत अधिवेशन की कार्यवाही (१) गत अधिवेशन का कार्य विवरण पढ़ा गया और स्वीकृत हुआ।

(२) गत तीन मास; अगस्त, सितम्बर तथा अक्टूबर सन् १६३० का आय-व्यय (२) हिसाब अगस्त से अक्टूबर तक का परताल किया गया रसीदें और रसीदबुक अगस्त व सितम्बर व वजह आफ़िस में रह जाने के चैक नहीं की गईं। चुनांचे यह हिसाब चार्टर्ड सर्टीफ़िकेट ऑडीटर साहब पं० रामप्रसादजी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शर्मा तारीख़ ५।१०।३० के पास किया गया। और माह अक्टूबर का ख़र्च का हिसाब व आमदनी दोनों कैशबुक के साथ चैक किये गये और हिसाब सर्व सम्मति से ब-वजह दुरुस्त होने के पास किया गया।

(३) महासभाके संशोधित नियमा पर विचार

(३) महासभाके संशोधित नियम सुनाये गये और सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि इस कमेटी में पिछले सात सभासदों के अतिरिक्त नीचे लिखे दस महानुभाव और सभासद बनाये जावें और उन सबके पास यह नियम छपवा कर भेजे जावें और यह नियम कमेटी तारीख २६।१२।३० को बुलाई जावे। फिर यह नियम प्रतिनिधि समिति को भेजे जावें।

(१) रायसाहिब पं० प्रभुदयालजी शर्मा होशियारपुर
(२) पं० लक्ष्मीचन्द्रजी सुपरिण्टेण्डेण्ट लाहौर
(३) पं० नानकचन्द्रजी एम० ए० प्रयाग
(४) पं० रघुनन्दनजी शर्मा प्रयाग
(५) पं० रामप्रसादजी शर्मा बुलन्दशहर
(६) पं० रामप्रसादजी शर्मा हिसार
(७) पं० क्षेत्रपालजी शर्मा मथुरा
(८) पं० राधेश्यामजी कथावाचक बरेली
(९) पं० आत्मारामजी पटियाला
(१०) पं० लक्ष्मीचन्द्रजी वी० ए० हरसाणांकलाँ

(४) महासभाके उपसभापति श्री० पं०रामजीलालजी शर्मा प्रयाग की असामयिक मृत्यु पर शोक प्रकाश

(४) श्रीमान् पं० रामजीलालजी शर्मा के असामयिक स्वर्गवास पर शोक प्रकाश किया गया और उनके कुटुम्बियोंके साथ हार्दिक सहानुभूति प्रकट की गई और निश्चय हुआ कि इस की एक प्रति उनके पुत्र श्री० पं० रघुनन्दनजी शर्मा को भेजी जावे।

(५) प्रतिनिधि समिति के जिन सभासदों ने सदस्य शुल्क नहीं भेजा है उनके सम्बन्ध में विचार।

(५) प्रस्ताव नं० १६ ता० २९।६।३० को स्थापित रखते हुये सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि जिन सभासदों का सदस्य शुल्क २६।१०।३० के बाद आया है या आगे आवे, वह सभासद बदस्तूर रहे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(६) उन चार सज्जनोंके सम्बन्धमें विचार जिन्होंने छात्रवृत्ति की प्रतिज्ञाकर उसका धन नहीं भेजा	६) सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि— १—श्री०पं०जगतसिंहजीशर्माईस मुरादाबाद २—श्री०पं०रघुनन्दन जी शर्म्मा प्रयाग ३—श्री०पं०मोहनलालजी तिवाड़ी हापुड़ ४—मन्त्री गौड़ ब्राह्मण नवयुवक मण्डल कठघर मुरादाबादसे पुनः प्रार्थना की जावे कि वह अपना अपना प्रतिज्ञात धन शीघ्र भेज देवें अन्यथा उनका यह मामला महाधिवेशन बरेली में पेश किया जावे।
(७) महामन्त्री जी की बनाई हुई उपसभापतियों और प्रान्तिक उपमन्त्रियों की कार्य प्रणाली पर विचार	(७) निर्णय-सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि चूँकि इस समय संशोधित नियमों का विषय उपस्थित है अतः अब इस प्रस्तावकी आवश्यकता नहीं।
(८) इलाहाबाद बैंक मथुरामें महासभा का जो धन गोस्वामी छबीलेलाल भूतपूर्व महामन्त्री के नाम से जमा है उसके सम्बन्ध में विचार	(८) सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि इलाहाबाद बैंक-मथुरा को लिखा जावे कि जो रुपया पं० छबीलेलाल महामन्त्री के नाम से उनके यहाँ जमा है वह महासभा का है, अब चूँकि वह महामन्त्री नहीं हैं इसलिए वह उस रुपये को पं० क्षेत्रपाल जी शर्मा कोषाध्यक्ष महासभा को देदें।
(९) उपदेशकों की बर्खास्तगी और नियुक्ति पर विचार	(९) सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि— १—पं० ज्येष्ठाराम उपदेशक को ६।१।३० से २—पं० ज्ञानचन्द्र उपदेशक को १०।११।३० से पृथक् किया जाना मंजूर किया जाता है। और पं०शिवकुमार दीक्षितको १५।११।३० से पं० रामस्वरूप शर्मा को २८।१०।३० से पं० तृषाराम गौड़ को ६।१०।३० से और पं० ब्रजलाल शर्मा को १०।११।३० से नियुक्त किया जाना स्वीकृत किया जाता है
(१०) जी० पी० नोट के सम्बन्ध में विचार	(१०) सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि श्री० पंडित जगन्नाथ जी कौशल अम्बालासे पुनः प्रार्थना की जावे कि वह इस नोट का रुपया शीघ्र वसूल करके महासभा में जमा करदें।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(११) श्री०पं०छबीलेलाल गोस्वामी पर जो महासभा का धन चाहिये है उसपर विचार

(११) सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि पण्डित छबीलेलाल गोस्वामी को लिखा जावे कि उनको महासभा के रुपये की अदायगी के लिये ता० ३।८।३० को उनकी इच्छानुसार १ मास की अवधि दी गई थी मगर उन्होंने इस समय तक कुछ भी रुपया नहीं दिया इसलिए उनको लिखा जावे कि अब वह १५ दिन के अन्दर रुपया भेजदें। वरना उन पर मुक़दमा फ़ौजदारी और दीवानी चलाया जावे और इसकी मंजूरी अगली मैनेजिङ्ग कमेटी में ली जावे।

(१२) श्री० पं० सोहनलाल जी भूतपूर्व कोषाध्यक्ष पर जो महासभा का धन शेष है उस पर विचार

(१२ सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि उनको लिखा जावे कि वह शीघ्र रुपया भेजदें अन्यथा कार्य्यालय मन्त्री को उनके पास भेज कर रुपया वसूल कराया जावे।

(१३) महासभा के ३३वें वार्षिकोत्सव बरेली की स्वागत समिति को उनके प्रेम पूर्वक संगठन और निर्वाचन पर धन्यवाद

(१३) सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि बरेली की स्वागत समिति को सहर्ष धन्यवाद दिया जाता है कि उन्होंने अपना प्रेम पूर्वक संगठन और निर्वाचन कर लिया है।

(१४) अन्य आवश्यक कार्य्य — अ–श्री०पं०केदारनाथजी शर्मा महामंत्री के त्यागपत्र पर विचार

(१४) अ–सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि श्रीमान् पं० केदारनाथ जी शर्म्मा का त्यागपत्र स्वीकार किया जाता है और उनके स्थान पर श्रीमान् पंडित लक्ष्मीचन्द्रजी सुपरिण्टेण्डेण्ट पञ्जाब सिविल सेक्रेट्रियेट लाहौर महामन्त्री वार्षिकोत्सव तक नियत किये जाते हैं और बिलों पर इन्हीं के पेमेण्ट आर्डर पर कोषाध्यक्ष जी चैक देते रहें।

श्रीमान् सभापति जी को धन्यवाद देकर सभा विसर्जित की गई।

पं० प्रभुदयालशर्मा	पं० लक्ष्मीचन्द्रजी	प्यारेलाल गौड़
ह० सभापति—	ह० महामन्त्री —	ह० कार्य्यालय मंत्री —

———

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कार्य विवरण

अखिल भारतवर्षीय गौड़ ब्राह्मण महासभा की मैनेजिङ्ग कमेटी।

स्थान—ई० आई० एम० हाईस्कूल, बरेली

ता० २६। १२। ३०ई० समय दिन के २ बजे

उपस्थितिः—

(१) रायसाहिब पं० प्रभुदयालु जी शर्मा बी० ए० एल-एल० बी० ई० ए० सी० उपसभापति।

(२) रा० ब० पं० बनारसीप्रसाद जी मिश्र बी० ए० एडवोकेट—सं० महामन्त्री।

(३) रा० सा० हकीम पं० बैजनाथ जी त्रिवेदी - मुरादाबाद—सभासद।

(४) श्री० प० जगन्नाथ प्रसाद जी पचौली—सागर (सी० पी०) सभासद।

(५) श्री० पं० आत्माराम जी शर्मा—पटियाला—पंजाब ,,

(६) श्री० पं० बनारसीदास जी शर्मा—बी० ए० एल-एल० बी० वकील—शिमला ,,

(७) श्री० पं० नीरदवर्ण जी मिश्र चक्रवर्ती—हवड़ा ,,

(८) श्री० हिन्दीरत्न पं० प्यारेलाल जी गौड़— मन्त्री महासभा

चूँकि कोरम पूरा है इस लिये कार्य प्रारम्भ हुआ!

चूँकि आज सभापति जी उपस्थित नहीं हैं इसलिये रा० सा० पं० प्रभुदयालु जी शर्मा उपसभापति - सभापति के आसन पर विराजमान हुये।

कार्य्य विवरण।

(१) गत अधिवेशन का कार्य्य विवरण	(१) गत अधिवेशन का कार्य्य विवरण पढ़ागया और स्वीकृत हुआ।
(२) गत दो मास-नवम्बर तथा दिसम्बर का आय--व्यय-	(२) गत दोनों मासों का आय--व्यय सुना गया और पास हुआ।
(३) महासभा के संशोधित नियमों पर विचार।	(३) सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि नियमावली के परिवर्तन के विषय में जो मसौदा पेश हुआ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

है उस पर विचार करनेके लिये अधिक समय चाहिये अतः प्रतिनिधि समिति की सेवा में प्रार्थना की जावे कि वह इस समय निम्न लिखित विषयों के सम्बन्ध के प्रस्तावों पर विचार करें ।

(१) वार्षिकोत्सव पर सम्मति देने का अधिकार केवल उन सज्जनों को होगा जो महासभा के सभासद हों और जिनका सदस्य शुल्क आचुका हो अथवा जिन्हों ने उक्त महोत्सव पर ६) या उस से अधिक महासभा को दान किया हो ।

(२) महासभा के स्वीकृत किये हुए किसी प्रस्ताव के विरुद्ध कोई प्रस्ताव उस समय तक महासभा के समक्ष प्रस्तुत नहीं हो सकेगा कि जब तक वह मैनेजिंग कमेटी में प्रस्तुत न किया हो ।

(४) श्री० पं० छबीलेलाल गो स्वामी पर जो महासभा का धन चाहिये है, उस पर विचार ।

(४) सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि गोस्वामी छबीलेलाल जी को १ मास का समय और दिया जावे और यदि इस अवधि के अन्दर वह रुपया दाखिल न करें तो उन पर पिछले प्रस्ताव नं० ११ ता० २३ । १२ । ३० के अनुसार कार्यवाही की जावे ।

(५) अन्य आवश्यक कार्य्य :—

(अ) प्रतिनिधि समिति ता० २६ । १२ । ३० के विशेषण पर विचार

(अ) सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि आज की प्रतिनिधि सभामें सिवाय सभासदों के अन्य कोई महाशय नहीं आसकेंगे ।

सभापति जी को धन्यवाद देकर सभा विसर्जित की गई ।

पं० प्रभुदयालशर्मा	पं० लक्ष्मीचन्द्रजी	प्यारेलाल गौड़
ह० सभापति ।	ह० महामंत्री—	ह० कार्य्यालय मंत्री—

———

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रतिनिधि समिति का अधिवेशन।

अखिल भारतवर्षीय गौड़ ब्राह्मण महासभा की सब से बड़ा सभा का नाम "प्रतिनिधि समिति" है, नियमानुसार प्रति वर्ष उसकी एक बैठक अवश्य हो जानी चाहिये और उस में उन बातों पर विचार होजाना चाहिये कि जो गौड़ जाति के हित के लिये आवश्यकीय हैं।

महासभा के गत विशेष अधिवेशन में जो १६।४।३० को मुरादाबाद में हुआ था, उसमें प्रस्ताव नं० ५ इस विषय का स्वीकृत हुआ था कि महासभा की जो वर्तमान नियमावली है उसमें परिवर्त्तन और संशोधन की आवश्यकता है। अतः इस निमित्त ७ विद्वान् गौड़ ब्राह्मणों की एक उपसमिति इस कार्य के लिये उसी समय बना दी गई थी कि जिसके संयोजक श्रीमान् रायबहादुर पं० बनारसीप्रसाद जी मिश्र बी० ए० निश्चित हुए।

संयाजक जी ने वर्ष में कई बार समिति के सभासदों से प्रार्थना की कि इस समिति की बैठक कब और कहां रक्खी जावे परन्तु अधिकांश भाइयों ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया। निदान नियमों का संशोधन, परिवर्त्तन और परिवर्द्धन करके ता० २६ अक्टूबर सन् ३० को देहली में इस नियम कमेटी तथा मैनेजिंग कमेटी और प्रतिनिधि समिति के अधिवेशन कियेजाने की सम्मति हुई और तदनुसार प्रबन्ध भी होने लगा। परन्तु उन दिनों देश की परिस्थिति बड़ी भयंकर होरही थी। दिल्ली में कांग्रेस की वर्किंग कमेटी की बैठक के कारण हमारे देशपूज्य नेता जेल चले गये थे इस लिये देहली का शहर उनदिनों उस मीटिंग करने के लिये उचित न समझा गया और सभासदों की सम्मति लेने पर यही निश्चय हुआ कि इस समय यह मीटिंग स्थगित कर दी जाय। अतः उस समय आपकी प्रतिनिधि समिति का अधिवेशन न होसका।

२३ नोम्बर सन् ३० को मैनेजिंग कमेटी और नियम कमेटीके अधिवेशन बरेली में हुए और नियमावली का मसौदा (ड्राफ्ट) पहिले नियम कमेटी में और फिर मैनेजिङ्ग कमेटी में प्रस्तुत हुए परन्तु उस समय कार्य्य की अधिकता और सभासदों की न्यूनता के कारण उस मसौदे पर भली भाँति विचार न हो सका और यही निश्चय हुआ कि इस नियम कमेटी में कुछ सभासद और बढ़ाये जावें और इसकी बैठक तथा प्रतिनिधि समिति की बैठक ३३वें महाधिवेशन से एक दिन पूर्व बरेली ही में करली जावे और उनमें नियमावली के इस मसौदे पर विचार होजावे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस निश्चय के अनुसार ता० २६ दिसम्बर सन् ३० को नियमावली पर विचार करने के लिये प्रतिनिधि समिति का अधिवेशन बुलाया गया और इस से पूर्व नियमावली के ड्राफ्ट को छपवाकर प्रतिनिधि समिति के समस्त सभासदों के पास डाक द्वारा भेजदिया गया। इस प्रकार इस वर्ष प्रतिनिधि समिति का अधिवेशन उक्त कारणों से बरेलीमें वार्षिकोत्सव के साथ ही हुआ कि जिसको हमारे उन भाइयों ने कि जो महासभा के नियमों से परिचित नहीं थे यह समझा कि यह अधिवेशन केवल वार्षिकोत्सव के प्रबन्ध के लिये यहां किया गया और उसमें वेही दो प्रस्ताव पास किये गये जो वार्षिकोत्सव के प्रबन्ध में सहायता दें यह बात न थी। अतः प्रतिनिधिसमिति की कार्यवाही आगे प्रकाशित की जाती है।

———

कार्य्यवाही

प्रतिनिधि समिति अ०भा० गौड़ ब्राह्मण महासभा

स्थान—ई० आई० एम० हाई स्कूल, बरेली

ता० २६ दिसम्बर सन् ३०। समय सायंकाल के ४ बजे

उपस्थितिः—

(१) श्री० रायसाहब पं० प्रभुदयालजी शर्मा बी० ए० एल एल० बी०, ई० ए० सी०
(२) श्री० रायबहादुर पं० बैनीप्रसाद जी मिश्र एम० ए०—डिप्टीकलेक्टर
(३) श्री० रायसाहिब पं० शिवलाल जी मिश्र—रईस—हलद्वानी जिला नैनीताल ।
(४) श्री० रायबहादुर पं० बनारसीप्रसाद जी मिश्र बी०ए०—एडवोकेट मुरादाबाद
(५) श्री० हिन्दीरत्न पं० प्यारेलाल जी गौड़—सम्पादक "गौड़ हितकारी" मथुरा ।
(६) श्री० रायसाहिब हकीम पं० बैजनाथ जी त्रिवेदी—रईस मुरादाबाद ।
(७) श्री० पं० शिवप्रसादजी महाराज-अध्यक्ष फर्म शिवप्रसाद जगन्नाथ मुरादाबाद
(८) श्री० पं० रामस्वरूप जी शर्मा वैद्य, मन्त्री—"गौड़सभा"—मंडी बांस मुरादाबाद
(९) श्री० पं० जादौप्रसाद जी मिश्र रईस मुहल्ला पुरानी गञ्ज मुंगेर (बिहार)
(१०) श्री० पं० लक्ष्मीनारायण जी मिश्र, प्रोप्राइटर परफ्यूमरी वर्कस मुंगेर (बिहार)
(११) श्री० पं० अमरनाथजी कौशिक बी०ए०एल-एल०बी० वकील, खरड़ (अम्बाला)
(१२) श्री० पं० आत्मारामजी शर्मा—एग्जामिनर ए० जी० का दफ्तर पटियाला।
(१३) श्री० पं० जगन्नाथप्रसाद जी पचौली—गवर्नमेन्ट पेन्शनर, सागर (सी०पी०)
(१४) श्री० पं० देवीचन्द्र जी महाराज ग्लीनरम—शिमला।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(१५ श्री० पं० दनारसीदास जी शर्मा बी०ए० एल-एल० बी० प्लीडर शिमला।
(१६) श्री० पं० प्यारेलाल जी उपाध्याय पोस्टमास्टर डाकखाना बेलनगंज आगरा।
(१७) श्री० पं० रतनलाल जी गौड़ पी० डब्ल्यू० डी० लखनऊ।
(१८) श्री० पं० विहारीलाल जी गौड़ अध्यक्ष "नारायण प्रेस" मैनपुरी।
(१९) श्री० पं० प्यारेलाल जी शर्मा एञ्जीनियर "डिस्ट्रिक्टबोर्ड" मुरादाबाद।
(२० श्री० पं० आनन्दीप्रसाद जी मिश्र-अ० असेसडेन्स ओफीसर काँठ (मुरादाबाद)
(२१) श्री० पं० शरच्चन्द्र जी चक्रवर्त्ती--नं० १४ हेयर स्ट्रीट कलकत्ता।
(२२) श्री० पं० नीरदवर्णमिश्रचक्रवर्ती सेक्रेटरी 'गौड़ अनुसन्धान समिति' हवड़ा।
(२३) श्री० पं० वरदाप्रसाद जी चक्रवर्ती बी० ए० बी० एल० प्लीडर, हवड़ा।
(२४) श्री० पं० चतुर्भुज जी शर्मा अध्यक्ष "शङ्कर फ्लोर एण्डराइस मिल्स" बरेली।
(२५) श्री० पं० देवकी नन्दन जी शांडिल्य रईस चन्दौसी (जि० मुरादाबाद)
(२६) श्री० पं० रामरत्न जी शुक्ल बी० ए० रईस सम्भल जिला मुरादाबाद।
(२७) श्री० पं० रामशरण जी शुक्ल बी० ए० रईस सम्भल जिला मुरादाबाद।
(२८) श्री० पं० गोपीलाल जी शर्मा नायब कोर्ट इन्स्पेक्टर बरेली।
(२९) श्री० पं० रामचन्द्र जी शर्मा सम्पादक 'सनातन धर्मपताका" मुरादाबाद।
(३०) श्री० पं० राजाराम जी गौड़ अध्यक्ष 'फर्म सेवकराम राजाराम" चोड़ुर
(३१) श्री० पं० सत्यव्रत जी शर्मा अध्यक्ष 'शान्तिप्रेस" आगरा।
(३२) श्री० पं० जानकीप्रसाद जी शर्मा सब इन्स्पेक्टर पुलिस झांसी।
(३३) श्री० पं० रामचन्द्रजी शर्मा वैद्य आलमगीरीगंज बरेली।
(३४) श्री० पं० राधेश्यामजी कथावाचक विहारीपुर बरेली।
(३५) श्री० पं० राधेश्यामजी पाठक बमनपुरी बरेली।
(३६) श्री० पं० रामरतनजी महाराज पिड़दार कठवर मुरादाबाद।
(३७) श्री० पं० पुष्करचन्द्रजी द्विवेदी शास्त्री हलदोर जिला बिजनौर।
(३८) श्री० पं० शिवकुमारजी भारद्वाज असौधा जिला० रोहतक।
(३९) श्री० पं० रामस्वरूपजी हरितस्य छपरौली जि० मेरठ।
(४०) श्री० पं० तुलारामजी गौड़ डासना जि० मेरठ।
(४१) श्री० पं० शिवकुमारजी दीक्षित कांकाठेर पोष्ट तिगरी (मुरादाबाद)

(१) चूंकि प्रतिनिधि समित का कोरम २५ सभासदों का स्वीकृत है और अब ४१ सभासद उपस्थित हैं अतः कोरम पूरा है इस लिये कार्य्य प्रारम्भ हुआ।

(२) चूंकि आज महासभा के श्रीमान् सभापति जी उपस्थित नहीं हैं अतः उनके स्थान में श्रीमान् उपसभापति रायसाहिब पं० प्रभुदयालजी शर्मा बी० ए० एल० एल० बी० एक्स्ट्रा असिस्टेन्ट कमिश्नर होशियारपुर ने सर्वसम्मति से सभापति का आसन ग्रहण किया।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(३) श्रीमान् सभापतिजी ने सब से प्रथम यह सूचनादी कि यह सभा "प्रतिनिधि समिति" की है अतः जिन सभासदों ने अभीतक अपना शुल्क नहीं दिया है वह कृपा कर अब दे दें । अन्यथा वे सज्जन कि जिन्हों ने सदस्य शुल्क नहीं दिया है, आज की मैनेजिंग कमेटी के प्रस्ताव नं० ५ (अ) के अनुसार इस प्रतिनिधि समिति में सम्मिलित नहीं हो सकेंगे ।

इसके अनन्तर श्रीमान् सभापतिजी ने आजकी मैनेजिंग कमेटी के भेजे हुए दो प्रस्ताव जो नीचे लिखे जाते हैं समस्त उपस्थित मंडली को पढ़ कर सुनाये । और उन पर पूर्ण रूपेण विचार होकर पहिला प्रस्ताव बहु सम्मति से और दूसरा प्रस्ताव सर्वसम्मति से पास हुआ ।

प्रस्ताव नं० १

अखिल भारतवर्षीय गौड़ ब्राह्मण महासभा के वार्षिकोत्सवों पर सम्मति देने का अधिकार केवल उन्हीं सज्जन को होगा कि जो महासभा के सभासद हों और जिन का सदस्य शुल्क ६)रु० आचुका हो अथवा जिन्होंने उक्त महोत्सवों पर ६)रु० या उससे अधिक महासभा को दान किया हो ।

यह प्रस्ताव बहुसम्मति से स्वीकृत हुआ ।

प्रस्ताव नं० २

महासभाकी यह 'प्रतिनिधि समिति' निश्चय करता है कि यदि कोई ऐसा प्रस्ताव जो महासभा के किसी वार्षिकोत्सव पर स्वीकृत हुए प्रस्तावों के विरुद्ध महासभा के वार्षिकोत्सव पर प्रस्तुत होने को आवेगा तो वह महासभा के वार्षिकोत्सव में उस समय तक पेश न हो सकेगा कि जब तक वह पहिले मैनेजिंग कमेटी में पेश न हुआ हो और मैनेजिंग कमेटी ने उस पर अपनी सम्मति प्रगट कर प्रतिनिधि सभा में न भेजा हो और प्रतिनिधि समिति ने उस प्रस्ताव को महासभा के वार्षिकोत्सव पर प्रस्तुत करने की सम्मति न दी हो ।

सर्व सम्मति से पास

श्रीमान् सभापतिजी को धन्यवाद देकर सभा विसर्जित हुई ।

पं० प्रभुदयाल शर्मा बी० ए० (रायसाहिब)
सभापति

प्यारेलाल गौड़
कार्य्यालय मंत्री

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रांतीनिधि सामिति के सदस्यों को धन्यवाद।

श्री सच्चिदानन्द आनंदकन्द परब्रह्म परमात्माको कोटिशः धन्यवाद है कि जिस की कृपाकटाक्ष से इस वर्ष जब कि समस्त भारतवर्ष में राजनैतिक लहर का भयंकर प्रवाह होरहा था, हम अपने इस जतीय सेवा के कार्य्य में इतनी सफलता प्राप्त कर सके कि जितनी सफलता हम गत ३३ वर्षों में, जब कि देश की दशा जाति का प्रेम और जातीय भाइयों की स्थिति इससे कहीं अच्छी थी प्राप्त नहीं कर सके थे। इसका एक मात्र कारण प्रभुकी दया ही कही जासकती है।

आप लोग आश्चर्य करेंगे कि सन् १६२८ में जब कि महासभा कार्य्यालय श्री मथुरापुरी में था और उस समय भी मैं ही महासभा का मंत्री था प्रतिनिधि सभिति के केवल ११० सदस्यों से ही सदस्य शुल्क प्राप्त कर सका था। उस वर्ष भी सदस्य शुल्क प्राप्त करने में ऐसी ही चेष्टा की थी कि जैसी इस वर्ष की। परन्तु जैसी सफलता इस वर्ष प्राप्त हुई वैसी गत सन् १६२८ में न हो सकी थी। इस लिये मैं तो यही कहूँगा कि यह प्रभु की कृपा ही है कि उसने इन नीचे लिखे भाइयों के हृदय में जातीय प्रेम की लहर को ऊँची उमंगों पर पहुँचाया कि जिस से यह भाई अपनी एक मात्र जातीय संस्था के सदस्य बनने को उद्यत होगये।

आज हम बड़ी प्रसन्नता से अपने उन सन्माननीय भाइयों के पवित्र, प्रतिष्ठित और शुभनाम नीचे प्रकाशित करते है और उनको अनेक धन्यवाद प्रदान करते हुए निवेदन करते हैं कि आप लोग तो अब सदैव अपने जीवनभर इस अपनी जातीय महासभा से ऐसा ही प्रेम रक्खें कि जैसा आपने इस वर्ष रक्खा है। आप लोगों की आठ आने मासिक की सहायता इस आपकी महासभा के कोष को यदि सुदृढ़ न बनायेगी तो भी बहुत से आवश्यक कार्य्यों को पूर्ति अवश्य करेगी इस लिये आप लोगों की सेवा में जिस दिन सन १६३१ के लिये यह सूचना पहुँचे कि आप पुनः अपनी महासभा के आदरणीय सदस्य निर्वाचित हुए हैं आप तत्काल, निरालस्य और निःसंकोच भाव से महासभा का सदस्य शुल्क छः छः रुपया भेज कर अपने जातीय प्रेम का परिचय दें और इस बात को सिद्ध कर दें कि आप जिस प्रकार सदा से अपनी जातीय महासभा से प्रेम करते आये हैं हम सदैव उसी श्रद्धा से इस महासभा की तन, मन धन से यथा शक्ति सेवा सहायता करते रहेंगे. तो आप शीघ्र ही देखेंगे कि आप की यह निःस्वार्थ सेवा आप की महासभा को उस उच्चतम शिखिर पर पहुँचा देगी कि जिसके लिये आपके जातीय भाई पूर्णतया चेष्टा कर रहे हैं।

इस धन्यवाद सूची में केवल उन्हीं भाइयों के नाम हैं कि जिनका सदस्य शुल्क सन् १६३० के वास्ते ता० १। ६। ३० से ता० २६ दिसम्बर सन् १६३० तक अर्थात् महा-सभा वार्षिकोत्सव से पूर्व महासभा कार्य्यालय में आगया था।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धन्यवाद सूची

६१ श्री० पं० सूर्यसहाय जी मिश्र रईस सम्भल (मुरादाबाद)।
६२ श्री० पं० जुगलकिशोर जी शर्मा, खुरजा (बुलन्दशहर)
६३ श्री पं० गङ्गासहाय जी गौड़ कानूनगो प्रतापगढ़ (अलवर)
६४ रायसाहिब पं० मदनगोपाल जी रईस महिपालपुर (देहली)
६५ श्री० पं० लक्ष्मीनारायण जी हैड ड्राफ्ट्समैन, बहावलपुर
६६ श्री० पं० हेतराम जी वैद्यराज सरकड़ा जि० बिजनौर
६७ वैद्य पं० हरिप्रसाद जी, सहारनपुर
६८ पं० हरस्वरूप जी ओवरसियर बदायूँ
६९ पं० रामनारायण जी मिश्र आनन्दप्रभा कं० देहरादून
७० पं० सहजानन्द जी--कुम्भूड़ा जि० रत्नागिरि बम्बई)
७१ पं० रामचरण जी शर्मा ग.र्ड रिवाड़ी (गुड़गाँव)
७२ पं० देवदत्त जी शर्मा डाक्टर विश्वरसायनशाला देहली
७३ पं० कामिनीकुमार जी चक्रवर्ती राजानगर (आसाम)
७४ पं० सत्यव्रत जी शर्मा शान्ति प्रेस, आगरा
७५ पं० वैजनाथ जी रईस, मँडावर (बिजनौर)
७६ पं० राधेश्याम जी वैद्यरत्न मु० जारई दरवाज़ा-चन्दौसी (मुरादाबाद)
७७ पं० हरिप्रसाद जी शर्मा देहरादून
७८ पं० नारदवर्ण जी मिश्र चक्रवर्ती हथड़ा
७९ पं० सीताराम जी पोस्टमास्टर, अम्बाला
८० पं० जगन्नाथ जी कौशल-एम०ए० एल-एल० बी० वकील-अम्बाला छावनी
८१ पं० रामशरण दास जी पटियाला
८२ पं० थानसिंह जी गौड़ लखनऊ
८३ पं० अमरनाथ जी रईस, किरतपुर (बिजनौर)
८४ पं० अयोध्यानाथ जी शर्मा एम०ए० प्रोफ़ेसर कानपुर
८५ पं० यशवन्त कृष्ण प्रभु बम्बई
८६ पं० रामचन्द्र नारायण प्रभु, बम्बई
८७ पं० महादेव विट्ठल नायक, बम्बई
८८ पं० कान्हो वा रामचन्द्र प्रभु नासिक
८९ पं० आत्माराम रामचन्द्र देसाई नासिक
९० पं० वामन शीखाजी प्रभुखोत, नासिक
९१ पं० गङ्गाराम वासुदेव देसाई, नासिक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

९२ पं० लक्ष्मीचन्द्र जी हरसाणा कलाँ पो० सोनीपत (रोहतक)
९३ पं० ब्रजराज शरण जी रईस, शिमला
९४ पं० रामरतन जी गौड़ पिड़दार रईस. बठघर (मुरादाबाद)
९५ पं० दीनदयालु जी वकील, मीरपुर (गुड़गाँव)
९६ पं० केशवचन्द्र जी वेदान्त तीर्थ इकतारपुर (मेदिनापुर) बंगाल
९७ पं० नृत्यगोपाल जी वेदान्तरत्न डायमंडहार्बर (बंगाल)
९८ पं० विष्णुलाल जी एम० ए० पेन्शनर सबजज, बरेली
९९ पं० आत्माराम जी सक्कर (सिन्ध)
१०० पं० रामचन्द्र जी चक्रवर्ती ज़मीदार चन्द्रघाट (बंगाल)
१०१ पं० अमरनाथ जी बी०ए०एल-एल० बी० वकील खरड़ (अम्बाला)
१०२ पं० रामरतन जी शुक्ल रईस सम्भल (मुरादाबाद)
१०३ पं० शारदाप्रसाद जी व्याकरण वेदान्ततीर्थ गोपालपुर (बंगाल)
१०४ पं० रोहिणीकान्त भट्टाचार्य लेवन (शिलोंग) (आसाम)
१०५ पं० सुरेन्द्रनाथ चक्रवर्ती बलियाडाँगा (नदिया) बंगाल
१०६ पं० कृष्णप्रसाद जी मिश्र सेकिण्ड क्लास मजिस्ट्रेट हाकिम-बाली (मारवाड़)
१०७ पं० मदनमोहन जी गौड़, कसेरट बाजार आगरा
१०८ पं० आत्माराम जी गौड़ कम्पौण्डर पो० चकराता (देहरादून)
१०९ पं० श्रीराम जी शुक्ल विशारद हरदा सी० पी०
११० पं० भैरोंलाल जी शर्मा ढाँचोलिया मन्त्री गौड़ सभा अजमेर
१११ पं० शम्भुदयालु जी शर्मा मंत्री गौड़सभा बछराँव (मुरादाबाद)
११२ पं० बसन्तराय जी गौड़ छितुइया पो० उझानी (बदायूं)
११३ पं० बालकृष्णअनन्त पटेल देसाई, बम्बई
११४ पं० राजाहरि जी भट्टाचार्य्यक्लर्क मुंसिफ़ कोर्ट खतरा ज़ि० बाँकुड़ा
११५ पं० मोहनलाल पन्नालाल जी कलकत्ता
११६ पं० जयशङ्कर जी सुपरिण्टेण्डेन्ट जेल कोटा
११७ पं० रामचन्द्र जी शर्मा M B.B. S. डाक्टर, हसनपुर (मुरादाबाद)
११८ पं० त्रिभुवनदत्त जी दतौली जि० बहराइच
११९ पं० शरच्चन्द्र जी चक्रवर्ती १४ हेयर स्ट्रीट कलकत्ता
१२० पं० रघुवरदयालु जी गौड़ सेठजी की बाड़ी, उदयपुर
१२१ पं० जगन्नाथ जी शर्मा E x. ट्रेज़रर-महू-मालवा C. P.
१२२ श्री० राजराजे पं० वासुदेव आत्माराम प्रभु देसाई गोआप्रान्त
१२३ पं० जोरावर शर्मा ओवरसियर P. W. D. नं० ४३ हुसैनगञ्ज, लखनऊ
१२४ पं० सूर्यभानु जी गौड़ धामपुर (बिजनौर)
१२५ पं० रघुवरदयालु जी वैद्य, धामपुर (बिजनौर)
१२६ पं० बाबूराम जी वैद्य नगीना (बिजनौर)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१२७ पं० श्यामस्वरूप जी वकील, नजीबाबाद (बिजनौर)
१२८ पं० लालताप्रसाद जी ओवरसियर P W.D. उन्नाव
१२९ पं० बुधराम शर्मा गौड़ गाँव हालियाकी (गुड़गाँव)
१३० पं० विष्णुप्रसाद जी गौड़ हथौंडा (बाराबङ्की)
१३१ प० प्यारेलाल जी उपाध्याय सबपोस्टमास्टर बेलनगंज (आगरा)
१३२ पं० मनोहरलाल जी वैद्य, छीपीवाड़ा देहली
१३३ ब्या० वा० पं० दीनदयालु जी शर्मा झज्जर (रोहतक)
१३४ पं० हरिहर स्वरूप जी शास्त्री बी० ए० इन्सपेक्टर जनरेल शिक्षाविभाग-अलवर
१३५ पं० हरगुलाल जी गौड़ तहसीलदार, बाँसवाड़ा
१३६ पं० रामगोपाल जी शर्मा कामदार, बगड़ी (धार)
१३७ पं० जगन्नाथ प्रसाद जी पचौली सागर सी० पी०
१३८ पं० गङ्गाधर महादेव देसाई वैद्यशास्त्री बम्बई
१३९ पं० रामचन्द्र जी मिश्र बी ए० सुड़िया बनारस
१४० पं० शिवनारायण जी मिश्र, नीमच छावनी
१४१ पं० प्रभुदयालु जी एडवोकेट आगरा
१४२ पं० तेजाराम जी महन्त, लाहौर
१४३ पं विष्णु रघुनाथ प्रभु बम्बई
१४४ पं० भीमराजजी गौड़ छोर (सिन्ध)
१४५ पं० चन्दगीराम जी शर्मा सबपोस्टमास्टर बहादुरगढ़ मण्डी (रोहतक)
१४६ पं० देवकीनन्दनजी रईस चन्दौसी (मुरादाबाद)
१४७ पं० हरिद्वारीलालजी डाक्टर पो० बीसलपुर (पीलीभीत)
१४८ रायसाहिब पं० शिवलालजी मिश्र रईस हलद्वानी (नैनीताल)
१४९ पं० रामचन्द्रगोविन्द सामन्त बम्बई
१५० सरदार बलदेवेन्द्रसिंहजी रईस अमृतसर
१५१ पं० दयारामजी शर्म्मा शिकोहाबाद (मैनपुरी)
१५२ पं० रामसहायजी वैद्यशास्त्री मेरठ
१५३ पं० शङ्करदत्तजी शर्मा मुरादाबाद
१५४ पं० रामचन्द्रजी डाक्टर काठदरवाजा मुरादाबाद
१५५ पं० मालचन्द्रजी गवर्नमेंट पेन्शनर-रोहतक ।
१५६ पं० वरदाप्रसादजी प्लीडर हवड़ा
१५७ पं० रामचन्द्र जी शर्मा सम्पादक सनातनधर्मपताका मुरादाबाद
१५८ पं० रामशरणजी शुक्ल बी० ए० सम्भल
१५९ पं० लक्ष्मीनारायणजी गौड़ मुंगेर (बिहार)
१६० पं० गोपीलालजी शर्म्मा नायब कोर्ट इन्सपेक्टर बरेली
१६१ पं० कालीपदजी मिश्र चक्रवर्त्ती कलकत्ता

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महासभा को दान स्वरूप विशेष सहायता।

जिन सज्जनों ने इस वर्ष सन् १९३० में महासभा को किसी रूप में जो कुछ धन सहायता निमित्त भेजा है वे अत्यन्त ही प्रशंसा के पात्र हैं क्योंकि हमारे पूर्वज, धर्म्म शास्त्रों में दान की बड़ी प्रशंसा उसका फल और उससे दानी को जो शुभगति प्राप्त होती है, का उल्लेख कर गये हैं और उन्हीं बातों में श्रद्धा रखते हुए वर्त्तमान में मनुष्य अपनी इच्छानुसार भिन्न भिन्न रुपसे दान करते हैं। इस सम्बन्ध में हमको केवल इतना ही निवेदन करना है कि जो सज्जन जिस प्रकार दान करते हैं वह सभी अच्छा करते हैं परन्तु जो व्यक्ति दान करते समय देश, काल और पात्र का विचार करके दान करते हैं उनका दान सर्व श्रेष्ठ तत्काल फल प्रदान करने वाला और प्रशंसनीय होता है। इस लिये हम तो यही कहेंगे कि "सर्वेषामेव दानानां ब्रह्मदानं विशिष्यते" अर्थात् सर्व प्रकार के दानों में वह दान सर्व श्रेष्ठ है जो ब्राह्मणोंके निमित्त दिया जाता है। अब ब्राह्मणों में भी बहुत प्रकार के तर्क वितर्क निकल सकते हैं। अतः इन तर्क वितर्कों का निराकरण भी इससे सहज ही में दूर हो सकता है कि दानी सज्जनों को अपना अपना दान अपनी अपनी जातीय महासभाओंमें भेज देना चाहिये कि जहाँ न केवल ब्राह्मणों के हित ही लगेगा, वरन् उन्हीं के उन रक्त बिन्दुओं में पहुँचेगा कि जो आज समय के विपरीत होजाने से इसके पात्र हैं और जिनकी सहायता करना आप भाइयों का पहिला कर्तव्य है।

इस विभाग में जिन भाइयों ने अपनी श्रद्धानुसार जो पत्र पुष्परूप में थोड़ा बहुत धन इस अपनी महासभा को भेजा है उनके शुभ नाम इस नीचे की सूची में प्रकाशित किये जाते हैं और उनको अनेक हार्दिक धन्यवाद केवल इस निमित्त भेट किया जाता है कि उन्होंने दान की आवश्यकता को अनुभव करते हुए उन लाखों भाइयों में अपना आदर्श स्थापित किया है कि जिन्होंने इस वर्ष में अन्य किसी रूप में दान किया है परन्तु अपनी ज्ञातीय महासभा को स्मर्ण तक नहीं किया है।

इस अवसर पर हमको लिखते हुए दुःख होता है कि हमारे उन भाइयों ने कि जिन्होंने इस वर्षमें अपने प्यारे पुत्रतथा पुत्रियोंके विवाह किये हैं और जिन्होंने अपनी गाढ़ी कमाई को बड़ी उदारता से उन विवाहों में व्यय किया है परन्तु उन्होंने अपने उन अनाथ, दीन दरिद्री गौड़ भाइयों के बच्चों को विद्योन्नति के लिये एक कौड़ी दान नहीं की है कि जिनको महासभा खोज खोज कर छात्रवृत्ति देना अपना पहिला कर्तव्य समझती है बल्कि एक महाशय ने तो महासभा के प्रति अपने ऐसे भाव प्रगट किये हैं कि जिनको लिखते हमें लज्जा आती है परन्तु उनको लज्जा नहीं आई। उन्होंने लिखा है कि महासभा को दान देने के बदले मैंने अपनी विधवा साली को सहायता देना अच्छा समझा। धन्य है, कलियुग तेरी अपार लीला!

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जिन ग्राहकों ने अपना अपना वार्षिक मूल्य भेज दिया है उनकी सधन्यवाद सूची ।

ता० ३१ दिसम्बर सन् १९३० ई० तक

२) श्री० पं० श्रीचन्द्रजी जमींदार रायपुर जिला देहरादून
२) श्री० पं० विश्वम्भरदत्तजी जमींदार रायपुर ,,
२) श्री० पं० गङ्गावल्लभजी रईस ,, ,,
२) श्री० पं० वासुदेवजी वैद्य चोहड़पुर ,,
२) श्री० पं० बलदेवप्रसादजी ,, ,,
२) श्री० पं० परमानन्दजी ,, ,,
२) श्री० पं० नारायणदत्तजी मौजा भीमावाला चोहड़पुर देहरादून
२) श्री० पं० हरिप्रसादजी मिश्र कनखल जि० सहारनपुर
२) श्री० पं० ठाकुरदत्तजी सेकिण्ड मास्टर अम्बाला
२) श्री० पं० ब्रह्मानन्दजी सेनेटरी इन्सपेक्टर ,,
२) श्री० पं० लक्ष्मीप्रसाद जी एजेण्ट अम्बाला
२) श्री० पं० गणेशीलालजी अनाजमण्डी अम्बाला
२) श्री० पं० कस्थूरामजी शर्मा अनाजमण्डी अम्बाला
२) श्री० पं० सुखदेवराम जीमेहता बबियाल (अम्बाला)
२) श्री० पं० आत्मारामजी अनाजमण्डी अम्बाला
२) श्री० पं० जयन्तीप्रसादजी वल्द पं० हुज्जूरामजी नारनौंद (हिसार)
२) श्री० पं० रामस्वरूपजी शर्मा पेटवाड़ (हिसार)
२) श्री० पं० अमरसिंहजी हैडमास्टर बाँस (हिसार)
२) श्री० पं० कल्लूमलजी शर्मा हैडमास्टर मौजा मँढाल खुर्द पो०बुआनीखेड़ा(हिसार)
२) श्री० पं० जौहरीलालजी शर्मा बुलन्दशहर
२) श्री० पं० अयोध्याप्रसादजी डाक्टर झालू (बिजनौर)
२) श्री० पं० उमादत्तजीशर्मा मौजा आज़मपुर उर्फ आदोपुर पो०रतनगढ़ जि०बिजनौर
२) श्री० पं० रामस्वरूपजी शर्मा वैद्य ताजपुर (बिजनौर)
२) श्री० पं० जैसीरामजी वैद्य नूरपुर ,,
२) श्री० पं० शम्भुनाथजी शर्मा वैद्य रोशनपुर पो० गुहावर ज़िला बिजनौर
२) श्री० पं० लालमनदासजी धामपुर (बिजनौर)
२) श्री० पं० प्यारेलालजी वकील नगीना (बिजनौर)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२) श्री० पं० प्रभुदयालजी यमदग्नि फैजाबाद
२) श्री० पं० माँगीलालजी शर्म्मा सीतापुर
२) श्री० पं० जगदीशप्रसादजी एकाएटेण्ट देशवैंक अम्बाला छावनी
२) श्री० पं० कल्याणदत्तजी वैद्य किरतपुर (बिजनौर)
२) श्री० पं० विहारीलालजी शर्म्मा कोटाराज्य
२) श्री० पं० लालारामपेन्शनर जिलेदार गाँव दिचाऊ पो० नज़फ़गढ़ (देहली)
२) श्री० पं० भवानीशंकरजी वैद्य नीमच छावनी
२) श्री० पं० गङ्गाप्रसादजी गौड़ उझानी (बदायूँ)
२) श्री० पं० रामस्वरूपजी ग्रेसगंज (खुर्जासिटी)
२) श्री० पं० रामरिक्षपालजी आड़ती दनकौर (बुलन्दशहर)
२ श्री० पं० ईश्वरदासजी हलवाई ,, ,,
२) श्री० पं० डालचन्द्रजी वैद्य बिजनौर
२) श्री० पं० सुखरामदासजी शर्मा सेकिण्डमास्टर रिफोर्मेट्रीस्कूल देहली
२) श्री० पं० कृष्णगोपालजी मिश्र क्लर्क-पोस्टआफिस पटना (बिहार)
२) श्री० पं० मुरलीधरजी गौड़ हैडमास्टर मिडिलस्कूल सेवली (गुड़गाँव)
२) श्री० पं० बाँकेलालजी रमपुरा उझेनियाँ पो० अटहा चाँदपुर जिला पीलीभीत
२) श्री० आर०गौतम नई दिल्ली
२) श्री० पं० जोगेन्द्रनाथ चक्रवर्ती दरसाना जिला नदिया (बंगाल)
२) श्री० पं० करणसिंह रामजीदासजी सेकिण्डमास्टर मिडिलस्कूल तिगराणा(हिसार)
२) श्री० पं० मेवालालजी तारबाबू बीसलपुर जिला पीलीभीत
२) श्री० पं० बाबूरामशर्मा ठेकेदार माजा तोली पो० साखिनी जिला बुलन्दशहर
२) श्री० पं० भागीरथलालजी शर्मा बरवाड़ा (हिसार)
२) श्री० पं० सूर्यभानुजी शर्मा ,, ,,
२) श्री० पं० शिवकरणजी विशारद—बरवाड़ा (हिसार)
२) श्री० पं० शिवदयालुजी दौलतरामजी मु० पावड़ा जि० हिसार
२) श्री० पं० शोशरामजी नैला पो० उकलाना जि०हिसार
२) श्री० पं० माताराम्जी मु० कैना पो० किरवाड़ा जि० हिसार
२) श्री० पं० हरस्वरूपजी शर्मा बिजनौर

११०) योग

उपदेशक विभाग में सहायता प्राप्त

३५०) श्री० पं० ऋषिरामजी महाराज ईसा आज़म लाहोर ने ५०) मासिक के हिसाब से ७ मास का शेष धनचुकता दिया।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विशेष सहायता

१) श्री० पं० सूर्यभानुजी शर्मा धामपुर (बिजनौर)
॥) श्री० पं० हाजूरामजी वैद्य पुरैनी ,,
१) श्री० पं० आनन्दीप्रसादजी त्रिपाठी पुजारी नगीना जिला बिजनौर
१) श्री० पं० हरिप्रसादजी उपाध्याय नगीना जिला बिजनौर
१) श्री० पं० बाबूरामजी वैद्य नगीना जिला बिजनौर
१) श्री० पं० रामप्रसादजी शर्मा मु० बिहटा जि० अम्बाला
१) श्री० पं० शादीरामजी शर्मा ,, ,,
१) श्री० पं० जीवानन्दजी शर्मा ,, ,,
॥) श्री० पं० ज्योतिप्रसादजी शर्मा ,, ,,
॥) श्री० पं० आशाराम केदारनाथजी ,, ,,
॥) श्री० पं० ज्योतिप्रसादजी ,, ,,
।=) श्री० पं० बनारसीदास जी शर्मा बिहटा जिला अम्बाला
।) श्री० पं० विश्वेश्वरनाथजी शर्मा ,, ,,
।) श्री० पं० चिरञ्जीलालजी शर्मा ,, ,,
।) श्री० पं० शिवसहायजी शर्मा ,, ,,
≡) श्री० पं० कुन्दनलालजी शर्मा ,, ,,
१) श्री० पं० मुरलीधरजी स्वामी तिसोतरा जिला बिजनौर
१) श्री० पं० झुन्झूमलजी शर्मा किरतपुर [बिजनौर]
१) श्री० पं० तेजरामजी शर्मा मु० सुआहेड़ी [बिजनौर]
१) श्री० पं० हुल्करजी महाराज ,, ,,
१) श्री० पं० रामस्वरूपजी शर्मा दारानगर गंज जिला बिजनौर
॥) श्री० पं० मुरारिलालजी शर्मा ,, ,,
॥) श्री० पं० अयोध्याप्रसादजी शर्मा ,, ,,
१०) ब्राह्मण मण्डली दनकौर जिला बुलन्दशहर
१) श्री० पं० सनेहीलाल जी जहानाबाद जिला पीलीभीत
१।) श्री० पं० शिवलाल कुन्दनलालजी हलद्वानी [नैनीताल]
।-) श्री० पं० जगन्नाथजी शर्मा हलद्वानी ,,
।) श्री० पं० मूलचन्दजी शर्मा ,, ,,
≡) श्री० पं० क्षेत्रपालजी शर्मा ,, ,,
१) श्री० पं० श्रद्धारामजी शर्मा मु० मनीमाजरा जिला अम्बाला
२) श्री० पं० ब्रह्मानन्दजी जमींदार मु० मनीमाजरा जिला अम्बाला
१) श्री० पं० शिवरामजी गौड़ मु० रानीका रायपुर ,,
२) श्री० पं० रामप्रसादजी ,, ,,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

११) श्री० पं० बैजनाथजी गौड़ जगाधरी जिला अम्बाला अपने विवाह में दान किया
५) श्री० पं० हरप्रसादजी मिश्र रईस कनखल [सहारनपुर] अपने पुत्र के विवाह में दान किया
१००) श्री० पं० क्षेत्रपालजी शर्मा मालिक 'सुखसंचारक कम्पनी' मथुरा ने अपने पुत्र चि० शक्तिपाल जी के विवाह में दान दिया।
५०४) श्री० रायबहादुर पं० बनारसीप्रसाद जी मिश्र बी० ए० एडवोकेट मुरादाबाद ने (ता० १६ अप्रैल सन् ३० से ता० ३१ दिसम्बर सन् १६३० ई० तक का) कार्यालय मंत्री का वेतन दिया।

६५५।-) योग

३४४) छात्रवृत्ति विभाग में सहायता प्राप्त ।

७२) श्री०पं०रामचन्द्रजी दुबे दर्बार सेक्रेट्री महाराजा झाबुआ पो०झाबुआ सी०आई० ६) मासिक के हिसाब से पूरे सालभर का धन भेजा
३६) श्री० पं० रायसाहिब पं० प्रभुदयालजी शर्मा बी० ए० एल० एल० बी०, ई० ए० सी० होशियारपुर ने ६) रुपये मासिक के हिसाब से ४ मास का धन।
२५) श्री० रा० ब० पं० बैनीप्रसादजी मिश्र एम० ए० देहरादून ने ८)रु० मासिक के हिसाब से तीन मास का धन
१५) श्री० रायसाहिब डा० पं० मुरारिलालजी शर्मा मुरादाबाद ५) मासिक के हिसाब से तीन मास का धन
३०) श्री० पं० राजारामजी शर्मा आढ़ती चोहड़पुर देहरादून ५) मासिक के हिसाब से ६ मासका धन
१०) श्री० पं० देवीचन्द्रजी शर्मा शिमला ने ५) रु० मासिक के हिसाब से शेष दो मास का धन
६०) श्री० पं० क्षेत्रपाल जी शर्मा मथुरा ने १०) रु० मासिक के हिसाब से ६ मास का धन भेजा।
३०) श्री० रायसाहिब हकीम पं० बैजनाथ जी त्रिवेदी मुरादाबाद ने ५) मासिक के हिसाब से ६ मास का धन
१८) श्री० पं० शिवचरणजी तिवाड़ी मुख्तार अमरोहा ने २ मासिक के हिसाब से शेष ६ मास का धन भेजा।
३०) श्री० पं० शिवप्रसाद जगन्नाथ जी रईस मुरादाबाद ने ५) मासिक के हिसाब से शेष ६ मास का धन भेजा
१२) श्री० पं० श्यामलालजी गौड़ ठि०सुखसंचारक कम्पनी मथुरा ने शेष ६ मास का धन २) मासिक के हिसाब से
१२) श्री० पं० मोहनलालजी तिवाड़ा हापुड़ जिला मेरठ ने २ रु० मासिक के हिसाब से छः मास का धन ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शोक समाचार

(१)

अत्यन्त ही दुःख के साथ लिखना पड़ता है कि गत अक्टूबर की पत्रिका में हम जिन महानुभाव का गुणानुवाद और प्रशंसा लिख रहे थे काल की कराल गति से इस दूसरे ही अङ्क में हम उनकी मृत्यु का समाचार लिख रहे हैं। खेद है कि उझानी ज़िला बदायूं निवासी, गौड़ कुल भूषण श्रीमान् पं० अयोध्याप्रसादजी महाराज रईस आजम, भूतपूर्व चेयरमैन म्यूनिसपेल बोर्ड और ऑनरेरी मजिस्ट्रेट अब इस असार संसार में नहीं हैं। उन्होंने इसी मास अर्थात् ८ दिसम्बर सन् १९३० को प्रातःकाल ६ बजे स्वर्ग यात्रा की।

स्वर्गीय श्रीमान् से हमारा १५। १६ वर्ष से घनिष्ट प्रेम था और उनकी चित्तकी वृत्ति हमारी ओर इतना स्नेह रखती थी कि जिसका वर्णन हम आज लिखने से असमर्थ हैं यही कारण था कि हम निष्प्रयोजन भी वर्ष में १२ बार उनके दर्शन कर आया करते थे। जितना समय हम उनके सहवास में बिताते थे वह बराबर प्रेम और स्नेह की बातों ही में व्यतीत होता था, बिना एक दो ट्रेन छुड़ाये हुए वे हमको आने ही नहीं देते थे।

जब जब हम उक्त श्रीमान् से मिलते तो उनके हृदय में जाति के प्रति अगाध प्रेम, उस की उन्नति के लिये गम्भीर चिन्ता और उसके उत्थान के लिये नये नये उपायों का चिन्तवन सदैव पाया। मेरे द्वारा सम्पादित मेरे निजी पत्र गौड़ हितकारी के वे जन्म से स्थायी ग्राहक थे और वह सदैव उसको बड़े प्रेम से पढ़ते थे और जब जब वह मुझ से मिलते थे सदैव यही कहा करते थे कि आपके गौड़ हितकारी के कारण हमको दूर २ के गौड़ भाइयोंके समाचार पढ़कर बड़ा आनन्द आता है।

इधर एक वर्ष से अधिक होगया था कि मैं अपनी अस्वस्थता तथा इधर लगभग ८। १० मास से निरन्तर मुरादाबाद रहने की वजह से उक्त श्रीमान् के दर्शन न कर सका था अतः इधर मेरा और उधर उनका चित्त एक दूसरे से मिलने को व्याकुल हो रहा था कि इसी नवम्बर मास में मुझ को बदायूं प्रान्त का भ्रमण करना पड़ा और उसी सिलसिले में ता० २६ नौम्बर सन् ३० को उझानी जाना पड़ा. जिस समय मैं उनके भव्य भवन पर पहुँचा

Kirtikant Sharma Collection. Digitized by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तो श्रीमान् पं० अयोध्याप्रसाद जी महाराज अपनी गद्दी पर विराजमान् थे मुझे दरवाजे में घुसता देख कर ही प्रसन्न होगये और आनन्द से ऐसे गद्गद् हुए कि न मालूम अपना आत्मीय प्रेमी कितने अर्से बाद मिला हो और कुशल प्रश्न के अनन्तर मुझे प्रेमपूर्वक यही उलाहना दिया कि इस बार तो आपने बड़े दिन बाद मुझ पर कृपा की। मैंने निवेदन किया कि इस वर्ष मैं बहुत बीमार रहा और बीमारी के सिलसिले ही में मुझको मुरादाबाद रहना पड़ा और बाद को महासभा के कार्य्य भार से विशेष कहीं आ जा न सका। इस कारण श्रीमान् के दर्शनों से वंचित रहा, नहीं तो इतना विलम्ब आपके दर्शनों में मुझे कदापि न होता। इसी से आप लोग उनके प्रेमका पता लगा सकेंगे कि उनका हृदय मेरी ओर कितना था।

दुःख है कि आज वह प्रेमकी साक्षात् मूर्ति इस नश्वर संसार से अदृश्य हो गई। आज उझानी की गौड़ जाति का जगमगाता सितारा टूट कर गिर पड़ा, और आज बदायूं प्रान्त के गौड़ ब्राह्मणों के सिरमौर को इस कराल काल ने असमय में ही ग्रस लिया।

यह बात मैं गतांक में लिख चुका हूँ कि इस वर्ष उनका दृढ़ विचार महासभा के वार्षिकोत्सव में बड़ी श्रद्धा और प्रेम से बरेली सम्मिलित होने का था और मेरे इस बात के प्रगट करने से कि इस वर्ष पूज्य धर्मभूषण श्री० पंडित गोविंदप्रसाद जी कौशिक बी० ए० व्यावर निवासी सभापति मंच पर विराजेंगे, वे फूले अङ्ग नहीं समाये थे और सहसा उनके मुखसे यही शब्द निकले थे कि यह आपने बहुत ही उत्तम विचार निश्चय किया। श्री० पूज्य कौशिकजी के कारण अब न केवल मैं बल्कि १०।१२ गौड़ भाई तो उझानी से अवश्य ही महासभा में सम्मिलित होंगे। मगर कौन जानता था कि २७ नौम्बर सन् ३० की यह बातें १० दिन बाद ही सपने की सी बातें हो जावेंगी और जो आमोद प्रमोद उनके सहवास और दर्शनों से २७। २८ दिसम्बर के दिन बरेली में देखने की हम उत्कट लालसा लगाये हुए हैं उस पर भयंकर वज्रपात हो जायगा।

यद्यपि श्रीमान् पं० अयोध्याप्रसाद जी की अवस्था इस समय मेरे अनुमान से ६० वर्ष के लगभग थी परन्तु उनकी निरोग काया सादा रहन सहन, सात्विकी आहार विहार और नियमानुकूल दिनचर्य्या से अभी वह पूर्ण स्वस्थ थे और २७। ११। ३० को कि जब मैं अन्तिम बार उनसे मिला हूं यह बात मेरे ध्यान में भी नहीं आसकती थी कि आज से १० दिन बाद ही यह स्वस्थ शरीर,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तपोमूर्ति और आनन्दमयी, प्रसन्नमुख प्रतिमा सदा के लिये पंचतत्व में विलीन होजायगी। बल्कि जिस समय मैं २७ नौम्बर को उनसे विदा होरहा था वह अन्दर हवेली में स्नान कर रहे थे उनके सहोदर छोटे भाई श्री० पं० वंशीधर जी ने पुकार कर कहा कि मथुरा वाले पण्डित जी जारहे हैं तो उन्होंने अन्दर से ही उत्तर दिया कि १ मिनट ठहरें मैं आरहा हूं और तत्काल धोती ओढ़े हुए बड़ी फुर्ती से बाहर आगये और नंगे पैरों मेरे साथ तांगे तक आये। इससे मैं आप को यह बतलाना चाहता हूँ कि उनकी अवस्था चाहे कितनी भी हो मगर वे उस दिन तक शिथिल नहीं थे और किसी अङ्ग प्रत्यङ्ग से यह विदित नहीं होता था कि यह इतने शीघ्र हमारे बीच से सदा सदा को चले जावेंगे।

अभी पिछले दिनों जब मैं उनके सहोदर भाई, पुत्र और कुटुम्बियों के साथ सहानुभूति प्रदर्शन के लिये उझानी गया तो मुझे मालूम हुआ कि वे साधारण से २ दिन बीमार रहे कि जिस बीमारी को किसी ने भी उनका अन्तिम समय नहीं पहचाना। सब इसी ख़याल में रहे कि यह तो मामूली बात है यहाँ तक कि उनके प्रिय भतीजे चि० ब्रजराज और सुरेन्द्रनाथ जो बदायूं हाई स्कूल में पढ़ रहे हैं उनके जीवन काल में न आसके। इस से आप भली भांति अनुमान लगा सकते हैं कि वे अन्तिम समय तक पूर्ण स्वस्थ रहे।

उनकी लोक प्रियता केवल इसी से जानी जाती है कि उनके स्वर्गारोहण की सूचना ता० ८। १२। ३० को प्रातः काल बिजली की तरह उझानी नगर में फैल गई और बिना किसी आदेश के सब लोगों ने बाज़ार बन्द कर दिया और उस दिन तमाम शहर में उनके शोक में पूरी हड़ताल रही। करीब १५०० मनुष्यों की गहरी भीड़ ने नंगे पैरों उझानी से ७। ८ मील दूर श्रीमान स्वर्गीय पं० अयोध्याप्रसाद जी के शव को श्रीगंगा तट पर पहुँचाया कि जहां उनका दिव्य शरीर पञ्चतत्व में मिलगया।

उनके गुणानुवादों को हम कहां तक लिखें क्यों कि वे तो इसी प्रकार के जीव थे कि उनकी गुणावली जितनी ही लिखी जावे थोड़ी है। परन्तु इससमय उनके वियोग का शोक भी हमारे चित्त में इतना अधिक है कि जिसके कारण लेखनी नहीं चलती और नेत्र प्रेमाश्रुओं से बार बार भर कर लिखने को रोकते हैं। इसलिये हम उनके चित्र और चरित्र को तो फिर कभी आप लोगों की भेंट करेंगे आज तो केवल सर्वशक्तिमान् ईश्वर से यही प्रार्थना कर कि उनकी पवित्र आत्मा को स्वर्ग में उच्चासन प्रदानकर उनके दुःखीपरिवार को पूर्ण सान्त्वना दे अपने प्रेमाश्रुओंकी अंजुलि उनके प्रति समर्पणकर इन पंक्तियोंको समाप्त करते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(२)

दूसरा शोक जो हमको इसी मास में सहन करना पड़ा वह हमारे पूज्य सभापति जी साक्षात् ऋषि, गौड़ जाति के सूर्य लाहौर के रईस आज़म श्रीमान् पं० ऋषिराम जी महाराज की साध्वी, विदुषी धर्मपत्नी के स्वर्गवास से हुआ। यह दुर्घटना भी इसी १५ दिसम्बर को हुई। इस शोक से उस समय महासभा के वार्षिकोत्सव के उत्साह में जो धक्का लगा उसको वेही लोग जानते हैं कि जिनको यह बर्दाश्त करना पड़ा।

गत जनवरी सन् ३० में तीर्थराज प्रयाग के पवित्र कुम्भस्नान के लिये स्वर्गीय श्रीमती जी श्रीमान् सभापति जी के साथ महासभा के ३२ वें वार्षिकोत्सव के समय प्रयाग पधारी थीं मैंने उनके श्रीचरणों के उसी दिन दर्शन किये थे और उसी दिन मैंने यह अनुभव किया था कि जैसे धर्मके पुंज श्रीमान् सभापति जी हैं वैसी ही सनातन धर्म की कट्टर अनुयायी श्रीमती जी हैं। मकर के भयंकर शीत में प्रेम से दिन में कई बार श्रीगंगाजीमें गोता लगाना और श्रीगंगाजल ही पान करना उनकी धर्मनिष्ठा को पूर्ण रूप से प्रगट कर रहा था।

यद्यपि वे इधर कई मास से रुग्ण थीं परन्तु श्रीमान् पूज्य पं० ऋषिराम जी महाराज जिस चिन्ता और अपरिमित धन व्यय करके उनकी चिकित्सा करा रहे थे उससे यह विश्वास होता था कि वे शीघ्र ही आरोग्य लाभ प्राप्त करेंगी। मगर कराल काल से किस का वश चला है और होनहार ने कब किस का समय टलने दिया है अन्त का १५ दिसम्बर सन् ३० को विधाता ने हमें वह समाचार सुना ही दिया कि जिसकी सम्प्रति आशा न थी। उस दिन से वार्षिकोत्सव के केवल १२ दिन शेष थे। यह आशा कर रहे थे कि शीघ्र ही प्रसन्न चित्त श्रीमान् सभापतिजी के दर्शन होंगे मगर सहसा इस समाचार ने हमारी उस आशालता पर तुषार गिरा दिया और ठीक महासभा के वार्षिकोत्सव पर इस दुःखने दुखी कर हमारे साहस को शिथिल कर दिया।

स्वर्गीय श्रीमतीजी की अन्त्येष्टि और त्रयोदशा ता०२६। १२। ३० के दिन अर्थात् महासभा के वार्षिकोत्सव से केवल एक दिन पूर्व ही था। इसलिये श्रीमान् पं० ऋषिराम जी महाराज का बरेली महोत्सव में पधारना एक प्रकार से असम्भव था, परन्तु जो महात्मा इस सिद्धान्त के पुरुष हैं कि:—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निन्दन्तु नीतिनिपुणा यदि वा स्तुवन्तु-
लक्ष्मीसमाविशतु गच्छतु वा यथेष्टम् ।
अद्यैव वा मरणमस्तु युगान्तरे वा-
न्यायात्पथः प्रविचलन्ति पदन्नधीराः ॥

अर्थात्—कोई हमारी निन्दा करे वा प्रशंसा करे, लक्ष्मी आवे या चली जावे, आज ही यह शरीर समाप्त होजावे या युगों तक जीवित रहे, बुद्धिमान पुरुष अपने कर्तव्य कर्म से पीछे नहीं हटते ।

हमारे पूज्य सभापति जी सदैव इसी अटल नियम के पालने वाले हैं तथा इस अवसर पर भी सिद्ध हुए । सहधर्मिणी के आजन्म वियोग की ज्वाला से दुःखी होते हुए भी अपने जातीय महासभा के वार्षिकोत्सव पर पहुंचना आवश्यकीय समझ ता० २७ । १२ । ३० को प्रातः काल बरेली पहुँचे । ऐसे धीर वीर पुरुष की अर्द्धाङ्गिनी भी कैसी विदुषी होंगी आज इसी समस्या को स्मर्ण कर और उनके आजन्म वियोग का विचार कर हमारा हृदय अत्यन्त दुःखी है । अतः इस दुःख में हम आज विशेष न लिख उस सर्वव्यापी, घट घट की जानने वाले प्रभु से बद्धाञ्जलि यही प्रार्थना करते हैं कि वह स्वर्गीय श्रीमती जी की पुण्यात्मा को स्वर्गमें पूर्ण सुख और शान्ति प्रदान करें और उनके शोकित परिवार को इस वियोग कष्ट के सहने की शक्ति प्रदान करें । श्रीमान् पूज्य पण्डित जी के साथ हमारी पूर्ण सहानुभूति और उनके इस कष्ट में हार्दिक समवेदना है ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बुलन्दशहर

पाठकों को यह बात भली भाँति विदित है कि संयुक्त प्रदेश आगरा और अवध में केवल मेरठ कमिश्नरी ही वह कमिश्नरी है जिसमें गौड़ ब्राह्मणों की संख्या और अन्य प्रान्तों की संख्या से सबसे अधिक निवास करती है। मेरठ कमिश्नरी के ५ ज़िलोंमें से ४ ज़िले सहारनपुर मुज़फ्फ़रनगर मेरठ और बुलन्दशहर गौड़ ब्राह्मणों से भरे पड़े हैं। यदि दूसरे शब्दों में यह कहा जाय तो कुछ अनुचित न होगा कि इन ४ ज़िलों में सिवाय गौड़ ब्राह्मणों के और किसी दूसरी प्रकार के ब्राह्मण वहाँ के निवासी ही नहीं हैं। इस कमिश्नरीका पाचवाँ ज़िला देहरादून है कि जिसका विवरण हम 'पत्रिका' के सबसे पहले अङ्क जौलाई सन् ३० की संख्या में प्रकाशित कर चुके हैं। आज हम इस कमिश्नरी के अन्तिम ज़िले बुलन्दशहर के गौड़ भाइयों का विवरण आप लोगों की सेवा में भेट करते हैं और इसके पश्चात् मेरठ, फिर मुज़फ्फ़रनगर और बाद को सहारनपुर के विवरण भेट करेंगे।

बुलन्दशहर ज़िला भौगोलिक क्रम से मेरठ कमिश्नरी का पाचवाँ यानी अंतिम ज़िला है। भौगोलिक क्रम से पहला देहरादून, दूसरा सहारनपुर तीसरा मुज़फ्फ़रनगर, चौथा मेरठ और पाचवाँ बुलन्दशहर हैं, क्योंकि येइसी क्रमसे स्वाभाविकरीति से बने हुए हैं। गत वर्ष श्रीमान् पूज्य रायबहादुर पं० बनारसीप्रसाद जी सिंघ महाराज ने जब इस प्रान्त वार विवरण प्रकाशन की प्रणाली को प्रारम्भ किया तो कार्य्यक्रम शृङ्खलाबद्ध नियमानुसार करने की दृष्टि से ही हमने सबसे प्रथम देहरादून से कार्य्य प्रारम्भ किया और सबसे प्रथम मई मास में महासभा के उपदेशक जी को देहरादून भ्रमण और वहाँ के गौड़ ब्राह्मणों की सूची बनाने तथा उस प्रान्त के विवाह योग्य वर कन्याओं की तालिका तैयार करने और उस प्रान्त के सम्पन्न गौड़ भाइयों की व्यवस्था जानने के लिये भेजा। उस प्रान्त के बाद उनको सहारनपुर ज़िला उक्त कार्य्यों के लिये दिया जाता परन्तु वे देहरादून से वापिस आकर अस्वस्थ हो गये और तबसे अब तक काम पर नहीं आये। बाद को जो उपदेशकगण रक्खे गये वे पंजाब में इसी प्रकार काम करने को भेजे गये पश्चात् जो और उपदेशक रक्खे गये वह रुहेलखण्ड कमिश्नरी से विशेष परिचित होने के कारण इस कमिश्नरी में काम करते रहे! इस लिये अभी तक सहारनपुर ज़िले में उपदेशक नहीं जासके हैं, परन्तु बुलन्दशहर और मेरठ समाप्त कर अब मुज़फ्फ़रनगर में भ्रमण हो रहा है। इसके बाद सहारनपुरका ही नम्बर है। अतः पाठकगण बजाय सहारनपुर, मुज़फ्फ़रनगर मेरठ और बुलन्दशहर इस क्रम के बुलन्दशहर, मेरठ मुज़फ्फ़रनगर और सहारनपुर इस क्रम से इन प्रान्तों के विवरणों को पढ़ेंगे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बुलन्दशहर ज़िला बहुत प्राचीन ज़िला है जो गङ्गा और यमुना के बीच में बसा हुआ है। इसके उत्तर में ज़िला मेरठ, दक्षिण में ज़िला अलीगढ़, पश्चिम में सूबा देहली और ज़िला गुड़गाँव तथा पूरब में ज़िला मुरादाबाद और ज़िला बदायूं है। गङ्गा और यमुना के अतिरिक्त कालीनदी, हिण्डननदी और छोइया नदी से यह ज़िला अत्यन्त ही उपजाऊ और पैदावारी में उत्तम है। इसमें गङ्गा की नहर दो शाखों में होकर ज़िले की भूमि को खूब ही उन्नति पर पहुँचा रही है। इसी कारण से इस ज़िले के गौड़ ब्राह्मण बहुताइत से ज़िमींदार, काश्तकार और खेती बारी का काम करने वाले पाये जाते हैं।

इस ज़िले में चार तहसील और बारह परगने हैं जो सब के सब गौड़ ब्राह्मणों से भरे हुए हैं। सिकन्दराबाद खुर्जा, बुलन्दशहर और अनूपशहर यह चारों तहसीलें एक दूसरे से पक्की सड़कों और रेलवे लाइनों से मिली हुई हैं। इस ज़िले में रेलवे लाइन थोड़ी है मगर पक्की सड़कें बहुताइतसे हैं। ई०आई०आर०की मुख्य लाइन खुर्जे से दादरी तक और उसकी ब्रांच लाइन खुर्जा जंकशनसे बुलन्दशहर होती हुई हापुड़ तक चली गयी है। पक्की सड़के प्रत्येक बड़े कसबे और गावों तक के लिये मौजूद हैं कि जिन सब पर मोटर लारियाँ खूब चलती हैं। इस प्रकार इस ज़िले में सवारी का कोई कष्ट नहीं है।

बुलन्दशहर में कलेक्टरी, मुन्सिफ़ी, सबजजी और जजी की सबसे बड़ी कचहरियाँ तक मौजूद हैं। इसी लिये इस ज़िले के वकील, मुख्तार साहिबान में अधिक संख्या गौड़ ब्राह्मणों की है। वकील मुख्तारों की सूची इस लेख के अन्त में आप लोग देखेंगे। आपकी इस जातीय महासभा का प्रधान कार्य्यालय १ अप्रैल सन् २१ से ३१ दिसम्बर सन् २५ तक लगभग ५ वर्ष इसी बुलन्दशहर नगर में रहा है, इस लिए भी गौड़ जाति में बुलन्दशहर ज़िले को गौरव प्राप्त है।

जिस समय अ० भा० गौड़ ब्राह्मण महासभा का कार्य्यालय बुलन्दशहर में आया उस समय इसके महामन्त्री श्रीमान् पं०शम्भूदत्तजी शर्म्मा बी० ए० एल-एल० बी०- एडवोकेट बुलन्दशहर थे। यद्यपि आप इस ज़िले के निवासी नहीं हैं आप ग्राम धाँधलायन ज़िला रोहतक के रईस हैं परन्तु आपने अंग्रेज़ी की उच्च शिक्षा यू० पी० के प्रसिद्ध नगर आगरा में प्राप्त की है और वहीं से एल-एल० बी० की परीक्षायें पास कीं। अतः आपका प्रेम यू०पी०से साधारणतया हो गया। कालिज से निकलते ही आप डिबाई ज़ि०बुलन्दशहरमें एक अंग्रेज़ी स्कूल के हैडमास्टर हो गये और वहीं से आपको बुलन्दशहर ज़िले से प्रेम हुआ और इसीलिये आपने बुलन्दशहर ही में स्थापित होकर वकालत करना प्रारम्भ करदी। इस समय आप बुलन्दशहर के उच्च वकीलों की गणना में हैं जिसका ज्वलन्त प्रमाण यही है कि हाईकोर्ट से आपको उन प्रारम्भिक वकीलों को ६ महीने का ट्रेनिङ्ग देने का अधिकार प्राप्त है कि जो एल-एल०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बी० पास करके बिना छः मास किसी बड़े वकील के पास ट्रेनिङ्ग पाये, वकालत प्रारम्भ नहीं कर सकते। आपके पास प्रति वर्ष २।३ वकील साहिबान ट्रेनिङ्ग पाते ही रहते हैं। यह तो हुई आपकी शिक्षा सम्बन्धी योग्यता; साथ ही जातीय प्रेम की तो आप साक्षात् स्वाभाविक मूर्ति हैं और प्रत्येक गौड़ ब्राह्मण भाई को अपना सहोदर भाई समझते हैं। गौड़ जाति की सेवा करना, उसके प्रति अपनी यथाशक्ति सेवा सहायता अर्पण करते रहना आपका साधारण कार्य है। भाइयों के आतिथ्य सत्कार को आप अपना मुख्य कर्त्तव्य समझते हैं, यही कारण है कि बुलन्दशहर में दर्जनों सम्पन्न गौड़ भाइयों और कोड़ियों वकील मुख्तार साहिबानके निवास करते हुए भी बाहर के गौड़ भाई सबसे प्रथम आप ही के यहाँ पहुँचते हैं और बिना भोजन किये हुये वापिस ही नहीं आते। हँसी मज़ाक में बुलन्दशहर निवासी, श्रीमान् पण्डित शम्भूदत्त जी शर्म्मा के स्थान को गौड़ भाइयों की धर्मशाला और विश्रामशाला सम्बोधित करते रहते हैं। आप पूर्ण जाति हितैषी पक्के जाति भक्त और दृढ़ जात्यनुरागी हैं, बिना किसी विशेष कारण के आप कभी महासभा के किसी वार्षिकोत्सव से अनुपस्थित नहीं हुए। सन् १९२१ से सन् १९३० तक बराबर महासभा की मैनेजिङ्ग कमेटी के मेम्बर रहे। ऐसे जाति प्रेमी पुरुष की जितनी प्रशंसा की जावे थोड़ी है। परमात्मा ऐसे सज्जनों का दीर्घकाल तक विद्यमान रक्खे हमारी यही प्रार्थना है।

जिस प्रकार वकीलों में हमारे श्रीमान् पं० शम्भुदत्तजी महाराज को बुलन्दशहर में जाति प्रेम का अग्रगण्य नेता कहा जाता है उसी प्रकार मुख्तारों में गौड़ कुलभूषण स्वनाम धन्य श्रीमान् पं० रामप्रसादजी शर्मा साहिब को यह गौरव प्राप्त है आपके गुणों की प्रशंसा करना सूर्य्य को दीपक दिखाने के सदृश है। आप भी एक वर्ष अपनी इस महासभा के प्रधान मंत्री रह चुके हैं। दिसम्बर सन् २४ में इस महासभा का जो २७वाँ वार्षिकोत्सव बुलन्दशहर में बड़ी आन बान और शान से हुआ था उसका एक मात्र कारण उस समय की स्वागत कारिणी के प्रधान मंत्री इन्हीं शर्माजी के होने का था उस समय दूर देश से पधारे हुए तथा बुलन्दशहर प्रान्त के भाइयों को आपके सेवा सत्कार और स्वागत भाव को देख कर इतनी प्रसन्नता और इतनी अधिक आपमें श्रद्धा उत्पन्न हुई थी कि उसी वार्षिकोत्सव में आप महासभा के प्रधान मंत्री निर्वाचित हुए। आपकी योग्यता और जातीय प्रेम का इससे अधिक प्रमाण और क्या दिया जा सकता है। गत दो वर्ष से आप महासभा के ऑडीटर (आय-व्यय निरीक्षक) हैं, कि जिस कठिन ड्यूटी को आप बड़े प्रेम से निबाह रहे हैं। आप जैसे जाति प्रेमी हैं वैसे ही उदार भी हैं। गतवर्ष आप ने ५) मासिक की एक छात्रवृत्ति एक वर्ष के लिए गौड़ महासभा को प्रदान की कि वह किसी भी एक दीन हीन, विद्यानुरागी गौड़ विद्यार्थी को प्रदान करे, इस प्रकार ६०) का दान कर आपने अपनी उदारता का ज्वलन्त प्रमाण दिया है। आप की प्रेक्टिस इस समय बुलन्दशहर के मुख्तारों में सर्वोच्च और सर्वोपरि है कि जिसके कारण

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आपको बहुत ही कम अवकाश मिलता है। एक असाधारण गुण जो आप में है वह है आपकी मिलनसारी। इसगुण के कारण आप न केवल ब्राह्मणों के बल्कि मनुष्यमात्र के प्यारे हो रहे हैं. स्थानीय डी०ए० वी० हाई स्कूल आपकी ही देखरेख में चल रहा है और भी कई संस्थाओं में आप काम कर रहे हैं और उनके अग्रगण्यनीय नेता हैं। ऐसे उपकारी और परिश्रमी शरीर की हम क्या प्रशंसा करें, क्योंकि उनकी तो प्राणीमात्र प्रशंसा कर रहा है। हमें यह लिखते हर्ष होता है कि जैसे शर्म्मा जी योग्य उदार, मिलनसार, मिष्टभाषी और जात्यनुरागी सज्जन हैं वैसी ही उनकी सन्तान हैं। आपके सुयोग्य पुत्र श्री० पं० जगदीश प्रसाद जी शर्मा एम० ए० को देख कर कौन सज्जन यह न कहेगा कि श्रीमान् शर्मा जी के समस्तगुण परमात्माने इनमें भर दिये हैं आप इस वर्ष एल-एल० बी० की अन्तिम परीक्षा में बैठरहे हैं कि जिस को पास कर वह शीघ्र ही एडवोकेट बनेंगे। परमात्मा इनको चिरंजीव रक्खे और इनको भी अपनी जाति के प्रति पूर्ण सेवा करने का अवकाश दे, ताकि इस गौड ब्राह्मण जाति का शीघ्र ही उत्थान और अभ्युदय हो सके। जो गुण शर्मा जी के इन होनहार चिरंजीव में है उस से अधिक गुण इनकी सुयोग्य विदुषी कन्याओं में है। सब से बड़ी पुत्री पाठकों के सुपरिचित श्री० रायबहादुर पं० बनारसीप्रसाद जी मिश्र की बड़ी पुत्रवधू हैं। श्रीमान् रायबहादुर मिश्र जी महाराज की सहधर्म्मिणी जी के परलोक वास हो जाने से इस बड़े घर के बड़े परिवार का प्रशंसनीय प्रबन्ध यही कर रहीं हैं उसको देखकर हमको श्री० जनक जी महाराज का वह आशीर्वाद स्मरण आता है कि जो उन्होंने अपनी प्रिय पुत्री जानकी के प्रति कहा था कि:—

"पुत्रि पवित्र किये कुल दोऊ। सुयश धवल जग कह सब कोऊ॥"

वास्तव में पुत्र से तो एक ही वंश की शोभा होती है लेकिन पुत्री दो कुलों को शोभित करती है। शर्मा जी इस सम्बन्ध में बड़े ही भाग्यवान् पुरुष हैं। अपनी गौड़ जाति को ऐसे पुरुषों के प्रसव करने का सौभाग्य प्राप्त है।

बुलन्दशहर में गौड़ जाति के तीसरे प्रतिष्ठित और उल्लेख योग्य पुरुष श्रीमान् पं० सोहनलाल जी महाराज वकील, भूतपूर्व चेयरमैन म्यूनिसपल बोर्ड बुलन्दशहर हैं। आप कई वर्षतक इस अखिल भारतवर्षीय गौड़ ब्राह्मण महासभा के कोषाध्यक्ष रहचुके हैं आप जैसे धनसम्पन्न पुरुष हैं वैसे ही उदार और दानी भी हैं आपने हाल ही में बुलन्दशहरमें एक बहुतही विशाल और भव्य भवन निर्माण किया है कि जिसको आप पिछले दिनों इस महासभा को दान करना चाहते थे, परन्तु अब कुछ अर्से से आपका यह विचार बदल गया है। लेकिन यदि महासभा के सच्चे शुभचिन्तक उन का विश्वास दिलाते हुए इस विषय में उनसे प्रार्थना करें तो उनको अपने पूर्व संकल्प पर आजाना कोई कठिन बात नहीं है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खेद है कि आपके कोई सन्तान नहीं है इसीलिये आप सदैव गौड़जाति के अनाथ एक बालक को अपने यहां रख कर उसको उच्चशिक्षा देते रहते हैं और अन्य प्रकार से भी आप ऐसे गौड़ बालकों की सहायता करते रहते हैं कि जो गरीब और धन हीन होने से विद्याध्ययन नहीं कर सकते। ऐसे जाति प्रेमी और उदार सज्जन की जितनी प्रशंसा की जाये थोड़ी है।

आप जैसे जाति प्रेमी हैं वैसे ही लोक प्रिय और देश प्रेमी भी हैं जिस का प्रमाण यही है कि आप बुलन्दशहर म्यूनिस्पेल बोर्ड के बहुत अर्से तक चेयरमैन रहे। आप कई साल तक अपने बाहुबल से श्री० प० नानकचन्द्र जी शर्मा एम० ए० एल-एल० बी० को लेजिस्लेटिव कौन्सिल का मेम्बर चुनवाते रहे। यह श्रीमान् पं० सोहन लाल जी महाराज की ही कोशिश का फल था कि श्री० पं० नानकचन्द्र जी एम० ए० शाहदरा देहली के निवासी होते हुए बुलन्दशहर से कौन्सिल के मेम्बर होते रहे। इस वर्ष श्री० पं० नानकचन्द्र जी एम० ए० के इलाहाबाद चले जाने से श्रीमान् पं० सोहनलाल जी ने शिकारपुर निवासी रायबहादुर श्री० चौधरी पं० रघुराजसिंह जी रईस आज़म और चेयरमैन डिस्ट्रिक्टबोर्ड बुलन्दशहर की कोशिश की और चौधरी साहिब बड़ी आसानी से लेजिस्लेटिव कौन्सिल यू० पी० के मेम्बर होगये। इस से आप लोगों को श्रीमान् पं० सोहनलाल जी महाराज की प्रतिष्ठा और उनके गौरव का अन्दाजा भली भाँति लग सकता है।

हमें खेद है कि गत ५। ६ वर्षों से, कारण विशेषों से आप अपनी जातीय महा सभा से कुछ उदासीन से होरहे हैं कि जिसकी वजह से आप न तो महा सभा की कुछ सहायता कर रहे हैं और न महासभा के किसी कार्य्य में भाग ले रहे हैं। यहां तक कि महासभा के वार्षिकोत्सवों पर अपने दर्शन भी नहीं देते। महासभा के संचालकों से यह प्रार्थना है कि वह शीघ्र ही उक्त श्रीमान् से मिलकर उनकी इस उदासीनता को भंग करें और ऐसे सज्जन उदार और निर्लोभी व्यक्ति से महासभा के अनेक कार्य सिद्ध करावें। हम आपका विशेष हाल किसी आगामी अङ्क में लिखेंगे।

शहर बुलन्दशहर में गौड़ ब्राह्मण जाति के चौथे प्रेमी सज्जन और उदार विचार के पुरुष श्रीमान् पं० ब्रह्मानन्दजी शर्मा बी० ए० एल-एल० बी० एडवोकेट साहिब है। यद्यपि अभी आप नवयुवक हैं तथापि आपकी बोल चाल, मिलनसारी आपके धार्मिक उच्च विचार और आपके उदार भाव हमने बड़े बड़े दीर्घायु वालों में नहीं पाये। आप अर्से से इस अपनी जातीय महासभा को प्रतिनिधि सभा के सन्माननीय सदस्य हैं और जब महासभा का कार्य्यालय बुलन्दशहर में था उन दिनों आप महासभा के कार्य्यों में बड़े प्रेम से भाग लिया करते थे।

श्रीमान् पं० बाबूरामजी शर्मा "मंत्री—नागरी प्रचारिणी सभा- बुलन्दशहर" भी बुलन्दशहर की गौड़ जाति में एक सन्माननीय पुरुष हैं आप ४ या ५ सगे भाई हैं सब के सब बड़े उत्साही जाति प्रेमी और पूर्ण परिश्रमी हैं। जिन दिनों महासभा का कार्य्यालय बुलन्दशहर था, श्री० पं० बाबूरामजी शर्मा महासभा के उपमंत्री और

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महासभा प्रेस के मैनेजर थे, आपने जिस लगन और प्रेम से उन दिनों इस जातीय सेवा को सम्पादन किया वह लिखने और कहने की बात नहीं है वे लोग भली भांति जानते हैं कि जिन्हों ने उन वर्षों के कार्यों को अपनी दृष्टि से देखा तथा उनके विवरणों को महासभा की रिपोर्टों में पढ़ा है।

श्रीमान् पं० शंकरलालजी शर्मा मुख्तार भी गौड़ महानुभाव है आप की सादा रहन सहन और जातीय सेवा के उच्च विचार आपके उज्ज्वल चरित्र और जातीय सहिष्णुता के द्योतक हैं आप दिसम्बर सन् १९२७ में इस महासभा के वार्षिकोत्सव में बुलन्दशहर जिले से महासभा की प्रतिनिधि सभा के सदस्य चुने गये तब से आप प्रति वर्ष सदस्य चुने जाते रहे। इससे आपकी प्रतिष्ठा का अनुमान होता है ऐसे प्रेमी महानुभावों से जातीय की बहुत बड़ी सेवा होसकती है। हम बुलन्दशहर निवासी गौड़ भाइयों से प्रार्थना करते हैं कि वे शीघ्र ही एक जिला गौड़ सभा बनाकर जातीय सेवा और संगठन का काम प्रारम्भ करदें और मुख्तार साहिब सरीखे उत्साही, परिश्रमी और जाति प्रेमी नवयुवकों से काम लें।

श्रीमान् पं० कृष्णगोपाल जी मुख्तार गौड़ जाति के एक होनहार नवयुवक हैं। यद्यपि आप अहमदगढ़ ज़िला बुलन्दशहर के रहने वाले हैं परन्तु एक वर्ष तक आप मुरादाबाद में प्रेक्टिस करके अब बुलन्दशहर में ही स्थापित हो गये हैं और वहीं मुख्तारी शुरू करदी है। आप बहुत बड़े उत्साही और जाति प्रेमी महोदय हैं, पिछले दिनों जब मैं बुलन्दशहर का प्रान्त भ्रमण करने गया तो आपने कचहरी ही में अपने मुक़द्दमे के कामों की परवाह न कर मुझे बुलन्दशहर के भ्रमण के सम्बन्ध में बहुत कुछ सहायता दी। उन्होंने इस प्रणाली की बड़ी श्रद्धा और प्रेम के साथ सराहना की और कहा कि वास्तव में महासभा ने अब रचनात्मक काम करना शुरू किया है। यदि बुलन्दशहर की जिला गौड़ सभा बन जावे तो यह भी उसमें तन, मन, धन से काम करने के लिये उद्यत हैं।

श्रीमान् पं० गङ्गासहायजी शर्मा—मुख्तार बुलन्दशहर तो एक विचित्र महानुभाव हैं। आपकी अजीबगरीब बातें सुनकर आप लोग दंग रह जायेंगे। आपके हृदय में ब्राह्मणों की उन्नति, उनकी प्रतिष्ठा और उनके प्राचीन गौरव की स्थिति को पुनः सर्वत्र प्रचार होने की सदैव उत्कण्ठा रहती है। आपने अबसे कोई २० वर्ष पूर्व 'ब्राह्मण कुलदीपक' नाम की पुस्तक बनाकर अपने जातीय प्रेम को पराकाष्ठा पर पहुँचा दिया। अब आपने "जगद्गुरु" नामकी एक बहुतबड़ी लाभदायक पुस्तक बनाकर बड़ा उपकार किया है आपने मुख्तारी को बराय नाम करते हुये लोकोपकारी कार्य्यों में रात दिन लगा रहना ही अपना मुख्य कर्त्तव्य समझ लिया है। गौड़ जाति में आपका जन्म होने से आपको हम जितना ही धन्यवाद दें उतना ही थोड़ा है। गौड़ जाति को अपने में आपसे विद्वानों की स्थिति का गौरव प्राप्त है यह बड़े हर्ष का विषय है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बुलन्दशहर जिले का बाकी हाल जनवरी के अंक में प्रकाशित होगा। क्योंकि वह अभी कम से कम १६ पृष्ठों में समाप्त होगा। ५०० से अधिक ऐसे गौड़ भाइयोंकी नामावली है कि जिनकी आमदनी ५०) मासिक से ज्यादा है। इस ज़िले में विवाह योग्य लड़के लड़कियों के पते भी अधिक हैं। प्रतिष्ठित परिवारों का वृत्तान्त भी अगो काफ़ी तादाद में देना है। यह अंक ५० पृष्ठ का हो गया है अगर वह १६ पृष्ठ भी इसी में छापे जाते तो यह बहुत बड़ा हो जाता और इसके प्रकाशन में वैसे ही बहुत विलम्ब हो गया है उन १६ पृष्ठों के कारण और १५ दिन का विलम्ब होता इसलिए यही उचित समझा गया कि बुलन्दशहर जिले का शेष हाल आगामी अंक में दिया जावे। आशा है कि पाठकगण बुलन्दशहर जिले के शेष हाल के लिए आगामी अंक की प्रतीक्षा करें।

—सम्पादक।

उपदेशकों का विवरण।

इस वर्ष में महासभा ने ८ उपदेशकों द्वारा गोड़ ब्राह्मण जाति में प्रचार कराया इन ८ में से श्री० पं० विष्णुदत्त जी शर्मा चन्दौसी श्री० पं० ज्येष्ठाराम जी कौशिक जगाधरी जिला अम्बाला निवासी, श्री० पं० ज्ञानचन्द्र जी श्रोत्रिय रामपुर निवासी, श्री० पं० शिवकुमार जी भारद्वाज—असौधा जिला रोहतक निवासी श्री० पं० राम-स्वरूपजी हरितस्य—छपरौली जि० मेरठ निवासी और श्री० पं० ब्रजलाल जी शर्म्मा जुरहरा राज्य भरतपुर निवासी महासभा से पृथक् हो गये हैं। इसलिए अब कोई सज्जन महासभा निमित्त इनको किसी प्रकार का धन न दें।

श्री० पं० शिवकुमार जी दीक्षित कांकाठेर जि० मुरादाबाद निवासी और श्री० पं० तृषारामजी गौड़ डासना जिला मेरठ निवासी इस समय केवल दो उपदेशक बुलन्दशहर और मुजफ्फ़रनगर जिलों में भ्रमण कर रहे हैं। आगामी अंक से इन लोगों का मासिक भ्रमण भी प्रकाशित हुआ करेगा।

—मंत्री महासभा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री गणेशाय नमः

गौड़ महासभा पत्रिका

अखिल भारतवर्षीय गौड़ ब्राह्मण महासभा की मुख-पत्रिका

वर्ष १ | मुरादाबाद—सितम्बर सन् १९३० ई० | संख्या ३

मङ्गलाचरण

वामांगे च विभाति भूधर सुता देवा पगा मस्तके।
भालेबाल विधुर्गले च गरलं यस्यो रसि व्यालराट्॥
सोऽयं भूति विभूषणः सुवरः सर्वाधिपः सर्वदा।
शर्वः सर्वगतः शिवः शशिनिभः श्री शङ्करः पातुमाम्॥

काहू कूं सहारो है भवानी राज रानी जू को,
काहू कूं सहारो नीको गिरिजा के प्यारे को।
काहू कूं सहारो पुनि काली विकराली जू को,
काहू कूं सहारो भूतनाथ बैल वारे कों॥
काहू कूं सहारो भलो भैरों हनुमान जी को,
काहू कूं सहारो नीको पूर्णनाथ द्वारे को।
जाने गिरि धारौ औ उबारो ब्रज "नारायण",
मोहि तो सहारो वाहि नन्द के दुलारे को॥

मानस होहुं वही 'रसखान' बसौं ब्रज गोकुल गोप गँवारिन।
जो पशु होहुं कहा बस मेरौ चरौं नित नन्द की धेनु मँझारिन॥
जो खग होहुं बसेरो करौं वही कालिन्दी कूल कदम्ब की डारिन।
पाहन होहुं वही गिरि को जो धरयौ कर छत्र पुरंदर धारिन॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महासभा का प्रबन्ध ।

हमारे अक्सर गौड़ भाई प्रायः यह कहते देखने में आते हैं कि "अखिल भारतवर्षीय गौड़ ब्राह्मण महासभा" कुछ नहीं करती, इसलिए उसके साथ हमारी सहानुभूति नहीं है। हमको ऐसे सज्जनों के ऐसे विचारों पर बड़ी हँसी आती है और यही विचार होता है कि या तो ये महानुभाव महासभा से परिचित नहीं है अथवा जान बूझकर यह महासभा को दुरदुराते हैं। इसलिए पहले प्रकार के सज्जनों की जानकारी के लिए हम आज इस लेख द्वारा यह प्रगट करना चाहते हैं कि "महासभा" किसी व्यक्ति विशेष का नाम नहीं है और न 'महासभा' कोई देवी देवता है। 'महासभा' क्या चीज़ है वह आप आगे पढ़ियेगा। लेकिन दूसरे प्रकार के महानुभावों से हमारा सविनय यह निवेदन है कि वे जाति हित के लिए कृपाकर महासभा से प्रेम करें उसके सिद्धान्तों को स्वीकार करें और प्रत्येक अंश में महासभा से सहानुभूति और सम्पर्क रक्खें, उसे दुरदुरावें नहीं।

महासभा क्या है।

उन भारतवर्ष भर के गौड़ ब्राह्मण सभासदों के समूह का नाम 'अखिल भारतवर्षीय गौड़ ब्राह्मण महासभा" है जिनकी अवस्था १८ वर्ष या उससे ऊपर हो। यदि गौड़ ब्राह्मणों की गणना की जावे तो ऐसे सभासद कि जिन की आयु १८ वर्ष या उससे ऊपर हो हज़ारों की संख्या में होंगे परन्तु हम अपने दुर्भाग्य से अभी तक भारतवर्ष भर के ऐसे गौड़ ब्राह्मणों की सूची तैयार नहीं कर सके हैं। इस वर्ष से इस कार्य्य को प्रारम्भ किया है यदि परमात्मा की कृपा और आप भाइयों की सहायता रही तो यह सूची शीघ्र तैयार हो जायगी। यदि आज यह सूची तैयार होती तो हम आपको बतला सकते कि समस्त भारत में इतनी संख्या १८ वर्ष या उससे ऊपर अवस्था वाले गौड़ भाइयों की है। अस्तु

आपकी इस महासभा को स्थापित हुए आज ३४ वर्ष हो गये और एक दो वर्ष को छोड़कर प्रतिवर्ष भारतवर्ष के किसी न किसी प्रसिद्ध स्थान में इसके वार्षिकोत्सव होते रहे। उन वार्षिकोत्सवों पर जो गौड़ भाई पधारते रहे उन्हीं की सम्मति से महासभा का निर्म्माण होता रहा और प्रारम्भ में यह नियम रक्खा गया कि ऐसे प्रत्येक गौड़ भाई का शुभनाम महासभा के रजिस्टर में लिखा जावे कि जिसकी अवस्था १८ वर्ष या उससे अधिक हो और उससे ।) चार आने वार्षिक सदस्य शुल्क लिया जावे। परन्तु प्रारम्भ के कार्य्य सब छोटे होते हैं वे धीरे धीरे ही सबल और

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सपुष्ट हुआ करते हैं इसलिए प्रारम्भ में इसका प्रबन्ध करने पर भी महासभा के प्रेमी इस कार्य को पूर्ण न कर सके। वे केवल इतना कर सके कि जो महानुभाव वार्षिकोत्सवों पर पधारे उन सबके पवित्र नाम लिख लिए और उनकी सहायता से ही वर्ष भर तक काम होता रहा। लेकिन ज्यों ज्यों आपकी इस महासभा का विस्तार और कार्य्य बढ़ता गया त्यों त्यों इसको शृङ्खलाबद्ध करने के लिए उपाय सोचे जाने लगे।

चुनांचि सन् १८९६ ई० में वार्षिकोत्सव में आये हुए सज्जनों में से जो अनुमान से ४००। ५०० थे ५७ सभासदों की एक कार्य्यकारिणी सभा बनायी गयी जो महासभा की उत्तरदायित्व सभा मानी गयी और इसी द्वारा महासभा का समस्त कार्य्य सम्पादन होता रहा। कई वर्ष तक यही क्रम चलता रहा। बाद को यह सभा १०० सज्जनोंकी हो गयी और उसमें सभी ज़िलोंके गौड़भाई सम्मिलित किये गये। इस कार्यकारिणी सभा का कार्य्य काल केवल एक वर्षके लिए निश्चित हुआ। इससे आप लोग विचार सकते हैं कि 'महासभा' कभी किसी की बापौती नहीं हुई उसमें हर वर्ष उत्साही जाति-प्रेमी और जातीय सेवा के भावों से भरे हुए सज्जन चुने जाने लगे। इसलिए जो लोग महासभा पर आक्षेप करते हैं कि 'महासभा कुछ नहीं करती' वह दूसरे अर्थों में उन १०० पूज्य सभासदों पर आक्षेप है जो अपना धन, समय और शक्ति बराबर लगाते रहे हैं।

सन् १९०० में उक्त कार्य्यकारिणी में से भिन्न भिन्न कार्य्यों के लिए अलग२ उपसभाएँ बनीं जैसे उपदेशकों के प्रबन्ध के लिए अलग सभा, छात्रवृत्ति के प्रबन्ध के लिए अलग सभा, कार्य्यालय के प्रबन्ध को अलग सभा, समाचार के प्रबन्ध को अलग सभा और सन् १९०४ तक ४ वर्ष यह सभायें गौड़ जाति का प्रबन्ध करती रहीं। परन्तु इसमें यह कठिनाई प्रस्तुत हुई कि सबमें करीब करीब एक ही सभासद नियुक्त हुए क्योंकि कार्य करने वाले महानुभाव तो बहुत मिलते नहीं अतः अधिक कार्य का भार महामन्त्री जी पर ही रहने लगा और आवश्यकीय कार्य्यों के प्रबन्धों में असुविधा प्रतीत होने लगी।

तब सन् १९०४ के दिसम्बर में इस १०० सभासदों की बड़ी सभा में से ११ सभासदों की एक प्रबन्धकारिणी सभा (मैनेजिङ्ग कमेटी) बनायी गयी जिससे प्रबन्ध सहायता में कोई बाधा न पड़ने पावे। पीछे इसकी संख्या १५ हो गयी, जो गत वर्ष तक १५ ही रही। महासभा का समस्त प्रबन्ध इसी मैनेजिंग कमेटी द्वारा परिचालित होता रहा। तो अब विचारणीय विषय है कि जिस १०० मेम्बरों की प्रतिनिधि सभा की स्थापना आप लोगों ने की जिस मैनेजिङ्ग कमेटी को आपने निर्म्माण किया उसके ऊपर यह दोषारोपण करना कि महासभा कुछ नहीं करती यह महासभा के ऊपर आक्षेप नहीं बल्कि उन हमारे भाइयों का खुद अपने ऊपर आक्षेप है कि जो प्रतिनिधि सभा और मैनेजिङ्ग कमेटी चुनते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लेकिन बात यह नहीं है बात असल में यह है कि अनेक भाई अपने व्यक्तिगत ईर्षा द्वेषों को महासभा के जिम्मे लगाना चाहते हैं, अतः वह ऐसी शिकायतें किया करते हैं। नहीं तो आप सोच सकते हैं कि यदि महासभा कुछ न करती होती तो इसका अस्तित्व रहना ही असम्भव था। लेकिन जिन सज्जनोंने महासभा की पिछली रिपोर्टों को देखा है वे इस बात की सराहना करते हैं कि वास्तव में महासभा ने गौड़ जाति में सब प्रकार की जागृति उत्पन्न करने में कोई बात अपनी शक्ति के अनुसार उठा नहीं रक्खी। पंजाब में कृषि करने वाले गौड़ ब्राह्मणों को 'ज़मींदार' श्रेणी में सम्मिलित कराना महासभा का ही काम है।

इस साल मुरादाबाद के विशेष अधिवेशन में समस्त उपस्थिति गौड़ सरदारों की यह राय हुई कि जबकि महासभा दिनों दिन अपना विस्तार बढ़ा रही है और अब इसको यथार्थ रूप से अखिल भारतवर्षीय होने का सौभाग्य प्राप्त हो रहा है तब इसकी मैनेजिङ्ग कमेटी १५ महानुभावों की रहना बहुत ही थोड़ा है, इसलिए इसको बढ़ाकर २७ सभासदों की बना देना चाहिए। चुनांचि इस समय जो मैनेजिङ्ग कमेटी महासभा गौड़ जाति की सेवा कर रही है उसमें २७ महानुभाव हैं जिनके प्रतिष्ठित नाम नीचे दिये जाते हैं। जिनके देखने से आपको पता चलेगा कि गौड़ जाति के प्रेमियों ने कितनी योग्यता से भारतवर्ष की सब दिशाओं के कोने कोने से चोटीदार (उच्च, मनुष्यों को चुना है। अब अगर कोई साहब इन लोगों पर भी आक्षेप करें तो फिर यही कहा जा सकता है कि यह आक्षेप नहीं वरन् कुछ और बात है और हम तो यही कहेंगे कि वह परस्पर का ईर्ष्या द्वेष है।

इस वर्ष सन् १९३० ई० की मैनेजिङ्ग कमेटी।

(१) श्री० प० ऋषिराम जी महाराज रईसआज़म लाहौर—सभापति
(२) श्री० रायसाहब प० प्रभुदयाल जी शर्म्मा बी० ए०, ई० ए० सी० होशियारपुर
उपसभापति (पंजाब)
(३) श्री० प० रामजीलाल जी शर्म्मा, अध्यक्ष 'हिन्दी प्रेस' इलाहाबाद
उपसभापति (यू० पी०)
(४) श्री० प० रामदेव जी चौमाल, व्याख्यानवाचस्पति कलकत्ता
उपसभापति (बङ्गाल)
(५) श्री० रावबहादुर प० वासुदेव जी अनन्त बाम्बर्डेकर, नासिक रोड
उपसभापति (बम्बई)
(६) श्री० प० गोविन्दप्रसाद जी कौशिक एटेची, महाराज सिरोही आबू
उपसभापति (राजपूताना)
(७) श्री० प० केदारनाथ जी शर्म्मा—ऋषिकुल हरिद्वार—महामन्त्री
(८) श्री० रायबहादुर प० बनारसीप्रसाद जी मिश्र बी० ए०, मुरादाबाद
संयुक्त महामन्त्री

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(९) श्री० प० रामप्रसाद जी शर्मा बी० ए० एल-एल० बी० वकील हिसार
उपमन्त्री (पंजाब)
(१०) श्री० डाक्टर प० विश्वपाल जी शर्मा मथुरा, उपमन्त्री (यू० पी०)
(११) श्री० प० नीरदवर्ण जी मिश्र चक्रवर्ती हवड़ा, उपमन्त्री (बङ्गाल)
(१२) श्री० प० जगन्नाथप्रसाद जी पचौली, सागर (सी० पी०) उपमन्त्री
(बम्बई और सी० पी०)
(१३) श्री० प० रामजीदास जी शर्मा, हेडक्लर्क जी० आर० रेलवे पुलिस, अजमेर
उपमन्त्री राजपूताना)
(१४) श्री० प० प्यारेलाल जी गौड़, सम्पादक गौड़हितकारी मथुरा, कार्यालय मंत्री
(१५) श्री० रायसाहब प० बैजनाथ जी त्रिवेदी हकीम रईस मुरादाबाद सभासद
(१६ श्री० प० शङ्करदत्त जी शर्मा, अध्यक्ष 'शर्मा मैशीन प्रिंटिङ्ग प्रेस'
रईस – मुरादाबाद, सभासद
(१७) श्री० रा०ब० प० लक्ष्मीनारायणजी शर्मा बी० ए० मिर्जापुर (यू०पी०) सभासद
(१८) श्री० प० शम्भूदत्त जी शर्मा बी० ए० एडवोकेट, बुलन्दशहर सभासद
(१९) श्री० प० प्रभूदयाल जी शर्मा बी० ए० एडवोकेट आगरा सभासद
(२०) श्री० प० जगन्नाथ जी कौशल एम० ए० एल-एल० बी० प्लीडर
अम्बाला छावनी सभासद
(२१) श्री० प० राजाराम जी शर्मा रईस कुरुक्षेत्र जंक्शन जि० करनाल सभासद
(२२) श्री० रायसाहब प० मदनगोपाल जी रईस, महिपालपुर (देहली) सभासद
(२३ श्री० रायसाहब प० मोहरसिंह जी सूबेदार झज्जर जि० रोहतक सभासद
(२४) श्री० प० लक्ष्मीचन्द्र जी सुपरिण्टेण्डेण्ट पंजाब सिविल सेक्रीट्रियेट
लाहौर, सभासद
(२५) श्री० प० जगदीशचन्द्र जी बी० ए० एल-एल० बी० एडवोकेट
गुड़गाँव, सभासद
(२६) श्री० प० आत्माराम जी शर्मा एग्ज़ामिनर, ए० जी० का दफ्तर
पटियाला सभासद
(२७) श्री० प० बनारसीदास जी शर्मा बी० ए० एल-एल० बी० प्लीडर
शिमला, सभासद

इन २७ सज्जनों की मैनेजिङ्ग कमेटी से आपको विश्वास करना चाहिये कि महासभा का कोई अनिष्ट नहीं हो सकता। इसलिए जिन भाइयों का यह ख्याल है कि "महासभा कुछ नहीं करती" उनको अपना ख़्याल हटाकर महासभा के प्रति प्रेम, सहानुभूति और सहायता करनी चाहिए फिर देखिये कि इन २७ महानुभावों के हौसले किस कदर बढ़ते हैं और ये फिर और भी उत्साह से कार्य करते आपको दृष्टि आसकते हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस मैनेजिङ्ग कमेटी ने १९ अप्रैल से और इस अगस्त मास तक अपने चार अधिवेशन ४ भिन्न२ स्थानों में किये जिनका कार्य विवरण इस अंक में प्रकाशित किया जाता है उससे आप अनुमान लगा लीजिए कि इस चार महीने में कितना काम हुआ है। यदि इस वर्ष यह सत्याग्रह आन्दोलन न होता तो इस साल यह सभा का जिस रफ्तार से काम हो रहा है उससे गौड़ जाति में एक नया जोश पैदा हो गया होता लेकिन इस समय भारतवर्ष भर के गौड़ ब्राह्मणों ही की क्या समस्त मनुष्यों की तबियतें दूसरी तरफ ही को लगी हुई हैं। जिसके कारण महासभा में काम हो रहा है उसका ध्यान ही नहीं किया जाता।

इस वर्ष से यह भी प्रयत्न किया जारहा है कि जिस स्थान पर जिस दिन मैनेजिङ्ग कमेटी हो उस स्थान की गौड़ बिरादरी को उस दिन की मैनेजिङ्ग कमेटी की सूचना देकर उनका मीटिंग में बुलाने का सादर निमंत्रण दिया जावे। अतः मुरादाबाद, हरिद्वार, देहली और मथुरा जिन चार स्थानों में अब तक मैनेजिङ्ग कमेटी हुई वहाँ के भाइयों को सूचना दी गयी और उन लोगों ने दर्शन देकर मैनेजिंग कमेटी के सभासदों को कृतार्थ किया। इससे परस्पर प्रेम, परिचय और सहानुभूति में कितना अधिक लाभ हुआ है इसको प्रत्येक गौड़ भाई समझ सकता है।

अब पाँचवीं मैनेजिंग कमेटी ता० २६ अक्टूबर सन् ३० इतवार को प्रतिनिधि सभा के साथ देहली में है अतः देहली निवासी गौड़ भाइयों से अभी से सादर निवेदन है कि वे २६।१०।३० को श्रीमान् प० ऋषिराम जी महाराज लाहौर वालों के मकान फैज़बाजार-दरियागंज में दर्शन देने की कृपा करें। इस वर्ष की चारों मैनेजिङ्ग कमेटियों का विवरण इस प्रकार है:—

कार्यवाही

मैनेजिङ्ग कमेटी अ० भा० गौड़ ब्राह्मण महासभा, मुरादाबाद।

स्थान—रायबहादुर प० बनारसीप्रसाद जी मिश्र की कोठी।

समय प्रातःकाल ८ बजे। ता० २० अप्रैल सन् १९३० ई०

उपस्थिति

(१) रायसाहब हकीम प० बैजनाथ जी रईस मुरादाबाद
(२) रायबहादुर प० बनारसीप्रसादजी मिश्र एडवोकेट मुरादाबाद
(३) श्रीमान् प० शङ्करदत्त जी शर्मा मुरादाबाद
(४) श्रीमान् प० राजाराम जी शर्मा थानेश्वर कुरुक्षेत्र जंकशन
(५) श्रीमान् प० बनारसीदास जी शर्मा बी० ए० एल-एल० बी० लीडर शिमला
(६) श्रीमान् प० केदारनाथ जी शर्मा महामन्त्री महासभा हरिद्वार

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्थायी सभापति जी की अनुपस्थिति के कारण श्री० रायसाहब हकीम प० बैजनाथ जी महाराज आज की इस मीटिंग के सभापति नियत हुए।

चूँकि कोरम ७ सज्जनों का होना चाहिये और उपस्थिति केवल ६ सज्जनों की है अतः कोरम पूरा न होने से आज इस समय यह अधिवेशन स्थगित किया जाता है और दिन के ९ बजे पुनः इसी स्थान पर स्थगित अधिवेशन हो।

स्थगित अधिवेशन—समय दिन के ९ बजे।

उपस्थिति उक्त लेखानुसार ही रही और सभापति का आसन श्रीमान् रायसाहब हकीम प० बैजनाथ जी मुरादाबाद निवासी ने ही ग्रहण किया।

विवरण।

(१) रजिस्टर, कागज़ात हिसाब आदि के विषय में विचार।	(१) निश्चय हुआ कि कल ता० १९ अप्रैल सन् ३० से महासभा का हिसाब नये सिरे से जारी किया जावे।
(२) कार्य्यालय और हिसाब की जाँच के विषय में विचार।	(२) निश्चय हुआ कि श्रीमान् प० शङ्करदत्त जी शर्मा और श्री० केदारनाथ जी शर्मा कम से कम एक मास में निरीक्षण किया करें।
(३) पिछले हिसाब और कागज़ात की पूर्ति पर विचार।	(३) निश्चय हुआ कि अगले अधिवेशन में सब हिसाब आदि की पूर्ति रजिस्टरों में कर मय रिपोर्ट ऑडीटर पेश हो।
(४) रिपोर्ट तैयार करने पर विचार।	(४) इलाहाबाद वार्षिकोत्सव की रिपोर्ट तैयार करके मैनेजिंग कमेटी में पेश हो।
(५) प्रान्तिक उपसभापति और प्रान्तिक उपमन्त्रियोंके कार्य पर विचार।	(५) निश्चय हुआ कि सब प्रान्तों के उपसभपतियों और उपमन्त्रियों के कार्य्यों की स्कीम महामन्त्री जी बनावें और वह अगले अधिवेशन में स्वीकृत होने पर सबके पास भेजदी जावे।
(६) कार्यालय की छपाई पर विचार।	(६) निश्चय हुआ कि संयुक्त महामन्त्री जी को अधिकार दिया जावे कि वह कार्य्यालय के कागज़ात छपवालें।
(७) उपदेशकों की नियुक्ति पर विचार।	(७) (क) निश्चय हुआ कि प० जगदीशप्रसाद जी उपदेशक जगाधरी निवासीको फ़िलहाल ३०) मासिक वेतन और मार्ग व्यय पर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नियुक्त किया जावे और दूसरे वैतनिक उपदेशक को संयुक्त महामन्त्रीजी नियुक्त करलें जिसका वेतन २५, रु० से ३०, रु० तक नियत किया जावे ।

(ख) जो अवैतनिक उपदेशक प्रचार करें उन को मार्गव्यय महासभा से दिया जावे ।

(ग) उपदेशकों का प्रोग्राम संयुक्तमहामंत्रीजी बनावें ।

(८) वैतनिक मन्त्री की नियुक्ति पर विचार ।

(८) निश्चय हुआ कि संयुक्त महामन्त्री जी ने प० प्यारेलाल जी गौड़ को ५०) रु० मासिक पर वैतनिक मन्त्री नियुक्त कर लिया है इस नियुक्ति को यह कमेटी स्वीकृत करती है ।

(९) महासभाके व्यय के सम्बन्ध में विचार ।

(९) निश्चय हुआ कि महासभाके व्ययके बिलोंको संयुक्त महामंत्री जी तसदीक कर महामन्त्री जी के पास भेजेंगे और महामन्त्रीजी उन बिलों को देखकर कोषाध्यक्षको पेमेण्ट आर्डर देंगे ।

(१०) छात्रवृत्तियों के प्रबन्ध पर विचार ।

(१०) (क) निश्चय हुआ कि जिन सज्जनों ने छात्र-वृत्तियाँ देने का वचन दिया है उनसे प्रार्थना की जावे कि वह पूरे एक वर्ष का या कम से कम ६ मास का धन कार्य्यालय में भेजदें ।

(ख) छात्रवृत्तिके लिए प्रार्थना-पत्र मँगाये जावें और अगली मीटिङ्ग में पेश किये जावें ।

(११) प्रतिनिधिसभाके सभासदोंसे चंदा वसूल करनेपर विचार ।

११) निश्चय हुआ कि प्रतिनिधि सभा के सभासदों से चंदा वसूल करनेको प्रार्थना-पत्र भेजे जावें ।

(१२ आगामी मैनेजिङ्ग कमेटी के स्थान और तिथि पर विचार ।

(१२) निश्चय हुआ कि ११ मई सन् ३० को ऋषिकुल ब्रह्मचर्य्याश्रम हरिद्वार में आगामी मैनेजिङ्ग कमेटी की जावे ।

सभापति जी को धन्यवाद देकर सभा विसर्जित हुई ।

वैजनाथ शर्म्मा, केदारनाथ शर्म्मा, प्यारेलाल गौड़,

ह० सभापति ह० महामन्त्री ह० मन्त्री

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मैनेजिङ्ग कमेटी अ० भा० गौड़ ब्राह्मण महासभा मुरादाबाद ।

स्थान—ऋषिकुल ब्रह्मचर्य्याश्रम—पुस्तकालय, हरिद्वार ।

समय मध्याह्नोत्तर १ बजे । ता० ११ मई सन् १९३० ई० ।

श्री अखिल भारतवर्षीय गौड़ ब्राह्मण महासभा की मैनेजिङ्ग कमेटी का अधिवेशन ता० ११।५।३० को "ऋषिकुल-पुस्तकालय" हरिद्वार में मध्याह्नोत्तर १ बजे हुआ जिसमें निम्नलिखित सज्जन उपस्थित थे ।

(१) श्री० रायसाहब प० प्रभुदयालु जी शर्मा बी० ए० एल-एल० बी० ई० ए० सी० शेखूपुरा (पंजाब) उपसभापति ।
(२) श्री० रायबहादुर प० बनारसीप्रसाद जी मिश्र बी० ए०-एडवोकेट मुरादाबाद संयुक्त महामन्त्री ।
(३) श्री० प० आत्मारामजी शर्मा-एग्ज़ामिनर ए०जी० ऑफ़िस पटियाला, सभासद
(४) श्री० प० जगन्नाथजी कौशल एम०ए०, एल-एल०बी० मीडर अम्बाला छावनी, सभासद ।
(५) श्री० प० जगन्नाथप्रसाद जी पचौली गवर्नमेण्ट पेन्शनर—सागर (सी० पी०) उपमन्त्री
(६) श्री० प० केदारनाथजी शर्मा स०मन्त्री "ऋषिकुल" हरिद्वार महामन्त्री

कोरम पूरा न होने के कारण मीटिङ्ग स्थगित की गयी और स्थगित अधिवेशन मध्याह्नोत्तर २ बजे प्रारम्भ हुआ ।

सर्वसम्मति से रायसाहब प० प्रभुदयालु जी शर्मा ने सभापति का आसन ग्रहण किया ।

विवरण ।

(१) गत अधिवेशनकी कार्यवाही	(१) गत अधिवेशन की कार्यवाही पढ़ी गयी और सर्वसम्मति से दृढ़ (confirm) की गयी !
२) गत मास के आय व्यय पर विचार (ता० १६ । ४ । ३० से १० । ५ । ३० तक का)	(२) (क) सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि यह हिसाब पास किया जाता है। परन्तु इस हिसाब में पिछला हिसाब शामिल नहीं है। इसलिए पिछला हिसाब शामिल करके कैशबुक में दर्ज किया जावे और रसीदों का फ़ायल मुकम्मिल करके आगामी अधिवेशनमें पेश किया जावे ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(ख) प० सोहनलाल जी वकील बुलन्दशहर की ओर महासभा का जो धन बाकी है वह उनसे माँगा जावे ।

(ग) प०छबीलेलालजी गोस्वामी वृन्दावन के नाम जो रुपया है वह उनसे वसूल किया जावे ।

(घ) प०प्यारेलालजी गौड़की ओर उस२५०) रु० से पृथक् जो रिपोर्टों की छपाई के मध्ये उनके पास पहुँच चुका है जो ५४७)। है उसमें से २५०) दिये जाने की स्वीकृति प्रस्ताव नं० ८ मैनेजिङ्ग कमेटी देहली ता० १४।३।२९ के अनुसार हो चुकी है। परन्तु कलकत्ता महोत्सव के बजटमें एक वर्षके लिए 'गौड़ हितकारी' पत्रमें "अ० भा० गौड़ ब्राह्मण महासभा" की समस्त कार्यवाही प्रकाशित करने के लिए ५००, प० प्यारेलाल जी गौड़ को देना स्वीकार हुआ था जिसका विवरण कलकत्ते के महोत्सव की कार्यवाही में मौजूद है। चूँकि प०प्यारेलाल जी गौड़ ने एक वर्ष तक महासभा की समस्त कार्यवाही गौड़हितकारीमें प्रकाशित की है, इसलिए शेष २५०) दिये जाने की स्वीकृति दी जाती है। बाकी हिसाब उनसे तय किया जावे।

(३) मैनेजिङ्ग कमेटी के दो रिक्त सभासदोंके स्थान की पूर्ति पर विचार ।

(३) सर्वसम्मति से श्रीमान् प० लक्ष्मीचन्द्र जी सुपरिण्टेण्डेण्ट पंजाब सिविल सेक्रेटेरियट लाहौर एक स्थान पर चुने गये ।

(४) पाँच सौ रुपये के जी० पी० नोट का विषय पेश हुआ ।

(४) सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि प०जगन्नाथ जी कौशल एम० ए० एल-एल० बी अम्बाला छावनी को अधिकार दिया जाता है कि वह महासभा की ओर से उसका रुपया वसूल करें ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(५) श्री० प० रघुनन्दनजी शर्म्मा प्रयाग का पत्र पेश हुआ।	(५) सर्वसम्मतिसे निश्चय हुआ कि यह पत्र सभापति जी की सेवा में भेजा जावे।
(६) छात्रवृति के लिए आये हुए आवेदनपत्र पेश हुए।	(६) सर्वसम्मतिसे निश्चय हुआ कि महामन्त्री ज छात्रवृत्ति का धन देने वाले सज्जनों से पत्र-व्यवहार कर और छात्रों की योग्यता आदि के सम्बन्धमें निश्चय करके आगामी मैनेजिङ्ग कमेटी में रिपोर्ट पेश करें।
(७) महासभाके मुखपत्र निकालने पर विचार।	(७) सर्वसम्मतिसे निश्चय हुआ कि महासभा का मुखपत्र जारी किया जावे। इसके संबन्ध में आवश्यकीय स्कीम रा०ब० प०बनारसीप्रसाद जी मिश्र आगामी मैनेजिङ्ग कमेटीमें पेश करें।
(८) महासभाके वैतनिक कार्य्य-कर्त्ताओंको सभाके कार्य-निमित्त जानेपर मार्ग-व्यय देने पर विचार।	(८) सर्वसम्मतिसे निश्चय हुआ कि महासभा के वैतनिक कार्य्यकर्ताओं को वास्तविक खर्च दिया जावे।
(९) महासभाके उपसभापति तथा प्रांतिक मंत्रियों की कार्य्य-प्रणालीका विषय पेश हुआ।	(९) सर्वसम्मतिसे निश्चय हुआ कि आगामी कमेटी में पेश हो।
(१०) महासभाका अधिवेशन किस स्थान पर और कब किया जावे। यह विषय पेश हुआ।	(१०) सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि आगामी कमेटी में पेश हो।
(११) क-कार्य्यालय मंत्री के वेतन की अदायगी के सम्बन्ध में विचार।	(११) क-सर्वसम्मतिसे निश्चय हुआ कि अदायगी महामन्त्री जी के द्वारा हो।
ख-उपदेशक की नियुक्ति के सम्बन्ध में प्रस्ताव पेश होने पर विचार।	ख-सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि श्री० प० विष्णुदत्त जी शर्मा ३०) मासिक पर ता० १०।५।३० से नियुक्त किये जावें, उन को किराया रेल कुली खर्च, ताँगा भाड़ा दिया जावे वे देहरादून जिले से कार्य्य प्रारम्भ करें। उनका प्रोग्राम महामन्त्रीजी बनावें।
(१२) मैनेजिङ्ग कमेटी के आगामी अधिवेशन पर विचार।	(१२) सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि मैनेजिङ्ग कमेटी का आगामी अधिवेशन २९ जून सन्

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

३० को श्री० प० ऋषिराम जी महाराज के मकान में जो दरियागंज देहली में परदाबाग़ के पास है उसमें हो।

सभापति महोदय को धन्यवाद देकर सभा विसर्जित हुई।

प० ऋषिरामजी शर्मा	प० केदारनाथजी शर्मा	प्यारेलाल गौड़
ह० सभापति	ह० महामन्त्री	ह० मन्त्री

'मैनेजिंग कमेटी अ० भा० गौड़ ब्राह्मण महासभा' मुरादाबाद

स्थान—श्री०पं० ऋषिरामजी महाराज का मकान दरियागंज फ़ैज बाज़ार देहली

समय—मध्याह्नोत्तर १ बजे ता० २६ जून सन् १९३० ई०

उपस्थितिः—

(१) श्री० प० ऋषिराम जी महाराज रईस आज़म लाहौर	सभापति
(२) श्री० रायसाहिब प० प्रभुदयालु जी शर्मा बी० ए०, एल-एल० बी०, ई०ए०सी० शेखूपुरा	उपसभापति
(३) श्री० प० केदारनाथ जी शर्मा स० मन्त्री 'ऋषिकुल ब्रह्मचर्याश्रम' हरिद्वार	महामन्त्री
(४) श्री० रायबहादुर प० बनारसीप्रसाद जी मिश्र बी०ए० एडवोकेट मुरादाबाद	संयुक्त महामन्त्री
(५) श्री० डाक्टर प० विश्वपाल जी शर्मा मथुरा	यू०पी० मन्त्री
(६) श्री० रायसाहिब प० बैजनाथ जी त्रिवेदी रईस मुरादाबाद	सभासद
(७) श्री० प० शङ्करदत्त जी शर्मा अध्यक्ष शर्माभैशन प्रेस मुरादाबाद	,,
(८) श्री० प० आत्माराम जी शर्मा एग्ज़ामिनर "ए० जी० का दफ्तर" पटियाला	सभासद
(९) श्री० प० लक्ष्मीचन्द्र जी सुपरिन्टेण्डेण्ट "पञ्जाब सिविलसेक्रेटेरियेट" लाहौर	सभासद
(१०) श्री० प० शम्भुदत्त जी शर्मा बी०ए० एल-एल०बी० एडवोकेट बुलन्दशहर	,,
(११) श्री० हिन्दीरत्न प० प्यारेलाल जी गौड़	मन्त्री
(१२) श्री० प० प्रभुदयालु जी बी० ए० वकील आगरा	दर्शक
(१३) श्री० प० सोहनलाल जी वकील पूर्वकोपाध्यक्ष महासभा' बुलन्दशहर	,,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(१४) श्री० प० पृथ्वीसिंह जी बी० ए०, एल-एल० बी० वकील सदर बाज़ार देहली दर्शक

(१५) श्री० प० ईश्वरचरण जी गौड़ मैनेजर फर्म रायसाहिब ला० रामप्रसाद जी ब्रह्म देहली दर्शक

(१६) श्री० प० डोंगाराम जी सूबेदार छारा जि० रोहतक ,,

कार्य्य-विवरण

(१) गत अधिवेशन का कार्य्य विवरण। (१) पढ़ा गया और सर्व सम्मति से पास हुआ कि कार्यवाही दृढ़ (Confirm) की जावे।

(२) गत मास का आय-व्यय सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि हिसाब आय-व्यय महासभा मई और जून सन् ३० का पास किया जाता है, श्री० प० आत्माराम जी शर्म्मा और श्री० प० शङ्करदत्तजी शर्म्मा कुल हिसाब का जमाखर्च कैशबुक में ठीक२ करा दें।

(३) प्रबन्धकारिणी समिति के एक रिक्त स्थान की पूर्ति पर विचार। (३) सर्वसम्मति से प्र० का० समिति के रिक्त स्थान पर श्री० प० प्रभुदयालु जी शर्मा बी० ए० वकील आगरा चुने गये।

(४) छात्रवृत्ति के लिये आये हुये आवेदन पत्रों पर विचार। (४) सर्वसम्मति से ३१ विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति दी जानी स्वीकार की जाती है यदि २३) रु० मासिक दान में और मिल जावें तो कुल १४०) रु० मासिक की छात्रवृत्ति स्वीकार की जाती है।

(५) श्री० प० बटेश्वरदयालु जी मेरठ सभासद् प्र० का० समिति के त्यागपत्र पर विचार। (५) सर्वसम्मति से श्री० प० बटेश्वर दयालु जी का त्यागपत्र स्वीकार किया जाता है और उन के स्थान में हिन्दीरत्न प० प्यारेलाल जी गौड़ मथुरा सभासद निर्वाचित किये जाते हैं।

(६) श्री० प० छुट्टनलाल जी स्वामी—मेरठ के पत्र पर विचार। (६ सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि पिछला रिकार्ड देखकर कार्यालय मंत्री रिपोर्ट करें तब यह मामला पेश किया जावे।

(७) महासभा के मुख पत्र पर विचार। (७ सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि गौड़ ब्राह्मण महासभा का पत्र निकाला जावे और उस पर १००) रुपये मासिक तक खर्च किया जावे। इसी रक़म में २५) रु० मासिक का एक क्लर्क रख लिया जावे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

 CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(८ उपसभापतियों और प्रान्तिक उपमंत्रियों की कार्यप्रणाली पर विचार।

(८) सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि आगामी कमेटी में पेश हो।

(९) जिन सज्जनों ने ६) रुपये से अधिक किसी रूप में महासभाको जिस वर्ष दान दिया है उन से उस वर्ष ६) रु० प्रतिनिधि फ़ीस न माँगी जावे और उनको सभासद् प्रतिनिधि सभा समझे जाने पर विचार।

(९) सर्व सम्मति से यह प्रस्ताव स्वीकार हुआ।

(१०) जो सज्जन महासभा में वैतनिक रूप से काम कर रहे हैं वे प्रतिनिधि सभा के सभा सद् समझे जाने और उनसे सदस्य शुल्क न लिये जाने पर विचार।

(१०) सर्वसम्मति से निश्चिय हुआ कि सभा के वैतनिक कर्मचारी बिना सदस्य शुल्क दिये हुये भी सभासद् चुने जा सकते हैं।

(११) प० विष्णुदत्त जी शर्मा उपदेशक के काम छोड़ने और उनके स्थान पर नये उपदेशक की नियुक्ति पर विचार।

(११) सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि मंत्री जी इसका प्रबन्ध करलें।

(१२) आगामी वार्षिकोत्सव पर विचार।

(१२) सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि अगली कमेटी में पेश हो।

(१३) श्री० प० सोहनलाल जी बुलन्दशहर के हिसाब पर विचार।

(१३) श्री० प० सोहनलालजी वकील बुलन्दशहर ने सभा में स्वयं उपस्थित होकर ४७८=) की रसीदें पेश कीं और १५००) रु० पहिले उनसे महासभा कार्यालय में आचुका है अतः उनकी ओर जो २०७४॥=)॥ और ब्याज बकाया थे उसमें इन ४७८=) का जमा खर्च करके अब ९६॥-)॥ असल उनकी ओर शेष रहे। जिस तारीख से रुपया उनके पास जमा रहा है उस तारीख़ से ॥) आठ आना सैकड़ा का ब्याज लगाकर हिसाब उनको भेज दिया जावे जिस को कि वे बेबाक़ कर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देंगे। और सर्व सम्मति से यह हिसाब स्वीकार किया गया।

(१४) श्री० प० छबीलेलाल जी गोस्वामी वृन्दावनके हिसाब पर विचार।

(१४ सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि अगली कमेटी में पेश हो।

(१५ प्रतिनिधि सभा के अधिवेश पर विचार।

(१५) सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि प्रतिनिधि सभा की मीटिंग ता० २६ अक्टूबर सन् १९३० को देहली में श्रीमान् पं० ऋषिराम जी महाराज के मकान पर हो।

(१६ कार्यालय में जो पुरानी रिपोर्टें रक्खी हैं उनका क्या किया जावे।

(१६) सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि पुरानी रिपोर्टें डाक द्वारा वितरण की जावें।

(१७) (क) श्रीमान् प० क्षेत्रपाल जी शर्मा-मथुरा के दान का धन्यवाद।

(१७ क) सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि श्रीमान् प० क्षेत्रपाल जी शर्मा को उस दान के लिये जो ५३॥= उनके सभा के ऊपर चाहिये थे दान देदिये हैं धन्यवाद दिया जावे।

(ख) प्रतिनिधि समिति के सभासदों से कब तक सदस्य शुल्क आने की प्रतीक्षा की जावे।

(ख) सर्वसम्मतिसे निश्चय हुआ कि ता० २६ अक्टूबर सन् १९३० ई० तक जिन प्रतिनिधि समिति के सदस्यों का शुल्क न आवे उन का नाम काट दिया जावे।

(ग) महासभा के मासिक मुखपत्र के मूल्य पर विचार।

(ग) सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि ६) रु० वार्षिक न्योछावर देने वाले सदस्यों से मासिक पत्र का मूल्य न लिया जावे और अन्य लोगों से २) रु० वार्षिक मूल्य लिया जावे।

(घ) मैनेजिंग कमेटी के आगामी अधिवेशन पर विचार।

(घ) सर्वसम्मतिसे निश्चय हुआ कि आगामी अधिवशन ता० ३।८।३० को १२ बजे दिन के श्रीमान् प० क्षेत्रपाल जी शर्मा मथुरा के 'शर्मा-भवन' मथुरा में हो।

श्रीमान् सभापति जी को धन्यवाद देकर सभा विसर्जित हुई।

प० ऋषिरामजी शर्मा
ह० सभापति—

प० केदारनाथ जी शर्मा
ह० महामन्त्री —

प० प्यारेलाल गौड़
ह० मन्त्री कार्यालय —

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अ० भा० गौड़ ब्राह्मण महासभा—मैनेजिंग कमेटी मुरादाबाद

ता० ३ । ८ । ३० रविवार—स्थान—'शर्मा-भवन, मथुरा'

समय—दिन के १२ बजे—

उपस्थिति:—

(१) प० शङ्करदत्त जी शर्मा मुरादाबाद — सभासद
(२) श्री० प० लक्ष्मीचन्द्र जी सुपरिण्टेण्डेण्ट पञ्जाब सिविल सेक्रेट्रियेट लाहौर — सभासद
(३) श्री० डाक्टर प० विश्वपाल जी शर्मा मथुरा — (यू० पी०) मन्त्री
(४) श्री० रायबहादुर प० बनारसीप्रसाद जी मिश्र मुरादाबाद, — संयुक्त महामन्त्री
(५) श्री० हिन्दीरत्न प० प्यारेलाल जी गौड़ — कार्य्यालय मन्त्री

चूँकि कोरम पूरा नहीं हुआ इसलिए इस समय अधिवेशन स्थगित किया गया और दिन के एक बजे पुनः स्थगित अधिवेशन किया गया ।

स्थगित अधिवेशन मैनेजिङ्ग कमेटी

समय—दिन के १ बजे

उपस्थिति :—

(१) श्री प० शङ्करदत्त जी शर्मा, मुरादाबाद
(२) श्री प० लक्ष्मीचन्द्र जी लाहौर
(३) श्री डा० प० विश्वपाल जी शर्मा, मथुरा
(४) श्री रा० ब० प० बनारसीप्रसाद जी मिश्र मुरादाबाद
(५) श्री० हिन्दीरत्न प० प्यारेलाल जी गौड़, मन्त्री
(६) श्री० प० प्रभुदयाल जी शर्मा वकील, आगरा
(७) श्री० प० क्षेत्रपाल जी शर्मा—कोषाध्यक्ष, मथुरा

"दर्शक"

(१) श्री० प० रामस्वरूप जी शर्मा—प्रोप्राइटर बालबहार ऑफिस देहली
(२) श्री० प० जगदीशप्रसाद जी एम० ए० विद्यार्थी, ला-फाइनेल आगरा कालिज
(३) श्री० प० सूर्य्यसहाय जी मिश्र, सम्भल
(४) श्री० प० जगदीशप्रसाद जी मिश्र मुरादाबाद
(५) श्री० प० छबीलेलाल जी गोस्वामी, वृन्दावन
(६) चि० पुरुषोत्तमशरण जी C/० प० छबीलेलाल जी गोस्वामी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(७) चि० विपिनचन्द्र गौड़ S।०प० प्यारेलाल जी गौड़ मथुरा
(८) चि० कैलाशचन्द्र गौड़ S।०प० प्यारेलाल जी गौड़ मथुरा

चूँकि सभापति जी उपस्थित नहीं हैं, इसलिए आज के अधिवेशन के लिए श्री० प० लक्ष्मीचन्द्र जी लाहोर वाले—सर्वसम्मति से सभापति निर्वाचित हुए।

कार्य्य विवरण ।

(१) गत अधिवेशन का कार्य्य-विवरण	(१) पढ़ा गया और सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि कार्यवाही दृढ़ (Confirm) की जावे।
(२) गत मास का आय व्यय	(२) गत मास जौलाय सन् ३० का हिसाब देखा गया और सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ।
(३) श्री० प० नीरदवर्ण जी मिश्र चक्रवर्ती हवड़ा के पत्र पर विचार	(३) पत्र पढ़ा गया और सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि जिस अधिवेशन में श्री० प० नीरद-वर्ण जी मिश्र चक्रवर्ती सम्मिलित हों उसमें पेश किया जावे। और इसकी सूचना उनको दी जावे।
(४) श्री० रा०ब० प० एल० एन० शर्मा बी०ए० के प्रतिज्ञा किये हुए धन में से जो २००) रु० अभी तक नहीं आये हैं इस पर विचार	(४) सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि श्री० एल० एन० शर्मा जी से २००, भेज देने की पुनः प्रार्थना की जावे और श्री० प० शङ्करदत्तजी शर्मा मुरादाबाद निवासी से प्रार्थना की जावे कि वे शर्माजी से मिलकर उन्हें सभाका समस्त वृत्तान्त सुनाकर उन्हें सन्तुष्ट करदें।
(५) उपसभापतियों और प्रांतिक मंत्रियों की कार्यप्रणाली पर विचार	(५) सर्वसम्मतिसे निश्चय हुआ कि चूँकि महा-मन्त्री जी इस अधिवेशन में नहीं पधारे हैं अतः उनकी उपस्थिति में पेश हो।
(६) महासभा के दो और उपदे-शकों की स्वकृतिपर विचार	(६) सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि दो और उप-देशक स्वीकृत किये जाते हैं। जिनमें से एक यू० पी० और एक राजपूताने में काम करें। इनमें से राजपूताने के लिये 'प० हनुमान जी राजगांगपुर'—और यू० पी० के लिये प० ज्ञानचन्द्र जी रामपुर निवासी नियुक्त किये जाते हैं और यदि इनमें से कोई न आवे तो कार्यालय मंत्री महामंत्री की सम्मति से दूसरे उपदेशक को नियुक्त करें।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(७) महासभा के मुखपत्र पर विचार ।	(७) सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि श्री० हिन्दी रत्न प० प्यारेलाल जी गौड़ कार्य्यालय मन्त्री – संपादक व प्रकाशक नियुक्त किये जावें और येही डिक्लेरेशन दाखिल करें ।
(८) मैनेजिंग कमेटी के उन सभासदों के सम्बन्ध में विचार कि जो न तो आज तक किसी अधिवेशन में आये न अपने पद की स्वीकृति का उत्तर दिया और न इन्होंने कार्यालयसे भेजे किसी पत्र का उत्तर दिया ।	(८) जिन सभासदोंने स्वीकृति आदि नहीं दी है उन से फिर प्रार्थना की जावे कि वे स्वीकृति का पत्र भेज दें ।
(९) जिन विद्यार्थियों को छात्र-वृत्ति देना स्वीकार हुआ है उनमें से यदि कोई विद्यार्थी नहीं पढ़े अथवा कोई और सज्जन छात्रवृत्ति प्रदान करें तो वह अन्य योग्य विद्यार्थियों को दिये जाने पर विचार ।	(९) जिन ३७ विद्यार्थियों का निश्चय महामन्त्री जी ने किया था उन में से ३२ विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति दी गई है । यदि इनमें से कोई छात्रवृत्ति खाली हो तो वह इन शेष पांच विद्यार्थियों में से दी जावे और बाद को भी अगर कोई छात्रवृत्ति बचे तो उसको मैनेजिंग कमेटी में पेश किया जावे ।
(१०) अ० वंगीय गौड़ाद्य वैदिक ब्राह्मण समाज के छठे वार्षिक विवरण पर विचार ।	(१०) अ० वंगीय गौड़ाद्य वैदिक ब्राह्मण समाज का छठा वार्षिक विवरण बड़ी प्रसन्नतासे पढ़ा गया और धन्यवाद दिया गया और उनको लिखा जावे कि हम आशा करते हैं कि आपका समाज इसी प्रकार उन्नति करता रहे ।
(११) कार्यालय मंत्री के कर्तव्य कार्यों पर विचार ।	(११) यह प्रस्ताव अगली मीटिंग में पेश हो ।
(१२) जिन सज्जनों ने छात्रवृत्ति का वचन देकर अभी तक धन नहीं भेजा और न कार्यालय के पत्रों का उत्तर देते हैं उन पर विचार ।	(१२) जिन सज्जनों ने छात्रवृत्ति का धन नहीं दिया है उनसे फिर प्रार्थना की जावे ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(१३) इलाहाबाद बैंक मथुरा में महासभा का जो रुपया है उसे लेने पर विचार ।

(१३) श्री० गोस्वामी छबीलेलाल जी से प्रार्थना की जावे कि वे २ रु०-३ आ०-४ पाई जो उनके महामंत्री समय से इलाहाबाद बैंक मथुरा में जमा है उसका चैक वे कार्यालय मंत्री के नाम भेज दें ।

(१४) श्री० प० छबीलेलाल जी गोस्वामी वृन्दावन के हिसाब पर विचार।

(१४) सर्व सम्मति से निश्चय हुआ कि श्री० प० छबीलेलाल जी की इच्छानुसार एक मास का समय उनको रुपया भेजने को देना स्वीकृत किया गया ।

(१५) आगामी वार्षिकोत्सव पर विचार ।

(१५) बरेली निवासी ५ सज्जनों के हस्ताक्षरों से आया हुआ महोत्सव का निमन्त्रण-पत्र बड़ी प्रसन्नता के साथ स्वीकार किया जाता है और धन्यवाद दिया जाता है और निश्चय हुआ कि उनसे प्रार्थना की जावे कि दिसम्बर में बड़े दिन की छुट्टियों में ता० २७-२८ और २९ तारीखें यदि उनको सुभीते की हों तो इनको नियत करें । महासभा के महोत्सव के सभापति के लिये नीचे लिखे ५ सज्जनों के नाम बरेली को भेजे जावें कि वे इनमें से जिसको उचित समझें सभापति निर्वाचित करें ।

(१) श्री० प० गोविन्दप्रसाद जी कौशिक बी०ए० अटेर्ची टू एच० एच० महाराजा सिरोही ।

(२) श्री० प० प्रभुदयालु जी बी० ए० वकील और स्पेशल मजिस्ट्रेट आगरा ।

(३) श्री० प० क्षेत्रपाल जी शर्म्मा रईस और अध्यक्ष 'सुखसंचारक कम्पनी" मथुरा

(४) श्री० विद्यामार्तण्ड प० सीताराम जी शास्त्री अध्यक्ष—"हरियाणा शेखावाटी ब्रह्मचर्य्याश्रम" भिवानी

(५) श्री० प० सूर्य्यबलजी दीक्षित वकील मेरठ ।

(१६) अन्य आवश्यक कार्य्य

(१६) (क) सर्वसम्मतिसे श्री० प० गोविन्दप्रसादजी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(क) राजपूताने के मन्त्री की नियुक्ति पर विचार

कौशिककी इच्छानुसार श्री प० रामजीदास जी हेडक्लर्क सुपरिटेण्डेण्ट गवर्नमेंट रेलवे पुलिस अजमेर—'मंत्री' नियुक्त किये गये।

(ख) श्री० प० ज्येष्ठाराम जी के वेतन पर विचार

(ख) निश्चय हुआ कि प० ज्येष्ठाराम जी का काम अगली मीटिंग तक देखकर तब अगली मीटिङ्ग में पेश किया जावे।

(ग) प० जगदीशप्रसाद जी विद्यार्थी आगरा की छात्रवृत्ति पर विचार।

(ग) चूँकि इस समय कोई छात्रवृत्ति खाली नहीं है इसलिये मजबूरी है।

(घ) अगली मैनेजिङ्ग कमेटी पर विचार

(घ) सर्वसम्मतिसे निश्चय हुआ कि महामंत्री जी अगर आवश्यक समझें तो जिस स्थान पर जिन तारीखों में अगली मैनेजिङ्ग कमेटी करना चाहें तो करलें, क्योंकि सं० महामन्त्री इन दिनों में बाहर रहेंगे, और पेमेण्ट आर्डर मिला लिहाज संयुक्त महामंत्री जी की सिफ़ारिश के ऑफ़िस सेक्रेटरी की रिपोर्ट पर देते रहें।

(च) सं० महामंत्री की रिपोर्ट कार्यालय-मन्त्रीके विषय में सुनी गई और उनकी सिफ़ारिश कि "वैतनिक मन्त्री का वेतन तारीख तकर्रुरासे ६०) मासिक कियाजावे" सुनी गयी।

(च) सर्वसम्मति से पास हुआ कि संयुक्त महामंत्री महोदयकी रिपोर्ट-"कार्यालय मंत्री प० प्यारेलाल गौड़ के लिए १०) मासिक वेतन वृद्धि की' तारीख तकर्रुरा से" स्वीकार की गयी और सूचित करती है कि मैनेजिङ्ग कमेटी इनके कार्य्य से पूर्णतया सन्तुष्ट है।

(छ) प्रतिनिधिसभाके अधिवेशन पर विचार।

(छ) इसके सम्बन्ध में गत अधिवेशन के प्रस्ताव नम्बर १५ में जो २६ अक्टूबर निश्चय होचुकी है चूँकि सिर्फ उसमें १ इतवारको ही छुट्टी है जो कि सभासदोंके आने जानेके लिए काफ़ी नहीं है इसलिए बजाय २६ अक्टूबर के १ नवम्बर सन् ३० नियत की जावे।

प्रस्ताव नं० १६ की भी शुद्धिकर उसी तारीख़ यानी १ नवम्बर सन् ३० ई० तक सदस्य शुल्क आजाना चाहिये।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीमान् सभापति जी को धन्यवाद देकर सभा विसर्जित की गयी।

ह० सभापति	ह० महामन्त्री	ह० मन्त्री कार्य्यालय
प० लक्ष्मीचन्द्र जी	प० केदारनाथ शर्मा	प० प्यारेलाल गौड़

नोट मैनेजिङ्ग कमेटी के बाद फिर यह जानकर कि १ नवम्बर सन् ३० की प्रायः प्रान्तों में छुट्टी नहीं है इसलिए तारीख २६ अक्टूबर सन् ३० ही प्रतिनिधि सभा की तारीख निश्चित हुई है। (सम्पादक)

महासभा को दान।

इस वर्ष में जनवरी सन् ३० से ३१ अगस्त सन् ३० तक ८ मासमें गौड़ ब्राह्मण जाति के जिन उदारमना सज्जनोंने जिस जिस प्रकार से महासभा को धन दान दिया है, उनके पवित्र और प्रतापी नाम इस अङ्क में प्रकाशित किये जाते हैं और आगे को प्रतिमास जिन सज्जनों की जिस सम्बन्ध में सहायता आयेगी वह उसी मास में सधन्यवाद प्रकाशित की जायेगी। साथ ही समस्त गौड़ भाइयों को यह भी सूचना दी जाती है। कि इस वर्ष से इस बात का पूरा ध्यान रक्खा जा रहा है कि जिन सज्जनों की जिस लिए सहायता आती है वह उसीमें खर्च की जावे। अतः इस समय तक ऐसा ही हुआ है और आगे भी ऐसा ही प्रबन्ध रहेगा।

इसलिए जो महोदय छात्रवृत्ति विद्या थियों को देना चाहें वे धन भेजते समय स्पष्ट लिखदें कि यह रुपया विद्यार्थियों को वजीफे में दिया जावे। जो महानुभाव प्रचार के लिए धन दान करके भेजें उनके धनसे उपदेशक नियुक्त करके प्रचार कराया जायेगा। जो महानुभाव 'पत्रिका' की सहायता को धन प्रदान करेंगे उनके रुपये से पत्रिका की उन्नति की जावेगी। पत्रिका में सहायता आते ही इसमें प्रतिमास एक गौड़ महानुभाव का चित्र और उनका जीवन-चरित्र दिया जाया करेगा। पत्रिका की स्कीम में यह सबसे पहिली बात है जो आप उदारशील जाति भाइयों की सहायता पर निर्भर है। कार्य्यालय में इस वर्ष से वैतनिक मंत्री रखने के कारण कार्य्यालय का व्यय भी १०००) वार्षिक का हो गया है जिसको इस वर्ष तो एक अकेले जाति वीर गौड़कुल शिरोमणि श्रीमान् राजबहादुर प० बलराजीप्रसाद जी मिश्र ने ही अपने पास से दे दिया है। मगर आगे इस मद में भी सम्पन्न गौड़ भाइयों को सहायता देने के लिए विचार करना चाहिये क्योंकि इस महासभा की मैशीन चलाने की कुञ्जी कार्य्यालय है और कार्य्यालय के सुप्रबन्ध होने ही से अन्य सब विभाग उत्तमता पूर्वक अपना अपना कार्य्य कर सकते हैं अतः कार्य्यालय विभाग में सहायता देना ऐसा है जैसा किसी वृक्ष को जड़ को सींचना। और वृक्ष वही खूब फूलता और फलता है

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जिसकी जड़ परिश्रम और ध्यान से सींची जाती है अतः अब तक तो तीन ही विभाग महासभा की सहायता के थे अर्थात् १—छात्रवृत्ति, २—उपदेशक, ३—समाचारपत्र परन्तु अब चौथा विभाग कार्य्यालय भी सहायता के योग्य हो गया है।

नीचे लिखे सज्जनों ने जो सात्विकी दान अपनी इस जातीय संस्था को दिया है वह प्रशंसनीय है और प्रत्येक जातीय महानुभाव को अपने सांसारिक और खर्चों के साथ में अपनी जातीय महासभा की सहायता का भी ध्यान रखना चाहिये, तभी यह आपकी रजिस्टर्ड संस्था अपने पैरों पर खड़ी हो सकती है और पूर्ण बल के साथ कार्य्य में दत्त चित्त हो सकती है। नहीं तो धनाभाव से जो इसकी दशा अब तक रही है यदि वही रही तो फिर आप लोगों का यह कहना कि 'महासभा कुछ नहीं करती" आप ही लोगों के ऊपर घटेगा कि जब आप लोग सहायता नहीं देते तब आपकी महासभा किस प्रकार कोई कार्य्य करे।

५२६) छात्रवृत्ति विभाग में सहायता प्राप्त ।

१००) श्री० प० चतुर्भुजजी शर्मा—अध्यक्ष 'शङ्कर फ्लोर मिल' बरेली २५) मासिक के हिसाब से ४ मास की

६०) श्री० प० क्षेत्रपालजी शर्मा—अध्यक्ष 'सुखसंचारक कम्पनी' मथुरा १०) मासिक के हिसाब से ६ मास की

५०) श्री० प० देवीचन्द्रजी शर्मा—'अपर इण्डिया बैंक' शिमला ५) रु० मासिक के हिसाबसे १० मास की

४८) श्री० प० लक्ष्मीनारायणजी उपाध्याय - वकील मुरादाबाद ४) मासिक के हिसाब से पूरे साल भर की

३०) श्री० प० राजारामजी शर्मा—झाड़ती चोहड़पुर देहरादून ५) रुपये मासिक के हिसाब से ६ मास की

३०) श्री० रायसाहब हकीम प० बैजनाथजी त्रिवेदी—रईस मुरादाबाद ५) मासिक के हिसाब से ६ मास की

३०) श्री० प० हरस्वरूपजी पाठक—ऑफ़िशियेटिंग कलेक्टर, पीलीभीत ५) मासिक के हिसाब से ६ मास की

३०) श्री० प० रामप्रसाद जी शर्म्मा—मुख़्तार बुलन्दशहर ५) रुपये मासिक के हिसाब से ६ मास की

३०) श्री० डाक्टर प० विश्वपालजी शर्मा - मथुरा ५) मासिक के हिसाब से ६ मास की

३) श्री० प० शिवप्रसाद जगन्नाथ जी—रईस मुरादाबाद ५, रुपये मासिक के हिसाब से ६ मास की

२७) श्री० रायसाहब प० प्रभुदयालजी शर्मा बी०ए०, ई०ए०सी०(पंजाब ९ मासिक के हिसाब से ३ मास की

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२५ श्री० रायबहादुर प० बैनीप्रसाद जी मिश्र बी० ए०—डिप्टी कलेक्टर देहरादून ८) मासिक के हिसाब से ३ मास की

१५) श्री० रायसाहब डाक्टर प० मुरारीलाल जी शर्म्मा मुरादाबाद ५) मासिक के हिसाब से ३ मास की

१२) श्री० प० श्यामलाल जी गौड़ सुखसंचारक कम्पनी मथुरा २) मासिक के हिसाब से ६ मास की

१२) श्री० प० शिवचरण जी तिवाड़ी—मुख्तार अमरोहा, २) रुपये मासिक के हिसाब से ६ मास की

२५०) उपदेशक विभाग की सहायता।

२५०, श्री० प० ऋषिराम जी महाराज—रईस लाहौर ने ५०) रुपये मासिक के हिसाब से ५ मास की

६२५॥।) विशेष सहायता।

५००) श्री० प० ऋषिरामजी महाराज रईसआज़म लाहौर सभापति की हैसियत से दान

५३॥=) श्री० प० क्षेत्रपाल जी शर्मा, मथुरा हिसाब महे दान दिया

१०) श्री० प० ननलकिशोरजी तहसीलदार—बहेड़ी (बरेली) विशेष अधिवेशनके समय दान

१०) श्री० प० हरीरामजी टीचर तहसीली स्कूल देहरादून निज विवाह में दान

१०) श्री० प० सालिगरामजी मिश्र, मुख्तार इलाहाबाद निज पौत्र के विवाहमें दान

५) श्री० प० रामस्वरूप जी शर्मा वैद्य, काँठ (मुरादाबाद) प० देवीप्रसाद नावका निवासी के विवाह में

५) श्री० प० बिहारीलालजी शर्मा, बुलन्दशहर निज दौहित्र के विवाह में दान

५) श्री० प० हरिश्चन्द्रजी शर्मा, मैनेजर चाय स्टेट—चौहड़पुर (देहरादून) उपदेशक जाने पर दान।

२) श्री० प० पुष्करचन्द्र जी द्विवेदी—हल्दौर ज़िला बिजनौर निज विवाह में दान

१) श्री० प० कल्याणचन्द्रजी—गाँव इमलिया पो० रतनगढ़ ज़िला बिजनौर विशेष अधिवेशन पर दान

१ श्री० प० माधोराम फकीरचन्द्रजी गोड़—चौहड़पुर ज़ि० देहरादून उपदेशक जी के पहुँचने पर दान

१) श्री० प० रामशरणदास जी मौजा जमुनीपुर पो० हरबटपुर जिला देहरादून उपदेशकजी के पहुँचने पर दान

१) श्री० प० मथुराप्रसाद जी मौज़ा जस्सोवाला पो० हरबटपुर जिला देहरादून उपदेशक जी के पहुँचने पर दान

१) श्री० प० महावन्त महेशचन्द्र जी मौज़ा जमुनीपुर पो० हरबटपुर जिला देहरादून उपदेशक जी के पहुँचने पर दान

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१ श्री० प० धर्म्मदत्त जी शर्म्मा मोज़ा जस्सोवाला पो० हरबटपुर ज़िला देहरादून उपदेशक जी के पहुँचने पर दान
श्री० प० शिवचन्द्र जी शर्म्मा मोज़ा ढकरानी पो० हरबटपुर ज़िला देहरादून उपदेशक जी के पहुँचने पर दान
१ श्री० प० भरतशर्मा चोहड़पुर जिला देहरादून ,, ,,
१) श्री० प० आशाराम जी अम्बाला छावनी श्री० प० ज्येष्ठाराम उपदेशक द्वारा
१) श्री० प० हरदत्तजी टीचर ,, ,,
१) श्री० प० भगवन्तरामजी हलवाई ,, ,,
१) श्री० प० गोविन्दरामजी नाजरण्डी ,, ,,
१) श्री० प० कस्तूरामजी शर्मा गौड़ ,, ,,
१) श्री० प० श्रवणरामजी मलन्द ,, ,,
१) श्री० प० सुखदेवरामजी मेहता बधियाल ,, ,,
१) श्री० प० जगन्नाथप्रसादजी पुजारीकारी डी ,, ,,
१) श्री० प० तेजरामजी शर्मा चोहड़पुर (देहरादून) ,, ,,
॥) श्री० प० किशनलाल जी अत्तार अम्बाला छावनी ,, ,,
॥) श्री० प० गोविन्दराम देवकीनन्दनजी ,, ,,
॥) श्री० प० वीरभानुजी शर्मा बधियाल ,, ,,
।=) श्री० प० आत्मारामजी शर्मा अनाजमंडी ,, ,,
।) श्री० प० जवाहरलाल जी रजमटबाजार ,, ,,
१) श्री० प० ठाकुरदत्त जी वैद्य हल्दौर ज़ि० बिजनौर श्री० प० ज्ञानचन्द्रजी उपदेशक द्वारा
१ श्री० प० रामस्वरूप जी पुरोहित ,, ,,
१) श्री० प० उमादत्त जी वैद्य ,, ,,
१) श्री० प० चक्रीदत्त जी स्वामी ,, ,,
१) श्री० प० मधूसूदनदत्त जी शर्मा ,, ,,
॥) श्री० प० बलीराम जी हकीम ,, ,,
॥) श्री० प० मंगूमल जी ऋषि ,, ,,
॥) श्री० प० रामस्वरूप भंडूमल जी ,, ,,

६२५।।) योग

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रतिनिधि सभा के सदस्यों को धन्यवाद।

परमात्मा को अनेक धन्यवाद है कि जिसकी कृपाकटाक्ष से इस वर्ष हम केवल ४ मास के छोटे से समय में हम नीचे लिखे ६० महानुभावों के पवित्र और प्रतिष्ठित शुभनाम सदस्य शुल्क प्राप्त होने की सूचीमें प्रकाशित करते हैं कि जहाँ हम गतवर्षमें इस मास तक केवल ३२ सभासदोंके प्रतापी नामोंका ही सदस्य शुल्क प्राप्त कर सके थे।

इन नीचे लिखे सज्जनों के अतिरिक्त २० महानुभाव वे भी प्रतिनिधि के सदस्य हो गये हैं कि जिन्होंने छात्रवृत्ति या उपदेशक या विशेष सहायतामें ६)रु० या ६,रु० से अधिक दान किया है अतः इस प्रकार इन ४मासमें हम इस वर्ष ८० महोदयोंसे सदस्य शुल्क प्राप्त कर चुके हैं यह परमात्मा का अनुग्रह और इन उदार प्रेमी भाइयों की नातीय सहिष्णुता का ही कारण है।

सबसे अधिक प्रसन्नता की बात यह है कि इन सज्जनों ने केवल एक सूचना पत्र जाने पर ही अपना अपना सदस्य शुल्क भेज दिया है। क्योंकि अब दूसरा प्रार्थना पत्र तो २० अगस्त सन् ३० को गया है जिसकी प्राप्त स्वीकार अगले मास में प्रकाशित होगी। इस अङ्क में उन्हीं श्रीमानों के नाम प्रकाशित किये गये हैं जिनका सदस्य शुल्क ३१ अगस्त सन् ३० तक आगया है।

दिसम्बर सन् १९२७ में जबकि महासभा का ३०वाँ वार्षिकोत्सव मुरादाबाद में हुआ था। प्रतिनिधियों का निर्वाचन ज़िलेवार हुआ था। इसलिए उस समय केवल पञ्जाब और यू० पी० से ही २५० सभासद् प्रतिनिधि सभा के चुने गये थे जिनमें से सन् १९२८ में केवल १०५ महानुभावों ने सदस्य शुल्क भेजा अतः नियमानुसार शेष १४४ सभासदों का नाम कट जाना चाहिए था परन्तु उस समय के अधिकारियों की शिथिलता से ऐसा न हो सका। दिसम्बर सन् १९२८ में कलकत्ता महोत्सव में २५० तो पुराने सभासद थे ही करीब २५० ही और उधर के प्रान्तों के गौड़ भाई निर्वाचित हुए अतः यह सूची ५०० सभासदों की हो गयी जिनमें से अनुमान से ५० सभासदों ने गतवर्ष सन् १९२९ में सदस्य शुल्क भेजा और शेष ४५० ने पत्रों के उत्तर तक न दिये। नियमानुसार यह ४५० सभासद पृथक् कर देने चाहिये थे मगर गतवर्ष भी ऐसा नहीं हुआ। अब जब जनवरी सन् ३० में प्रयाग में महाधिवेशन और अप्रेल सन् ३० में मुरादाबादमें विशेषाधिवेशन हुआ तब यह सूची बढ़कर १००० सभासदों की बन गयी जिनमें से इस समय तक ८० महानुभावों ने सदस्य शुल्क भेजने की कृपा की है। शेष सभासदों में से अनुमानतः १००।१२५ का सदस्य शुल्क इस मास सितम्बर में आजायगा, जैसा कि नित्य के पत्रों से विदित हो रहा है। सदस्य शुल्क की प्रार्थना का अन्तिम पत्र अक्टूबर के पहले सप्ताह में रवाना होगा और उसमें २५ अक्टूबर सन् ३० सदस्य शुल्क भेजने की अन्तिम तिथि रक्खी जावेगी और उस तारीख तक जिन महानुभावों के सदस्य शुल्क नहीं आवेंगे इस वर्ष उनके नाम अवश्य काट दिये जावेंगे। इसलिए सभासदगण सदस्य शुल्क भेजने में शीघ्रता करें।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

धन्यवाद सूची।

जिन सज्जनों से सन् १९३० ई० का प्रतिनिधि सदस्य शुल्क प्राप्त हो चुका है।

१	श्री० प० राजारामजी शर्मा रईस चूहड़पुर (देहरादून)	६) प्राप्त
२	श्री० प० श्रीकृष्णाचार्यजी गौड़ वैद्य, काज़ीटोला, आरा (बिहार)	,,
३	श्री० प० राधेश्यामजी शर्मा कथावाचक, बरेली	,,
४	श्री० प० लक्ष्मीचन्द्र जी पंजाब सिविल सेक्रेट्रियेट लाहौर	,,
५	श्री० प० बनारसीदास जी शर्मा वकील, शिमला	,,
६	श्री० प० केदारनाथ जी शर्मा सह०मंत्री ऋषिकुल हरिद्वार	,,
७	श्री० प० सूर्यकुमारजी उत्था सनिक बी०ए०गोलपचक जि०मेदिनापुर, बंगाल	,,
८	श्री० प० श्रीवल्लभजी उत्थासनिक पञ्चवसन पो० तुमलुक	,,
९	श्री० प० अन्नदाचरणजी अधिकारी गाँवभोलासारा पो०महिषदल,	,,
१०	श्री० प० बरदाशङ्कर—भगवान् चतुष्पाठी जि० चौबीस परगना (बङ्गाल)	,,
११	श्री० प० जगनेश्वरकार भट्टाचार्य्य—ग्राम बेतलवसन पो० बबरतरहाट जि० मेदिनापुर (बङ्गाल)	,,
१२	श्री० प० विमलचरण मिश्र चक्रवर्ती—हवड़ा (बङ्गाल)	,,
१३	श्री० रायबहादुर प० बैनीप्रसाद जी मिश्र डिप्टी कलेक्टर देहरादून	,,
१४	श्री० प० गङ्गावल्लभ जी रईस रायपुर (देहरादून)	,,
१५	श्री० प० लक्ष्मीनारायण जी शर्मा मुन्सिफ, जलेसर (एटा)	,,
१६	श्री० प० जानकीप्रसादजी शर्मा सबइन्सपेक्टर पुलिस कोतवाली (झांसी)	,,
१७	श्री० प० मूलचन्द्र जी शर्मा गवर्नमेंट पेन्शनर (डाक्टर) सम्भल, मुरादाबाद	,,
१८	श्री० प० धनीरामजी शर्मा बी० ए० सिविल जज झालरापाटन	,,
१९	श्री० डाक्टर प० विश्वपालजी शर्मा मथुरा	,,
२०	श्री० प० रामचन्द्र रामप्रतापजी गौड़ रईस मुकटराबाजार, सआदतगंज	,,
२१	श्री० रायबहादुर प० वासुदेवजी अनन्त बाम्बर्डेकर नासिकरोड	,,
२२	श्री० प० आत्मारामजी शर्मा एग्ज़ामिनर एकाउण्टेण्ट जन० ऑफ़िस पटियाला	,,
२३	श्री० प० उत्तमचन्द्रजी शर्मा एस० डी० ओ० लाहौर छावनी	,,
२४	श्री० प० माधोप्रसादजी शर्मा मैनेजर इंडियन प्रेस लिमिटेड आगरा ब्रांच आगरा	,,
२५	श्री० प० हरस्वरूप जी पाठक औफ़िशियेटिङ्ग कलक्टर पीलीभीत	,,
२६	श्री० प० रघुनाथदासजी मास्टर रामजस हाईस्कूल आनन्दपर्वत देहली	,,
२७	श्री० प० शिवचरणजी तिवाड़ी मुख्तार अमरोहा (मुरादाबाद)	,,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२८	श्री० प० जादौप्रसादजी मिश्र पुरानीगंज—मुंगेर	६ प्राप्त
२९	श्री० प० दुर्गाप्रसादजी मुख्तार खुर्जा (बुलन्दशहर)	,,
३०	श्री० प० क्षेत्रपाल जी शर्मा—सुखसंचारक कम्पनी, मथुरा	,,
३१	श्री० प० फ़कीरचन्द्रजी रईस मु० पो० रायपुर ज़ि० देहरादून	,,
३२	श्री० प० मुकुन्दलालजी मु० पो० चूहड़पुर (देहरादून)	,,
३३	श्री० प० अमीनचन्द्रजी मौज़ा जीवनगढ़ पो० अम्बाड़ी (देहरादून)	,,
३४	श्री० प० परशुरामजी शास्त्री एम० पी० मिशन हाईस्कूल (देहरादून)	,,
३५	श्री० प० इन्द्रराजजी शर्मा सरदार-पंचपुरी मु० पो० ज्वालापुर (सहारनपुर)	,,
३६	श्री० प० रामरक्खाजी ज़मींदार मु० पो० ज्वालापुर (सहारनपुर)	,,
३७	श्री० प० आत्मारामजी अनाज मण्डी अम्बाला छावनी	,,
३८	श्री० प० नौरातारामजी खुड्डाकलाँ पो० बिहटा जिला अम्बाला	,,
३९	श्री० प० साधूरामजी शर्मा डाक्टर जेल अम्बाला	,,
४०	श्री० प० देवतरामजी ज़ैलदार नारनौंद (हिसार)	,,
४१	श्री० प० रामचन्द्रजी शर्मा बी० ए० एल-एल० बी० वकील हिसार	,,
४२	श्री० प० मङ्गतराम जी शर्मा गौतम हिन्दी पाठशाला नारनौंद (हिसार)	,,
४३	श्री० प० राजारामजी नारनौंद (हिसार)	,,
४४	श्री० प० मामर जजी शर्मा नारनौंद (हिसार)	,,
४५	श्री० प० लक्ष्मीचन्द्रजी नारनौंद (हिसार)	,,
४६	श्री० प० मातूरामजी शर्मा वल्द प० बिहारीलालजी नारनौंद (हिसार)	,,
४७	श्री० प० सुखलालजी शर्मा वल्द प० गूगनरामजी शर्मा नारनौंद हिसार)	,,
४८	श्री० प० रामचन्द्रजी दुबे दर्बार सेक्रेटरी महाराजा भावुआ—इन्दौर	,,
४९	श्री० प० गोविन्दप्रसाद जी कौशिक बी० ए० एटेची महाराज सिरोही आबू	,,
५०	श्री० प० सोहनलालजी गौड़, म्यूनिसिपल कमिश्नर व आ० म० व्यावर (रा० पू०)	,,
५१	श्री० रायसा० प बिहारीलालजी शर्मा इञ्जीनियर बनारस स्टेट चकिया(बनारस)	,,
५२	श्री० प० रामजीदासजी हैडक्लर्क गवर्नमेंट रेलवे पुलिस ऑफ़िस—अजमेर	,,
५३	श्री० प० रामस्वरूप जी वैद्य —मुहल्ला मण्डी बांस, मुरादाबाद	,,
५४	श्री० प० लक्ष्मणप्रसादजी जोशी तहसीलदार सैदपुर (गाज़ीपुर)	,,
५५	श्री० प० लीलाधर जी शर्मा साइन्स मास्टर दरबार हाईस्कूल झालरापाटन	,,
५६	श्री० प० हरेकृष्णजी स्वामी वैद्य—ख़ास बाज़ार, कानपुर	,,
५७	श्री० प० हरनामकुमारजी सोती रईस और ऑनरेरी मजिस्ट्रेट बिजनौर	,,
५८	श्री० प० मूलचन्द्रजी ओवरसियर डिस्ट्रिक्टबोर्ड बिजनौर	,,
५९	श्री० प० बदरीदत्त जी महाराज रईस —झालू जि० बिजनौर	,,
६०	श्री० प० हरस्वरूप जी शर्मा सबइन्सपेक्टर पुलिस चाँदपुर जि० बिजनौर	,,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

शोक समाचार ।

गौड़ ब्राह्मण जाति में यह समाचार बड़े दुःख के साथ पढ़ा जायगा कि हिन्दी संसार के सुपरिचित, अ० भा० गौड़ ब्राह्मण महासभा के यू० पी० प्रान्त के उपसभापति गौड़ कुल भूषण श्रीमान् प० रामजीलालजी शर्मा – अध्यक्ष "हिन्दी-प्रेस" प्रयाग का गत ३० अगस्त सन् १९३० शनिवार को रात्रि के ७॥ बजे स्वर्गवास हो गया ।

स्वर्गीय श्रीमान् के सुयोग्य पुत्र, हमारे चिरपरिचित मित्र श्री० प० रघुनन्दनजी शर्मा का २७ अगस्त अर्थात् मृत्यु से तीन दिन पहले का लिखा पत्र जो हम को २९ अगस्त को मिला था हमको उसी पत्र से चिन्ता हो गयी थी कि श्री० प० रामजीलाल जी शर्मा की दशा संतोषजनक नहीं है । परन्तु हम को यह स्वप्न में भी विश्वास नहीं था कि दूसरे ही दिन यह भयङ्कर वज्रपात हो जायगा ।

यद्यपि स्व० श्रीमान्जी की अवस्था इस समय ५१ वर्ष की थी परन्तु पण्डित जी की कार्य-परायणता को देखते हुये यह अवस्था कुछ भी नहीं थी । क्योंकि यदि रोग ने उनको दुःखी न किया होता तो वे परिश्रम करने के लिये अभी पूर्ण युवक थे । गत जनवरी मास में कुम्भ के पवित्र अवसर पर आपकी तत्परता को देखकर हम तो अवाक् रह गये थे। यद्यपि उस समय भी आप अस्वस्थ थे । एक के बाद एक फोड़ा कहीं न कहीं निकल ही आरहा था तथापि अ०भा० गौड़ ब्राह्मण महासभाका बत्तीसवाँ वार्षिकोत्सव जो आपके ही पूर्ण प्रबन्ध से कुम्भ जैसे घोर घमासान अवसर पर सम्पन्न हुआ था उसमें आपकी कार्य्य तत्परता देखने ही योग्य थी । मकर के भयङ्कर शीत में रात्रि के ३।३ बजे महासभा की अन्तरङ्ग सभाओं में खुले मैदान में एक तम्बू के अन्दर उत्साह से कार्य करना श्रीमान् के रुग्ण शरीर के लिये असम्भव बात थी, परन्तु उन्होंने जातीय सेवा के सामने अपने रोग की कुछ परवाह न की, धन्य है ऐसे जाति प्रेमी उत्साही वीर को ।

आपका विचार था कि अब तक अपनी मातृ-भाषा की सेवा ही में अपना समय व्यतीत किया है, परन्तु अब से मैं जातीय सेवा में भी पूरा योग दूंगा । आपने मुझसे स्पष्ट कहा था कि इस वर्ष मैं इस अपनी महासभा के नियम और उद्देश्यों को इतना सुदृढ़ और सुन्दर बना दूंगा कि जिससे फिर इसके कार्य संचालनमें कोई बाधा हो न पड़े । इसी लक्ष्य को रखते हुये जाति के कर्णधार नेताओं ने आपको इस वर्ष महासभा का उपसभापति और 'नियम सुधारक कमेटी' का एक सर्वोत्तम सदस्य चुना था, परन्तु जब जब आपको महासभा की प्रबन्धकारिणी समिति की बैठकों का निमन्त्रण भेजा गया तभी तभी आपका यही उत्तर आया कि मैं शय्याग्रस्त बीमार होने से आने में असमर्थ हूँ ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गत १ अगस्त सन् ३० को श्रीमान् प० शङ्करदत्त जी महाराज जो कि महासभा की मैनेजिङ्ग कमेटी के सुयोग्य सदस्य हैं उक्त स्वर्गीय प० रामजीलाल जी से प्रयाग में मिले थे तो उस समय महासभाके सम्बन्धमें उनसे बहुतसी बातचीत हुई थी। जिससे पता चलता है कि यद्यपि वह रोगों से जकड़े हुये थे तथापि उनका हृदय जातीय महासभा के उद्धार में लगा हुआ था।

हम लोगों का विचार हो रहा था कि अक्टूबर के पहले सप्ताहमें 'नियम सुधारक कमेटी' की बैठक प्रयाग में हिन्दी प्रेस में ही रक्खी जावे ताकि श्री० प० रामजीलालजी शर्म्मा सुविधा पूर्वक उसमें भाग लेसकें और यह कार्य्य जो बड़े ही महत्वका है उनकी सुसम्मति से सुदृढ़ होजाय। परन्तु वही कहावत हुई कि "मेरे मन कछु और है करता के कछु और"। परमात्मा ने हमारे मन को बात न होने दी और उनको अत्यन्त शीघ्र ३० अगस्त को ही अपने पास बुला लिया।

आज शर्म्माजी के गुणानुवाद गाने का दिन नहीं है क्योंकि आज तो हम उनके वियोग के शोक में विह्वल और व्याकुल हैं। हमारा उक्त श्रीमान् से उस समय से प्रेम और मित्रता भाव था कि जिस समय आप इण्डियन प्रेस में सरस्वती और हिन्दी पुस्तक प्रकाशन विभाग में कार्य्य करते थे। शर्म्मा जी की मिलनसारी से यह प्रेम परिचय दिन दूना रात चौगुना होता चला जारहा था और गत जनवरी सन् १९३० से तो इस प्रेम और स्नेह में एक नया ही जातीय प्रेम का भी सम्पुट लग गया था, ऐसी दशा में अकस्मात् इनके वियोग से जो मार्मिक व्यथा हमारे हृदय को पहुँची है वह लिखने से बाहर है। इस लिये आज हम उनके गुणानुवाद न लिखकर जातीय संसार को यही कहकर पश्चाताप करेंगे कि अपनी गौड़ जाति को आपके निधन से जो तीव्र हानि पहुँची है उसकी पूर्ति होना असम्भव है।

शर्म्मा जी के तीनों सुयोग्य पुत्रों और शोक सन्तप्त परिवारको हम किस प्रकार सान्त्वना दें जबकि हम स्वयं ही उनके वियोग में व्याकुल हैं। केवल प्रिय भाई रघुनन्दन जी शर्मा को यही लिखकर अपनी समवेदना प्रकट करते हैं कि भाई यह शरीर अनित्य है और संसार का यही मार्ग है। भगवान् की लीला को हम और आप नहीं जान सकते, इसलिये उसने जो वज्र प्रहार किया है उसको धैर्य्य से सहन करना ही हमारे और आपके लिये उचित है क्योंकि इस अवसर पर हम और आप किंकर्त्तव्य विमूढ़ हैं।

अन्त में हम सर्वशक्तिमान् ईश्वर से स्वर्गीय श्रीमान् की आत्मा को वैकुण्ठ में पूर्ण शान्ति और उच्चासन मिलने की प्रार्थना करते हुये अपने तीनों भाइयों से धैर्य्य धारण करने का निवेदन करते हैं।

———

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिजनौर ।

गतांक में हम मेरठ कमिश्नरी के प्रथम जिले देहरादून के गौड़ ब्राह्मणों का विवरण आप लोगों को बतला चुके हैं। इस अंक में संयुक्त प्रांत की दूसरी कमिश्नरी रुहेलखण्ड के प्रथम जिले बिजनौरके गौड़ भाइयों का हाल हम आपके सामने प्रस्तुत करेंगे। आशा है कि हमारे पाठकों को इससे कुछ परिचय प्राप्त होगा।

यह बिजनौर छोटा सा जिला उत्तर में गढ़वाल, पश्चिम में सहारनपुर, दक्षिण में मेरठ और पूर्व में मुरादाबाद. इन चार बड़े बड़े जिलों से घिरा हुआ श्री पतित पावनी भागीरथी के किनारे बसा हुआ है। गत वर्ष तक इसके मुख्य स्थान बिजनौर में रेलवे मार्ग न था लेकिन इस वर्ष ई० आई० आर० की गजरौला चांदपुर वाली लाइन बढ़कर नजीबाबाद तक बन गयी है जिसमें बिजनौर एक मुख्य रेलवे स्टेशन बन गया है जिससे बिजनौर निवासियों को बड़ी सुविधा हो गयी है।

बिजनौर जिला पैदावार और जल वायु के लक्ष्य से अच्छा जिला है। इसमें सर्वत्र अन्य धान्यों की उपज के अतिरिक्त ईख की खेती बड़े ज़ोरों से होती है और गुड़ शक्कर इस ज़िले की ख़ास पैदावार है। जिधर आँख उठाकर देखिये मीलों ईख के खेत दिखायी पड़ते हैं और गुड़ की तैय्यारी के दिनों में गाँव गाँव कोल्हू चलते नज़र आते हैं। बिजनौर जिलेमें धामपुर, नगीना, नजीबाबाद, कीरतपुर आदि शक्कर की प्रसिद्ध मण्डियां हैं। जहाँ से लाखो मन गुड़ और शक्कर बाहर को रवाना होता है।

बिजनौर जिले में सबसे अधिक आबादी चौहान ठाकुरों की है और उससे उतरकर दूसरे नम्बर भगवान् की कृपा से गौड़ ब्राह्मणों की संख्या का है। यद्यपि आज से २० वर्ष पहले इस जिले में जितने गौड़ ब्राह्मण थे, इस समय उससे आधे भी नहीं हैं। तथापि गौड़ ब्राह्मण अब भी पर्याप्त संख्या में हैं। जिनका मुख्य पेशा पण्डिताई, लैन देन और ज़मींदारा है। इस जिले में अपनी गौड़ जाति में कई एक अच्छे खानदान और धन सम्पन्न घराने हैं कि जिनका विवरण आप आगे पढ़ेंगे।

बिजनौर जिले में बिजनौर, नजीबाबाद, नगीना और धामपुर चार तहसीलें हैं जिनके सभी बड़े बड़े कसबों में गौड़ ब्राह्मणों की आबादी बहुतायत से पायी जाती जाती है। इस जिले में गौड़ भाई सभ्य, सुशिक्षित और सीधे तथा जाति प्रेमी दिखलायी पड़ते हैं। प्रत्येक तहसील में २।२, ४।४ ऐसे गौड़ परिवार हैं कि जो रईस और धन सम्पन्नों की गणना में लिखे जा सकते हैं।

ब्रिटिश राज से पहले यह जिला केवल मुसलमान नवाबों और रईसों का जिला था कि जिसके चिह्न अभी तक नज़र आते हैं यानी सब बड़े बड़े कसबों में पुरानी मुसलमानी इमारतों के भग्नावशेष और मुसलमानी ढङ्ग की रहन सहन तथा तर्ज़ रविश अब तकइस जिले के निवासियों में पायी जाती है, इसलिए यहाँ देवनागरी हिन्दी की बनिस्बत उर्दू भाषा का अधिक रिवाज है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिजनौर जिले के मुख्य स्थान शहर बिजनौर में इस समय अनुमान से २५० घर गौड़ ब्राह्मणों के हैं जिसमें सभी श्रेणी के महानुभाव निवास करते हैं। इस नगर की गौड़ जाति में सबसे प्रसिद्ध ख़ानदान सोती परिवार का है कि जिस परिवार से हमारी महासभा तथा अधिकांश गौड भाई भली भाँति परिचित हैं। क्योंकि इसी ख़ानदान के सिरमौर गौड़ जाति का मस्तक ऊँचा करने वाले गौड़ जाति के अनन्य भक्त, प्रातःस्मर्णीय स्व० श्रीमान् रायबहादुर सोती प० रघुवंशलाल जी एम० ए०, डिस्ट्रिक्ट और सेशन जज इस आपकी महासभा की आदर्श सेवा कर चुके हैं और अनेकों वर्ष तक महासभा के उपसभापति और सभापति पदों को अलंकृत कर गौड़ ब्राह्मण जाति में जो प्रेम का श्रोत बहा गये हैं आज उसी का यह फल है जो हम और आप अपनी इस वृहद् जातीय महासभा का दर्शन कर रहे हैं।

आप तीन सहोदर भाई अर्थात् श्री० रायबहादुर सोती प० हरवंशलाल जी महाराज, श्री० रायबहादुर सोती प० रघुवंशलाल जी महाराज एम० ए० और श्री० सोती प० कृष्णस्वरूप जी महाराज बी० ए० थे। कि जिनमें से श्री० सोती प० कृष्ण-स्वरूप जी महाराज बी० ए० अभी तक विद्यमान हैं और भारतवर्ष में लुई कुहनी की जल चिकित्सा के प्रसिद्ध चिकित्सक हैं। आपने बिजनौर शहर से बाहर अपनी ज़मीन पर "कुहनी आश्रम" नाम से एक आश्रम बनाया है जिसमें सब प्रकार के रोगियों की जल चिकित्सा होती है। इसी आश्रम में आजकल आप निवास करते हैं। आपके तीन पुत्र और दो कन्यायें हैं। बड़े पुत्र श्री० प० विष्णुस्वरूप जी एम०ए० एल-एल० बी० यहीं मुरादाबाद में वकालत करते हैं। शेष पुत्र छोटे हैं और वह विद्याध्ययन कर रहे हैं।

शहर में विशाल हवेली में श्री० सोती हरवंशलाल जी और सोती रघुवंशलाल जी महाराज के परिवार सुखपूर्वक निवास करते हैं। दोनों परिवारों की फूलती फलती फुलवाड़ी को देखकर हमारा चित्त बड़ा ही सुखी हुआ। हवेली के सुप्रशस्त प्राङ्गण में १५।२० छोटे छोटे बालक बालिकाओं को खेलते देख हृदय गद्गद हो गया श्री० स्व० सोती प० हरवंशलालजी के एक पुत्र प० शिवकुमार जी और स्व० सोती रघुवंशलाल जी के चार पुत्र श्री० सोती प० हरनामकुमारजी, श्री० सोती प० राम-कुमार जी श्री० सोती प० भरतकुमारजी और श्री० सोती प० शत्रुघ्नकुमार जी विद्यमान हैं इनमें सिवाय शत्रुघ्नकुमारजी के और सबके विवाह हो गये हैं। और प० भरतकुमारजीको छोड़कर कि जिनका इसीवर्ष विवाह हुआ है सबके बाल-बच्चे भी हैं।

श्रीमान् सोती प० हरनामकुमार जी ऑनरेरी मजिस्ट्रेट और श्री० प० भरत-कुमार जी एम० ए० एल-एल० बी० वकील हैं। श्री सोती रामकुमार जी जिमींदारी का कार्य करते हैं और सोती शत्रुघ्नकुमार जी हिन्दू यूनीवर्सिटी काशी में बी० ए० में पढ़ रहे हैं। श्री० प० शिवकुमार जी सोती भी अपनी जिमींदारी के कार्य्यों ही में व्यग्र रहते हैं। निदान सोती जी का यह ख़ानदान इस समय तक अच्छी प्रतिष्ठा को बनाये हुए है और हमारी गौड़ जाति को गौरवास्पद है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिजनौर में दूसरा प्रसिद्ध गौड़ ख़ानदान मुहल्ला जाटान में श्रीमान् पण्डित महावीरप्रसाद ज्योतीप्रसाद जी दुबे साहिबान का है इस ख़ानदान के श्री० पण्डित ज्योतीप्रसाद जी पंजाब में इर्रीगेशन विभाग के एग्ज़ीक्यूटिव इञ्जीनियर हैं और प० महावीरप्रसाद जी बिजनौर ही में निवासकर जिमींदारी का कार्य सम्पादन करते हैं। इन्हीं के भतीजे श्री० प० मूलचन्द्र जी दुबे डिस्ट्रिक्टबोर्ड बिजनौर के ओवरसियर हैं और महासभा के मेम्बर हैं। इसी ख़ानदान के एक रत्न श्री० प० रामचन्द्र जी दुबे महासभा के अनन्य भक्त हैं और सेन्ट्रल इण्डिया में अपनी प्रतिभा से गौड़ जाति का मस्तक ऊँचा किये हुए हैं। आप आजकल झाबुआ महाराजके दर्बार सेक्रेटरी हैं और प्रायः महाराज के साथ "आनन्द विलास पेलेस" में इन्दौर रहते हैं। आपने इस वर्ष गौड़ महासभा को ६) मासिक की छात्रवृत्ति देकर तीन विद्यार्थियों को महासभा द्वारा सहायता पहुँचाई है और वर्ष भर का धन ७२) रु० भेजकर अपने जातीय प्रेम का ज्वलन्त परिचय दिया है।

इनके अतिरिक्त भारत प्रसिद्ध विधवाविवाह के प्रवर्त्तक श्री० सोती प० शङ्कर-लाल जी को भी इसी जिले की भूमिने जन्म दिया था जिनके दो पुत्र सोती जगदीश-दत्त जी और सोती पुरुषोत्तमशरण जी विद्यमान हैं।

गौड़ महासभा के पुराने महोपदेशक श्री० प० डालचन्द्र जी शर्म्मा आजकल बिजनौर ही निवास कर प्रतिष्ठा के साथ वैद्यक कर रहे हैं। इनके अतिरिक्त शेष प्रतिष्ठित गौड़ भाइयों की नामावली इस लेख के अन्त में प्रकाशित की जाती है।

बिजनौर से ११ मील दूर कीरतपुर कसबा है जिसमें अनुमान से ३०।३५ घर गौड़ ब्राह्मणों के हैं। इस कसबे में श्री० प० अमरनाथ जी गौड़—रईस और धन सम्पन्न व्यक्ति हैं आप नवयुवक हैं और आपके हृदयमें जातीय प्रेम है आप महासभा के प्रतिष्ठित सभासद भी हैं। आप दो सहोदर भाई हैं, सगृहस्थ हैं।

कीरतपुर में दूसरा ख़ानदान भी० प० मथुराप्रसाद जी शर्म्मा का है। आप भी रईस हैं और लैन देन का बड़ा कार्य करते हैं। पिछले दिनों आपने 'गौड़ ग्लास वर्क्स' नाम की काँच की शीशी चिमनी आदि का एक कारख़ाना खोला था, परन्तु लैन देन के काम से अवकाश न मिलने के कारण चल न सका। माल का स्टाक अब भी खूब भरा है। आपके चार पुत्र और दो कन्यायें हैं, जिनमें तीन अङ्गरेज़ी और हिन्दी पढ़ रहे हैं।

श्री० प० कल्याणदत्त जी शर्मा इस कसबे के विद्वान् पुरुष हैं आप विद्यार्थियों को विद्या दान भी देते हैं। श्री० प० छज्जूराम जी बड़े ही जाति प्रेमी और दयालु हृदय के वृद्ध पुरुष हैं और शान्ति से अपना समय व्यतीत कर रहे हैं। इस कसबे के अन्य गौड़ भाइयों की शुभनामावली अन्त में प्रकाशित की गयी है।

यहां से १३ मील दूर नजीबाबाद है जो ज़िले की बड़ी तहसील है। बिजनौर की अन्य तहसीलों से इसी में सबसे अधिक रौनक है यहाँ से पहाड़ के लिए तिजा-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रत होती है। पासमें लैंसडाउन छावनी है। इस नगरमें करीब १०० घर गौड़ ब्राह्मणों के हैं। यहाँ रेलवे जङ्कशन गवर्नमेण्ट हाईस्कूल और ऑनरेरी मुन्सिफी की कचहरी भी है। श्रीमान् प० श्यामस्वरूप जी बी० ए० एल-एल० बी० वकील और म्यूनिसिपल कमिश्नर इस स्थान के प्रसिद्ध प्रतिष्ठित गौड़ भाई हैं। आपके ३ पुत्र और २ पुत्री हैं, जिनमें केवल अभी एक पुत्री का विवाह हुआ है, पुत्र छोटे छोटे हैं। आप नगीने में वकालत करते हैं क्योंकि वहाँ मुन्सिफ़ी है। यहाँ की तहसील के तहसीलदार साहब भी गौड़ ब्राह्मण हैं जिनका पवित्र नाम श्री० प०रूपनारायणजी शर्मा हैं. आप सहारनपुर के निवासी हैं आपके २ पुत्र हैं। जो अविवाहित हैं और अङ्गरेज़ी पढ़ रहे हैं।

नजीबाबाद के पास ही चन्दक एटेशनसे ४।५ मील दूर पक्की सड़क के किनारे मँडावर कसबा है जहाँ गौड़ ब्राह्मणों के कई प्रतिष्ठित घर हैं। श्रीमान् प० बैजनाथ जी महाराज, श्री० प० देवकीप्रसादजी हकीम और श्री० प० राजनाथ जी ऑनरेरी मजिस्ट्रेट उल्लेख योग्य गौड़ महानुभाव हैं। इस समय श्रीमान् प० बैजनाथ जी महाराज महासभा की प्रतिनिधि सभा के सन्माननीय मेम्बर हैं।

नजीबाबाद से पूर्व की ओर नगीना तीसरी बड़ी तहसील है। इस शहर में भी अनुमान से १००।१२५ घर गौड़ भाइयों के हैं। जिनमें श्रीमान् प० बाबूराम जी वैद्य, श्रीमान् प० हरिशङ्कर जी वैद्य, श्रीमान् प० प्यारेलालजी जी शर्मा बी० ए० एल-एल० बी० वकील और प० आत्माराम जी मास्टर जार्ज हिन्दू हाईस्कूल उल्लेख योग्य गौड़ महानुभाव हैं। इनमें से श्रीमान् प० बाबूरामजी वैद्य बड़े ही सज्जन और मिलनसार मिष्टभाषी और जाति प्रेमी सज्जन हैं, आप महासभा के प्रतिष्ठित मेम्बर भी हैं। श्री० प० हरिशंकर जी वैद्य बड़े ही गम्भीर विचार और सुलझे हुए ख़यालातोंके सज्जन हैं। आपकी सज्जनता नगीने में आपकी धाक जमाये हुए है। यद्यपि इस समय आप के नेत्रों की ज्योति जाती रहने से किसी कार्य्य को सम्पादन नहीं कर सकते तथापि रोगियों को उचित औषधि प्रदान करना आपका नित्य का मुख्य कार्य्य है आपकी चिकित्सा कसबे भर में मशहूर है। प० प्यारेलाल जी शर्मा वकील बड़े ही अच्छे विचारों के प्रेमी सज्जन हैं और बड़े प्रेम से मिलने वाले भाई हैं आपके दो पुत्र हैं जो अङ्गरेज़ी पढ़ रहे हैं आपके पूज्य पिताजी भी विद्यमान हैं। इस तहसीलके तहसीलदार साहब श्री० प० नवलकिशोर जी महाराज गौड़ ब्राह्मण हैं और महासभा के प्रतिष्ठित सदस्य हैं।

इस नगर से ४।५ मील दूर बड़ापुर नामक ग्राम है जिसमें श्री० प० गौरीदत्तजी महाराज निवास करते हैं आपके ५ पुत्र हैं आप पहले खूब धन सम्पन्न व्यक्ति थे अब भी अच्छे सद्गृहस्थ हैं।

इस जिले की चौथी तहसील धामपुर है। यह रेलवे स्टेशन भी है और यहां पर शक्कर की सबसे बड़ी मण्डी है। इस नगर में पहले ३०० घर के अनुमान गौड़

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ब्राह्मणों के थे परन्तु समय की गति कि अब केवल १०० देहली गौड़ ब्राह्मणों की पाई जाती हैं। इस कसबे के गौड़ ब्राह्मणों में सबसे अधिक सम्पन्न श्रीमान् प० बिहारी-लाल लल्लूमलजी का ख़ानदान है आपने धामपुर में एक भव्य धर्मशाला अपने ही धन से बनवाई है आपकी आढ़त की बहुत बड़ी दुकान है जिस पर श्रीमान् पण्डित सूर्य्यभानु जी बड़ी योग्यता से व्यवसाय कर रहे हैं। यद्यपि आपकी अवस्था अभी २०।२२ वर्ष की ही है परन्तु योग्यतामें आप बड़े बूढ़ोंसे अच्छे हैं आपने बड़ी प्रसन्नता से महासभा का सदस्य बनना स्वीकार किया और वार्षिकोत्सव पर पधारने का भी वचन दिया।

इस कस्बे में दूसरे श्रीमान् प० रघुवरदयाल जी वैद्य म्यूनिसिपल कमिश्नर हैं आप महासभा के गत कई वर्षों से प्रेमी सभासद हैं आप धामपुर के प्रतिष्ठित पुरुषों में से एक हैं। आपके उद्योग से धामपुर में गौड़ जाति का प्रत्येक काम बड़ी सुन्दरता से परिचालित होता है। आप बड़े उच्च विचार के महानुभाव और जाति प्रेमी सज्जन हैं। इस तहसील में श्रीमान् प० हरप्रसादजी नायब तहसीलदार साहब गौड़ ब्राह्मण हैं आपके दो पुत्र हैं जिनमें बड़े श्री० कविराज प० शान्तिप्रकाशचन्द्रजी धामपुर ही में एक बड़ा आयुर्वेदीय औषधालय खोले हुए हैं आपकी अवस्था २२।२३ वर्ष के लगभग है और अभी तक आप ब्रह्मचर्य्य का पालन कर अविवाहित हैं आप की इच्छा धर्म-शास्त्रानुसार २५ वर्ष तक ब्रह्मचर्य्य आश्रममें रहकर तत्पश्चात् विवाह कर गृहस्थाश्रम में पदार्पण करने की है। आप बड़े ही सुशील, सौम्य, सुन्दर और भव्य आकृति के कुमार हैं।

धामपुर के पास शेरकोट, अफ़ज़लगढ़ और नहटोर अच्छे कस्बे हैं जिनमें प्रति-ष्ठित गौड़ भाई निवास करते हैं। शेरकोट में श्रीमान् प० श्यामसुन्दरलाल जी मिश्र उल्लेख योग्य पुरुष हैं यद्यपि आप आर्य्यसमाज विचारों के दृढ़ पुरुष हैं तथापि गौड़ जाति में भी आप ही का साहस सराहनीय है। आपके एक विवाह योग्य हैं जो अङ्ग-रेज़ी पढ़ते हैं।

इस कस्बे में गौड़ ब्राह्मणों की ५० देहरी हैं। श्रीमान प० कुञ्जूरामजी यहां के मिडिल स्कूल में सैकिंड मास्टर हैं। आप बड़े ही सज्जन और जाति प्रेमसे ओत प्रोत महानुभाव हैं आपके १ पुत्र २१ वर्ष की अवस्था के हैं जो एफ़० ए० में पढ़ रहे हैं। और अविवाहित हैं।

इस कस्बे से ७ मील दूर अफ़ज़लगढ़ है जो बहुत ही सुन्दर स्थान है, इस गांव में पुलिस स्टेशन, शफाखाना और नोटीफ़ाइड एरिया है। इस स्थान में श्रीमान् प० बालमुकुन्द जी मिश्र और प० महेशचन्द्र जी मिश्र रईस का ख़ानदान गौड़ जाति में अत्यन्त प्रतिष्ठित है। प० महेशचन्द्र जी मिश्र गत २५ वर्ष तक नोटीफ़ाइड एरिया के

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चेयरमैन रह चुके हैं। आप ही के सतत् उद्योग से इस गांव में डिस्ट्रिक्ट बोर्ड ने शफाखाना बनाया है जिसमें इस समय गौड़ कुल भूषण श्रीमान् प० राजकुमार जी भारद्वाज मेडीकल ऑफ़ीसर (डाक्टर) हैं। यहां बहुत तरह का सुन्दर गाढ़ा बनता है और पहाड़ की समस्त मण्डियों में खूब बिकता है।

धामपुर से आठमील दूर पक्की सड़क पर नहटौर है जिसमें ५५। ३० घर गौड़ ब्राह्मणों के हैं श्रीमान् हकीम प० श्रीरामजी इस गाँव के गौड़ भाइयों में सब से अधिक प्रतिष्ठित और धन सम्पन्न हैं आप महासभा के मेंबर भी हैं।

नहटौर से ५ मील दूर हलदौर एक पुरानी बस्ती है जिस में अब रेल निकल जाने से स्टेशन भी बन गया है इस गांव में डाकखाना और रियासत के भव्य मकानात हैं। इसमें १०० घर गौड़ ब्राह्मणों के हैं इस कसबेमें पोस्ट मास्टर प० रामगोपाल जी और स्टेशन मास्टर प० बालकराम जी गौड़ ब्राह्मण हैं। दोनों सज्जन और जाति प्रेमी महानुभाव हैं। इस कसबे के निवासी स्वर्गीय श्री० प० जयदेव जी शर्मा इस महासभा के महोपदेशक रहचुके हैं जिन के भाई भतीजे श्री० प० छदम्मालाल जा और प० मधुसूदनदत्त जी अब भी वहां निवास करते हैं। उपदेशक जी के दो पुत्र प० पुष्करचन्द्र और चन्द्रमणि संस्कृत में योग्यता प्राप्त कर अपने स्वर्गीय पिताजी का नाम प्रतिष्ठा सहित स्थापित करने का प्रयत्न कर रहे हैं।

इस कसबे में डी० सी० शर्मा हिन्दी के सुलेखक और साहित्य के प्रेमी होने के अतिरिक्त जाति प्रेमी महानुभाव हैं। आप के बड़े भाई श्री० प० नन्दकिशोर जी यहां कारिन्दा हैं। श्री० प० ठाकुरदत्त तथा उनके वृहद् पिता प० रामस्वरूप जी महाराज इस ग्राम के गौड़ जाति की शोभा हैं आप विद्वान और योग्य वैद्य होने के साथ साथ जाति प्रेम की जीती जागती मूर्ति हैं। यह स्थान बिजनौर जिले की ४ रियासतों अर्थात् ताजपुर, साहनपुर, शेरकोट और हलदौर की रियासतों में एक रियासत है जिसकी उत्तराधिकारिणी श्रीमती रानी साहिबा हैं।

हलदौर के पास ही झालू और खारी नामके ग्राम हैं जिन में श्री० प० बद्रीदत्त जी और डाक्टर अयोध्याप्रसाद जी प्रतिष्ठित गौड़ भाई निवास करते हैं। श्री० प० बद्रीदत्त जी महासभा के मेंबर भी हैं।

बिजनौर जिले में ताजपुर, नूरपुर और रोशनपुर ग्रामों में भी गौड़ ब्राह्मणों के अच्छे परिवार हैं ताजपुर के गौड़ भाई प्रतिष्ठित पुरुष हैं जिनकी नामावली आप इस लेख के अन्त में पढ़ेंगे।

बिजनौर जिले का उल्लेख योग्य अन्तिम स्थान चान्दपुर है इसमें रेलवे स्टेशन, पुलिस स्टेशन और डांकखाना है। इस नगर में २५० घर गौड़ ब्राह्मणों के हैं जिनमें अधिकांश भाई साधारण स्थिति के हैं। यहां के पुलिस स्टेशन के इंचार्ज ओफीसर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीमान् प० हरस्वरूप जी शर्मा गौड़ ब्राह्मण हैं जो अत्यन्त ही जाति प्रेम और उदार प्रकृति के महानुभाव हैं । यहां के पोस्ट आफिस में चन्दौसी निवासी श्रीमान् प० शम्भू सहाय जी महाराज गौड़ ब्राह्मण पोस्ट मास्टर हैं आप प्रेमी और जाति से सहानुभूति रखने वाले सज्जन हैं। इस नगर में २ गौड़ ब्राह्मणों की डाक्टरी की दूकान और २ गौड़ ब्राह्मणों के बड़े आयुर्वेदीय औषधालय हैं। श्रीमान् प० वेगराजजी वैद्य इस कसबे के प्रतिष्ठित वयोवृद्ध और जाति प्रेमी महानुभाव हैं ।

इस कसबे में सबसे अधिक उल्लेख योग्यवस्तु 'श्रीविहारि संस्कृत पाठशाला' है जिसको गौड़ कुलोत्पन्न श्रीमान् प० विहारीलाल जी की वसीयत के अनुसार बनाया गया है प० विहारीलाल जी गौड़ ने अपनी समस्त स्थावर और जङ्गम सम्पत्ति संस्कृतपाठशाला के लिये दान करदी उन्हीं की सम्पत्ति के २ ग्राम हैं जो पाठशाला से लगे हुए हैं और जिनकी आमदनी २०००) रु० वार्षिक के लगभग है । सोने में सुगन्ध यह है कि इस पाठ शाला के प्रधानाध्यापक श्रीमान् सोती प० भगवानदत्तजी शास्त्री, व्याकरणाचार्य और व्याकरणकेसरी उपाधि से विभूषित महाराज बड़ी योग्यता और विद्वत्ता से इस पाठशाला का संचालन कर रहे हैं । इस समय पाठशाला में संस्कृत और हिन्दी के ६७ विद्यार्थी हैं जिनमें प्रथमा, मध्यमा और शास्त्री परीक्षा तक के विद्यार्थी अध्ययन कर रहे हैं । श्रीमान् शास्त्रीजी के सदुद्योग से पाठशाला के २७ विद्यार्थियों को पाठशाला फंड से छात्रवृत्ति मिलती है । शास्त्री जी गौड़ जाति के एक रत्न हैं और बिजनौर के प्रसिद्ध सोती खान्दानके एक अंग हैं । आपजैसे उद्भट विद्वान हैं वैसे ही अत्यन्त कार्य कुशल विचारशील प्रबन्धक और कठोर संयमी सदाचारी तथाएक आदर्श गुरू की पदवी धारणकिये हुए संस्कृत के आदर्श पुरुष हैं पाठशाला की इमारत नई बन रही है जो बहुत ही रमणीक है ।

महासभा की ओर से इस पाठशाला में दिवाकर जी गौड़ और चन्द्रमणि गौड़ विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति मिलती है । शास्त्री परीक्षा के तृतीय वर्ष के विद्यार्थी विजयचन्द्र जी इस पाठशाला के योग्य विद्यार्थी हैं जिन में जति प्रेम कूट कूट कर भरा हुआ है आपको कविता और साहित्य का बड़ा प्रेम है । हम इन तीनों होनहार गौड़ विद्यार्थियों को उन्नति शिखर पर देखने के इच्छुक हैं । इस पाठ-शाला में अधिकांश विद्यार्थी गौड़ जाति के बालक हैं । जो शास्त्री जी की कृपा से विद्वान् बन रहे हैं ।

निदान बिजनौर जिले के गौड़ भाई अपनी गौड़ जाति की प्रतिष्ठा पूर्णतया स्थापित किये हुए हैं यह जानकर हमारे समस्त पाठकों को परम प्रसन्नता होगी। यह हमें पूर्ण आशा है

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बिजनौर जिले के उन गौड़ ब्राह्मणों की नामावली

जिनकी आय ५०) रु० मासिक या इससे अधिक है ।

१ श्री० सोती प० कृष्णस्वरूप जी बी० ए०-कुहनी आश्रम-बिजनौर
२ श्री० सोती प० हरनामकुमार जी- रईस व आनरेरी मजिस्ट्रेट बिजनौर
३ श्री० श्रोत्रिय प० शिवकुमार जी रईस बिजनौर
४ श्री० श्रोत्रिय प० रामचन्द्र जी हकीम रईस बिजनौर
५ श्री० श्रोत्रिय प० जनार्दन कृष्ण जी रईस बिजनौर
६ श्री० श्रोत्रिय प० विशेश्वरनाथ जी बिजनौर
७ श्री० श्रोत्रिय प० कृष्णाकुमार जी उपनाम झंडूमल बिजनौर
८ श्री० श्रोत्रिय प० जगदीशदत्त जी रईस बिजनौर
९ श्री० श्रोत्रिय प० शिवराजकृष्ण जी बिजनौर
१० श्री० श्रोत्रिय प० भगवानदत्त जी शास्त्री भगवान भवन बिजनौर
११ श्री० प० भगवान स्वरूप जी रईस बिजनौर
१२ श्री० प० लक्ष्मीदत्त जी चित्रगुप्त वाले बिजनौर
१३ श्री० प० कुन्दनलाल जी शर्म्मा बिजनौर
१४ श्री० प० गंगाप्रसाद जी मास्टर बिजनौर
१५ श्री० प० हरस्वरूप जी शर्म्मा "ऋषी" बिजनौर
१६ श्री० प० रामनाथ जी चौबे बिजनौर
१७ श्री० प० किशोरीलाल जी मुख्तार बिजनौर
१८ श्री० प० रामस्वरूप जी घड़ियाली बिजनौर
१९ श्री० प० रघुनाथप्रसाद जी शास्त्री बिजनौर
२० श्री० ए० रामस्वरूप जी वकील बिजनौर
२१ श्री० प० शम्भूनाथ जी अत्तार बिजनौर
२२ श्री० प० रामस्वरूप जी अमीन बिजनौर
२३ श्री० प० रामशरण जी गौड़ बिजनौर
२४ श्री० प० रामचन्द्र जी ऊंचे वाले बिजनौर
२५ श्री० प० चोखेलाल जी ऊचे वाले बिजनौर
२६ श्री० प० देवीप्रसाद जी ऊंचे वाले बिजनौर
२७ श्री० प० विश्वम्भरदत्त जी ऊंचे वाले बिजनौर
२८ श्री० प० गौरीलाल जी ऊंचे वाले बिजनौर
२९ श्री० प० मूलचन्द्र जी दुबे ओवरसियर डिस्ट्रिक्ट बोर्ड बिजनौर
३० श्री० प० ज्योतीप्रसाद जी एग्जिक्यूटिव इंजीनियर नहर बिजनौर वर्तमान अबोहर
(फीरोज़पुर)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

३१ श्री० प० रामचन्द्र जी दुबे मुहल्ला जाटान बिजनौर वर्तमान दर्बार सेक्रेटरी झाबुआ
३२ श्री० प० रामचन्द्र जी अत्तार बिजनौर
३३ श्री० प० रघुनाथप्रसाद जी वैद्य बिजनौर
३४ श्री० प० द्वारिकाप्रसाद जी वैद्य बुख़ारा वाले बिजनौर
३५ श्री० प० जयदेवसहाय जी गंजवाले बिजनौर
३६ श्री० प० ब्रह्मास्वरुप जी मुहकमबन्दोबस्त बिजनौर
३७ श्री० प० रामस्वरूप जी हैडमास्टर तहसीली स्कूल बिजनौर
३८ श्री० प० किशोरीलाल जी मास्टर बिजनौर
३९ श्री० प० हरस्वरुप जी सबइन्सपेक्टर पुलिस बिजनौर
४० श्री० प० रामस्वरूप जी दुकान परचूनी बिजनौर
४१ श्री० प० रामचन्द्र जी तिवाड़ी बिजनौर
४२ श्री० प० मुरारीलाल जी सोती
४३ श्री० प० हरस्वरुप जी शर्म्मा जिमीदार बिजनौर
४४ श्री० प० गिरधारीलाल जी शर्म्मा जिमीदार
४५ श्री० प० महावीरप्रसाद जी दुबे रईस मुहल्ला जाटान बिजनौर
४६ श्री० प० रामस्वरूप जी शर्मा मिश्र महाफ़िज़ दफ्तर कलेक्टरी बिजनौर
४७ श्री० प० मुकन्दराम जी श्रोत्रिय जिमीदार
४८ श्री० प० रामचन्द्र शर्मा वल्द प० जगनलाल जी जिमीदार
४९ श्री० प० चोखेलालजी वल्द प० भगवानचन्द्रजी बिजनौर
५० श्री० प० रघुनाथप्रसादजी क्लर्क बिजनौर
५१ श्री० प० देवीप्रसाद जी कुर्क़ अमीन कलेक्टरी बिजनौर
५२ श्री० प० हरीशंकर जी वल्द प० मूलचन्द जी गौड़ बिजनौर
५३ श्री० प० खूबचन्द जी हकीम बिजनौर
५४ श्री० प० शंकरलाल जी मुख्तार बिजनौर
५५ श्री० प० दयाराम जी पटवारी बिजनौर
५६ श्री० प० काशीनाथ जी जिमीदार बिजनौर
५७ श्री० प० दुर्गाप्रसाद जी वल्द प० कल्यानचन्द्रजी बिजनौर
५८ श्री० प० रामनाथ जी चौबे बिजनौर
५९ श्री० प० बनवारीलाल जी गवर्नमेंट पेंशनर बिजनौर
६० श्री० प० केदारनाथ जी वल्द प० छबीलेराम जी बिजनौर
६१ श्री० प० छोटेलाल वल्द प० भागमल जी जिमीदार
६२ श्री० प० डालचन्द जी शर्मा वैद्य भगवानभवन बिजनौर
६३ श्री० प० रूपकिशोर जी गौड़ सेशन क्लर्क जजी बिजनौर
६४ श्री० प० श्यामलाल जी गौड़ चीफ़रीडर कलेक्टरी बिजनौर
६५ श्री० प० सोमदत्त जी शर्मा मुहल्ला जाटान, बिजनौर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

६६ श्री० प० बद्रीदत्त जी शास्त्री महोपदेशक झालू जिला बिजनौर
६७ श्री० प० अयोध्याप्रसाद जी डाकुर झालू जिला बिजनौर
६८ श्री० प० विश्वम्भर जी वल्द प० जौहरीमल जी जिमीदाबार झालू जिला बिजनौर
६९ श्री० प० शंकरलाल जी गौड़ जिमीदार मौज़ा खारी पोस्ट झालू जिला बिजनौर
७० श्री० प० कूड़ेमल जी शर्मा जिमीदार मौजा खारी पोस्ट झालू ,, ,,
७१ श्री० प० भगवतशरण जी जिमीदार ,, ,, ,,
७२ श्री० प० प्यारेलाल जी दूकान परचूनी ,, ,, ,,
७३ श्री० प० मधुसूदनदत्त जी शर्मा अध्यापक देवनागरी पाठशाला हलदौर ,,
७४ श्री० प० मुकन्दीलाल जी गौड़ हैड मुदर्रिस टौनस्कूल हलदौर ,,
७५ श्री० प० बालकराम जी गौड़ स्टेशनमास्टर E I. R. स्टेशन हलदौर ,,
७६ श्री० प० रामस्वरूप जी शर्मा राजपुरोहित रियासत हलदौर ,,
७७ श्री० प० हरस्वरूप जी मुदर्रिस मदरसा बेगराजपुर पोस्ट नहटौर हलदौर ,,
७८ श्री० प० ठाकुरदत्त जी शर्मा वैद्य हलदौर ,,
७९ श्री० प० उमादत्त जी शर्मा हकीम हलदौर ,,
८० श्री० प० मुरारीलाल जी गौड़ वैद्य गंजालपुर हलदौर ,,
८१ श्री० प० चक्रीदत्त जी स्वामी हलदौर ,,
८२ श्री० प० रामस्वरूप जी आढ़तकी दुकान हलदौर ,,
८३ श्री० प० मंगूलाल जी जिलेदार रियासत हलदौर ,,
८४ श्री० प० प्यारेलाल जी शर्मा हलदौर ,,
८५ श्री० प० छदम्मीलाल जी गौड़ खंडसार की दुकान हलदौर ,,
८६ श्री० प० मनुदत्तजी शर्मा उपदेशक आर्यसमाज हलदौर ,,
८७ श्री० प० नन्दकिशोर जी शर्मा कारिन्दा चौधरी सर्जीतसिंह हलदौर ,,
८८ श्री० प० रामगोपाल जी गौड़ पोस्टमास्टर डाकखाना हलदौर ,,
८९ श्री० प० पुष्करचन्द्र जी मुहल्ला दक्खिनी दर्वाज़ा हलदौर ,,
९० श्री० प० हरदेवसहाय जी शर्मा हलदौर ,,
९१ श्री० प० रामचन्द्र जी मुदर्रिस मदरसा हलदौर ,,
९२ श्री० प० हरिप्रसाद जी मुदर्रिस मदरसा हलदौर ,,
९३ श्री० प० राजकुमार जी वल्द प० मिश्रीलाल जी हलदौर ,,
९४ श्री० प० श्रीरामजी शर्मा हकीम और रईस नहटौर ,,
९५ श्री० प० देवदत्त जी शर्मा वैद्य ,, ,,
९६ श्री० प० छज्जूदत्तजी गौड़ खंडसारकीदुकान ,, ,,
९७ श्री० प० गोविंदप्रसाद जी शर्मा दुकानदार ,, ,,
९८ श्री० प० बाबूरामजी पटवारी ,, ,,
९९ श्री० प० बेगराज जी वैद्य चांदपुर ,,
१०० श्री० प० बनारसीदत्त जी गौड़ सनदयाफ्ता वैद्य चाँदपुर जि० बिजनौर ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१०१ श्री० डाक्टर प० सूरजमल जी गौड़ केमिस्ट एण्ड ड्रगस्ट चाँदपुर ज़िला बिजनौर
१०२ श्री० डाक्टर प० बनारसीदत्त जी केमिस्ट एण्ड ड्रगस्ट ,, ,,
१०३ श्री० प० ज्योतीस्वरूप जी शर्मा वैद्य ,, ,,
१०४ श्री० प० रामचन्द्र जी शर्मा वल्द प० रामदेव जी शर्मा गौड़ ,, ,,
१०५ श्री० प० प्यारेलाल जी मुनीम ,, ,,
१०६ श्री० प० जगनलाल जी शर्मा आढ़ती दूकान ,, ,,
१०७ श्री० प० हरस्वरूप जी शर्मा सबइन्स्पेक्टर पुलिस ,, ,,
१०८ श्री० प० लालमणि जी गौड़ वल्द प० छजमलदास जी ,, ,,
१०९ श्री० प० मंगलदत्त जी शर्मा संस्कृतपण्डित हिन्दूइङ्गलिश स्कूल ,,
११० श्री० प० चण्डीप्रसाद जी गौड़ नायब मुदर्रिस वर्नाक्यूलर मिडिल स्कूल ,,
१११ श्री० प० नन्दकिशोर जी गौड़ हिन्दी टीचर ,, ,,
११२ श्री० प० बनारसीदत्त जी वल्द प० ज्वालाप्रसाद जी गौड़ ,, ,,
११३ श्री० प० छोटेलाल जी वल्द प० गङ्गासहाय जी गौड़ ,, ,,
११४ श्री० प० न्यादरमंल जी वल्द प० नरपति जी गौड़ ,, ,,
११५ श्री० प० बालकराम जी गौड़ रईस ,, ,,
११६ श्री० प० बालकराम जी वल्द प० टेकचन्द जी ,, ,,
११७ श्री० प० मूलचन्दजी वल्द प० मुकन्दराम जी मुदर्रिस ,, ,,
११८ श्री० प० रामगोपाल जी मुदर्रिस अपर प्राइमरी ,, ,,
११९ श्री० प० शम्भूदयाल जी गौड़ पोस्ट मास्टर डाकखाना ,, ,,
१२० श्री० प० लालमणि जी शर्मा हकीम सिवहारा जिला बिजनौर
१२१ श्री० प० विश्वम्भरदयाल शर्मा ,, ,,
१२२ श्री० प० जगन्नाथप्रसाद जी वैद्य अध्यापक पाठशाला ,, ,,
१२३ श्री० प० जगदीश नारायण जी दुकानदार ,, ,,
१२४ श्री० प० बाबूराम जी शर्मा मुदर्रिस मदरसा ताजपुर जिला बिजनौर
१२५ श्री० प० शम्भूनाथ जी तिवारी इलेक्ट्रीकेल इंजीनियर ,, ,,
१२६ श्री० प० बेनीप्रसाद जी एकाउन्टेन्ट जेल ,, ,,
१२७ श्री० प० बुज्जूसिंहजी गौड़ डिप्टीइन्स्पेक्टर मदारिस निवासी ,, ,,
१२८ श्री० प० द्वारिका प्रसाद जी गौड़ खजांची ,, ,,
१२९ श्री० प० शुकदेव जी गौड़ वल्द प० हरवंशलाल जी ,, ,,
१३० श्री० प० खुशीराम जी स्वामी वैद्य ,, ,,
१३१ श्री० प० रामस्वरूप जी वैद्यराज ,, ,,
१३२ श्री० प० जैसीराम जी गौड़ वैद्य और रईस नूरपुर पोस्ट ताजपुर (बिजनौर)
१३३ श्री० प० कन्हैयालाल जी पटवारी मौज़ा रोशनपुर पोस्ट गुहावर (बिजनौर)
१३४ श्री० प० शम्भूदत्त जी वैद्यराज ,, ,, ,,
१३५ श्री० प० कल्यानचन्द्र जी वैद्यराज ,, ,, ,,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१३६ श्री० प० न्यादरदत्त जी दुकानदार मौजा रोशनपुर पोस्ट गुहावर जि० बिजनौर
१३७ श्री० प० मुकन्दरामजी वैद्यराज ,, ,, ,,
१३८ श्री० प० रामस्वरूप जी दुकानदार मौजा हसूपुरा ,, ,,
१३९ श्री० प० गोविन्दराम जी दुकानदार ,, ,, ,,
१४० श्री० प० चोखेलाल जी वैद्य ,, ,, ,,
१४१ श्री० प० लालमणि जी दुकानदार ,, ,, ,,
१४२ श्री० प० रामनाथ जी शर्मा दुकानदार ,, ,, ,,
१४३ श्री० प० किशोरीलाल जी वैद्य सरकड़ा जिला बिजनौर
१४४ श्री० प० दरबारीलाल जी दुकानदार ,, ,,
१४५ श्री० प० शिवप्रसाद जी जिमींदार ,, ,,
१४६ श्री० प० बुद्धसैन जी हकीम ,, ,,
१४७ श्री० प० झब्बालाल जो वल्द कूड़ेमल जी ,, ,,
१४८ श्री० प० पीतमदत्त जी वल्द गुलजारीलाल जी ,, ,,
१४९ श्री० प० मुरारीलाल जी सब ओवरसियर निवासी ,, ,,
१५० श्री० प० करोड़ीमल जी आढ़त की दूकान ,, ,,
१५१ श्री० प० न्यादरमल जो हकीम ,, ,,
१५२ श्री० प० जानकीप्रसाद जी वल्द प० खुशीराम ,, ,,
१५३ श्री० प० हरस्वरूप जी हकीम ,, ,,
१५४ श्री० प० बलदेवसहाय जो पुजारी ,, ,,
१५५ श्री० प० कैलाशचन्द्र जो शर्मा ,, ,,
१५६ श्री० प० गौरीलाल जी वल्द प० बनवारीलाल जी ,, ,,
१५७ श्री० प० रामचन्द्र जी वल्द प० मुकन्दराम जी ,, ,,
१५८ श्री० प० रघुवरदयाल जो वैद्य म्यूनिस्पिल कमिश्नर धामपुर जिला बिजनौर
१५९ श्री० प० सूर्यभान जी गौड़ आढत की दुकान ,, ,,
१६० श्री० प० हरप्रसाद जी शर्मा नायब तहसीलदार ,, ,,
१६१ श्री० प० छोटेलाल जी शर्मा वल्द प० सालिगराम जी ,, ,,
१६२ श्री० प० चण्डीप्रसाद जी वल्द प० उमादत्त जी शर्मा ,, ,,
१६३ श्री० प० प्यारेलाल जी वल्द प० न्यादरमल जी गौड़ ,, ,,
१६४ श्री० प० रघुनन्दनप्रसाद जी जेलर निवासी ,, ,,
१६५ श्री० प० लालमणिदास जी वैद्य आयुर्वेदीय औषधालय ,, ,,
१६६ श्री० प० बाबूराम गौड़ आढ़त की दुकान ,, ,,
१६७ श्री० प० दुर्गाप्रसाद जी शर्मा आढ़त की दुकान ,, ,,
१६८ श्री० प० विश्वम्भरनाथ जी शर्मा ,, ,,
१६९ श्री० प० बाबूराम जी हलवाई की दुकान ,, ,,
१७० श्री० प० वैजनाथ जो सौदागरी की दुकान ,, ,,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१७१ श्री० प० रामप्रसाद जी पेन्शनर दारोगा धामपुर जिला बिजनौर
१७२ श्री० प० शम्भूशरण जी क्लर्क म्यूनिस्पिलबोर्ड ,, ,,
१७३ श्री० प० गङ्गासहायजी करिन्दा रियासत शेरकोट ,, ,,
१७४ श्री० प० कुन्दनलाल जी मुलाजिम तहसील ,, ,,
१७५ श्री० प० रामचन्द्र जी वैद्य ,, ,,
१७६ श्री० प० शचीकान्ति प्रसाद जी वैद्यशास्त्री ,, ,,
१७७ श्री० प० रघुवरदयाल जी शर्मा कारिन्दा रियासत शेरकोट ,, ,,
१७८ श्री० प० रामकृष्ण जी गौड़ ,, ,, ,,
१७९ श्री० प० गौरीशङ्कर जी गौड़ नाजिर रियासत शेरकोट ,, ,,
१८० श्री० प० किशुनस्वरूप जी कानूनगो तहसील ,, ,,
१८१ श्री० प० चुन्नालाल जी मुख्तार तहसील ,, ,,
१८२ श्री० प० हरशरणजी सैकिन्डमास्टर के०एम० इङ्गिलिशस्कूल ,, ,,
१८३ श्री० प० श्यामसुन्दरलाल जी गौड़ रईस शेरकोट ,,
१८४ श्री० प० चन्द्रप्रकाश जी शर्मा रईस ,, ,,
१८५ श्री० प० तुलाराम जी शर्मा रईस ,, ,,
१८६ श्री० प० प्यारेलाल जी शर्मा ठेकेदार ,, ,,
१८७ श्री० प० रामचन्द्र जी शर्मा दुकानदारी ,, ,,
१८८ श्री० प० चोखेलाल जी गौड़ दूकान परचूनी ,, ,,
१८९ श्री० प० काशीनाथ गोपीनाथ जी जिमीदार ,, ,,
१९० श्री० प० हुज्जूराम जी गौड़ द्वितीयाध्यापक मि० स्कूल ,, ,,
१९१ श्री० प० बालमुकन्दजी महाराज रईस आज़ाम अफज़लगढ़ ,,
१९२ श्री० प० महेशचन्द्र जी मिश्र रईस ,, ,,
१९३ श्री० प० रमेशचन्द्र जी मिश्र रईस ,, ,,
१९४ श्री० प० निशीकान्त जी मिश्र रईस ,, ,,
१९५ श्री० प० हरस्वरूप जी पाठक ,, ,,
१९६ श्री० प० सन्तलाल जी शर्मा ,, ,,
१९७ श्री० प० रामप्रसाद जी चौकड़ायत ,, ,,
१९८ श्री० प० पुरुषोत्तम जी जिमीदार ,, ,,
१९९ श्री प० राजकुमार जी भारद्वाज मेडीकेल ओफीसर अस्पताल अफज़लगढ़ ,,
२०० श्री० प० मुसद्दीलाल जी शर्मा रईस ,, ,,
२०१ श्री० प० प्यारेलाल जी शर्मा बी०ए०एल-एल०बी० वकील नगीना ,,
२०२ श्री० प० भगवानस्वरूप जी गिर्दावर कानूनगो तहसील ,, ,,
२०३ श्री० प० हरिशंकर जी शर्मा वैद्य ,, ,,
२०४ श्री० प० नत्थूमल जी गौड़ मुख्तार ,, ,,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२०५ श्री० प० रामस्वरूप जी शर्मा वल्द दुर्गाप्रसाद जी शर्मा नगीना जिला बिजनौर
२०६ श्री० प० बाबूराम जी वैद्य रईस ,, ,,
२०७ श्री० प० हरिप्रसाद जी उपाध्याय जिमीदार ,, ,,
२०८ श्री० प० तुलाराम जी सन्त रईस मुहल्लासन्तों का ,, ,,
२०९ श्री० प० बल्देवप्रसादजी शुक्ल वल्द प० बनवारीलालजी शुक्ल ,, ,,
२१० श्री० प० महेशचन्द्र जी सन्त मुहल्ला मछरेहटा ,, ,,
२११ श्री० प० सुक्खनलाल जी दुकान बजाजा ,, ,,
२१२ श्री० प० जगन्नाथ जी शर्मा अरायज़ नवीस ,, ,,
२१३ श्री० प० मक्खनलाल जी गौड़ पटवारी ,, ,,
२१४ श्री० प० लोकनाथ जी ड्राइङ्ग मास्टर जार्ज हिन्दूहाईस्कूल ,, ,,
२१५ श्री० प० आत्मारामजी गौड़ मास्टर जार्ज हिन्दू हाई स्कूल ,, ,,
२१६ श्री प० रामचन्द्र जी शर्मा मुहल्ला कायस्थ सराय ,, ,,
२१७ श्री० प० श्रीराम रघुनन्दन जी मुहल्ला मीर की सराय ,, ,,
२१८ श्री० प० मुकन्दीलाल मुर्लीधर जी मुहल्ला सन्तों का ,, ,,
२१९ श्री० प० नवलकिशोर जी शर्मा तहसीलदार ,, ,,
२२० श्री० प० गौरीदत्त जी शर्मा रईस और जिमीदार मौज़ा बड़ापुर पो० नगीना ,,
२२१ श्री० प० श्यामस्वरूप जी शर्मा बी०ए०एल-एल०बी० वकील और म्यूनिसिपल कमिश्नर नजीबाबाद ,,
२२२ श्री० प० रूपनारायण जी शर्मा तहसीलदार साहिब नजीबाबाद ,,
२२३ श्री० प० केवलराम जी वल्द प० शंकरदत्तजी गौड़ ,, ,,
२२४ श्री० प० मिश्रीलाल वल्द प० बिहारीलाल जी शर्मा ,, ,,
२२५ श्री० प० जगतनारायण जी वैद्य ,, ,,
२२६ श्री० प० मूलचन्द्र जी शर्मा ठेकेदार ,, ,,
२२७ श्री० प० बनमालीदत्त जी अध्यापक पाठशाला ,, ,,
२२८ श्री० प० भगवानदास वल्द प० हजारीलाल जी शर्मा ,, ,,
२२९ श्री० प० मक्खनलाल वल्द प० झब्बालाल जी गौड़ ,, ,,
२३० श्री० प० मुकन्दीलाल वल्द प० कुंजीलाल जी शर्मा ,, ,,
२३१ श्री प० सुन्दरलाल जी मुसद्दीलाल जी आढ़त की दुकान ,, ,,
२३२ श्री० प० बिहारीलालजी मुख्तार गौड़ ,, ,,
२३३ श्री० प० आद्यानन्द जी गौड़ ठेकेदार ,, ,,
२३४ श्री० प० प्यारेलाल जी मास्टर मुहल्ला दिल्लीवाल ,, ,,
२३५ श्री० प० सूर्यबल जी मुख्तार ,, ,,
२३६ श्री० प० लल्लूमिश्र जी दलाल ,, ,,
२३७ श्री० प० भगवानदास जी रेलवे के दलाल ,, ,,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२३८ श्री० प० जेठमल जी गौड़ कपास के दलाल	नजीबाबाद	जि० बिजनौर
२३९ श्री० प० हरस्वरूप जी शर्मा मुनीम	,,	,,
२४० श्री० प० गणेशीलाल जी खंडसार की दुकान	,,	,,
१४१ श्री० प० बनवारीसिंह जी उस्ताद परचूनी की दुकान	,,	,,
२४२ श्री० प० मुसद्दीलाल जी गौड़ मुहल्ला श्यामली	,,	,,
२४३ श्री० प० चन्दनलाल जी शर्मा ,,	,,	,,
२४४ श्री० प० उस्ताद गङ्गासिंह जी गौड़ ,,	,,	,,
२४५ श्री० प० मुकन्दीलाल जी कारिन्दा ,,	,,	,,
२४६ श्री० प० जगन्नाथ जी गौड़ कबाड़ी की दुकान	,,	,,
२४७ श्री० प० रामस्वरूप जी गौड़ आढ़त की दुकान	,,	,,
२४८ श्री० प० रामचन्द्रजी हलवाई की दुकान	,,	,,
२४९ श्री० प० मुर्लीधर जी मुहल्ला मकबरा	,,	,,
२५० श्री० प० कामताप्रसाद जी अचार कल्लूगञ्ज	,,	,,
२५१ श्री० प० मन्नालाल जी जिमीदार मुहल्ला धर्मदास	,,	,,
२५२ श्री० प० वासुदेव जी मुहल्ला धर्मदास	,,	,,
२५३ श्री० प० बलराम जी मुहल्ला सन्तोमालिन	,,	,,
२५४ श्री० प० वैजनाथ जी महाराज रईस आज़म	मंडावर	,,
२५५ श्री० प० रामनाथ जी महाराज रईस जिमीदार	,,	,,
२५६ श्री० प० राजनाथ जी महाराज ,,	,,	,,
२५७ श्री० प० रघुनन्दनप्रसाद जी जिमीदार	,,	,,
२५८ श्री० प० सांती चन्द्रबल जी जिमीदार	,,	,,
२५९ श्री० प० बाबूराम जी शर्मा जिमीदार	,,	,,
२६० श्री० प० देवकीप्रसाद जी वैद्य हकीम	,,	,,
२६१ श्री० प० वासुदेव प्रसादजी जिमीदार	,,	,,
२६२ श्री० प० मूलचन्द्र जी गौड़ जिमीदार	,,	,,
२६३ श्री० प० अमीरसिंह जी शर्मा पेंशनर	,,	,,
२६४ श्री० प० मुर्लीधर वल्द प० अयोध्याप्रसाद जी	,,	,,
२६५ श्री० प० उमरावदत्त जी वैद्य मौजा	पूडरी छोटी पो० नांगल	,,
२६६ श्री० प० किशोरीलाल जी दुकानदार ,,	बड़ी ,,	,,
२६७ श्री० प० मथुराप्रसाद जी दुकानदार गांव तिसोतरा	पोस्ट बालावाली	,,
२६८ श्री० प० लालमनदास जी सोती ,,	,,	,,
२६९ श्री० प० स्वामी मुर्लीधर जिमीदार ,,	,,	,,
२७० श्री० प० भन्नूमल जी दुकानदार ,,	,,	,,
२७१ श्री० प० सालिगराम जी दुकानदार ,,	,,	,,
२७२ श्री० प० नाथूराम वल्द प० दुलीराम जी ,,	,,	,,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

२७३ श्री० प० गैंदामल वल्द प०शीलचंद्रजी गांव तिसोतरा पोष्ट बालवाली जि०बिजनौर
२७४ श्री० प० विहारीलाल वल्द प० गङ्गारामजी ,, ,, ,,
२७५ श्री० प० गनेशीलाल वल्द प० लाल जी ,, ,, ,,
२७६ श्री० प० झब्बालाल जी वैद्य नागल जिला बिजनौर
२७७ श्री० प० चन्दनलाल वल्द प० नथमलदत्त जी ,, ,,
२७८ श्री० प० लाला मिश्र वल्द हीरालाल जी ,, ,,
२७९ श्री० प० रामचन्द्र जी शुक्ल जिमीदार ,, ,,
२८० श्री० प० मक्खनलाल जी शुक्ल ,, ,,
२८१ श्री० प० हरीराम जी शुक्ल ,, ,,
२८२ श्री० प० रघुनन्दन प्रसाद जी शुक्ल ,, ,,
२८३ श्री० प० बलवन्तदत्त जी वल्द प० मक्खनलाल जी ,, ,,
२८४ श्री० प० हरनामदत्त जी शुक्ल ,, ,,
२८५ श्री० प० लल्लूमल वल्द प० गौरीदत्त जी ,, ,,
२८६ श्री० प० गङ्गासहाय वल्द प० नारायणदत्त जी ,, ,,
२८७ श्री० प० अमरनाथ जी शर्मा रईश किरतपुर ,,
२८८ श्री० प० मथुराप्रसाद जी शर्मा रईस ,, ,,
२८९ श्री० प० कल्यानदत्त जी वैद्य ,, ,,
२९० श्री० प० मुरारीलाल जी दुकानदार ,, ,,
२९१ श्री० प० हरप्रसाद जी दुकानदार ,, ,,
२९२ श्री० प० वैजनाथ जी हलवाई की दुकान ,, ,,
२९३ श्री० प० मुरारीलाजी वल्द मक्खनलाल ,, ,,
२९४ श्री० प० वैजनाथ जी चौकड़ायन ,, ,,
२९५ श्री० प० डूँगरमल जी दुकानदार ,, ,,
२९६ श्री० प० कुन्दनलाल जी दुकानदार ,, ,,
२९७ श्री० प० शंकरलाल बेक्सीनेटर निवासी ,, ,,
२९८ श्री० प० जगन्नाथ जी मुलाजिम खंडसार ,, ,,
२९९ श्री० प० बालमुकन्द जी गौड़ जिमीदार गांव सुआहेडी पोस्ट किरतपुर ,,
३०० श्री० प० हेतराम जी शर्मा जिमीदार ,, ,,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विवाह योग्य लड़कों के पते ।

(१) स्वर्गीय श्रीमान् प० रघुवंशलाल जी सोती एम० ए० जज बिजनौर निवासी के सबसे छोटे पुत्र श्री शत्रुघ्नकुमार जी अविवाहित हैं इनकी अवस्था १९। २० वर्ष के लगभग है और ये इस समय हिन्दू यूनीवर्सिटी काशी में एफ़० ए० में पढ़ रहे हैं। शेष बातें श्रीमान् सोती प० हरनामकुमार जी रईस और ऑनरेरी मजिस्ट्रेट बिजनौर से जो कि लड़के के सहोदर बड़े भाई हैं करनी चाहिये. गोत्र इनका पाराशर हैं।

(२) श्रीमान् प० कृष्णस्वरूप जी सोती बी० ए० वकील के पुत्र चि० शान्ति-स्वरूप कि जिनकी अवस्था १४। १५ वर्ष के लगभग है अविवाहित हैं यह अंग्रेज़ी पढ़ रहे हैं।इनके माता पिता जीवित हैं। पत्र व्यवहार श्री० प० कृष्णस्वरूप जी बी० ए० कुहनी आश्रम बिजनौर के पते से करनी चाहिये। गोत्र इनका पाराशर है।

(३) श्री० प० जयन्तिप्रसाद जी गौड़ दस्तावेज नवीस बिजनौर के पुत्र कि जिनकी अवस्था १८ वर्ष की है और जिनका गोत्र काश्यप है, अविवाहित हैं। उक्त पते पर पत्र व्यवहार से अन्य सब बातें निश्चय कीजिये।

(४) श्री० प० कृष्णसहाय जी शर्मा - क्लर्क रेलवे डिपार्टमेंट-बिजनौर के पुत्र चि० ओम्प्रकाश कि जिनकी अवस्था १६ वर्ष की है अविवाहित है गोत्र इनका भार-द्वाज है अन्य बातें उक्त पते पर पत्र व्यवहार से निश्चय होसकती हैं।

(५) श्री० प० बनवारीलाल जी-गवर्नमेंट पेन्शनर-बिजनौर के पुत्र चि० राम-शरण दत्त कि जिनकी अवस्था २८ वर्ष की है विवाह के लिये खाली है। बाकी बातें उक्त पते पर कीजिये।

(६) श्री० प० भगवानदास जी गौड़-बिजनौर के पुत्र चि० मूलचन्द कि जिनकी उम्र १६ वर्ष की हैं, अविवाहित हैं। अन्यबातें उपरोक्त पते से पूछिये।

(७) श्री० सोती प० जनार्दन कृष्ण जी महाराज-रईस बिजनौर के पुत्र सोती हिरण्यगर्भ कि जिनकी अवस्था २२ वर्ष की है विवाह के लिये खाली है। गोत्र इनका पाराशर है बाकी बातें उक्त पते से कीजिये।

(८) श्री० प० हरीशंकर जी महाराज-बिजनौर के पुत्र रामगोपाल जी कि जिनकी अवस्था १८वर्ष की है और इनका गोत्र गौत्तम है विवाहके लियेखाली है। शेष बातें उक्त पते पर कीजिये। यह महाशय पंडताई करते हैं और आनन्द से रहते हैं।

(९) श्री० प० रामशरण जी गौड़-बिजनौर के यहां एक विवाह के योग्य लड़का है जिसकी अवस्था १६ वर्ष की है इनका गोत्र भारद्वाज है। शेष बाते ऊपर के पते से कीजिये।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(१०) श्री० प० कृष्णाकुमार उपनाम झंडूमलजी-मुहल्ला सोतियान-बिजनौर के पुत्र रामगोपाल जी कि जिनकी अवस्था १७ वर्ष की है अविवाहित है गोत्र इनका पाराशर है बाकी बातें उक्त पते पर दर्याफ्त कीजिये।

(११) श्री० प० शंकरलाल जी गौड़-बिजनौर के पुत्र छोटेलाल कि जिनकी अवस्था १५ वर्ष की है अविवाहित है पंडित जी पंडताई करते हैं। गोत्र इनका भारद्वाज है बाकी बातें उक्त पते पर कीजिये।

(१२) श्री० प० दयास्वरूप जी गौड़—पटवारी बिजनौर के साले कैलाशचन्द्र कि जिनकी अवस्था १६ वर्ष की है अविवाहित है। लड़के का गोत्र पाराशर है। बाकी बातें उक्त पते पर पत्र व्यवहार से तय कीजिये।

(१३) श्री० प० काशीनाथ जी गौड़—जिमीदार—बिजनौर के छोटे भाई मगनस्वरूप कि जिनकी अवस्था २५ वर्ष की है विवाह के लिये खाली है। उनका गोत्र भारद्वाज है। अन्य बातें ऊपर के पते से नश्चय कीजिये।

(१४) श्री० प० दुर्गाप्रसाद जी गौड़ - बिजनौर का पौत्र ब्रजनन्दन कि जिस की अवस्था २० वर्ष की है अविवाहित है। पंडितजी पंडिताई और दूकानदारी भी करते हैं गोत्र इनका हारीत है। शेष बातें उक्त पते से की जा सकती हैं।

(१५) श्री० चौबे रामनाथजी - बिजनौर के पुत्र हरकिशनजी की जिनकी अवस्था १८ वर्ष की है विवाह के लिये खाली है गोत्र इनका सावर्ल है बाकी बातें उक्त पते पर कीजिये।

(१६) श्री० प० बनवारीलाल जी - गवर्नमेन्ट पैन्शनर—बिजनौर के पुत्र पं० रामशरणजी कि जिनकी अवस्था ३० वर्ष की है विवाह के लिये खाली हैं यह महाशय महकमा जंगलात में १००) रु० मासिक के नौकर हैं। शेष बातें उक्त पते पर निश्चय कर लीजिये।

(१७) श्रीमान् सोती रामचन्द्रजी हकीम—बिजनौर के पौत्र चि० रामभरोसे कि जिसकी अवस्था १५ वर्ष की है अविवाहित है इनका गोत्र पाराशर है पत्रव्यवहार का पता उपरोक्त है।

(१८) श्री० प० छोटेलालजी जो श्री० प० भागमलजी के पुत्र हैं और जिनके यहां ज़िमीदारी है इनके एक लड़का जिसकी अवस्था १५ वर्ष है अविवाहित है बाकी बातें उक्त पते से कीजिये।

(१९) श्री० प० हरस्वरूपशर्मा मुहल्ला जाटान - बिजनौर के पुत्र रघुनाथप्रसाद जिनकी अवस्था १५ वर्ष की है अविवाहित है। गोत्र इनका भारद्वाज है। बाकी बातें उक्त पते से पूछिये।

(२०) श्री० प० गिरधारीलाल जी शर्मा मुहल्ला जाटान—बिजनौर के पुत्र ओमप्रकाश जिनकी अवस्था १५ साल की है अविवाहित है इनका गोत्र कौशिक है। बाकी बातें उक्त पते पर कीजिये।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(२१) श्री० पं० ज्योतीप्रसादजी दुबे एग्जीक्यूटिव इंजीनीयर नहर जो बिजनौर निवासी है और आज अ ोहर (पंजाब) में काम पर हैं इनके पुत्र प्रकाशचंद्र जिनकी उम्र १६ वर्ष की है अविवाहित है । इनका गोत्र भारद्वाज है। शेष बातें इंजीनियर साहिब से पूछी जा सकती हैं।

(२२) श्री० पं० महावीरप्रसाद दुबे—रईस मुहल्ला जाटान—बिजनौर के दो पुत्र हैं विशेश्वरदयाल और कामताप्रसाद जिनकी उम्र १० क्रमशः १७ और १२ वर्ष की है विवाह के लिये खाली हैं गोत्र इनका भारद्वाज है। बाकी बातें ऊपर के पते से कीजिये।

(२३) श्री० पं० मुकन्दराम सोती—मुहल्ला सोतीयान—बिजनौर के पुत्र रामस्वरूप जिनकी अवस्था १६ वर्ष की है अविवाहित है गोत्र इनका पाराशर है। बाकी बातें ऊपर के पते पर मालूम हो सकती हैं।

(२४) श्री० वैद्यराज पं० द्वारकाप्रसाद जी बुखारा वालों के पुत्र भगवान-कुमार जिनकी अवस्था १५ वर्ष की है अविवाहित है। गोत्र इनका वशिष्ठ है। अन्यबातें वैद्य जी से बिजनौर के पते पर पत्र व्यवहार द्वारा निश्चय हो सकता हैं।

(२५) श्री० प० हरस्वरूप जी ऋषि - मुहल्ला जाटान—बिजनौर के लड़के ब्रजनाथ जिनकी अवस्था २२ वर्ष की है विवाह के लिये ख़ाली हैं। इनका गोत्र गौतम है और बातें उक्त पते पर मालूम कीजिये।

(२६) श्री० प० रामचन्द्र शर्मा जिमीदार बिजनौर के एक पुत्र १४ वर्ष की अवस्था का है जिसका घर का नाम कल्लू है यह अविवाहित है । गोत्र गौतम है। बाकी बातें ऊपर के पते से पूछिये।

(२७) श्री० प० चोखेलाल जी शर्मा बिजनौर के लड़के देवेन्द्रनाथ कि जिनकी अवस्था अभी छोटी है विवाह के लिये सूचित किये जाते हैं इस समय लड़के की अवस्था ११ । १२ वर्ष के लगभग है। गोत्र गौतम है पण्डित जी के यहां जिमीदारी है ; बाकी बातें उक्त पते पर निश्चय हो सकती हैं।

(२८) श्री० प० रघुनाथप्रसाद जी गौड़, क्लर्क बिजनौर के एक पुत्र राधारमण कि जिनकी अवस्था १४ वर्ष की है अविवाहित हैं । अच्छे लड़के जल्दी घिर जाते हैं अतः इस उम्र के लड़के सूचित किये जाते हैं । शेष बातें उपरोक्त पते पर पत्र व्यवहार से निश्चय होसकती हैं।

(२९) श्री० प० रामशरणदास जी जो पण्डिताई करते हैं और बिजनौर ही के निवासी हैं उनके यहां एक लड़का रामकिशनदास जिसकी अवस्था १५ वर्ष की है अविवाहित है। पण्डितजी का गोत्र भारद्वाज है बाकी बातें पत्र व्यवहार से निश्चय हो सकती हैं।

(३०) श्री० प० देवीप्रसाद जी गौड़ कुर्क अमीन बिजनौर के पुत्र चि० इन्द्रबल जिनकी उम्र १८ वर्ष की है अविवाहित है। पण्डित जी का गोत्र गौतम है । बाकी बातें उपरोक्त पते पर पूछिये।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(३१) श्री० प० लालमणि जी शर्मा हकीम सिवहारा जिला बिजनौर के दो पुत्र बाबूराम और चन्द्रमणि जिनकी अवस्थायें क्रमशः १६ वर्ष और सत्रह वर्ष है विवाह के लिये खाली हैं। गोत्र कौशिक है। बाकी बातें ऊपर के पते पर पूछिये।

(३२) श्री० प० विश्वम्भरदयाल जी सिवहारा जिला बिजनौर के दो पुत्र भवानीप्रसाद और ऊदलप्रसाद जिनकी उम्रें क्रमशः २५ वर्ष और २२ वर्ष की हैं विवाह के लिये खाली हैं। गोत्र भारद्वाज है। बाकी बातें ऊपर के पते पर पूछिये।

(३३) श्री० प० जगन्नाथ प्रसाद जी वैद्य सिवहारा जि० बिजनौर के पुत्र शिवनाथ कि जिनको उम्र १८ वर्ष की है विवाह योग्य हैं। पण्डितजी पाठशाला में अध्यापक भी हैं। शेष बातें उक्त पते पर पूछिये।

(३४) श्री० प० शम्भूदत्त जी वैद्य रोशनपुर पोस्ट गुहावर जिला बिजनौर के पुत्र विशम्भरदत्त कि जिनकी अवस्था १६ वर्ष की है विवाह के लिये खाली हैं गोत्र भारद्वाज है। बाकी बातें वैद्यजी से निश्चय कीजिये।

(३५) श्री० प० रामस्वरूप जी गौड़ मौज़ा हसूपुर पोस्ट गुहावर जिला बिजनौर के पुत्र रोशनलाल जिनकी उम्र १६ साल की है विवाह के लिये खाली हैं। पण्डित जी के यहां पण्डिताई और लेनदेन और दूकानदारी का कार्य होता है शेष बातें उक्त पते से पूछिये।

(३६) श्री० प० गोविन्दराम जी गांव हसूपुर पोस्ट गुहावर जि० बिजनौर के पुत्र पुरुषोत्तमशरण जिनकी अवस्था १७ वर्ष की है विवाह के लिये खाली हैं पण्डित जी के यहां दुकानदारी और लेनदेन का रोज़गार होता है। बाकी बातें ऊपर के पते से निश्चय कीजिये।

(३७) श्री० प० रामनाथ जी शर्मा गांव हसूपुर पोस्ट गुहावर जिला बिजनौर के दो पुत्र सुखानन्द और सूरजदत्त जिन की उम्रें २० और १७ साल की हैं विवाह के लिये खाली हैं। पण्डित जी के यहां दुकानदारी और लेनदेन का व्यवसाय होता है। शेष बातें उक्त पते पर पूछिये।

(३८) श्री० प० किशोरीलालजी—वैद्य सरकड़ा जि० बिजनौरके पुत्र रामेश्वर प्रशाद जिनकी अवस्था १४ वर्ष की है विवाह के लिये सूचित किये जाते हैं। गोत्र भारद्वाज हैं। बाकी बातें उक्त पते पर पूछिये।

(३९) श्री० प० दरबारीलालजी गौड़—सरकड़ा जि० बिजनौर के दो पुत्र केदारनाथ और जसवन्त जिनकी उम्रें क्रमशः २० और १५ वर्ष की हैं विवाह के लिये सूचित किये जाते हैं गोत्र भारद्वाज है। शेष बातें उक्त पते पर कीजिये।

(४०) श्री० प० शिवप्रसादजी शर्मा सरकड़ा जिला बिजनौरके पुत्र रामस्वरूप और शुकदेव २० और १६ वर्ष की उम्र के अविवाहित हैं। गोत्र भारद्वाज है। शेष बातें उक्त पते पर निश्चय कीजिये।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(४१) श्री० प०झब्बामलजी गौड़ – सरकड़ा जिला बिजनौर का पुत्र रविदत्त जिस की उम्र १५ वर्ष की है अविवाहित है गोत्र भारद्वाज है अन्य बातें उक्त पते पर तय कीजिये ।

(४२) श्री०प० पीतमदत्तजी—सरकड़ा जिला बिजनौरका लड़का विश्म्भरदत्त जिस की आयु १८ वर्ष की है अविवाहित हैं । गोत्र भारद्वाज है । बाकी बातें ऊपर के पते से पूछिये ।

(४३) सरकड़ा जि० बिजनौर निवासी श्री०प०मुरारीलालजी सबओवरसियर के पुत्र रघुवीरशरण जिनकी अवस्था १७ वर्ष की है विवाह के लिये खाला हैं गोत्र मुद्गल है बाकी बातें ऊपर के पते पर पूछिये ।

(४४) श्री० प० न्यादरमल जी हकीम सरकड़ा जि० बिजनौर के पुत्र खेमचंद जिनकी उम्र २५ साल की है । विवाह के लिये खाली होगये हैं गोत्र भारद्वाज है। बाकी बातें हकीमसाहिब से मालूम की जा सकती हैं ।

(४५) श्री० प० गौरीलालजी—सरकड़ा जि० बिजनौर के पुत्र ओमप्रकाश जिनकी अवस्था १३ वर्ष की है विवाह के लिये सूचित किये जाते हैं । गोत्र भारद्वाज है । शेष बातें उक्त पते पर मालूम कीजिये ।

(४६) श्री० प० करोड़ीमलजी—आड़तिया धामपुर जिला बिजनौर के पुत्र गोपीनाथ कि जिसकी उम्र १७ वर्ष की है अविवाहित हैं । गोत्र भारद्वाज है । शेष बातें उक्त पते पर मालूम की जा सकती हैं ।

(४७) श्री० प० श्यामसुन्दरलालजी—रईस-शेरकोट जि० बिजनौर के पुत्र चि० शान्तिप्रिय कि जिनकी अवस्था २० वर्ष को है और जो इस समय दर्जा ८ में अंग्रेज़ी पढ़ रहे हैं विवाह के लिये खाली है गोत्र भारद्वाज है शेष बातें उक्त पते पर पूछी जा सकती हैं ।

(४८) श्री० प० तुलाराम जी मुहर्रिर बाबू महाराज बहादुर-वकील-बिजनौर जो शेरकोट के निवासी है इनके पुत्र वाचस्पतिजी जो इसी वर्ष बी० ए० पास हुये हैं अविवाहित हैं इनकी अवस्था २२ वर्ष की है । गोत्र भारद्वाज है अधिक बातें उक्त पते पर मालूम हो सकती हैं ।

(४९) श्री० प० छज्जूसिंहजी गौड़—द्वितीयाध्यापक-मिडिलस्कूल-शेरकोट के पुत्र चि० बीरबलजी दीक्षित जिनकी अवस्था २१ वर्ष की है और जो इस समय एफ़० ए० में पढ़ रहे हैं अविवाहित हैं गोत्र भारद्वाज है । शेष बातें उक्त पतेपर मालूम हो सकती हैं ।

(५०) श्री० प० प्यारेलाल जी शर्मा—ठेकेदार-शेरकोट जि० बिजनौर के पुत्र चि० देशबन्धु जिनकी अवस्था १३ वर्ष की है और जो इस समय उर्दू मिडिल में पढ़ रहा है अविवाहित है । अन्य बातें उक्त पते पर पूछिये ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(५१) श्री० प० रामचन्द्रजी शर्मा – शेरकोट जि० बिजनौर के पुत्र रामकिशोर जिसकी अवस्था २८ वर्ष की है और जो उर्दू मिडिल पास है और अब अंगरेज़ी पढ़ रहा है। अविवाहित है प० जीके पेशा लैन देन और दुकानदारी का काम होता है। गोत्र भारद्वाज है। शेष बातें उक्त पते पर मालूम होसकती हैं।

(५२) श्री० प० चोखेलाल जी गौड़—शेरकोट बिजनौर के पुत्र नन्दकिशोर जिनकी अवस्था २४ वर्ष की है और जो विशारद की परीक्षा वैद्यक में देने की तैयारी कर रहे हैं अविवाहित हैं। गोत्र भारद्वाज है शेष बातें उक्त पते पर मालूम की जा सकती हैं।

(५३) श्री०डाक्टर प०रामकुमारजी भारद्वाज-मेडीकेल ऑफ़ीसर-अस्पताल-अफ़ज़लगढ़ जि० बिजनौर के सुयोग्य पुत्र प०सुशील कुमार भारद्वाज जिनकी अवस्था १६ वर्ष की है और जो इस समय बी० ए० क्लास में पढ़ रहे हैं अविवाहित है। गोत्र भारद्वाज है शेष बातें डाक्टर साहिब से पत्र द्वारा मालूम होसकती हैं।

(५४) श्री० प० प्यारेलाल जी शर्मा बी० ए० एल० एल० बी० वकील-नगीना के दो पुत्र हैं जिनकी अवस्थाएँ क्रमशः—१५ और १२ वर्ष की हैं बड़े का नाम चि० रमेशदत्त है जो अङ्गरेज़ीके आठवें दर्जे में पढ़ता है छोटा दर्जा ६ में अङ्गरेज़ी पढ़ता है अविवाहित हैं। गोत्र इन का कौशिक है।शेष बातें वकील साहिब से मालूम हो सकती हैं।

(५५) श्री० प० शिवलालजी पाधा-नगीना जिला बिजनौर के पुत्र श्यामलाल हैं जिनकी अवस्था १७ वर्ष की है। अविवाहित हैं। गोत्र इनका द्रोण है। शेष बातें पाधाजी से पत्रव्यवहार द्वारा मालूम हो सकती है।

(५६) श्री० प० भगवान स्वरूप जी गौड़—गिर्दावल कानूनगो—नगीना जि० बिजनौर के दो पुत्र विष्णुदत्त और महेशदत्त जिनकी आयु क्रमशः २० और १६ वर्ष की है अविवाहित हैं। गोत्र इनका भारद्वाज है। शेष बातें कानूनगो साहिब से पत्र व्यवहार से तै होसकती हैं।

(५७) श्री० प० बलदेवप्रसाद जी शुक्ल—नगीना जिला बिजनौर के पुत्र हरिप्रसाद जी कि जिन की अवस्था १८ वर्ष की है विवाह योग्य है। इन का गोत्र कौडिन्य है। शेष बाते शुक्लजी से पूछिये।

(५८) श्री० प० हरप्रसादजी मुदर्रिस मदरसा हलदौर जिला बिजनौर के पुत्र ललताप्रसाद जिनकी उम्र १६ वर्ष की है अविवाहित है। इनका गोत्र वशिष्ठ है। शेष बातें उक्त पते पर पूछिये

(५९) स्वर्गीय प० गंगाप्रसादजी – हलदौर जिला बिजनौर के पुत्र चि० राजकुमार उर्दू मिडल में पढ़ रहा है अवस्था १७ वर्ष की है और गोत्र भारद्वाज है अविवाहित है शेष बातें मुदर्रिस मदरसा हलदौर से पूछें।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(६०) श्री० प० हरदेवसहाय जी–हलदौर जि० बिजनौर के पुत्र प० शंकरलाल जी की जिनकी अवस्था ३० वर्ष के लगभग है विवाह के लिये खाली हैं। शंकरलाल जी कम्पोएडरी करते हैं। गोत्र इनका भारद्वाज है। शेष बातें उक्त पते पर पूछिये।

(६१) श्री० प० रामचन्द्रजी—मुदर्रिस मदरसा हलदौर जि० बिजनौर के पुत्र चि० कैलाशचन्द्र जिनकी उम्र १७ वर्ष की है अविवाहित हैं। गोत्र भारद्वाज है। शेष बातें उक्त पते पर पूछिये।

(६२) श्री० प० रामगोपालजी गौड़ - सबपोस्टमास्टर –हलदौर जि० बिजनौर के छोटे भाई चि० रघुनाथ प्रसाद जिनकी अवस्था १६ वर्ष की है और जो एफ़० ए० में पढ़ रहा है अविवाहित। गोत्र भारद्वाज है शेष बातें उक्त पते पर पूछिये।

(६३) श्री० सोतीचन्द्रवलजी—जिमीदार—मंडावर जि० बिजनौर के पुत्र मगनराय जिनकी अवस्था १८ वर्ष की है अविवाहित है। गोत्र उनका पाराशर है। शेष बातें उक्त पते पर पूछिये।

(६४) श्री० प० मुर्लीधरजी शर्मा मंडावर जि० बिजनौर के पुत्र दिनकरदत्त शर्मा जिनकी अवस्था १८ वर्ष की है विवाह योग्य हैं गोत्र इनका भारद्वाज है। शेष बातें उक्त पते पर पत्र व्यवहार से मालूम हो सकती हैं।

(६५) श्री० प० भन्नूमल जी गौड़ गांव तिसोतरा पोस्ट बालाबाली जिला बिजनौर के दो पुत्र जगपती प्रसाद और छोटेलाल जिनकी अवस्थाएँ १८ और १६ वर्ष की है विवाह योग्य हैं। गोत्र इनका भारद्वाज है। बाकी बातें ऊपर के पते से पत्र व्यवहार द्वारा जानी जा सकती हैं।

(६६) श्री० प० गेंदामलजी गांव तिसोतरा पोस्ट बालाबाली जिला बिजनौर के पुत्र विक्रमदत्त कि जिनकी अवस्था १५ वर्ष की है अविवाहित है। गोत्र इनका भारद्वाज है। शेष बातें उक्त पते से पूछिये।

(६७) श्री० प० गणेशीलाल– गांव तिसोतरा पोस्ट बालाबाली जि० बिजनौर के ३ पुत्र परमानन्द, खूबचन्द्र, और होरीलाल जिनकी उम्रें क्रमशः २०, १८, और १५ वर्ष की हैं अविवाहित हैं गोत्र इनका भारद्वाज है शेष बातें उक्त पते पर मालूम कीजिये।

(६८) श्री० प० झब्बालालजी वैद्य—नागल जिला बिजनोर के पुत्र सुखानन्द-प्रसाद जिनकी अवस्था २२ वर्ष की है विवाह के लिये खाली है। गोत्र कुशध्वज है। शेष बातें उक्त पते से करनी चाहिये।

(६९) श्री० प० चन्दनलाल जी – नागल जि० बिजनौर के पुत्र नन्हेजी जिनकी अवस्था २० वर्ष की है विवाह के लिये खाली है गोत्र भारद्वाज है। बाकी बातें उक्त पते पर पत्र व्यवहार से तय हो सकती है।

(७०) श्री० प० लालामिश्र –नागल जि० बिजनौर के दो पुत्र जगन्नाथ रामनाथ कि जिनकी उम्रें क्रमशः १६ और १७ वर्ष की हैं विवाह योग्य हैं। गोत्र इनका कौशिक है शेष बातें उक्त पते पर दयाक्त की जा सकती हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(७१) श्री० प० रामचन्द्रजी शुक्ल – नागल जि० बिजनौर के पुत्र आत्माराम कि जिनकी अवस्था २१ वर्ष की है विवाह के लिये खाली है। गोत्र कौडिन्य है। शेष बातें उक्त पते पर पूछिये।

(७२) श्री० प० मक्खनलालजी शुक्ल नागल जि० बिजनौरके पुत्र परसराम कि जिनकी उम्र १४ वर्ष की है विवाह के लिये सूचित किये जाते हैं। गोत्र कौडिन्य है। शेष बातें उक्त पते पर पूछिये।

(७३) श्री० प० हरीराम जी शुक्ल - नागल जि० बिजनौर के पुत्र जगदीश-प्रसाद कि जिनकी उम्र १५ वर्ष की है अविवाहित है। गोत्र कौडिन्य है। शेष बातें उक्त पते से पूछिये।

(७४) श्री० प० हरनामदत्त जी शुक्ल—नागल जि० बिजनौर के पुत्र आशा-राम कि जिनकी उम्र १६ साल की है विवाह योग्य है। गोत्र कौडिन्य है शेष बातें उक्त पते पर पूछिये।

(७५) श्री० प० लल्लूमलजी—नागल जि० बिजनौर के पुत्र हरीदत्तजी कि जिनकी आयु २१ वर्ष की है विवाह के लिये खाली हैं गोत्र कौशिक है शेष बातें उक्त पते पर पूछिये।

(७६) श्री० प० गंगासहाय जी—नागल जि० बिजनौर के पुत्र पुरुषोत्तमदत्त जी कि जिनकी आयु १८ वर्ष की है अविवाहित हैं। गोत्र भारद्वाज है। शेष बातें उक्त पते पर पूछिये।

(७७) श्री० प० केवलराम जी गौड़—नजीबाबाद जिला बिजनौर के पुत्र नन्हेजो कि जिनकी अवस्था १६ वर्ष की है अविवाहित हैं। गोत्र कौशिक है। बाकी बातें उक्त पते पर पूछिये।

(७८) श्री० प० मिश्रीलालजी गौड़—नजीबाबाद जिला बिजनौर के पुत्र वासुदेव कि जिनकी उम्र १८ वर्ष की है विवाह योग्य हैं। गोत्र भारद्वाज है बाकी बातें उक्त पते पर पूछिये।

(७९) श्री० प० जगतनारायणजी वैद्य– नजीबाबाद जि० बिजनौर के पौत्र भारतभूषण कि जिनकी अवस्था १८ वर्ष की है विवाह योग्य हैं। गोत्र कौशिक है बाकी बातें उक्त पते पर पूछिये।

(८०) श्रीमान् प० भगवानदास जी गौड़—हकीम नजीबाबाद ज़िला बिजनौर के पौत्र जगदीशप्रसाद कि जिस की उम्र १७ वर्ष की है विवाह योग्य है। गोत्र भारद्वाज है। शेष बातें ऊपर के पते पर पूछिये।

(८१) श्री० प० मथुराप्रसाद जी--रईस--किरतपुर जिला बिजनौर के ४ पुत्र हैं जिनकी अवस्थायें क्रमशः १७ वर्ष, १४ वर्ष, सात वर्ष और १ वर्ष की है। बड़ा लड़का फक्कीरचन्द्र अंग्रेजी दर्जा ८ में पढ़ता है दूसरा लड़का गङ्गाप्रसाद हिन्दी दर्जा ५ में पढ़ता है। बड़ा लड़का विवाह योग्य है। इनका गोत्र भारद्वाज है शेष बातें उक्त पते पर पत्र व्यवहार से मालूम होसकती हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(८२) श्री० प० मुरारीलाल जी—किरतपुर जिला बिजनौर के पुत्र रामशङ्कर जिसकी अवस्था १४ वर्ष की है विवाह के लिये सूचित किया जाता है गोत्र वशिष्ठ है बाकी बातें उक्त पते पर मालूम होसकती हैं।

(८३) श्री० प० विष्णुदत्त जी गौड़—किरतपुर जिला बिजनौर के पुत्र शिवदत्त कि जिन की उम्र १६ वर्ष की है अविवाहित हैं गोत्र इनका कौडिन्य है शेषबातें उक्त पते पर पूछिये।

(८३) श्री० प० बैजनाथ जी वल्द पं० भगवानदास जी गौड़-किरतपुर जिला बिजनौर के पुत्र काशीनाथ जिनकी अवस्था २१ वर्ष की है अविवाहित हैं गोत्र कौशिक है। शेष बातें उक्त पते पर मालूम की जा सकती हैं।

(८५) श्री० प० मुरारीलाल जी वल्द प० मक्खनलाल जी-किरतपुर ज़िला बिजनौर के दो पुत्र मन्नूदत्त और बनारसीप्रसाद जिन की उम्र क्रमशः २४ और १६ वर्ष की हैं विवाह के लिये खाली हैं। गोत्र शांडिल्य है बाकी बातें ऊपर के प[illegible] दर्याफ्त की जा सकती हैं। शहर

(८६) श्री० प० बैजनाथ जी चोकड़ात किरतपुर जिला बि[illegible] हरस्वरूप जिनकी अवस्था १५ वर्ष की है अविवाहित हैं गो[illegible] उक्त पते पर की जासकती हैं।

(८७) श्री० प० डूंगरमल जी गौड़—किरतपुर [illegible]जनौर के [illegible] दत्त कि जिन की उम्र १५ वर्ष की है अविवाहित हैं गोत्र भारद्वाज है बाकी बातें ऊपर के पते पर पूछिये।

(८८) श्री० प० कुन्दनलाल जी गौड़ किरतपुर जिला बिजनौर के पुत्र फ़कीरचन्द कि जिनकी अवस्था १५ वर्ष की है अविवाहित हैं। गोत्र भारद्वाज है। शेष बातें उक्त पते से निश्चय कीजिये।

(८९) श्री० प० शंकरलाल जी गौड़—किरतपुर जिला बिजनौर के पुत्र मङ्गल-राय कि जिन की उम्र १५ वर्ष की है अविवाहित हैं लड़का हिन्दी मिडिल में पढ़ रहा है गोत्र शांडिल्य है। बाकी बातें ऊपर के पते पर पूछिये।

(९०) श्री० प० जगन्नाथ जी खंडसार - किरतपुर जिला बिजनौर के पुत्र नन्दराम कि जिनकी उम्र १५ वर्ष की है और जो दर्जा ४ में पढ़ता है अविवाहित है गौत्र शांडिल्य है। बाकी बातें ऊपर के पते पर पूछिये।

(९१) श्री० प० बालमुकन्द जी—गांव सुआहेड़ी पोस्ट किरतपुर जि० बिज-नौर के पुत्र हुलकरप्रसाद जिनको उम्र १८ वर्ष की है विवाह योग्य हैं गोत्र कौशिक है। शेष बातें उक्त पते पर पूछिये।

(९२) श्री० प० हेतराम जी-गांव सुआहेड़ी पोस्ट किरतपुर जिला बिलनौर के पुत्र चिम्मनलाल कि जिनकी आयु १६ वर्ष की है अविवाहित हैं। गोत्र इनका कौशिक है। शेष बातें उक्त पते पर पूछिये।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री गणेशाय नमः

❋गौड़ महासभा पत्रिका❋

अखिल भारतवर्षीय गौड़ ब्राह्मण महासभा की मुख पत्रिका

वर्ष १ | मुरादाबाद—अक्टूबर सन् १९३० ई० | संख्या ४

ईश्वर प्रार्थना.

वर्णानामर्थ संघानां रसानां छन्दसामपि।
मंगलानां च कर्त्तारौ वंदे वाणीविनायकौ ॥ १ ॥
भवानी शंकरौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ ।
याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाः स्वान्तस्थमीश्वरम् ॥ २ ॥

शिखरणी छन्द

जटा सोहैं गंगा शशि शिर अनंगा हरन हैं। भवानी अर्द्धंगा गणपति उछंगा धरन हैं।
लसैं गोरे अंगा सित भस भुजंगा भरन हैं। करौ भौ भै भंगा शिव शिव तुम्हारी शरन हैं॥
शिवा स्वामी तेरी सुभग तनु हेरी अभयदा। नई नीकी मेवा तव चरण सेवा विजयदा।
करौ चाहूं सेवा 'सभाजाती' की हितमयी। दया कीजै दीजै मति अति पुनीता नितनयी॥

लंका को जरायो और सीता को बचायदियो, आँच नहीं आई बिभीषण के मकानको।
लगते ही शक्ति जब लषण गिरे भुवी पर, औषधि को भेजो राम हनुमत बलवान् को॥
मिलीना सजीवन जब पर्वत उठायलाये लषण को जिवायो शिर नायो भगवान् को।
दुष्टन के भक्षक और रक्षक हरि भक्तन के मोको तो भरोसो उन वीर हनुमान् को॥

रोम रोम राम जाके सुमरत नर नाम ताको, कौशलपुर धाम जाकी अंजनीसीमैयाहै।
मकरध्वज पूत जाके दासौ मजबूत खासे बल को नहिं कूत बलि धेनुधी सो भैया है॥
टेढ़ो है पैर जाको निज रिपु बगैर ताके, दुष्टन से बैर जाके दिनकर लिलैया है।
मार को मरैया शैल द्रोण को धरैया, लाज मस्तों की रखैया वीर इन्द्रजित जिवैया है॥

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुरीति-संशोधन ।

गतांक में हमने अपने अग्रलेख में आपको बतलाया था कि आपकी यह "अखिल भारत वर्षीय गौड़ ब्राह्मण महासभा" क्या चीज है और इसका सगठन, निर्माण तथा निर्वाचन किस प्रकार हुआ है तथा हुआ करता है । साथ ही हमने उस की कार्य प्रणाली का भी दिग्दर्शन आपको कराया था । जिस से आपको विदित हुआ होगा कि वास्तव में आपकी यह संस्था अत्यन्त ही नियमानुकूल और सुसंगठित रूप से शनैः शनैः काम करती हुई सदैव अग्रसर होती चली आरही है । और आगे भी अगर भगवान् की कृपा और जातीय के सरदारों की दया रही तो यह अपने कर्तव्य का यथावत् पालन करती चली जावेगी ।

जातीय महासभाओं के मुख्य कार्य कुरीति संशोधन सुरीति प्रचार, जातीय संगठन, प्रेम और एकता की वृद्धि, शिक्षा प्रचार आदि ही है हम को हर्ष है कि आप की इस महासभा ने अपने इस २३ । ३४ साल के समय में सभी को दृढ़ बनाने की भरसक चेष्टा की तथा अहर्निश इसी उद्योग में लगी हुई है जिसका यह परिणाम है कि आज उसको अपने उपरोक्त सभी कामों में सफलता प्राप्त हुई है आपकी महासभा ने जन्म ही से उपरोक्त कार्य्यों को लक्ष्य कर प्रस्ताव स्वरूप में गौड़ जाति को यह समझाना शुरू कर दिया है कि अपनी जाति में यह यह बुराइयां घुसी हुई हैं इन का परित्याग करो और इनके स्थान में वह बातें प्रचलित करो कि जिन से आपकी यह जाति कि जिसे परमात्मा ने "आदि गौड़" नाम से सम्मानित किया है वह सब ब्राह्मण जातियों में आदि बनी रहे और अपने नाम को सार्थक कर सके ।

आज हम सब से प्रथम कार्य 'कुरीति--संशोधन' के संबन्ध में ही आपको बतावेंगे कि महासभा ने इसके लिये इस समय तक क्या किया और इस कार्य में कहां तक सफलता प्राप्त की । जिन लोगों ने महासभा के प्रस्तावों को अपनी माननीय संस्था के आदेश को समझ कर वेद वाक्यों की तरह पालन किया है आज हमारे वे भाई परम सुखी और प्रशंसनीय हैं और आगे सभी भाई अपनी इस एक मात्र संस्था को आदर की दृष्टि से देखें और इसके प्रस्तावों नियमों सिद्धान्तों तथा आदेशों को अपनी उन्नति, वृद्धि और महानता का द्योतक समझें तो हमारी इस पवित्र जाति की फिर वही दशा हो सकती है जो "आदि" में थी ।

आपकी इस महासभा का जन्म सन् १८९६ ई० में हुआ तब से और अब तक इसने 'कुरीति-संशोधन' के सम्बन्ध में देखिये नीचे लिखे कितने प्रस्ताव पास किये यह प्रस्ताव कितने सुन्दर कितने सरल कितने महत्वप्रद हैं और इनके पालन करने में किसी भी भाई को कोई कठिनता, आपत्ति तथा परिश्रम नहीं होसकता । इसी लिये यह सर्वांश में नहीं तो अधिकांश में कार्य्य रूप में परिणित हुए हैं अब महासभा की इच्छा तथा आज्ञा है कि अब समय आगया है कि यह प्रस्ताव भारतवर्ष भर की समस्त गौड़ ब्राह्मण जाति में एक सिरे से दूसरे सिरे तक सर्वांशमें प्रचलित हों जिस से समस्त जाति में आनन्द का श्रोत बह निकले ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रस्ताव ।

(१) विवाह और मृत्यु के समय वाले अपव्यय (फिजूलखर्ची) घटाई जावें कि जिन पर बखौरेवार विचार करके समस्त स्थानिक सभाएँ इन नियमों का पालन करावें । १८९६ ई०

(२) शास्त्र विरुद्ध व्यवहार जैसे बखेर गोंड़ा, बागबाड़ी, नाच, भांड, आतिशबाजी सर्वथा बन्द किये जावें । १८९६ ई० ।

(३) सीठना यानी गन्दे और निर्लज्ज गीतों का गाना सब प्रकार से और प्रत्येक समय पर रोका जावे । १८९६ ई० ।

(४) विवाह के समय लड़के की आयु १६ वर्ष से न्यून और लड़की की आयु ८ वर्ष से न्यून और १२ वर्ष से अधिक कदापि न होनी चाहिये । १८९६ ई० ।

(५) लड़के का उपनयन यज्ञोपवीत) संस्कार ८ वर्ष की आयु से लेकर १६ वर्ष पर्यन्त होजाना चाहिये और अविवाह समय तक नहीं ठहरना चाहिये । उपनयन संस्कार किये जाने पर बालकों को संध्या गायत्री की शिक्षा देना और नित्यनियम कर्म्म में तत्पर करना कराना माता पिता का परम धर्म्म होगा । १८९६ ई० ।

(६) कोई पुरुष ऐसा करते हैं कि अपनी पुत्री का विवाह रुपया लेकर करते हैं इसमें जाति की बड़ी निन्दा है इस लिये निर्धन भाइयों से प्रार्थना है कि चाहे पाँच आदमी बुला कर फेरा फेरदें मगर इस कुरीति को नकरें । अतएव दीनता की अवस्था में स्थानिक सभाएँ सहायता देवें । १८९७ ई० ।

(७) बहुत स्थानों में बरीपदे पर बड़ा आग्रह किया जाता है इसको दूर करना चाहिये और टीका तथा मिलाई बेटी वाले की राय पर छोड़ना चाहिय । १८९८ ई० ।

(८) विवाह के समय बटहरी में से कम से कम १) गौड़ महासभा को दिया जावे । १८९९ ई० ।

(९) चूँकि बहुत स्थान अब तक ऐसे हैं कि जहां पर कुरीति संशोधन और विवाह तथा मृत्यु समय में व्यर्थ व्यय पर कोई ध्यान नहीं दिया गया। इसलिये गौड़ महासभा प्रेरणा करती है कि उपरोक्त विषयोंमें इस प्रस्ताव की पूर्ति के लिये पञ्चायत और स्थानीय सभायें नियम बनावें जिनमें साफ़ साफ़ लिखा हो कि किस किस अवसर पर कितना २ व्यय हुआ करे । दहेज में नकद अधिक से अधिक कितना हो और बरातियों की तथा गाड़ियों की कितनी संख्या हो इत्यादि । उससे अधिक कोई भाई व्यय करने का अधिकारी न बनें । १९०० ई०

(१०) निम्न लिखित कुरीति और अपव्यय विवाह, और मृत्यु के समय बन्द की जावें । १९०१ ई० ।

(अ) बजरा और विमान अधिक लागत से बनाना ।

(ब) मृत्यु पर दसवें दिन का श्रीयमुना जी पर भोज्य तथा उसी स्थान पर स्त्रियों का सीठने आदि गाना और नाचना तथा पुरुषों के साथ सीठने गाते जाना ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(११) निम्न लिखित कुरीतियां सगाई (मंगनी) के समय पर जो सीमा से बढ़ गई है बंद की जायें। १९११ ई०।

(अ) सगाई के अवसर पर बेटेवाले की तरफ़ से आभूषणों का दिया जाना। डंडे हटरी, ख़रबूजा, वये अर्थात् संक्रान्ति के अवसर पर आभूषणों का भेजना इनमें अधिक व्यय होता है कि जितने में अलग विवाह हो सकता है।

(ब) विवाह के समय जो ६ जौनारें यानी (१) भात (२)बरात (३)कंगना (४) बढ़ार (५) लढ़ार (६) अन्नपूर्णा दी जाती है बंद की जावें यानी (१) बरात (२) बढ़ार और (३) अन्नपूर्णा दी जावें बाकी ३ यानी भात, कगंना और लढ़ार बंद की जावें।

(१२) विवाह आदि शुभ अवसरों तथा मृत्यु आदि समयों पर विविध स्थानों में जो रीतियां प्रचलित हैं उनकी जांच पड़ताल इस उद्देश्य से करनेके लिये कि उपरोक्त रीतियों की कोई सीमा निश्चित की जावें। एक सबकमेटी महासभा की ओर से नियत की जावे। १९०४ ई०

(१३) प्रत्येक स्थान की बिरादरियों में विवाहादि के खर्च की सूची बनाई जावे और इस कार्य्य के सुभीतेके लिये नीचे लिखे ४ प्रान्त बनाये जावें:—१९०५ ई०

(१) सहारनपुर, अम्बाला और करनाल

(२) मुजफ्फ़रनगर मेरठ और बुलन्दशहर

(३) देहली, रोहतक गुड़गाँव और हिसार

(४) बिजनौर मुरादाबाद आदि के लिये

(१४) विवाह समय लड़कों की अवस्था १६ वर्ष से १८ वर्ष तक बढ़ाई जावे। १९०५ ई०।

(१५) एक स्त्री के होते हुए कोई भी दूसरी शादी न करे। अगर करेगा तो महासभा उसको घृणा की दृष्टि से देखेगी। १९०८ ई०।

(१६) जो भाई कन्या का विवाह रुपया लेकर करते हैं उसको रोका जावे। यथाशक्ति स्थानीय बिरादरी सहायता देवे। नहीं तो महासभा से अन्वेषण पश्चात् सहायता मिल सकती है। १९०८ ई०।

(१७) गौड़ जाति में गृहस्थाश्रम की श्रीवृद्धि के लिये बालविवाह प्रचलित रीति उठादी जावे बालक का १८ वर्ष की अवस्था से और कन्या का १२ वर्ष की अवस्था से पहिले कभी विवाह न किया जावे। किन्तु ऐसा प्रबन्ध किया जावे जिस में वर, कन्या से ४।५ वर्ष बड़ा हो। १९०९ ई०।

(१८) राजस्थान प्रान्तमें विवाहादि नियमों के पालनार्थ और उपनियम बनाने के लिये एक उपसभा राजस्थान प्रान्तीय गौड़ भाईयों की बनाई जावे। १९११ ई०।

(१९) सब गौड़ पञ्चायतों को चाहिये कि उन नगर व ग्राम में जो विवाह नेहोवाले हुआ करें उनकी सूचना गौड़ महासभा को किया करें और गौड़ महासभा के निर्धारित नियमों पर दृष्टि देते रहा करें। १९११ ई०।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(२०) जो भाई अपने पुत्र को उच्च शिक्षा प्राप्त कराने के लिये विवाह निमित्त कन्या के पिता से किसी रूप में धन लेते हैं उनको यह महासभा घृणा की दृष्टि से देखती है। १९२१ ई०।

(२१) यह महासभा निश्चय करती है कि कन्या या वर के ऊपर धन लेकर विवाह करने वाला जाति बाहर समझाजावे और बिरादरी धन देने वाले को घृणा की दृष्टि से देखे। किसी अन्य जाति की ऐसी शादी में भी सम्मिलित न हो। १९२४ई०

(२२) यह महासभा बिरादरी की आर्थिक व वर्तमान दशा पर विचार करके निश्चय करती है कि कोई भाई ५० मनुष्यों से अधिक की बरात न ले जावे और किसी लीक में ५१) रु० से अधिक किसी रूप में नकद न दिया जावे और कन्या विवाह के सिलसिले में कोई भोज न करे। १९२४ ई०।

(२३) यह महासभा आदेश करती है कि गौड़ ब्राह्मण जाति में संस्कारों का पालन किया जावे। १९२६ ई०

(१) १६ वर्ष से पूर्व लड़कों का विवाह न किया जावे, १८ वर्ष के लड़कों का विवाह होवे। (२) १२ वर्ष से पूर्व लड़की का विवाह न होवे। (३) पुत्र सन्तान रहते ३० वर्ष के अनन्तर पुरुषों का विवाह नहीं होसकता परन्तु बाद को इस प्रस्ताव के संशोधन में पुरुष की अवस्था बजाय ३० के ४० वर्ष निश्चित हुई और इतना और स्वीकृत हुआ कि ४० वर्ष की अवस्था के बाद किसी दशा में भी विवाह करने का अधिकारी न होगा चाहे उसके सन्तान हो या न हो। (४ विवाह के अवसर पर दिखावे की रस्म बन्द हो। (५) गन्दे सीठने, नृत्य, स्वांग, तमाशे, खेल, आतिशबाज़ी आदि विवाह अवसरों पर बन्द हों। (६) बरात में ५० आदमियों से अधिक न हों (७ लड़की के विवाह में मेल बन्द हो। (८) भात और दान में १००) रु० से अधिक न दिये जावें (९) काज और खेड़े बन्द हों (१०) अडुम्बी में जाना बन्द हो (११) सीठने गाना स्त्रियों को रोटी बनाने जाना बन्द हो।

(२४) विवाह समय पर जो वर पक्ष के अधिष्ठाता, कन्यापक्ष से बरात का मार्ग व्यय, लड़के की तालीम का खर्च मोटर आदि ठहरा कर लिया करते हैं यह अत्यन्त ही अनुचित है और भविष्य में इस प्रकार की कोई ठहरौनी की रीति प्रचलित न होनी चाहिये, ऐसे विवाहों को महासभा घृणा की दृष्टि से देखती है। और यह बातें एक दम बन्द की जावें। १९२७ ई०।

(२५) विवाह संस्कार पर रस्मरिवाज़ों में जो कार्य और व्यय इत्यादि किये जाते हैं उनकी एक पुस्तक बनाई जावे कि जिसके अनुसार समस्त गौड़ जाति में विवाहादि संस्कारों पर कार्य्य हुआ करे। इसके लिए तीन सज्जनों की उपसमिति बनाई गई। १९२७ ई०।

यह समस्त प्रस्ताव उन सैकड़ों प्रस्तावों में से छांट कर लिखे गये हैं कि जो महासभा ने अपने ३४ वर्ष के समय में विवाह आदि के अवसरों पर उचित रीति से इन संस्कारों को सम्पादन करने की नियत से सर्व सम्मति से स्वीकृत किये

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इन से आपको विश्वास करना चाहिये कि महासभा श्रीगणेश से ही यह चाहती रही है कि गौड़ जाति में अपव्यय एक दूसरे की देखादेखी अनापशनाप खर्च न होने पावें और कमसे कम विवाह संस्कार की एक ऐसी पद्धति बन जावे कि जिस के अनुसार गौड़ ब्राह्मण जाति के सब अमीर और गरीब भाई उसके अनुसार इस आवश्यकीय संस्कार को सुविधा के साथ आनन्द पूर्वक कर सके।

पिछले दो प्रस्ताव नं० २४ और २५ अ० भा० गौड़ ब्राह्मण महासभा के ३० वें वार्षिकोत्सव जो दिसम्बर सन २७ में मुरादाबाद में हुआ। स्वीकृत हुए जिस पर महासभा की उपसमिति ने तो अभी तक पुस्तक तैय्यार नहीं करपाई परन्तु मुरादाबाद की स्थानीय गौड़ सभा ने विवाह समय का रस्मों रिवाजों का एक विवरण तैय्यार कर लिया और २६। २७ दिसम्बर सन् २६ को वह नियम जिला मुरादाबाद की गौड़ जाति के लिये बहुसम्मति से लोकल सभा में स्वीकृत होगया। इसके लिये हम श्रीमान् रायसाहब हकीम पं० बैजनाथजी त्रिवेदी सभापति तथा पं० रामस्वरुपजी वैद्य मंत्री लोकलसभा मुरादाबादको अनेक साधुवाद देते है कि जिन्होंने अनवरत परिश्रम करके यह गौड़जाति का व्यवहार दर्पण निर्माण करलिया और उसको मुरादाबाद की गौड़ बिरादरी ने सहर्ष स्वीकार करलिया।

महासभा का विशेष अधिवेशन गत १६अप्रैल सन्२० को मुरादाबादमें हुआ था उसमें यह मुरादाबाद की लोकलसभा का निर्मित "गौड़ ब्राह्मण व्यवहार दर्पण, महासभा की स्वीकृति के लिये प्रस्तुत किया गया महासभा ने उसको मुरादाबाद जिले की गौड़ब्राह्मण जाति में इसी अनुसार कार्य हो यह सहर्ष आज्ञा देदी और महासभा के विशेष अधिवेशन के उपस्थित समुदाय को प्रेरणा की कि वह भी इसीके समान अपने अपने जिलों का दर्पण बनालें तो बड़ी सुविधा होजावे।

हम अपने पाठकों की जानकारी और सूचना के लिये जिला मुरादाबाद के "गौड़ब्राह्मण व्यवहार दर्पण" को इस अंक में अक्षरशः प्रकाशित करते हैं कि जिससे यदि आप लोगों को यही नियम स्वीकार हों तो इन्हीं को अपने अपने जिलों में प्रचलित करें। अथवा इन्हीं के समान अपने अपने जिलेके वास्ते नियम बनालें।

यदि किसी जिलेकी स्थानीक सभा या प्रमुख भाई आगामी वार्षिकोत्सव महासभा पर जो ता० २७। २८ दिसम्बर को बरेली में होने वाला है स्वीकृतिके लिये अपने अपने जिलेका दस्तूरुल अमल पास कराना चाहें तो वह उसे उत्सव से कम से कम १ सप्ताह पहिले महासभा कार्यालय में भेजदें ताकि उस पर विचार होसके। और कार्यालय में भेजने से पेश्तर वह अपने यहां की लोकल सभा में मन्जूर करलें।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

निवेदन ।

मुरादाबाद की गौड़ ब्राह्मणसभा दो वर्ष से इस विषय पर विचार कर रही थी कि गौड़ ब्राह्मणों के संस्कारों के सम्बन्ध में एक ऐसा मन्तव्य सर्व सम्मति से निश्चय कर दे जिससे उसके संस्कारों के समय और धार्मिक रूप का निर्णय हो जाये और साथ ही उन में जो बिरादरी का लेन देन होता है और संस्कारों में जो ख़र्च होता है उन सब बातों का निर्णय हो जाये जिस से बिरादरी के सब पुरुष अपने यहां उस विधि का अनुसरण करके जहाँ संस्कारों को ठीक समय और विधि से कर सकें वहाँ अनावश्यक व्यय और उन आडम्बरों से बच सकें जो अपने यहाँ देखादेखी होने लगे हैं और जिस से हमारे यहाँ के संस्कारों की सात्विकता बहुत कुछ नष्ट होगई है। सब बिरादरियोंने प्रायः अपने यहाँ व्यवहार-सम्बन्धी पुस्तकें बनाई हैं और उन के अनुसार अपने यहाँ सुभीते के साथ सब काम करते हैं। प्रसन्नता की बात है, कि मुरादाबाद की गौड़ बिरादरी ने भी इस आवश्यकता को समझा और बड़ी लगन के साथ इस काम को पूरा किया।

स्थानीय सभा ने आरम्भ में ७ सभ्यों की एक उपसमिति बनाई उन के नाम ये हैं– १ रायसाहब पं० ह० बैजनाथ जी त्रिवेदी (संयोजक) २ पं० श्यामलाल शुक्ल, ३ पं० ज्वालादत्तशर्म्मा ४ पं० चुन्नीलाल शर्मा, ५ पं० रामप्रसाद गङ्गाजली, ६ पं० देवीदत्त शुक्ल और ७ पं० रामस्वरूप वैद्य मन्त्री स्थानीय गौड़ ब्रा० सभा।

उपसमिति ने कई बैठकों में अपना मन्तव्य निश्चित करके "व्यवहारदर्पण' (दस्तूरुल अमल) के नाम से स्थानीय गौड़ सभा के सम्मुख उपस्थित किया, जिस पर स्थानीय सभा की अन्तरङ्ग सभा ने कई दिन तक विचार किया और उस मन्तव्य को नगर के प्रधान गौड़ ब्राह्मणों के केन्द्रों में जैसे १ किसरौल नवाबपुरा २ गंज मानपुर ३ कठघर और ४ मंडी में सभा करके सब भाइयों के सामने उस मन्तव्य को रक्खा और उस पर उनकी सम्मति संग्रह की इसके बाद मुरादाबाद के सब गौड़ भाइयों की एक जनरल सभा २६ और २७ दिसम्बर को अग्रवाल पाठशाला में हुई जिस में सब भाइयों ने मिलकर उपसमिति के मन्तव्य, उस पर अन्तरङ्ग सभा के निर्णय और केन्द्र सभाओं के विचारों का अच्छे प्रकार आंदोलन करके प्रायः सर्व सम्मति से अपनी जाति के संस्कारों का यह व्यवहारदर्पण जो आप सब भाइयों की सेवा में रक्खा जाता है निश्चय किया है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अन्त में निवेदन ये है, कि—आपके भाइयोंने इस मन्तव्यके बनाने में और उसे बिरादरी से स्वीकृत कराने में थोड़ा परिश्रम नहीं किया है, आशा है उसके अनुसार अपने यहाँ काम करने में आप अपनी बनाई इस पद्धति का गौरव करेंगे और उससे होने वाले लाभों से अपना तथा जाति का उपकार साधन करेंगे। भूल से इसी व्यवहारदर्पण को बीच में संस्कारदर्पण के नाम से किसी विज्ञापन में लिख दिया गया था जिससे आशय इसी संस्कार सम्बन्धी व्यवहारदर्पण का था, इस बात की जनरल सभा में सूचना भी दे दी गई थी।

निवेदक-

(रायसाहब) हकीम बैजनाथ त्रिवेदी

सभापति

१६-१-३०

गौड़ ब्राह्मण सभा मुरादाबाद

गौड़ब्राह्मणव्यवहारदर्पण।

"गौड़-ब्राह्मण-व्यवहार-दर्पण" के प्रारम्भमें यह बात जानने योग्य है कि-इसमें प्रथम संस्कारों के समय और नाम उस के पश्चात् संस्कारोंके व्यवहार और व्यवहारों के लेन देन जो तिलकपद्धति और सगाई पद्धति के अनुसार हैं उन का इसमें विवरण पृथक् २ दिया गया है।

संस्कारो के विषय में सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि-गौड़ ब्राह्मणोंमें यथाविधि और यथासमय अवश्य होने चाहिये। उनके नाम और उनका समय नीचे लिखा जाता है।

संस्कारों के नाम और उनका समय।

संख्या	संस्कार	विवरण
१	गर्भाधान	रजो दर्शन के बाद उत्तम काल में होना चाहिये।
२	पुंसवन	गर्भ स्थिति के तीसरे मास में होना चाहिये।
३	सीमन्तोन्नयन (प्रयोजन)	आँठवें मास के प्रारम्भ में होना चाहिये।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

४	जातकर्म	बालक के जन्मते ही नाल कटने से पहले होना चाहिये इस में नान्दीमुख श्राद्ध होता है।
५	षष्ठीपूजन (छुट्टी)	जन्म से छुटे दिन होना चाहिये।
६	नामकरण	दसवें या ग्यारहवें दिन होना चाहिये।
७	निष्क्रमण (सूर्य दर्शन)	नाम करण के दिन होना चाहिये।
८	अन्नप्राशन (पासनी)	पाँचवे या छटे महीने होना चाहिये।
९	चूडाकर्म(मुंडन)	पहिले साल में या कुलाचार के अनुसार होना चाहिये।
१०	कर्णवेध (कर्णछेदन)	पाँचवे वर्ष होना चाहिये।
११	यज्ञोपवीत (जनेऊ)	आठवे वर्ष होना चाहिये यदि किसी कारण से न हो सके तो प्रायश्चित कराके शास्त्रनिर्दिष्ट समय के भीतर अवश्य होजाना चाहिये।
१२	वेदारम्भ	यज्ञोपवीत के दिन ही होना चाहिये।
१३	केशान्त	यह संस्कार उन लड़कों का जो ऋषिकुल आदि में यथा-
१४	समावर्तन	नियम निवास करें वहाँ से लौटने पर विवाह से पूर्व होना चाहिये। यदि उन नियमोंका पालनजो ब्रह्मचर्य और वेदारम्भ में आवश्यक हैं नहीं निभ सके तो यज्ञोपवीत के दिन ही केशान्त और समावर्तन होजाना उचित है।
१५	विवाह	लड़के या लड़की की ठीक तन्दुरुस्ती और योग्य अवस्था में शास्त्रानुसार विवाह होना चाहिये।
१६	चतुर्थीकर्म	विवाह के साथ या अपने मकान पर आकर वरको करना चाहिये।

संस्कारों के व्यवहार।

१-२ गर्भाधान और पुंसवन में किसी जातीय व्यवहारकी आवश्यकता नहीं है

३—सीमन्त-इसे प्रयोजन भी कहते हैं। इस में कुलाचार के अनुसार कहीं २ कन्या का पिता लड़की के लिये तियल और जामाता के लिये वस्त्र तथा पांच बर्तन कुछ फल और मिष्टान्न भेजता है इसमें २) से अधिक न भेजने चाहिये यह रस्म बहुत सीधे साधे ढंग से करनी चाहिये। लड़की लड़के के अतिरिक्त और किसी को वस्त्रादिक देने की ज़रूरत नहीं है। रिश्तेदारों में चने आदि बांटने की जरूरत नहीं है। जो स्त्रियां एकत्र हों उन्हें घर पर ही बांट देने चाहिये।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(खर्च)-॥) पण्डित ।-) पूजन में ।) नाई को ।) कहार को =) मालिन को । जिनके यहां वरुआदि भेजने का नियम नहीं है उनको कुछ नहीं भेजना चाहिये ।

४-जातकर्म-इसमें किसी जातीय व्यवहार की आवश्यकता नहीं है । नान्दीमुख श्राद्ध करके बालक की जिह्वा पर सुवर्ण की सलाई से शहद लगा कर ओंकार लिखना चाहिये । नान्दीमुख श्राद्ध में सवासेर चावल ।) दक्षिणा देनी चाहिये । ज्योतिषी को ग्रह आदि दिखाने की दक्षिणा ।) ॥) १) देनी चाहिये ।

५-षष्ठीपूजन (छट्टी) शास्त्रीय विधि से षष्ठीपूजन करना चाहिये । इसी दिन बाहरी भी निकलती है, मान्य स्त्री सतीये रखती है, देवर सूतिका गृह से बाहर निकालता है इन दोनों को १)-१) रुपया दक्षिणा देनी चाहिये ।

बहू के पिता के यहां से कुलाचार के अनुसार खिचड़ी आती है किन्तु सब सामान का मूल्य ५) रु० से अधिक न हो ।

बिरादरी की स्त्रियों को छट्टी के समय और रात्रि में जागरण के समय तिलचावरी बटती है- बहू बायना मंस कर सास को देती है । यदि किसी के यहां चन्दनपाँव भेजने की रस्म हो तो उसे २॥ गज स्वदेशी दुपट्टा बालक के चरण लगा कर बहू के पिता के यहाँ भेजना चाहिये । दाई की लाई किसी वस्तु का पूजन आदि निषिद्ध है । खर्च इस भांति हो =)॥ पण्डित को दक्षिणा =)॥ नाखून कटाई नायन को ।

६- नामकरण-इस में जातीय व्यवहार की कोई रीति नहीं है बालक के लिये ननसाल से वस्त्र आदि आते हैं शास्त्रानुसार संस्कार करना चाहिये । खर्च इस भांति है ।

।) ॥) १) पण्डित को =) ।) ॥) नाई को न्यौ० =) ।) कहारको -) =) मालिन को ।-) पूजन के -)। समिधा आदि के नाई को, नाम बजाने को काँसी का कटोरा या कटोरी होनी चाहिये ।

सन्ध्या के समय कूपपूजन कुएसे भरा घड़ा मँगवाकर घर पर करना चाहिये औरतों का कुए पर जाकर कूपपूजन करना उचित नहीं इस में खोरिये की रस्म बन्द की गई ।

७—निष्क्रमण-नामकरण के साथ ही होजाना चाहिये, इसमें लेन देन कुछ नहीं होता ।

८—अन्नप्राशन-इसमें जातीय व्यवहार कुछ नहीं होता शुभ मुहूर्त में संस्कार करे । खर्च इस भाँति ।) ॥) पण्डित को, ॥) १) मान्य को ।

९—चूड़ाकर्म-कुलाचार और शास्त्रविधिकी रक्षा करते हुए यह संस्कार करना चाहिये । बालक की ननसाल से केवल बालक के लिये वस्त्र आने चाहिये खर्च ॥) पण्डित को, ।) न्योछावर नाई को, ।) मूंडन के नाई को, ननसाल का नाई आया हो तो ।) उसको ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१०—कर्णछेद—शास्त्रानुसार संस्कार करना चाहिये। खर्च—सवा पाव आटा एक छटाँक गुड़ ।) नक्द सुनार को ।) पण्डित को =)॥ पूजन के, =) नाई को, =) कहार को -) मालिन को। संस्कार के समय जो उपस्थित हों उन्हें ४-४ बड़े बताशे बाँटने चाहियें, नक्द कुछ न बाँटा जाये। आरते में लड़कियों को १) रु०। ननसाल को सूचना के लिये ॥) के बताशे भेजने चाहियें, ननसाल से बालक के लिये वस्त्र और बाली आनी चाहियें। यदि सामान नाई लाया हो तो उसे भी ।) मिलने चाहिये।

११—यज्ञोपवीत—यह संस्कार जहाँ तक हो समय पर होना चाहिये। यज्ञोपवीत से पहले हल्द, तेल, मँढा आदि शास्त्रीय विधि के अनुसार संक्षेप से आडम्बर को बचाते हुए करना चाहिये। कुटुम्ब की छई या बान की रोटी कोई चाहे तो कर सकता है। ननसाल से लड़के के लिये भिक्षा या अधिक से अधिक कपड़ों का जोड़ा आना चाहिये। उचित तो यह है कि यज्ञोपवीत से पहले सगाई न चढ़ाई जाये। सगाई हो जाने पर सुसराल से लड़के लिये भिक्षा आ सकती है।

खर्च निम्न लिखित होना चाहिये। कंकण बन्धन ।-) पण्डित जी, =)॥ नाई, -)। मालिन, -) कहारी, =)॥ पूजन में। मँढा ॥=) पण्डित को, ।-) पूजन में, ।-) नाई को न्यौछावर के, =)॥ धीमरी को, -)। मालिन को, मान्य को मढ़े का १) रुपया देना चाहिये। उपनयन १) रुपया जनेऊ पहिराई पुरोहित को, ॥) १) रुपया लग्नदान १) सावित्री दान में गुरुको, एक थाली एक धोती, एक अङ्गोछा, एक नारियल सहित। ॥) १) वेदारम्भ में आचार्य्य को, १।) गो दान में, २) आचार्य्य को और १।) पूजन में, ॥)। तीन पूर्ण पात्रों में, १) नाई को न्यौ० का ॥) १) क्षौर कर्म, =)॥ समिधा आदि के नाई को, १) दोघर धीमरी ।) ॥) मालिन को मण्डप के लिये केले मँगवायें हों तो उनकी कीमत अलग। १) स्याही का भावज को, १) आरते का बहिन को, ॥) भंगन को, =) भडरी को कांस्यपात्रसहित, ।-) गाने वालियों को। आठ भोजुओं में चावल आठ यज्ञोपवीत और ।) रक्खें। अधिक करना चाहे तो आठ कटोरियों में १—१ यज्ञोपवीत ओर दो दो आने रख कर दान करना चाहिये। १) या १।) गौड़सभा को दान। यदि कोई भिक्षा भेजें तो उसमें शकुन के लिये चार बड़े बताशे या एक मुट्ठी छोटे बताशे रक्खे जा सकते हैं।

इस में भात की रस्म बन्द की गई गिंदौड़ा बाँटना तथा पिंड और नगर की ज्यौनार बहुमत से बन्द की गई।

१२—वेदारंभ—यज्ञोपवीत के दिन होना चाहियें।

१३—१४—केशान्त और समावर्तन—यह संस्कार उन लड़कों का जो ऋषिकुल आदि में यथानियम निवास करें वहां से लौटने पर विवाह से पहिले होने चाहिय। यदि उन नियमों का पालन जो वेदारंभ और ब्रह्मचर्य में आवश्यक हैं नहीं निभ सके तो यज्ञोपवीत के दिन ही केशान्त और समावर्तन होना चाहिये।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१५— विवाह-विवाह से पहिले चौदह संस्कारों में तिलक पद्धति और सगाई पद्धति में कुछ भेद नहीं है। विवाह के सम्बन्ध में यह बात विशेष ध्यान देने योग्य है कि उत्तम स्वास्थ्य वाले और योग्य लड़कों का ही विवाह होना उचित है। एक गोत्र में विवाह होना निषिद्ध है। अपनी बिरादरी में दो प्रकार की प्रथायें विवहाङ्ग और विवाह के विषय में प्रचलित हैं। सुभीते के लिये उपसमिति ने उनका नाम "तिलकपद्धति" और "सगाईपद्धति" रखकर उनके व्यवहारों का प्रदर्शन अलग अलग कर दिया है जो जिस पक्ष का अनुसरण करना चाहें वे उसी विवरण के अनुसार अपने व्यवहारों का निर्णय कर सकते हैं। सम्बन्ध पक्का हो जाने पर लड़की वाला लड़के वाले के यहाँ तिलक या सगाई भेजता है तिलक या सगाई से पहले रोपना किया जाये तो लड़के को १) २) या ४) रुपये दिए जायें इसमें और कुछ खर्च नहीं होता। टीके में रोपने के रुपये कम न किये जाँय। तिलक में नीचे लिखा सामान भेजना चाहिए।

तिलकपद्धति।

कन्या पक्ष।

१—तिलक

११) २५) या अधिक से अधिक ५१) रु० नकद, परात १ झारी १ नारियल १, पान का बीड़ा १, लड्डू परात के अनुसार ॥) १) या २) के नमस्कारी ॥) १) या २) आरता, ।) ॥) या १) न्यौछावर वरपक्ष के नाई के लिये, =) पांव धुलाई =) शरबतमें। लड़कीका भाई या पुरोहित यह सामान तिलक करके लड़के की गोद में रख देगा। कन्या पक्ष की ओर से बिरादरी में बाँटने के लिये दक्षिणा न भेजी जाय। यदि शहर में तिलक चढ़े तो थालियों की वापिसी में लड़की वाला १) या २) से अधिक न भेजे सामान लाने वाले नाई या धीमर को =, =) आने दिये जाँय अन्य कोई हो तो चार २ पैसे। तिलक चढ़नेके बाद यदि समधी

वर पक्ष।

१—तिलक

॥) १) या २) शुक्लजी को कन्यापक्षके, ।) ॥) या १) शुक्लजी को वरपक्ष के, ॥) १) या २) नाई को कन्या पक्षके, ॥) १) दो घर कहारी अपनी को, ।) मालिन।

बर पक्षको बिरादरीमें केवल पान* बांटने चाहिये नकद दक्षिणा नबांटी जाय।

लड़की की गोद का सामान— लड्डू गोद के १२, छुहारे ११, बादाम २१, गोला १ किशमिश एक छटांक कलावे ५, डिबियें ४, रोली एक छटांक मेंहदी एक छटांक कुछ खिलौने, पिटारी गोटे की एक अँगूठी सोनेकी १, अँगूठी चांदी की दमामे की एक बिरादरी में बांटने के लिये लड्डू १) या २) रु० के

* सगाई पद्धति देखी जाय

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कन्या पक्ष

मिल जाय तो मिजमानी व मिलनी देने की प्रथा है – और यदि लौंद मास आ जाय तो लौंद देना भी लड़की वालेकी इच्छा पर निर्भर है।

२–पीलीचिट्ठी और लग्न

१) पीली चिट्ठी के साथ। –)। और हल्दी की गिरह पाँच, सुपारी ५ लग्नमें। (खर्च =) ।) चिट्ठी लिखाई और =) ।) या ॥)लग्न लिखाई ।–)खर्च पूजन आदि के।

३–भट्टीका मुहूर्त

विवाह से आवश्यकतानुसार ५, ७ या ११ दिन पहिले होता है (खर्च) =)॥ या ।–) पण्डितको =) ।) परौतपर हलवाई को =) मालिन नाई आदि को परौत (आटा ऽ। गुड़ ऽ–)

४– गिंदौड़े

गिंदौड़े बाँटना आवश्यक नहीं ऐच्छिक है यदि बाँटे जाँय तो—अपने चलन के अनुसार १ सेर के चार या पाँच ज्यादा से ज्यादा बनाये जाँय। बन जाने पर पूजा करके १ गिंदौड़ा)॥ पैसे बन्द पुजाई पण्डितको इसके बाद जिस से जैसा व्यवहार हो उनके यहाँ बाँटे जांय। समधी के यहां ७, ९, ११ या १५ गिंदौड़े १) २) या ४, रु० उन पर रख कर भेजे जांय। यदि वर-पक्ष की तरफ से गिंदौड़े आवें तो उन

वर पक्ष

बालकों के लिये मीठा नमकीन और कुछ फल ऊपर लिखी अँगूठियों के अलावा और कोई आभूषण नहीं भेजना चाहिये। नाई को विदाई में १) २) या ४, से अधिक न दिये जांय वस्त्र आभूषण आदि देने की आवश्यकता नहीं है। लड़की के भाइयों की संख्या के अनुसार गोले तिलक के भेजने चाहिये।

२–पीली चिट्ठी और लग्न

इस में लड़के वाले की ओर से कुछ खर्च नहीं होता सिर्फ लाने वाले नाई को १) लग्नका।) चिट्ठी के दिये जाते हैं। यदि वह लग्न के साथ नहीं आया है तो बाद को कुछ नहीं दिया जायगा।

३—भट्टी का मुहूर्त

वर पक्ष में यह आवश्यकता होने पर होता है। यदि भट्टी चढ़ाई जाय तो खर्च कन्यापक्षकी भांति होगा।

४– गिंदौड़े

गिंदौड़ों की तोल आदि के विषय में वही नियम माना जायगा जो कन्या-पक्ष में है। कन्यापक्ष से गिंदौड़े लाने वाले नाई को =) या ।) दिये जांय।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कन्यापक्ष

में से आवश्यकतानुसार थोड़े से रख लिए जाँय और बाकी पर १) २) वा ४) रख कर लौटा दिये जांय।

वर पक्ष

ज्यौनार ।

विवाह में कोई चाहे तो ज्यौनार कर सकता है आवश्यक नहीं है। चार वर्ष से अधिक अवस्था की कन्याओंको ज्यौनार में साथ न ले जाया जाय, भोजन की सामग्री में मीठी तश्तरी हों तो लड्डू न हों यदि लड्डू हों तो मीठी तश्तरी न हो। सुविधा की बात तो यह है कि – ज्यौनार में केवल लड्डू ही परोसे जांय जिनकी तोल तीन छटांक (चौकड़ी) से अधिक न हो। बच्चों के सामने दो लड्डू परोसने चाहिये, ज्यौनार में जो सम्मिलित नहीं हो सकते हैं उनके यहां परोसे न भेजने की जो प्रथा प्रचलित है उस का अनुमोदन किया जाता है। स्त्रियों की ज्यौनार बन्द है यह भी समुचित है।

५—कंकण बन्धन (कंगना)

(खर्च) =)॥ पण्डित को, -) न्यौछावर -) मालिन। उसी रात में रतजगा होता है। इसमें तिल चावरी बँटती है -) से अधिक नकद न बांटा जाय। कुलदेव की स्थापना भी इसी दिन होगी (खर्च) १। गज अधिक से अधिक ५ गज कोरा स्वदेशी वस्त्र मान्य स्त्री को या जो थाप लगावे उसे दिया जाता है और।) ॥) या १) नकद।

५—कंकण बंधन (कंगना)

कन्यापक्षवत् ।

६—परिवार की रोटी

कंकण बन्धन से दूसरे दिन कच्चे भोजन से परिवार का सत्कार किया जाता है, इसमें और कोई खर्च नहीं होता।

६—परिवार की रोटी

कन्यापक्षवत् ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कन्यापक्ष

७–मण्डप (मँढा) और भात

इसमें यथाशक्ति नान्दीमुख श्राद्ध करना उचित है। (खर्च) १) मँढे का मान्य को।) ॥) पंडित को = ॥ पूजन के =)॥ नाईको =,॥ मालिन को =)॥ कहारी को =)॥ अन्य लगातियों को। इसके बाद मामा के यहां से आई हुई भातकी सामग्री पहिनाई जाती है इस में घर वालों के टीके भातई की ओर से होते हैं। या ॥)भातई न्यौछावर करके नाई को देता है जवाबमें इतनी न्यौछावर भातई के नाईको मिलती है –)या =)॥ प्रतिष्ठाई पण्डित को।

८—घुड़चढ़ी

बरात चढ़त की ज्यौनार बन्द।

वर पक्ष

७–मण्डप (मँढ़ा) और भात।

कन्यापक्षवत्।

८—घुड़चढ़ी

विवाह से पहले सुभीते के अनुसार करनी चाहिये। सवा पाव या ढाई पाव चने की दाल, भेली एक, चोली दुपट्टा एक यह मान्य को दिया जाता है। लड़के के वस्त्र मुकट (मौहर) सेहरा, जूता, पटका रूमाल, बटुआ, नारियल, फूलों का सेहरा (ख़र्च) १) कपड़े पहिराई मान्य को। ।) ।!) या १) पण्डित को, =)॥ पूजन में १) सुरमेका भावज को १) आरता बहिन को। ।) ॥) या १) नाई को, १) सीकों में बहिन को १) बाग पकड़वाई मान्य को, ।–) या ।।=) मालिन को घुड़चढ़ी के सेहरे के, मौहर पुजाई के अलावा। १) टीका लड़के की माता की ओर से, ।) या ॥) घोड़ी वाले को। घुड़चढ़ी के समय स्त्रियों का कुएँ पर जाना बन्द किया गया। घर पर ही एक घड़ा जल कुएँ

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कन्यापक्ष

९—दूर्वादान ।

११) २५) या ५१) रु० नकद रुपयों के बराबर गुझियां, एक नारियल, एक दुपट्टा या रूमाल, पीतल के कलश दो नारियल या दो कटोरे दोनों कलशों पर ढकने को, बुआ की ओर से सरवर माट का सामान यदि किसी की बुआ हो तो एक कलश चावल या बताशे से भरा हुआ, एक तियल, १) २) या ४) नकद यह कुल सामान वर के लिये है =)॥। शुक्लजी और लगायतियों के हैं।

१०—सुहागपुरा

।) ॥) या १) मान्य को सुहाग पुरा बधाई =)॥। खर्चके। पहिले दिन बरातियों को भोजन जनमासेमें भेजा जाय यदि कच्चा भोजन हो तो लड़की वाले के घर जाकर खाना चाहिये। भोजनके

वर पक्ष

से मँगवाकर पूजन करना चाहिये।

नीचे लिखी बातों पर ध्यान देना चाहिये—

बारात केवल दम्बलियों से चढ़ाई जाय यदि कोई बाजा करना चाहे तो बजाने वाले दस आदमियों से अधिक न हों और वे हिन्दू हों। बाग़बहारी, आतशबाजी, वेश्या का नाच कतई बन्द चढ़तमें अधिक आडम्बर न कियाजाय। हाथी घोड़े ऊँट भी चढ़त में न हों, वर (लड़के) के लिये कोई सवारी लेली जाय मगर हाथी न हो। बालकों के लिये दो चार सवारी लेली जाँय किराये की हों या मँगनई की। (चढ़त की ज्यौनार बन्द) रतजगे में स्त्रियों का मकान से बाहर जाकर गाना बन्द।

९—दूर्वादान

वरपक्ष से दूर्वादान में खर्च इस भाँति होगा - ॥) १) २) कन्या पक्ष के पुरोहित को ।) ॥) या १) कन्यापक्ष के नाई को, =)॥ या ।) पाँव धुलाई और शरबतके, =) मालिनको =)॥ जाचकी को दो दो या चार चार पैसे सामान लाने वाले प्रत्येक मनुष्य को। वरपक्ष को अपने पुरोहित और नाई को आधा देना होगा।

१०—सुहागपुरा

वरपक्ष से १ कागज में आध पाव कच्ची खाँड और दो पैसे कलावे से लपेटकर मान्य के द्वारा कन्या पक्ष को भेजा जाता है, -)। शुक्लोंके लिये और)। मान्य को और -)। कमीनों के।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कन्यापक्ष

साथ संकल्प का ।) ॥) या १) समधी के लिये भेजा जाय। बाहर से आये शुक्लों को पारस देना अथवा भोजन कराना लड़की वाले की इच्छा पर है।

११—द्वारचार

जब लड़का द्वार पर आये तब उसे चौकी पर खड़ा करके एक नारियल और १ से सास उसका तिलक करे ।) या ॥ न्योछावर के वरपक्ष के नाई को यही चौकी चौंरी के समय वरको स्नान कराकर देदी जायगी।

१२—विवाह

पूजन की सामग्री—शुद्ध घी धान की खीलें, शमीपत्र (जंड) पिसी हल्दी, समिधा (लकड़ी आम या ढाक की) कटोरी कांसी की ४, दही शहद, कन्यादान के लिये शंख पूर्णपत्र, पाषाण, बांस का सूप (छाज) रोली, चावल, कलावा, पान, बताशे सुपारी, दूल, १। गज घड़ा एक पीली मिट्टी वेदी को, हल्दी की गिरह ५ इत्यादि (खर्च) १) २) या ४) मधुपर्कके गोदान में ।)॥) १) लग्न दान में अपने पुरोहित को ।) ॥) या १) शाखोच्चार अपने पुरोहितको एक रु० २) या ४)नक्द और सुवर्ण या सुवर्ण की अंगूठी कन्यादान में वर को ॥) या एक रु० विवाह कराई वरपक्षके आचार्य को सवा रु० पैसे पूजन को, लड़की के लिये वस्त्र, खादी वादी और आभूषण, विवाह के समय वर को धोती पहिन कर आना चाहिये यदि वह धोती पहिन कर न आवे तो कन्या के पिता को चाहिये कि जो धोती वर

वर पक्ष

११—द्वारचार

१) आरते में जो लौट आयगा, १) या १।) कलश में कहार को ज्यादा से ।-) पैसे बीडों के साथ फेंके जाँय, ॥) या १) न्यौछावर कन्यापक्षके नाई को।

१२-विवाहसामग्री

चकले की चादर जूता एक जोड़ अंगूठी दमामे की चाँदी की एक गोद (बादाम ५ छुहारे ५ गोला एक रुपया एक किशमिश आधी छटाँक, चूड़ी हरी १४ हल्दी की गिरह ५ सुपारी ५, छुड़े पैंडे एक जोड़, पायजेब एक जोड़, मौहरी के लिए कागज, कलावे २, रोली आधी छटाँक, मेंहदी आधी छटाँक, नक्द =)॥ (खर्च) ।) ॥) या १) लग्नदान अपने आचार्य्य को, ।) ॥) या १) शाखोच्चार का अपने पुरोहित को, १)२) विवाह कराई कन्यापक्षके आचार्य को, १) या २) गोदान अपने पुरोहित को २)४)या५) गोदान के कन्यापक्षके पुरोहित को, १।) पैसे पूजनके, १।)चौरासी आहुतियों का, ।-) या ।।=) अनतपट या सप्तपदी के पुरोहितको =)॥ मौहरी बँधाई =)॥ दृढपुरुष को, शुक्लों को थांवा पादार्घ्य, या कौंधनी यथाशक्ति ।) छायादान में =)॥ नाई को =)॥ कुम्हार को, =)॥ या ।-) दोघर भीतर

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कन्यापक्ष ।

को चौंरीके समय मिलने वाली है उसे इसी समय दे दे। विवाह में स्त्रियां अश्लील (बुरे) सीठने न गावें।

१३-छन्द

सास तथा अन्य स्त्रियां वरसे छंद कहाती हैं और इच्छानुसार उसे दक्षिणा देती हैं अश्लील (बुरे) छन्द न कहे जांय।

१४—चौंरी और कङ्कणपरिवर्तन

वायने दो ढाई सेर के १॥) नकद दोनों वायनों पर एक तियल, एक रुपट्टा एक चोली, मूँग २॥ सेर एक परात कङ्कने की जो तिलक की परात से वजन में आधी हो, एक धोती वरके लिये- यदि विवाह के समय वर को धोती दी गई हो तो वही धोती इस समय आयगी, लड़के के लिये भोजन के पात्रों का एक सेट। लड़के लड़की को स्नान अलहदा २ बन्द कमरे में कराना चाहिये।

१५—नौतनी

यह व्यवहार दुपहर के बाद होता है। सामग्री- चने की दाल सवा सेर एक भेली गुड़ की, =)॥ नकद, एक यज्ञोपवीत एक रु० तिलक का एक नारियल लड़के के लिये बीडे बरात के खर्च को, -)। कमीनों को, थाली पूजन की।

१६—बढार

बढार दिन में भी हो सकती है ॥) एक रु० बन्दरवार बँधाई मान्य को

वर पक्ष

की धीमरी को =)॥ या ।-) हाथ के नीचे =)॥ या ।-) नायन को पीछे बिठाई के ।)पूर्णपात्रमें)। या)॥ प्रत्येक माँगने वाले को भूडके।

१३—छंद

इस में वर पक्ष की ओर से कुछ खर्च नहीं होगा। वर अश्लील (बुरे) छंद न कहे।

१४-चौंरी और कङ्कणपरिवर्तन

विवाह के दूसरे दिन दुपहर से पहिले होता है। सामान जो कन्यापक्ष को जायगा तियल चढ़ावेकी एक चौंरी एक सिंगरौटा एक सिंहरौटियाँ चार रोली एक छ० मेंहदी एक छ० कच्ची खांड एक छ०, डिबिया काठ की चार, दरियायी एक गिरह गोद एक, बताशे बड़े ५ कलावे के लच्छे ५, अंगूठी एक, पान एक, नकद =)॥ कन्यापक्ष के नाई को ।) या ॥) नाई या धीमर को वायना लाने के समय दिये जायँ।

१५—नौतनी

।-) कन्यापक्ष के पण्डित को, =)॥ कमीनों को।

१६—बढार

तोता काठ का एक, बन्दरवार ४, एक रु० दोघर कहारी को।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कन्या पक्ष।	वरपक्ष
वरपक्ष के जानीमानी की संख्या अधिक से अधिक ग्यारह होनी चाहिये, (एक थाली एक लोटा या एक गिलास की एक एक जानीमानी होती है) ऊपर लिखी जानीमानियों से अधिक जानी-मानी माँगना या देना अनुचित है। जानीमानी की प्रत्येक थाली में दो दो लड्डू रक्खे जाते हैं जो वरपक्ष के नाई के होते हैं। पात्रों का एक सेट लड़के को एक पारस पत्तल खुलवाई वरपक्ष के पुरोहित को।	

आवश्यक निवेदक।

१—बढार का भोजन उपस्थित का है, अनुपस्थित मनुष्यों के नाम से पारस माँगना बहुत अनुचित है, वरपक्ष को इसके लिये आग्रह नहीं करना चाहिये।

२—कन्यापक्ष में जहाँ अपनी बिरादरी को जिमाने का नियम है वहाँ अनेक मनुष्यों को कन्याके विवाह में भोजन करने में संकोच होता है। इस कारण वह प्रथा बन्द होने योग्य है।

३—यदि कोई बिरादरी को जिमाना चाहे तो निमन्त्रण पत्र या बन्द द्वारा भेजा जावे बुलावा नहीं दिया जाय बुलावे के कारण कन्या पक्ष को बहुत असुविधा होती है।

४—बढ़ार के दिन बाहर के शुक्लों को पारस देने की आवश्यकता नहीं है।

५—यदि बरात शहर की हो तो बढ़ार के दिन या तो बढार दिन में की जाय और रात को जनवासे में वर के साथ जो कतिपय घर के आदमी हों उन के लिये पारस भेज दिया जाय यदि बढार रात को की जाय तो दिन में जनवासे में वर के साथ जो कतिपय आदमी हों उनके लिये भोजन भेज दिया जाय।

६—यदि लड्डू परोसे जाँय तो तश्तरी न परोसी जाँय तश्तरी हो तो लड्डू न परोसे जाँय, बालकों के आगे दो लड्डू परोसे जांय।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कन्यापक्ष

१७—विदा

विदाके समय यह सामान होना चाहिये एक पलङ्ग. एक गद्दा या दरी एक तकिया, एक चादर पलंग की, ४ तियलें पलङ्ग की या ४ साड़ियां लड़के के लिये वस्त्र, ५ पात्र पचैंड़के (१ परात एक तौला एक कटोरा एक रमचा एक लोटा), मट्टी ५, ७ या ११ पिराक ५, ७ या ग्यारह सूत मीठे पगे हुए २॥ सेर या ५ सेर, परोसे समधनों के लिये २५, ५० या अधिक से अधिक १०० (खर्च) वरी की दक्षिणा समधी के लिये ॥) १) या २) =) शुक्लों के, रंगवीड़ी की दक्षिणा समधी को ॥) १) या २), ॥ रङ्गवीड़ी की न्यौछावर वरपक्षके नाई को केवल १००) की थाली पर २५) ५१) या १००) थाली में, अपने पुरोहित को थाली की दक्षिणा १) २) या ४) ३) सैकड़ा लीख वरपक्ष के लगातियों को ॥; या एक मान्य को पट्टे का, ॥) गोड़ सभा को कम से कम, ।) ॥) दम्बलियों को बेल के इस में वस्त्र का भी मूल्य है, ४) सैकड़ा लड़के को वस्त्र पहिनते समय, २) तिलक लड़केको पलंग के समय १) मट्टी पर जाने के समय वर को, १) गूँय खुलाई वर को।) देहली पुजाईमें छोटो मट्टी पर शुक्लोंको थाली के समय थांवा बन्द। बरातियों का पट्टे का तिलक बन्द।

१८—पट्टा फेर

एक तियल कन्या के लिये ॥=)वरपक्ष के शुक्ल को ।-) पूजन के।

वरपक्ष

१७—विदा

सामान जो कन्यापक्ष को जायगा गेली ऽ॥ सेर, मेंहदी ऽ॥ सेर, खाँड कच्ची ऽ॥= छ० गोले ग्यारह, बादाम ऽ॥ सेर, किशमिस ऽ॥ सेर मखाने ऽभर, कलावे दो सेर बताशे ऽ२॥ सेर रंग पीला)। का, बीड़े १२, धनिया -) का, खिलौने तियल दिखाई की एक, दो वरोने मरदाने, दो वरोने जनाने एक कंघी मय दुलजनियां, एक शीशी फुलेल एक सतनाला, वहूके लिये आभूषण (गहने) जो अधिक से अधिक ग्यारह हों जिन में ७ सोने के चार चांदीके-(खर्च) -) बरीप्रतिष्ठाई शुक्लों को, =) लगातियों को -) रङ्गवीड़ी को दक्षिणा शुक्लों को, १) न्यौछावर रङ्गवीड़ी की सौरु थाली पर नाई को कन्यापक्षके, चार रु० सैकड़ा थालीके वरपक्षके पुरोहित को, एक रु० न्यौछावर थाली की कन्यापक्ष के नाई को, चार रु० सैकड़ा थाली बागे की दक्षिणा कन्यापक्षके पुरोहितको, ६) सैकड़ा कन्यापक्षके लगातियों को एक रु० सैकड़ा मालिनको ॥=)या १) सिठाई नायन कन्यापक्ष को, १) सैकड़ा राय को एक रु० जनमासे की भँगन को ।-) =,॥ या १।) सिर गुन्दी नायनको ६) स्थानीय गौड़सभा को कम से कम लगातियों को जोड़े न बंटे जाँय।

१८—पट्टा फेर

पट्टा फेर की रीति प्रचलित होनी चाहिये द्विरागमन की प्रथा बन्द। गोद १-१) गोद में, १।) शुक्लको कन्यापक्ष के ।-) पूजन में =)॥ मालनको =)॥ नायनको -) न्यौछावर नाई कन्यापक्ष को।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कन्यापक्ष

१६-लड़की की विदा

जानीमानी की संख्या के अनुसार मिलाप को दक्षिणा एक रु० के हिसाबसे देनी चाहिये जो ग्यारह से अधिक न हो। ॥) न्यौछावर वरपक्ष के नाई को।

२०-दसियारी

लड़की को बुलाने जो व्यक्ति जाय तो वरपक्ष को यह सामान भेजा जायगा १॥ तियल एक कोथली ५ सेरकी, सोहाल १५ सेर अधिक से अधिक, नक्द १) २) या ४), तियल पर एक रु० कोथली पर कर्मीनों के लिये ॥) या एक रु०।

वरपक्ष

१६-लड़की की विदा

एक रु० दोघरमें कहारी को =) पानी पिलाई कहारी को =)॥ हनुमान् जी के प्रसाद को यदि कन्या के साथ उसका पिता किसी स्त्री को सेवा और कन्याकी प्रसन्नता के लिये भेजना चाहे तो वरपक्ष को उसे प्रसन्नता पूर्वक साथ लेजाना चाहिये इस अवस्था में उस स्त्री को अधिक से अधिक ५ रु० दिये जाँय और कुछ सामान न दिया जाय। यदि कोई साथ न जावे तो १) या २) कहारी या नायन इनमें से जिसे कन्यापक्ष दिलाना चाहें देदिया जाय। १) न्यौछावर मिलाप की कन्यापक्षके नाई को विदा के समय वर वधू पर बखेर बन्द।

२०-दसियारी

लड़की के भाइयों के लिये टीके के गोले, छाक या सोहाल अधिक से अधिक १५ सेर, एक रु० दो रु० कन्यापक्ष के कमीनों के लिये।

(नोट)-जाति के प्रत्येक मनुष्य को अधिकार होगा कि - ऊपर लिखे व्यवहारों को इससे कमी के साथ भी कर सकेगा।

१५-विवाह।

विवाह से पहिले चौदह संस्कारों में तिलकपद्धति और सगाई पद्धति में कुछ भेद नहीं है। विवाह के सम्बंध में यह बात विशेष ध्यान देने योग्य है कि उत्तम स्वास्थ्य वाले योग्य लड़कों का ही विवाह होना उचित है। एक गोत्र में विवाह होना निषिद्ध है। अपनी बिरादरी में दो प्रकार की प्रथायें विवाहांग और विवाह के विषय में प्रचलित हैं। सुभीते के लिये उपसमिति ने उनका नाम तिलकपद्धति और सगाई पद्धति रख कर उन के व्यवहारों का प्रदर्शन अलग २ कर दिया है। सम्बन्ध पक्का होने पर लड़की वाला लड़के वाले के यहाँ सगाई भेजता है सगाई से पहिले रोपना किया जाय तो लड़के को २) रु० दिये जाँय।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सगाईपद्धति के व्यवहार ।

कन्यापक्ष

१–सगाई

सगाई में ५) अधिक से अधिक, लड्डू २॥सेर, न्यौछावर वरपक्षके लिये ॥), बीड़ा पानका एक =)॥ गाने वालियों को । खानी पीनी की रस्म बिलकुल बन्द होने योग्य है । यदि सगाई से पहिले रोपना हो तो दो रु० दिये जावें, इस में और कोई खर्च नहीं होता ।

सगाई के बाद कारे समधियाने की मिलनियाँ होती हैं, वे यथाशक्ति की जावें सगाई के बाद विवाह से पहिले चार त्यौहार देने की प्रथा है । यथा–छबड़ी दीवाली पर, संक्रान्ति के लड्डू मकर संक्रान्ति पर, वैशाख व ज्येष्ठ में खरबूजे और चौथा होली पर पिचकारा इन में से अपनी इच्छानुसार एक त्यौहार दिया जासकता है जिस में ५०) तक खर्च करना चाहिये।

२–पीली चिट्ठी और लग्न

चिट्ठी पर नक्दी कुछ नहीं, लग्न दो लिखी जाती हैं, एक वरके यहाँ को और दूसरी भातई के यहाँ को ।

वर के यहां की लग्न पर अधिक से अधिक २), नारियल १, न्यौछावर वर पक्ष के नाई को ॥), टूल १०गिरह, मुठिया खाँड़ की इक्कीस. लग्न में –।) सुपारी ५, हल्दी की गिरह ५ दूध आदि ॥) अपने पक्षके पण्डित को, =)॥ पूजन के, =)॥ लगातियों के ।

वरपक्ष

१—सगाई

शुभमुहूर्त में लड़का गणेश का ध्यान करके सगाई को शुक्ल के द्वारा ग्रहण करता है । (खर्च) =)॥ पूजन में ॥) पण्डितजी को, १) न्यौछावर कन्यापक्ष के नाई को, ॥) न्यौछावर अपने नाई को कन्यापक्ष से आई हुई ॥=) दोघर कहारी, =)॥ मालन, ॥) नाई को बिदाई अगर सगाई परदेश से आवे तो नाई की बिदाई का एक रु० दिया जाय और बाहर से आई हुई सगाई में नाई को एक ओर को किराया दिया जाय । बिरादरी में सिर्फ गोला या पान बाँटा जावेगा । वरपक्ष से लड़की के लिये पल्ला (शकुन) इस भांति जावेगा, लड्डू गोद के २१, लच्छा कलावे का एक, बटुआ घुण्डीदार एक पचांगडा एक, थोड़ा २ मीठा नमकीन और फल, ।

नोट) नाई को जोड़ा और आभूषण देने की कुछ आवश्कता नहीं है ।

२–पीली चिट्ठी और लग्न

न्यौछावर लग्न की १) कन्यापक्ष के नाई को, ।) नाई को अलग ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कन्यापक्ष

भातई की लग्न पर एक रु०, ट्रन्न १० गिरह, मुठियाँ खाँड की इक्कीस, -)। लग्न में सुपारी ५, हल्दी की गिरह ५ दूब आदि।

३–भट्टी का मुहूर्त

यह आवश्यकतानुसार विवाह से पांच सात या ग्यारह दिन पहले होता है खर्च इस भाँति है =)॥ या ।-) पण्डित को =) या ।) परौत पर हलवाई को, =) मालिन नाई आदि को। परोत में आटा ऽ गुड़ ऽ- होता है।

४— गिंदौड़े

गिंदौड़े बांटना आवश्यक नहीं है. ऐच्छिक है। यदि बांटे जावें तो अपने चलन के अनुसार एक सेर के चार या पांच तक के बनाये जावें गिंदौड़े तैयार होने पर पूजा करके एक गिंदौड़ा और दो पैसे बन्द पुजाई के पण्डित को दिये जावें। इस के पीछे जिस से जैसा व्यवहार हो उनके यहां बांटे जावें समधी के यहां ७। ९। ११ या १५ गिंदौड़े एक दो या चार रु० रख कर भेजे जावें यदि वर पक्ष की ओर से गिंदौड़े आवें। तो उन पर यथा व्यवहार नगदी रक्खी जावेगी। नगदी एक रु० से कम और ४)से अधिक न होनी चाहिये।

वरपक्ष

३—भट्टी का मुहूर्त

यह वरपक्ष में आवश्यकता होने पर होता है। यदि हो तो खर्च कन्यापक्ष की समान होगा।

४– गिंदौड़े

गिंदौड़ों की तोल आदि के विषय में यही नियम माना जावेगा जो कन्यापक्ष में है कन्यापक्ष से गिंदौड़े लाने वाले नाईको =) या ।) दिये जावें।

ज्यौनार

वरपक्ष में विवाह में कोई चाहें तो ज्यौनार कर सकता है, किन्तु यह आवश्यक नहीं है इच्छा पर निर्भर है। चार वर्ष से अधिक अवस्थाकी कन्याओं को ज्यौनार में साथ न ले जाया जाय भोजन की सामग्री में मीठी तश्तरी हों तो लड्डू न होने चाहियें और लड्डू हों तो मीठी तश्तरी न परोसनी चाहिये। सुबिधा की बात तो यह है, कि– ज्यौनार में केवल लड्डू ही परोसे जावें उन की तोल तोन छटाँक चौकड़ी से अधिक न होनी चाहिये ज्यौनार में जो सम्मिलित नहीं हो सकते उनके यहाँ परोसे न भेजने की जो प्रथा है उस का अनुमोदन किया जाता है। स्त्रियों की जो ज्यौनार बन्द है यह भी समुचित है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कन्या पक्ष

५—कंकण

कंगने से पहिले दिन रतजगा होता है, उस में कचौड़ियाँ बाँटी जाती हैं। बाँटना ऐच्छिक है।। खर्च इस भांति होता है =)॥ पूजन, =)॥ पंडित, =)॥नाई, और -) मालिन।

६—वानकी रोटी

कंगन के दिन ही परिवार की रोटी होती है।

७—मंडप और भात

मंडप—

इस में इस भाँति खर्च होता है। =)॥ पण्डित, =)॥ पूजन, =)॥ नाई -)। मालिन और १) मान्य को। मान्दीमुख श्राद्ध श्रद्धा और शक्ति के अनुसार होना चाहिये।

भात—

।) या ॥) पट्टे का टीका भाई के पुरोहित या मान्यको और।-) पण्डित, =)॥ नाई, -) मालिन =) नाई को पैर धुलाई और शरबत के।

८—घुड़चढ़ी

वरपक्ष

५-कंकण

रतजगा कन्यापक्ष की समान है खर्च इस भाँति होता है =)॥ पूजन, ।-)पंडित, ।-) नाई, -) मालिन।

६-वान की रोटी

कन्यापक्ष की समान।

७-मण्डप और भात

मंडप

=)॥ पूजन, ।-) पण्डित ।-) नाई, -)। मालिन १) मान्य को। मान्दीमुख श्राद्ध श्रद्धा और शक्ति के अनुसार होना चाहिये।

भात-

कन्यापक्ष की समान।

८— घुड़चढ़ी

विवाह से पहिले सुभीते के अनुसार करनी चाहिये। सवा पाव या ढाई पाव चनेकी दाल भेली एक, चोली दुपट्टा १ यह सामान मान्य को दिया जाता है। लड़के को वस्त्र मुकुट (मौहर) सेहरा, जूता, पटका, रूमाल, बटुआ और फूलों का सेहरा पहिराया जाता है और नारियल दिया जाता है खर्च इस भाँति होता है—एक रु० कपड़ा पहिनाई मान्य को, ।)॥ या १) पण्डित को, =)॥ पूजन में,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कन्यापक्ष

वर पक्ष

१) सुरमे का भावज को, १) आरता बहिन को, ।) ॥) या एक रु० नाई को १) सीकों में बहिन को, १) वाग पकड़वाई मान्यको ।-) या ॥=) मालिन को घुड़चढ़ीके सेहरे के, मौहर पुजाई से अलावा, १) टीका लड़के की माता की ओर से, ।) या ॥) घोड़ी वाले को। घुड़चढ़ी के समय स्त्रियों का कुए पर जाना बन्द किया गया। घर ही पर कुए से एक घड़ा जल मँगा कर पूजन करना चाहिये। मौहर पुजाई में से तिहाई भातई की मालिन को दिया जाता है।

नीचे लिखी बातों पर ध्यान देना चाहिये—

बारात केवल दंबलियों से चढ़ाईजाय यदि कोई बाजा करना चाहे तो बजाने वाले दस से अधिक न होने चाहियें बाजे वाले हिंदू होने चाहियें। बाणबहारी, आतशबाजी और वेश्याका नाच कतईबंद किया जाता है। चढ़तमें अधिक आडम्बर न किया जाय। हाथी घोड़े और ऊँट चढ़तमें न हों वरकेलिये कोई एक सवारी लेली जावे मगर हाथी न होना चाहिये। बालकों के लिये किराये या मँगनई की दो चार सवारी लेली जावें।

९—मढ़ाझकाऊ

-)। लगायतियों के।

९—मढ़ाझकाऊ

नारियल १, ठियें ७, टूल १०गिरह, १) नक़्द, -)। लगायतियों के।

१०—खेत

सामग्री—परात एक मूँग गुड़ की भेली १, झारी १, नारियल २, बत्तीसी १ (इसमें एक कूँडा और बत्तीस कुलियों में चावल होते है), कलश २ तियल १,

१०—खेत

।-) पूजन में, १) पण्डितको, १॥।=) नाई को लीखके, १) न्यौछावर कन्यापक्ष के नाई को. =)॥ कुम्हार को बत्तीसी के, =)॥ गाने वाली।≡)॥ लीख भातई पुरो-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

GC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कन्यापक्ष

१ ठौर (इसमें एक मुट्ठी एक मगद दो सुहाल और एक सूत का गोला होता है) नकद ५१), लड़के को ५०) तकके दो. आभूषण । १) पण्डित को, ॥) न्यौछावर वरपक्ष के नाई को।

११—वारद्वार

एक चौकी, १) तिलक लड़के को, ॥) न्यौछावर।

चढ़त की दावत बन्द की गई! समधी के महमानों को भोजन भेजा जाय। बाहर की बरात के लिये भोजन जनमासे में भेजा जावे।

१०—विवाह

पूजन की सामग्री-शुद्ध घी, धान की खीलें, शमीपत्र (जण्ड), पिसी हुई हल्दी समिधा (लकड़ी आम या ढाक की), कटोरी कांसी की ४, दही, शहद, कन्यादान के लिये शंख, पूर्णपात्र, पाषाण बाँस का सूप (छाज) रोली, चावल, कलावा, पान, फूल, बतासे, सुपारी टूल, १। गज, घड़ा एक, पीली मट्टी वेदी के लिये हल्दी की ५ गांठे, थाला १, चोली १४, पोम्बा १, चोली १, ओढनी एक।

खर्च—२) मधुपर्कका गो.दान, एकरु० लग्नदान, एक रु० शाखोच्चार, एक रु० कन्यादान और कुछ सुवर्ण, ॥) न्यौछावर ॥) पूजन के पैसे।

इस समय लड़की की बुआ की ओर से सरवन भाट दिया जाता है।

१३—छन्द

सास तथा अन्य स्त्रियां वर से छन्द कहाती हैं और उस को इच्छानुसार दक्षिणा देती हैं। अश्लील छन्द न कहाये जावें।

वर पक्ष

हित और नाई, =) डम्बलियों को ।-) शरबत के कहारको, -)। मालनको।

११-वारद्वार

१।) आरते में, १।) दोघर में १) न्यौछावर कन्यापक्ष के नाई को, कुछ बीड़े और पैसे फैंके जाते हैं।

१२—विवाह

सामान फेरों का—चादर १, गोदें दो पहिली गोद में एक रु०नकद, दूसरी गोद में -)।, जूता बहू को, रामझोल या पायजेब, कलावे लच्छे ५, बादाम १३, छुहारे ३१, बीड़े ३१, दो पैसे ग्रन्थिबन्धन के दुपट्टे में (खर्च) १) लग्नदान, १)शाखोच्चार, २) विवाह कराई कन्यापक्ष के पण्डित को १) पूजन के पैसे,८४ आहुति १), ।) अन्तर्पट, ।) पूर्णपात्र, =)॥ ग्रन्थिबन्धन के, =)॥ मोहरी बँधाई =)॥ दृढ़ पुरुष, १) न्यौछावर कन्यापक्ष के नाई को ।-) गाने वालियों को, =)॥ नाई को दोयने और समिधाओं के, -) भँगन को, ।) दोघर भीतर की कहारी को ।) छायापात्र, ।-) मालन, ।-) हाथ के नीचे ।-) नायन को बिठाई।

१३—छन्द

इसमें वरपक्ष की ओर से कुछ खर्च नहीं होता। वर अश्लील, बुरे छन्द न कहे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कन्यापक्ष

१४—कंकणक्रीड़ा

परात एक, बायने दो, १॥) लड़कीके बायने पर १) मान्य को चाँची ओढ़ाई भोजन के पात्रों का एक सेट धोती लड़के को (धोती यदि विवाह के समय दी गई हो तो यहां साधारण दी जावे)।

१५—नौतनी

१=)॥ वरपक्ष के यहां भेजे जावें और ऽ॥ सेर चने की दाल तथा ऽ॥ सेर लड्डू का चूरा भेजा जाता है।

१६—बढ़ार

१) मान्य को बन्दरवार बँधाई, ॥) बेल नाई का।

१७—विदा

१ एलँग, आवरण वस्त्र एक, तियल १२, पचैंडके पात्र ५ ठोर १२ मठ्ठे १२, मगद १२, सूत २, खुहाल २४, चादर और दुपट्टा २ जोड़ जनाने, तियल लड़की के साथ की मय चाले पौंमचे के। मूँग, चावल, पापड़, बड़ी, आटा, कांसी के कटोरे २, लोटा रङ्गका एक, कटोरदान कोकसलाई, पारस ५०। खर्च १) टीका अपने पक्ष के मान्य का। २) गुरुदक्षिणा १) रङ्ग छिड़काई वरपक्षके मान्य को, २) लीख विदाई की अपने नाई को, २)अपनी कहारी १) या २) भंगन को।

मिलनी ३ या थांबे से या लड़के से जितने बड़े हों उन सब को, फी मिलनी २) तक की दी जानी चाहिये। २)संबंधी को खांड कटोरे पर। २) भातई के खांड कटोरे पर नरातियों का टीका ऐच्छिक है, ५१) से अधिक टीके में न दिये जावें।

वर पक्ष

१४—कंकड़क्रीड़ा

तियल नवीन एक, चाँदी (चुँदरी) एक, गोद एक, गोद में नकद एक रु०, कलावे लच्छे ५, मुठिये २१ बादाम छुहारे दो अँगूठी एक सोने की और दूसरी चाँदी की। १) के पैसे।

१५—नौतनी

=)॥ आने के जवाब में ।-) पूजन के।

१६—बढ़ार

बन्दनवार एक, १) दोघर, ॥) बेल नाई को मान्य भातई के लिये परोसे मांगना सर्वथा अनुचित है।

१७—विदा

तियल एक, सतखला एक, कंघी दुलजनिया में फुलेल की शीशी १, रोली ऽ॥, मेहदी ऽ। सेर कलावे ऽ॥, मुठिया ।ऽ, खिलौने, बटुए, मेवा ऽ४, गोले २१, धनिया ऽ॥ रङ्ग)। का, आभूषण बहू के लिये—७ सुवर्ण के गहने और चार चाँदी के गहने से अधिक गहने नहीं होने चाहिये। खर्च-१) टीका महामान्य, १) टीका शुक्लजी एक रु० दाधर कहारी, ।-) सिरगुन्दी सवा रु० सिटाई सवा रु० जोड़ा पहिनाई कन्यापक्ष के नाई को, एक रु० न्यौछावर मिलनी, ॥) न्यौछावर रङ्ग, एक रु० अपने कहारको, एक रु० अपनी भंगन को, २) लीख या विदाई अपने नाई को, एक रु० जनवासे की भंगन को, दो रु० लगायत भातई विदा में लगातियों को जोड़े न दिये जावें।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कन्यापक्ष	वर पक्ष
१८-पट्टाफेर ।≡)॥ लीख में।	१८—पट्टाफेर एक तियल गुलाबी या सुर्खरङ्ग की पलङ्ग पर से, गोला एक, कलावा एक, मुठियें इक्कीस छुहारे २१, बादाम २१, पूजन के ।-), ।≡)॥ लीख के =)॥ गाने वालियों को।
१९।२०-बिंती और लड़की की बिदा।	१९।२० बिंती और लड़की की बिदा।
२) मिलनी बिदायगी, ॥) पण्डित वरपक्ष को, ।) न्यौछावर नाई को भाई के साथ बिदा कराते समय। लड़की के साथ १५ सेर से अधिक सुहाल न भेजे जावें। एक तियल, एक ठौर और एक ड० भमस्कारी का लड़के वाले के यहां भेजा जावे।	१) कन्यापक्ष के पण्डित को ॥; न्यौछावर, =) पानी पिलाई कहारी को, =)॥ हनुमान् जी के प्रसाद के। यदि लड़की के साथ नायन आवे तो उसको अधिक से अधिक ५) दिये जावें। जब बहू अपने पिता के घर को जावे तो १५ सेर से अधिक का डल्ला न भेजा जावे। दो बरोने भेजे जावें।

१६ चतुर्थीकर्म-विवाह के साथ या अपने मकान पर आकर वर को करना चाहिये। यह तिलकपद्धति और सगाईपद्धति दोनों में अपने कुल के अनुसार होता है।

नोट—जाति के प्रत्येक मनुष्य को अधिकार है कि ऊपर लिखे व्यवहारों को इससे कमी के साथ भी कर सकेगा।

पीलीभीत।

गताङ्क में हम रुहेलखण्ड कमिश्नरी क जिले बिजनौर का विवरण आप लोगों को भेंट कर चुके हैं। इस अङ्क में इसी कमिश्नरी के अन्य दो जिले पीलीभीत और बदायूँ का हाल भेट करते हैं आशा है कि हमारे पाठकों को यह रुचिकर होगा और पत्रिका के प्रत्येक अङ्क में किसी न किसी ज़िले के गौड़ भाइयों का विवरण छपने से आप लोगों को प्रसन्नता होगी कि यह क्रम गौड़ जाति को अत्यन्त लाभप्रद है।

पीलीभीत का ज़िला रकबे और आबादी के लिहाज़ से रुहेलखण्ड कमिश्नरी में सबसे छोटा ज़िला है और इसी लिये यह पहले बरेली ज़िले की एक तहसील थी बाद को ज़िला बनाया गया सन् १९०१ में इस ज़िले भर की आबादी ४७०३३९ थी। गत सन् १९२० में गवर्नमेंट ने इसको फिर ज़िला तोड़कर बरेली में मिला देने की सम्मति स्थिर की थी। परन्तु इस नगर के सब से प्रतिष्ठित व्यक्ति श्रीमान् राजा लालता-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्रसाद जी रईस आजम की कोशिश से यह जिला टूटने से बच गया राजा लालता-प्रसाद की एक बहुत बड़ी शुगर मिल पीलीभीत में है जिसमें ईख से शुद्ध देशी खांड बनती है और समस्त भारतवर्ष में जाती है।

सन् १६०१ की मर्दुमशुमारी में इस जिले में २५३०५ ब्राह्मणों की संख्या थी जिस में स्त्री बच्चे सब शामिल हैं। जिनमें सबसे अधिक कान्यकुब्ज, दूसरे नम्बर पर सनाढ्य और तीसरे नम्बर पर गौड़ ब्राह्मणों की संख्या है। इनके अतिरिक्त इस जिले में कुछ सरवरिया तथा दूसरी प्रकार के भी ब्राह्मण पाये जाते हैं।

इस जिले में सिर्फ ३ तहसीलें पीलीभीत, पूरनपुर और बीसलपुर हैं और पीलीभीत तथा बीसलपुर में म्युनिसपेलटीज भी है। यह जिला उत्तर में नैपाल और नैनीताल की तराई तक और दक्षिण में शाहजहाँपुर जिले से तथा पूरब में जिला खेरी और पश्चिम में बरेली जिले से घिरा हुआ है। यह पीलीभीत रुहेलखंडकमायूं रेलवे (आर० के० आर०) का जंकशन और मुख्य स्टेशन है जो कासगंज-लखनऊ मेन लाइन पर स्थित है। यहाँ से बीसलपुर और टनकपुर मण्डी के लिए रेलवे की ब्राञ्च लाइन जाती है। शारदा नहर जो अभी हाल ही में गवर्नमेंट ने एक बहुत बड़ी नहर निकाली है उसका भी उद्गम स्थान इसी जिले में है। तात्पर्य यह कि यह छोटा सा ज़िला बहुत ही सुन्दर और रौनक का ज़िला है। शहर पीलीभीत की बनावट पुराने ज़माने के मुसलमानी शहरों से मिलती है।

इस शहर में गौड़ ब्राह्मणों के बड़ी कठिनता से ५०।६० घर पाये जाते हैं जिनमें सभी श्रेणी के भाई हैं। जिनमें मुख्य मुख्य सज्जनों के नाम आप इस लेख के अन्त में देखियेगा। सबसे अधिक हर्ष और प्रसन्नता की बात जो हमारे देखने में आई वह यह थी कि गौड़ जाति के गौरव, ब्रह्ममूर्ति और जाति प्रेम से पगे हुये श्रीमान् पण्डित हरस्वरूपजी पाठक इस जिले में पिछले दिनों ऑफ़ीशियेटिंग कलेक्टर थे और आज कल बीसलपुर परगने के डिप्टी कलेक्टर हैं कि जो इस जिले में सबसे बड़ा परगना है। आप नजीबाबाद ज़िला बिजनौर के रहने वाले हैं लेकिन सम्प्रति देहरादून में इन्होंने अपना स्थायी निवास स्थान बना लिया है कि जहाँ सर्विस के बाद शेष जीवन व्यतीत करेंगे। आपके पूज्य पिता जी श्रीमान् पण्डित भगवानदास जी महाराज के दर्शन कर हमारा चित्त परम प्रसन्न हुआ आप बड़े ही ब्रह्मण्य और देवता स्वरूप हैं आप इस समय गवर्नमेंट पेन्शनर हैं और डिप्टी साहब के साथ ही रहकर श्रीभगव-द्भजन करते हैं। श्रीमान् पाठक जी (डिप्टी कलेक्टर साहब) का स्वभाव बड़ा कोमल, सदैव प्रसन्नचित्त और उदार प्रकृति के सज्जन हैं। आपने इस वर्ष अपनी इस जातीय महासभा को ६०) रु० इस निमित्त प्रदान किया है कि किसी दीन गौड़ विद्यार्थी को ५) रु० मासिक की एक छात्रवृति वर्ष भर तक बराबर दी जावे। अतः उक्त श्रीमान् की छात्रवृत्ति जौलाई सन् ३० से जून सन् ३१ तक को महासभा ने ब्रजनन्दन शर्म्मा विद्यार्थी ६वाँ क्लास डी० ए० वी० हाईस्कूल अजमेर को दी है। इस सात्विकी दान के लिए डिप्टी साहब को जितना धन्यवाद दिया जावे थोड़ा है।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस नगर के प्रतिष्ठित सज्जन श्री० पं० जानकीवल्लभ जी वैद्य प्रोप्राइटर वल्लभ एण्ड संस हैं। आप एक अर्से से इसी नाम से 'निपट बहरे पन की दवा' का व्यवसाय कर रहे हैं। प्रसिद्ध प्रसिद्ध सभी समाचारपत्रों में आपका विज्ञापन प्रकाशित होता है। आप जातीय सभा संस्थाओंके इस कारण प्रेमी नहीं थे कि यह संस्थायें कुछ नहीं करतीं और अपने क्षेत्रों को संकुचित करती जाती हैं परन्तु अपनी इस जातीय महासभा का वृत्तान्त सुनकर वह बहुत सन्तुष्ट हुए और बरेली महाधिवेशन में सम्मिलित होने का वचन दिया। आपके तीन पुत्र और दो पुत्रियाँ हैं जिनमें एक पुत्र विवाह योग्य हैं और वह इस वर्ष एन्ट्रेन्स का इम्तिहान देंगे।

तीसरे सज्जन श्री० पं०बाबूराम जी महाराज पतरसिया वाले ज़िमींदार प्रसिद्ध व्यक्ति हैं आपके विचार जातीय प्रेम को लिए हुए हैं। महासभा के समाचारों को आपने बड़े प्रेम से सुना और हार्दिक सहानुभूति प्रकट की। आपके दर्शन भी बरेली महोत्सव में होंगे।

चौथे सज्जन श्रीमान् पं० रामदयाल जी वैद्य ८० वर्ष के दर्शनीय वृद्ध पुरुष हैं आपको अपनी जाति से प्रेम है और महासभा को बड़ी श्रद्धा की दृष्टि से देखते हैं। वृद्धावस्था के कारण किसी विशेष सेवा से तो असमर्थ हैं परन्तु अपने स्थानीय भाइयों को जाति से प्रेम उत्पन्न कराने को सदैव चेष्टा करते रहते हैं। आपके सुयोग्य भतीजे श्रीमान् पं० कृष्णास्वरूप जी महाराज पीलीभीत की गौड़ जाति में जाति प्रेम की सजीव मूर्ति हैं और जातीय कार्य्यों में सदैव भाग लेने को सबसे प्रथम अग्रसर रहते हैं।

पाँचवें सज्जन श्रीमान् पं० मुकटबिहारीलाल जी गौड़ नाज की मंडी में एक उत्तम व्यवसायी हैं और जातीय कार्य्यों में उत्साह से भाग लेने वाले व्यक्ति हैं। आप अन्य १०।५ गौड़ भाइयों के साथ बरेली महाधिवेशन में पधारने का वचन दिया है इसी से आप लोग इनके जातीय प्रेम का अनुमान कर सकते हैं।

बीसलपुर तहसील में बहुत ही थोड़े भाई हैं। ख़ास बीसलपुर कसबे में श्री० डाक्टर पं० हरद्वारीलाल जी महाराज सरकारी शफ़ाख़ाने में मेडीकल ऑफ़ीसर हैं आप अत्यन्त ही जाति प्रेमी निकले। महासभा का वृत्तान्त सुनते ही सभासद् हो गये और तत्काल सदस्य शुल्क ६) रु० प्रदान किया। यदि सब स्थानों में ऐसे प्रेमी गौड़ भाई महासभा के सदस्य बन जावें तो फिर महासभा के सर्वव्यापी होने में तनिक भी देर न लगे।

इस ज़िले की तीसरी तहसील पूरनपुर में एक भी घर गौड़ भाई का नहीं है अतः वहाँ का हाल नहीं लिखा गया। यह ज़िला बरेली से बिलकुल सटा हुआ है। इसलिए पीलीभीत के अधिकांश प्रतिष्ठित गौड़ भाइयों के २७।२८ दिसम्बर सन् ३० को महासभा के ३३वें वार्षिकोत्सव बरेली में दर्शन होंगे। इस ज़िले के गौड़ भाइयों नामावली निम्न लेखानुसार है—

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पीलीभीत जिलेके उन गौड़ ब्राह्मणों की नामावली।

जिनकी आय ५०) रु० मासिक या इससे अधिक है।

१ श्रीमान् पं० हरस्वरूपजी पाठक डिप्टीकलेक्टर पीलीभीत
२ श्री० पं० कृष्णस्वरूपजी महाराज मुहल्ला साहूकारा ,,
३ श्री० पं० रामदयालजी महाराज वैद्य ,,
४ श्री० पं० बाबूरामजी जिमींदार पतरसिया वाले ,,
५ श्री० पं० जानकीवल्लभजी वैद्य प्रोप्राइटर "वल्लभ एण्डसंस" ,,
६ श्री० पं० मुकटविहारीलालजी आढ़त की दूकान नाजमंडी ,,
७ श्री० पं० राजाधरप्रसादजी गौड़ दलाल मुहल्ला साहूकारा ,,
८ श्री० पं० श्यामलालजी मुनीम ,, ,,
९ श्री० पं० शिवशरणजी उर्फशाहज़ादे ,, ,,
१० श्री० पं० किशोरीलालजी पुरोहित उर्फ लल्लूजी ,, ,,
११ श्री० पं० बिहारीलालजी गौड़ c/o राजा लालताप्रसाद रईस आजम ,,
१२ श्री० पं० रघुनाथप्रसादजी कविराज सम्पादक "कृष्ण" उर्दू साप्ता०पत्र ,,
१३ श्री० पं० नारायणदासजी गौड़ रसोइया राजा लालताप्रसाद साहिब ,,
(यह महाशय खूब धन सम्पन्न हैं)
१४ श्री० पं० गोवर्द्धनदासजी असिस्टेन्ट कैशियर ,,
१५ श्री० पं० बहादुरलालजी वैद्य मुहल्ला कटरा चौक बाजार ,,
१६ श्री० पं० राधेश्याम और नन्हें महाराज मुहल्ला पकरिया ,,
१७ श्री० पं० कन्हैयालालजी दूकानदार ,, ,,
१८ श्री० पं० गुरुदयालजी मुनीम साहू रामस्वरूप साहिब ,,
१९ श्री० पं० चोखेलालजी गौड़ चौक बाजार ,,
२० श्री० पं० गोस्वामी गिरधरलालजी मन्दिर राजा लालताप्रसाद ,,
२१ श्री० पं० गोस्वामी मुरारीलालजी श्री गोपीनाथजी का मन्दिर ,,
२२ श्री० पं० शिवदत्तजी शास्त्री हिन्दीटीचर गवर्नमेन्ट हाईस्कूल ,,
२३ श्री० पं० चन्द्रभानुजी शर्म्मा कोर्ट इन्स्पेक्टर ,,
२४ श्री० पं० सोती दामोदरकृष्णजी नाजिर कलेक्टरी ,,
२५ श्री० पं० डा० हरद्वारीलालजी महाराज मेडीकलऑफ़ीसर शफ़ाखाना बीसलपुर ,,
२६ श्री० पं० मेवालालजी महाराज तारबाबू बीसलपुर ,,
२७ श्री० पं० जगन्नाथप्रसादजी गौड़ बाजाज ,, ,,
२८ श्री० पं० नारायणदत्तजी जिमींदार मौजा भैंसिहा पोष्ट पौटाकलाँ ,,
२९ श्री० पं० रामलालजी ,, ,, ,,
३० श्री० पं० चक्खनलालजी ,, ,, ,,
३१ श्री० पं० उमरावदत्तजी काश्तकार मौजा रमपुरा उभेनिया पोष्ट अटंगा ,,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

३२ श्री० पं० बिहारीलालजी काश्तकार मौज़ा रमपुरा उझेनिया पो० अटङ्गा पीलीभीत
३३ श्री० पं० नन्दरामजी गौड़ ,, ,, ,,
३४ श्री० पं० जगन्नाथ प्रसादजी गौड़ मौजा रमपुरा उझैनियां पो० अटंगा ,,
३५ श्री० पं० बांकेलालजी गौड़ ,, ,,
३६ श्री० पं० भजनलालजी गौड़ ,, ,,
३७ श्री० पं० मोहनलालजी गौड़ ,, ,,
३८ श्री० पं० गिरधारीलालजी गौड़ ,, ,,
३९ श्री० पं० छेदालाल बल्द खयारामजी गौड़ ,, ,,
४० श्री० पं० सिपाहीलालजी गौड़ ,, ,,
४१ श्री० पं० दुर्गाप्रसादजी गौड़ ,, ,,
४२ श्री० पं० तोतारामजी गौड़ ,, ,,
४३ श्री० पं० प्यारेलाल बल्द ढाकनलाल गौड़ ,, ,,
४४ श्री० पं० मोहनलालजी गौड़ ,, ,,
४५ श्री० पं० हजारीलालजी गौड़ ,, ,,
४६ श्री० पं० साहबरामजी गौड़ ,, ,,
४७ श्री० पं० गोविन्दरामजी गौड़ ,, ,,
४८ श्री० पं० लालताप्रसादजी गौड़ ,, ,,
४९ श्री० पं० बैनीरामजी गौड़ ,, ,,
५० श्री० पं० रामलाल बल्द पं० गोकलचन्द्रजी ,, ,,
५१ श्री० पं० बुधसैन बल्द पं० मोहनलालजी ,, ,,
५२ श्री० पं० मिश्रीलालजी गौड़ बल्द पं० ढाकनलाल ,, ,,
५३ श्री० पं० रामप्रसाद बल्द पं० खड्गसैनजी मौजा चिनौरा पो० पौड़ाकलाँ ,,
५४ श्री० पं० धर्म्मदासजी गौड़ ज़िमीदार ,, ,,
५५ श्री० पं० शुकलाल बल्द पं० शंकरलालजी गौड़ ,, ,,
५६ श्री० पं० सुन्दरलाल बल्द पं० ईश्वरीप्रसाद ,, ,,
५७ श्री० पं० रुद्रप्रसादजी बल्द पं० भूपालदत्त मौजा जिरौनियाँ ,, ,,
५८ श्री० पं० रामस्वरूप बल्द पं० हीरालालजी ,, ,, ,,
५९ श्री० पं० सनेहीलालजी गौड़ ज़िमीदार जहानाबाद ,,
६० श्री० पं० सुन्दरलाल बल्द पं० ज्वालाप्रसाद गौड़ ,, ,,
६१ श्री० पं० रघुवीरसहायजी गौड़ ,, ,,
६२ श्री० पं० सूर्य्यप्रसादजी गौड़ ,, ,,
६३ श्री० पं० मदनलालजी गौड़ ,, ,,
६४ श्री० पं० देवीसहायजी शर्म्मा ,, ,,
६५ श्री० पं० ज्वालाप्रसादजी गौड़ ,, ,,
६६ श्री० पं० बंशीधर बल्द पं० रामलालजी बजाज ,, ,,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विवाह योग्य लड़कों के पते।

(१) श्रीमान् पं० जानकीवल्लभ जी वैद्य प्रोप्राइटर 'वल्लभ एण्ड संस' पीलीभीत के तीन सुयोग्य पुत्र चिरञ्जीव सतीशचन्द्र, प्रभासचन्द्र और सुरेशचन्द्र क्रमशः २१ १६ और ७ वर्ष की अवस्था के हैं। इनमें से दो विवाह के लिए ख़ाली हैं तीनों अङ्गरेज़ी पढ़ रहे हैं। प्रभासचन्द्रजी इस वर्ष इन्ट्रेन्स का इम्तिहान देंगे। बाकी बातें उक्त पते पर पत्र-व्यवहार से निश्चय हो सकती हैं।

(२) श्रीमान् डाक्टर पं० हरद्वारीलालजी महाराज मेडीकल ऑफ़ीसर अस्पताल बीसलपुर ज़िला पीलीभीत के तीन पुत्र चिरञ्जीव रुद्रप्रकाश इन्द्रप्रकाश और चन्द्रप्रकाश जी जिनकी अवस्थायें क्रमशः १८, १६ और १५ वर्ष की है विवाह के लिए ख़ाली हैं। रुद्रप्रकाश जी एफ़० ए० में और शेष दो अङ्गरेज़ी के आठवें दर्जे में पढ़ते हैं। गोत्र आपका कपिल है। शेष बातें उक्त डाक्टर साहब से पत्र-व्यवहार द्वारा निश्चय करनी चाहियें।

(३) श्रीमान् पं० नन्दराम जी मौज़ा रमपुरा उझेनियाँ पोष्ट अटंगा ज़िला पीलीभीत में रहते हैं के दो पुत्र बलदेवप्रसाद और मथुराप्रसाद जिनकी उम्रें क्रमशः २५ और १७ वर्ष की है विवाह के लिए ख़ाली हैं। पण्डित जी का गोत्र भारद्वाज है। शेष बातें उक्त पते पर पूछिये।

(४) श्रीमान् पं०भजनलाल जी जो मौज़ा रमपुरा उझेनियाँ पोष्ट अटङ्गा ज़िला पीलीभीत में रहते हैं के एक पुत्र श्यामलाल कि जिनकी अवस्था सोलह वर्ष की है विवाह के लिए ख़ाली हैं। पंडित जी का गोत्र भारद्वाज है और इनके यहाँ कृषि का कारबार होता है। बाकी बातें उक्त पते पर कीजिये।

(५) श्रीमान् पं० रामचरणलाल जी जो मौज़ा रमपुरा उझेनियाँ पोष्ट अटङ्गा ज़िला पीलीभीत में रहते हैं। इनके पुत्र चि०ब्रजलाल जिनकी अवस्था चौदह वर्ष की है विवाह के लिये सूचित किये जाते हैं। पंडित जी का गोत्र भारद्वाज है। और कृषि कर्महोता है। शेष बातें उक्त पते पर पूछिये।

(६) श्री० पं० गिरधारीलाल जी गौड़ —मौजा रमपुरा उझेनियाँ पोष्ट अटंगा जिला पीलीभीत निवासीके पुत्र केदारीलाल और रामचन्द्र अविवाहित हैं। इनकी अवस्थाएँ क्रमशः १७ और १४ वर्ष की हैं गोत्र भारद्वाज हैं। इनके यहाँ भी कृषि होती है। शेष बातें उक्त पते पर पूछिये।

(७) श्री० पं० छेदालालजी मौजा रमपुरा उझेनियाँ पोष्ट अटंगा जिला पीलीभीत निवासी के पुत्र रङ्गनाथजी कि जिनकी आयु १५ वर्षकी है विवाह के लिये ख़ाली है। इनका गोत्र भारद्वाज है इनके यहाँ भी कृषि का कार्य्य होता है। शेष बातें पत्र व्यवहार से तै हो सकती हैं।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(८) श्री० पं० गोविन्दरामजी गौड़ —मौजा रमपुरा उझेनियाँ पोष्ट अटंगा जिला पीलीभीत के पुत्र चि० रामस्वरूपजी कि जिनकी अवस्था १८ वर्षकी है विवाह योग्य है । इनका गोत्र कौशिक है इनके यहाँ भी कृषि कर्म्म होता है शेष बातें उक्त पते पर पूछनी चाहियें ।

(९) श्री० पं० साहबरामजी— गांव रमपुरा उझेनियाँ पोष्ट अटंगा जिला पीलीभीत निवासीके दो पुत्र बिहारीलाल और हजारीलाल कि जिनकी उम्र क्रमशः २५और २० वर्ष की हैं विवाह के लिये खाली हैं गोत्र इनका कौशिक है शेष बातें उक्त पते पर पत्र व्यवहार से निश्चय कीजिये ।

(१०) श्री० पं० रामचन्द्रजी— गाँवरमपुराउझेनियाँ पोष्ट अटंगा जिला पीलीभीत के दो भाई लक्ष्मणप्रसाद और बाँकेलाल जिनकी उम्र क्रमशः १८ वर्ष और १६ वर्ष की है अविवाहित हैं। गोत्र इन का कौशिक है । शेष बातें उक्त पते पर दर्याफ्त कीजिये ।

(१०) श्री० पं० मिश्रीलालजी गाँव— रमपुरा उझेनियाँ पोष्ट अटंगा जिला पीलीभीत के पुत्र छेदालाल जिनकी उम्र १५ वर्ष की है अविवाहित है इन का गोत्र कौशिक है । शेष बातें उक्त पते पर पूछिये ।

(१२) श्री० पं० रुद्रप्रसादजी— गांव जिरौनियाँ पोष्ट पौटाकलाँ जिला पीलीभीत के पुत्र प्यारेलाल कि जिन की अवस्था १८ वर्ष की है विवाह के लिये खाली है। इनका गोत्र भारद्वाज है शेष बातें उक्त पते पर पूछिये ।

(१३) श्री० पं० रामस्वरूपजी—गाँव जिरौनियाँ पोष्ट पौटाकलाँ जिला पीलीभीत के पुत्र चि० निर्मल स्वरूप कि जिनकी उम्र १२ वर्ष की है विवाह लिये के सूचित किये जाते हैं । गोत्र भारद्वाज है शेष बातें उक्त पते पर पूछिये ।

(१४) श्रीमान् पं० मदनलाल जी गौड़ जहानाबाद ज़िला पीलीभीत के पुत्र शङ्करलालजी कि जिनकी अवस्था पन्द्रह वर्ष की है विवाह के लिए सूचित किये जाते हैं । इनका गोत्र भारद्वाज है । शेष बातें उक्त पते पर पूछिये ।

(१५) श्रीमान् पं० नारायणदत्त जी गौड़ मौज़ा भैंसिहा पोष्ट पौटाकलाँ ज़ि० पीलीभीत के पुत्र मोहनलाल जिनकी अवस्था २५ वर्ष की है । विवाह के लिये खाली हैं । गोत्र भारद्वाज है । शेष बातें उक्त पते पर पूछिये ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बदायूँ।

बदायूं का जिला रुहेलखंड कमिश्नरी में ही है जो उत्तरमें मुरादाबाद दक्षिण में शाहजहांपुर पूर्व में बरेली और पश्चिम में एटा जिले से घिरा हुआ है। इस जिले में बदायूं दातागंज बिसौली, सहसवान और गन्नौर ५ तहसीलें हैं। कासगंज से लखनऊ को आर० के० आर० की मेनलाइन पर बदायूं स्टेशन है।

इस जिले में गौड़ब्राह्मण बहुत थोड़े हैं। इस समय से पहिले हमारा अनुमान था कि सिवाय खास शहर बदायूं और दूसरा कसबा उझानी के और इस जिले में गौड़ ब्राह्मण बिलकुल नहीं हैं परन्तु अनुसन्धान करनेसे पता लगा कि सहसवान, छितुइय्या, बुटला, कछला सिगाई, बिसोली, धुरेगी मुडिया, रुदायन कंरियामई बनकी बिजेपुर, बन्दरेई पतरिया, दफतरा सुन्दरनगर, इस्लामनगर ब्यौर क़ासिमाबाद, समसोई, उगेती कुनावली, खुदागंज धर्म्मपुर, रमपुरिया, अकराबाद, मऊखेड़ा और मिलकपुर प्रभृति ग्रामों में भी गौड़ब्राह्मण निवास करते हैं। परन्तु इतने सब ग्रामों में २५० से अधिक घर गौड़ ब्राह्मणों के नहीं है। इस जिले में सनाढ्य ब्राह्मणों ही की ज्यादा आबादी है।

गौड़ जातिके सौभाग्य से इस जिले में भी एक डिप्टी कलेक्टर गौड़ ब्राह्मण मौजूद हैं यह हमारे पाठकों के सुपरिचित शिकारपुर जिला मुज़फ्फरनगर के स्वनाम धन्य श्रीमान् स्वर्गीय पं० अमीरसिंह जी डिप्टी कलेक्टर जो इस महासभा के संस्थापकों में से थे और कई वर्ष तक सभापति पद पर विराजते रहे के नतीजे हैं। आप अभी पूर्ण नवयुवक हैं और इसी लिये आपका गौड़ जाति के प्रति बड़ा उत्साह है परन्तु खेद है कि आपने आज तक जाति सेवा या महासभा के किसी काम में भाग नहीं लिया, बल्कि आपने वार्तालाप के सिलसिले में महासभा पर अनेक कटाक्ष किये जिनके समुचित उत्तर देकर उक्त श्रीमान् को सन्तुष्ट किया गया जिस पर श्रीमान् डिप्टी साहिब के इस वर्ष महासभा के ३३वें वार्षिकोत्सव बरेलीमें सम्मिलित होना स्वीकार कर लिया। हमारा दृढ़ विश्वास है कि यदि श्रीमान् डिप्टी साहिब ने जैसा कि वह जाति के प्रति अपना प्रेम प्रगट करते हैं उसी प्रेम और उत्साह से महासभामें योग दिया तो महासभाके कार्य्योंमें नया जीवन आजावेगा। आपका पवित्र नाम श्री० पं० अनिरुद्धकृष्णजी शर्मा है आपके पिता जीवित नहीं हैं पूज्य माताजी वर्तमान हैं जिनके दर्शनकर परमआनन्द हुआ। और इस बातको देखकर प्रसन्नता हुई कि पूज्य श्रीमती जी भी इस अपनी जातीय महासभा से पूर्ण परिचित हैं परन्तु कारण विशेषों से उनका भी महासभा के प्रति प्रेम शुष्क होगया है जो अगर डिप्टी साहिब ने महासभा में पूर्ण भाग लिया तो श्रीमती माताजी का प्रेम भी हरा भरा होकर पल्लवित होगा क्यों कि जिन भ्रमपूर्ण बातों ने उनके हृदय पटल पर विराज कर महासभा से अश्रद्धा उत्पन्न कर दी है वह श्रीमान् डिप्टी साहिब के महासभा में योग देने से मिट जावेगी। हमारी तो हार्दिक इच्छा है कि इस वर्ष श्रीमती पूज्य डिप्टी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साहिब की माता जी भी बरेली महोत्सव में पधारें और अपने नेत्रों से उस वृक्ष को देखें कि जिसको उनके बुजुर्गों ने बड़ी कठिनाइयाँ झेल कर लगाया था और जो इस समय इस दशा को पहुंच गया है।

शहर बदायूँ में केवल १५। २० घर गौड़ ब्राह्मणों के हैं कि जिन में प्रायः सभी ५० वर्ष के भीतर भीतर अन्य स्थानों से आकर यहाँ बस गये हैं प्राचीन निवास कि जिस का १०। ५ पीढ़ी बदायूँ में होगई हों ऐसा गौड़ भाई कोई नहीं।

श्रीमान् पं० विश्वम्भर दास जी जोशी जो सिसौली जिला मेरठ के रहने वाले हैं बदायूँ की जजी में मुंसरिम हैं आप बड़े ही उच्च गौड़ कुल के रत्न हैं और इसी वर्ष में, इङ्गलैंड फ्रांस, जर्मनी, अमेरिका आदि देशों की सैर करके वापिस आये हैं। आप भी कारण विशेषों से गौड़ जाति और गौड़ महासभासे असन्तुष्ट पाये गये और जिसका कारण हमारी समझ में तो यही आया कि जो मनुष्य बिजली की रोशनी में से कड़वे तेल के दिये की रोशनीमें आजावे तो उसको बिजली की रोशनी के मुकाबिले सरसों के तेल की रोशनी अच्छी नहीं मालूम पड़ती तथा उसकी रोशनी क़ायम रखने में कई एक झंझटें भी उठानी पड़ती हैं जो अनुभवी सज्जन स्वयं जानते हैं। परन्तु यदि इनके गुण अवगुण पर विचार किया जावे तो जो सुख सरसोंके तेल की रोशनी में है वह बिजली की रोशनी में नहीं। अस्तु, श्रीमान् मुंसरिम साहब अभी तक एक दम विरुद्ध नहीं हैं परन्तु गौड़ जाति के कतिपय महानुभावों के चलन व्यवहार से जिस प्रकार अनेक भाई असन्तुष्ट हैं उसी प्रकार मुन्सरिम साहब भी शाकी थे। मैंने उनसे प्रार्थना की कि किसी व्यक्ति विशेष के असभ्य व्यवहार से समस्त जाति से अथवा अपनी जातीय महासभा से अश्रद्धा और वायकाट कर देना आप जैसे देश देशान्तर के घूमे हुए व्यक्ति को उचित नहीं। जिस महासभा को आप दूसरी निगाह से इस समय देख रहे हैं और जिन मेरठ के पुराने मामलों ने आपको महासभा से अश्रद्धा उत्पन्न करादी है वह भगवान् की कृपा से सब मिट गये हैं। आप इस वर्ष बरेली आकर स्वयं देखिये और यदि आप सन्तुष्ट हों तो इसमें प्रेम से भाग लीजिये। इस पर श्रीमान् मुन्सरिम साहब ने मेरी प्रार्थना को स्वीकार कर प्रेम पूर्वक बरेली महोत्सव में आना सहर्ष स्वीकार किया।

श्रीमान् पं० रामस्वरूप जी ज्योतिषी जो मुहल्ला साहूकारे बदायूं में रहते हैं अत्यन्त ही जाति प्रेमी सज्जन हैं, आप अस्वस्थ होते हुये भी जिस प्रेम से मिले वह लिखा नहीं जा सकता। उन्होंने बदायूं की गौड़ बिरादरी की वास्तविक हालत दर्शाई आप रामपुर स्टेट के रहने वाले हैं, परन्तु अब २५।३० वर्ष से बदायूं ही में रहते हैं। आप बदायूं की गौड़ जातिमें प्रतिष्ठित पुरुष हैं आपने बदायूँ के समस्त गौड़ ब्राह्मणों को बरेली महोत्सव में सम्मिलित होने का प्रोत्साहन देने का पूर्ण वचन दिया और आप स्वयं भी पधारेंगे।

श्रीमान् पं० हरस्वरूप जी गौड़—ओवरसियर डिस्ट्रिक्टबोर्ड बदायूँ जिला मेरठ के रहने वाले हैं आप इस अपनी जातीय महासभा के प्रेमी सभासद हैं आप

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जैसे सीधे, सरल स्वभाव और संतोषी महानुभाव हैं उसको देखकर हम तो अवाक् रह गये आप इस जिले में दस वर्ष से तैनात हैं और जातीय प्रेम की सजीव मूर्ति हैं ऐसे सौम्य और शान्त स्वभाव के गौड़ भाइयों के दर्शनों से सबको सुख होता है आप भी बरेली पधारेंगे।

बदायूं जिले में गौड़ ब्राह्मणों का दूसरा स्थान उझानी है। यद्यपि यह कसबा है तथापि व्यवसाय का स्थान होने से बदायूं की तहसीलों से अच्छा है इसमें म्यूनिसिपेलटी ऑनरेरी मजिस्ट्रेटी डाक और तारघर तथा रेलवे स्टेशन होने के अलावा एक बड़ा भारी मिल है कि जिसके कारण इस कसबे का नाम दूर२ तक प्रसिद्ध है।

इस कसबे में करीब २५।३० घर गौड़ ब्राह्मणों के हैं जो सबके सब अच्छी दशा में हैं। सबसे उल्लेख योग्य घर गौड़ कुल भूषण श्रीमान् पं० अयोध्याप्रसाद बन्शीधर जी महाराज रईसआज़म का है, जिनको इस कसबे का और विशेषकर अपनी गौड़ जाति का सिरमौर कहा जाय तो कुछ अत्युक्ति न होगा श्रीमान् प० अयोध्याप्रसाद जी की मूर्ति दर्शन करने ही योग्य है। आप अर्से तक ऑनरेरी मजिस्ट्रेट म्यूनिसपेलिटी उझानी के चेयरमैन और वहाँ की कई सरकारी और कई ग़ैर सरकारी संस्थाओं के प्रधान रह चुके हैं तथा अब भी हैं। इतनी प्रतिष्ठा और अतुल धन सम्पन्न होने पर भी आप में अहङ्कार, मत्सरता और किसी प्रकार का दोष छू तक नहीं गया है। आप पूर्ण ब्रह्मण्य और जाति प्रेम से ओत प्रोत सज्जन हैं और आपकी रहन सहन सादा और विचार उच्च हैं। उदारता के तो आप भण्डार हैं कोई मनुष्य आपकी हवेली से विमुख नहीं लौट सकता।

आपके यहाँ काफी ज़मींदारी, खंडसाल और भड़साल का पूरा व्यवसाय और लेन देन का पूरा काम है। यह कहना नामुनासिब न होगा कि हमारी गौड़ जाति के जो ४.५ बड़े बड़े ख़ान्दान हैं यथा बिजनौर का सोती ख़ान्दान, काशीपुर का चौबे ख़ान्दान, सम्भल का मिश्र ख़ान्दान मेरठ का दीक्षित ख़ान्दान, शिकारपुर का चौधरी ख़ान्दान और नरखेड़े का श्री० प० बाँकेलाल जी का ख़ान्दान है वैसा ही यह उझानी का श्रीमान पं०अयोध्याप्रसाद जी का ख़ानदान है। मैंने आपके स्वर्गीय पूज्य पिता श्रीमान् पं० शङ्करलालजी महाराज के दर्शन किये थे वे जैसे पवित्र ब्राह्मण रक्षक और श्रद्धालु महानुभाव थे वैसे ही सब गुण श्रीमान् पं० अयोध्याप्रसाद जी में विद्यमान हैं। आपके लघु सहोदर भ्राता श्री० पं० बन्शीधर जी का प्रेम और संकोच सराहने योग्य है। आप ५० वर्ष के लगभग अवस्था पर पहुँचते हुये भी अपने बड़े भ्राता श्री०पं०अयोध्याप्रसादजीसे वैसा ही व्यवहार करते हैं जैसे मर्य्यादा पुरुषोत्तम भगवान् रामचन्द्र जी से उनके लघु भ्राता श्री लक्ष्मण जी महाराज करते थे। आप महासभा के प्राचीन मेम्बर हैं और कई एक वार्षिकोत्सवों में श्री० पं० बन्शीधर जी सम्मिलित होते रहे हैं। इस वर्ष बरेली में आपके परिवार से ८।१० महानुभाव पधारेंगे और श्रीमान् पं० अयोध्याप्रसादजी भी दर्शन देंगे जिनके भव्य दर्शनों से आगत प्रतिनिधि आनन्द लाभ प्राप्तकरेंगे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उझानी के अन्य गौड़ भाइयों की नामावली आप इस लेख के अन्त में देखेंगे। इस कस्बे में श्री० पं० अयोध्याप्रसाद जी गौड़, श्री० पं० गंगाप्रसाद जी गौड़, श्री० पं० गंगादत्त जी शास्त्री तथा उनके सुयोग्य पुत्र श्री० पं० वागीश जी शास्त्री श्री० पं० रामगोपाल जी श्री० प० निरञ्जनदेव जी तथा श्री० पं० अयोध्याप्रसाद जी के सुयोग्य भानजे पं० हरस्वरूप और पं० वैकुण्ठनाथजी भी उल्लेख योग्य पुरुष हैं आप सब महानुभाव पूर्ण जाति प्रेमी और सज्जन स्वभावके व्यक्ति हैं। आप सब लोग महासभा के ३३वें महाधिवेशन में बरेली पधारेंगे उस समय हमारे पाठक इनसे परिचय प्राप्त कर आनन्द लाभ उठावेंगे यह दृढ़ आशा है।

अन्य ग्रामों के गौड़ भाई कि जिन ग्रामों के नाम ऊपर लिखे है, बरेली निकट होने से अवश्य पधारेंगे उनके दर्शनों से भी उन प्रान्तों के गौड़ भाइयों को हर्ष होगा कि जो यह नहीं जानते थे कि बदायूँ जैसे अन्य ब्राह्मणों के समूह में हमारे गौड़ भाई भी निवास करते हैं।

बदायूँ जिलेके उन गौड़ ब्राह्मणोंकी नामावली ।

जिनकी आय ५०)रु० मासिक या इससे आधिक है।

१	श्रीमान् पं० अनुरुद्धकृष्णजी शर्मा डिप्टीकलेक्टर		बदायूं
२	श्री० पं० विशम्भरदासजी जाशी मुंसरिम जजी		,,
३	श्री० पं० हरस्वरूपजी गौड़ सबओवरसियर डिस्ट्रिक्टबोर्ड		,,
४	श्री० पं० रामस्वरूप जी शुक्ल ज्यातिषी मुहल्ल, साहूकारा		,,
५	श्री० पं० मोहनलालजी गौड़ मुहल्ला सैदवाड़ा		,,
६	श्री० पं० बलभद्रजी अध्यक्ष मन्दिर जयगोपाल साहूकारा		,,
७	श्री० पं० बालकिशनजी गौड़ मुहल्ला टिकठगंज चौधरी सराय		,,
८	श्री० पं० दामोदरदास जी गौड़ महन्त मुहल्ला चौधरी		,,
९	श्री० पं० पूरनसिंहजी गवर्नमेन्ट पेन्शनर ठेकेदार मु० सैदवाड़ा		,,
१०	श्री० पं० सुदर्शनदासजी वैद्य बुटलानिवासी भाजीटोला		,,
११	श्री० पं० मक्खनलालजी सोती सबरजिट्रार पटियालीसराय		,,
१२	श्री० पं० मुरारीलालजी सोती मुहाफ़िज़ दफ्तर कलेक्टरी		,,
१३	श्री० पं० राधेश्यामजी सोती मु० साहूकारा		,,
१४	श्री० पं० अयोध्याप्रसाद वंशीधरजी रईस आजम	उझानी	,,
१५	श्री० पं० हरस्वरूप वैकुंठनाथजी —	,,	,,
१६	श्री० पं० अयोध्याशरणजी महर्ष्यः मैनेजर गौशाला	,,	,,
१७	श्री० पं० चंडीलालजी गौड़ —	,,	,,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitized by eGangotri Sahayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2

१८	श्री० पं० रामकिशोरजी	जिमीदार	उझानी बदायं
१९	श्री० पं० गंगादत्त वागीशदत्तजी शास्त्री		,, ,,
२०	श्री० पं० श्यामविहारीलालजी	जिमीदार	,, ,,
२१	श्री० पं० ज्वालादत्तजी शर्म्मा	,,	,, ,,
२२	श्री० पं० गङ्गाप्रसादजी	,,	,, ,,
२३	श्री० पं० गणेशप्रसादजी	,,	,, ,,
२४	श्री० पं० रामनिवासजी	,,	,, ,,
२५	श्री० पं० भगवत् प्रसादजी	,,	,, ,,
२६	श्री० पं० निरञ्जनदेवजी	,,	,, ,,
२७	श्री० पं० नारायणदत्तजी	,,	,, ,,
२८	श्री० पं० रामगोपालजी	,,	,, ,,
२९	श्री० पं० नारायणदासजी	,,	,, ,,
३०	श्री० पं० वसन्तलालजी	,,	,, ,,
३१	श्री० पं० गुलजारीलालजी	,,	,, ,,
३२	श्री० पं० रामस्वरूपजी	,,	,, ,,
३३	श्री० पं० हरदयालजी	,,	कछला ,,
३४	श्री० पं० केशोरामजी	,,	,, ,,
३५	श्री० पं० मुरलीधरजी	,,	,, ,,
३६	श्री० पं० छेदालालजी	,,	मु० सिगोई पो० कुमरगाँव ,,
३७	श्री० पं० राधेश्यामजी	,,	,, ,,
३८	श्री० पं० परमानन्द जी	,,	,, ,,
३९	श्री० पं० ब्रजलालजी	,,	,, ,,
४०	श्री० पं० मदनलालजी	,,	,, ,,
४१	श्री० पं० बलदेवप्रस दजी	,,	,, ,,
४२	श्री० पं० रामसहायजी	,,	,, ,,
४३	श्री० पं० रामप्रसादजी	,,	,, ,,
४४	श्री० पं० बिहारीलाल पाठक	,,	,, ,,
४५	श्री० पं० काशीराम द्विवेदी	,,	,, ,,
४६	श्री० पं० बलदेवप्रसादजी	,,	,, ,,
४७	श्री० पं० रामलालजी	,,	,, ,,
४८	श्री० पं० हेतरामजी	,,	,, ,,
४९	श्री० पं० बुधसैनजी	,,	,, ,,
५०	श्री० पं० मिहीलालजी	,,	,, ,,
५१	श्री० पं० रामस्वरूपजी	,,	,, ,,
५२	श्री० पं० वंशीधरजी	,,	,, ,,
५३	श्री० पं० शंकरदत्तजी	,,	,, ,,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

५४ श्री० पं० प्रभुदयालजी	जिमींदारी	मु० धुरे की मुड़िया	बदायूं
५५ श्री० पं० भिकारीदत्तजी	,,	,,	,,
५६ श्री० पं० शिवनारायणजी	,,	मु० करिया मई बनकी	,,
५७ श्री० पं० रामचन्द्रजी वैद्य	,,	,,	,,
५८ श्री० पं० तोताराम जी	,,	मु० विजयपुर पो० करिया मईबनकी	,,
५९ श्री० पं० बद्रीप्रसादजी	,,	मु० पतरिया पो० गिन्ना	,,
६० श्री० पं० कल्याणचन्द्रजी	,,	,,	,,
६१ श्री० पं० रामचन्द्रजी	,,	,,	,,
६२ श्री० पं० कन्हैयालालजी	,,	मु० दफतरा पो० गिन्ना	,,
६३ श्री० पं० रामस्वरूपजी	,,	,, ,,	,,
६४ श्री० पं० सालगरामजी	,,	मु० सुन्दरनगर पो० इसलामनगर	,,
६५ श्री० पं० घासीरामजी	,,	,, ,,	,,
६६ श्री० पं० मन्नूलालजी	,,	मु० ग्यौर कासमाबाद पो० इसलामनगर	,,
६७ श्री० पं० लालताप्रसादजी	,,	,, ,,	,,
६८ श्री० पं० बद्रीप्रसादजी	,,	,, ,,	,,
६९ श्री० पं० श्यामलालजी	,,	मु० उगैतो पो० उगैती	,,
७० श्री० पं० जयरामजी	,,	,, ,,	,,
७१ श्री० पं० पूरणमलजी	,,	मु० खुदागंज पो० धुरे की मुड़िया	,,
७२ श्री० पं० रामचन्द्रजी	,,	इसलामनगर	,,
७३ श्री० पं० प्यारेलालजी	,,	,,	,,
७४ श्री० पं० छेदालालजी	,,	मु० धर्मपुर पो० रुदायन	,,
७५ श्री० पं० रामजीलालजी	,,	,, ,,	,,
७६ श्री० पं० तोताराम जी	,,	मु० रमपुरिया पो० रुदायन	,,
७७ श्री० पं० गजेन्द्रप्रसादजी	,,	,, ,,	,,
७८ श्री० पं० मोतीरामजी	,,	,, ,,	,,
७९ श्री० पं० धन्नालालजी	,,	,, ,,	,,
८० श्री० पं० पन्नालालजी	,,	,, ,,	,,
८१ श्री० पं० बिहारीलालजी	,,	मु० मिलकपुर पो० उझानी	,,
८२ श्री० पं० बुधसेनजी	मुदर्रिस	मु० इसलामनगर	,,
८३ श्री० पं० मन्नारायणजी	दूकानदारी	,,	,,
८३ श्री० पं० कल्याणदासजी	मुदर्रिस	मु० सहसवान	,,
८४ श्री० पं० केशोरामजी	मु० कुनावली पो० इसलामनगर		,,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विवाह योग्य लड़कों के पते।

(१) श्री० पं० अयोध्याप्रसाद वंशीधर जी गौड़—रईस आजम-उझानी जिला बदायूँ निवासी के यहाँ श्री० पं० वंशीधरजी के सुयोग्य पुत्र चिरंजीव सुरेन्द्रनाथ विवाह के लिये सूचित किये जाते हैं। यद्यपि इनकी अवस्था अभी १५ ही वर्ष की है तथापि कन्यापक्ष वाले अभी से चक्कर लगा रहे हैं इस लिये सम्बन्ध निश्चय होने में विलम्ब नहीं है विवाह १८ वर्ष की अवस्था के बाद ही होगा। यह चिरंजीव गवर्नमेन्ट हाईस्कूल बदायूँ में अँगरेजी पढ़ रहे हैं। गोत्र इनका भारद्वाज है। शेष बातें उक्त पते पर पूछिये।

(२) श्री० पं० मोहनलालजी—उझानी जिला बदायूँ के पुत्र मुकटविहारीलाल कि जिनकी अवस्था १८ वर्ष की है अभी तक अविवाहित है। गोत्र इनका भारद्वाज है। शेष बातें उक्त पते पर पूछिये।

(३) श्री० पं० नाथूराम जी महाराज उझानी जिला बदायूँ के पुत्र रामचरन लाल कि जिनकी अवस्था ३५ वर्ष की है। अपना विवाह करना चाहते हैं। गोत्र इनका भारद्वाज है। बाकी बातें उक्त पते पर पूछिये।

(४) श्री० पं० बागीशदत्तजी शास्त्री—उझानी जिला बदायूँ के पुत्र चि० श्रीधरशर्म्मा जिनकी अवस्था १३ वर्ष की है और संस्कृत पढ़ रहे हैं विवाह के लिये सूचित किये जाते है गोत्र भारद्वाज है। शेष बातें उक्त शास्त्री जी से पूछिये।

(५) श्री० पं० गंगाप्रसाद जी शर्म्मा उझानी जिला बदायूँ के पुत्र चि० देवकीनन्दन कि जिनकी अवस्था १४ वर्ष की है विवाह के लिये सूचित किये जाते हैं। इनकी योग्यता तथा अन्यबातों के सम्बन्ध में उक्त पते पर पत्र व्यवहार से पूछिये।

(६) श्री० पं० गणेशप्रसादजी—उझानी जिला बदायूं के पुत्र चि० भगवानदासजी कि जिनकी अवस्था १३ वर्ष की है विवाह के लिये सूचित किये जाते हैं। गोत्र शांडिल्य है शेष बातें पत्र व्यवहार से निश्चय हो सकती हैं।

(७) श्री० पं० रामनिवासजी गौड़—उझानी जि० बदायूं कि जिनकी अवस्था ३० वर्ष की है विवाहके लिये खाली है। इनका गोत्र शांडिल्य है शेष बातें उक्त पते पर इन्हीं से मालूम की जा सकती हैं।

(८) श्री० पं० भगवतप्रसादजी—उझानी जिला बदायूँ के पुत्र चि० रामसूति कि जिनकी अवस्था १७ वर्ष की है विवाह के लिये सूचित किये जाते हैं। गोत्र इनका भारद्वाज है। शेष बातें उक्त पते पर पूछिये।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(९) श्री० पं० निरंजनदेवजी शर्म्मा—उझानी जिला बदायूँ के पुत्र चि० रामरक्षपाल और रामेश्वरदत्त कि जिनकी अवस्थाएँ १८ और १४ वर्ष की है विवाह के लिये सूचित किये जाते हैं। इनक गोत्र भारद्वज है। लड़कों की योग्यता और अन्य बातों के लिये उक्त पते पर पत्र व्यवहार कीजिये।

(१०) श्री० पं० वसन्तलाल जी महाराज गाँव छितुइय्या पोष्ट उझानी जिला बदायूं के पुत्र चि० मूलचन्द कि जिनकी अवस्था १२ वर्ष की है विवाहके लिये सूचित किये जाते हैं। गोत्र भारद्वाज है शेष बातें उक्त पते पर पूछिये।

(११) श्री० पं० गुलजारीलाल जी—जिमींदार छितुइय्या पोष्ट उझानी (बदायूँ) के पुत्र चि० बैजनाथ कि जिनकी उम्र १४ वर्ष की है विवाह के लिये सूचित किये जाते हैं। गोत्र भारद्वाज है। शेष बातें उक्त पते पर पूछिये।

(१२) श्री० पं० रामचन्द्रजी—छितुइय्या पोष्ट उझानी जिला बदायूं के पुत्र चि० बांकेलाल कि जिनकी अवस्था १४ वर्ष की है विवाह के लिये सूचित किये जाते हैं। गोत्र भारद्वाज है शेष बातें पत्र व्यवहार से निश्चय कीजिये।

(१३) श्री० पं० पूरनमल—छितुइय्या पोष्ट उझानी (बदायूं) के पुत्र चि० चिरंजालाल कि जिनकी अवस्था १८ वर्षकी है विवाह योग्य है। गोत्र इनका भारद्वाज है। शेष बातें उक्त पते पर निश्चय कीजिये।

(१४) श्री० पं० हेतरामजी छितुइय्या पोष्ट उझानी (बदायूँ) के पुत्र नेतराम कि जिनकी अवस्था २५ वर्ष की है विवाह के लिय खाली हैं। गोत्र भारद्वाज है। शेष बातें उक्त पते पर पूछिये।

(१५) श्री० पं० हरदयालजी—कछला जिला बदायूं के पुत्र रामाधीन और जयनारायण कि जिनकी उम्रें क्रमशः १८ और १६ वर्ष की हैं विवाह योग्य हैं। गोत्र भारद्वाज है। शेष बातें उक्त पते पर चिट्ठी पत्री से मालूम की जा सकती हैं

(१६) श्री० पं० केशवरामजी—कछला जिलाबदायूं के ४ पुत्र होरीलाल, बाबूराम, हंसू और जोरावर कि जिनकी उम्रें क्रमशः २०,१८ १५और१४ वर्षकी है विवाहके लिये खाली हैं। इनका गोत्र भारद्वाज है शेष बातें उक्त पतेपर मालूम कीजा सकतीं हैं।

(१७) श्री० पं० शुकरामजी—कछला जिला बदायूं के पुत्र गंगाराम कि जिन अवस्था २४ वर्ष की है विवाह के लिये खाली है गोत्र भारद्वाज है शेष बातें उक्त पते पर निश्चय कीजिये।

(१८) श्री० पं० छेदालालजी—मुहल्ला साहूकारा बदायूं के पुत्र ब्रजभूषण जो कि जिनकी अवस्था १९ वर्ष की है विवाह योग्य है। गोत्र इनका पाराशर है। शेष बातें उक्त पते पर पूछिये।

(१९) श्री० पं० भोलानाथ जी—मुहल्ला सैदवाड़ा बदायूँ के पुत्र चि० राममूर्ति कि जिनकी अवस्था १६ वर्ष की है विवाह के लिये सूचित किये जाते हैं। गोत्र इनका वशिष्ट है। शेष बातें उक्त पते पर पूछिये।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(२०) श्री० पं० शिवदयालजी गौड़ मुहल्ला सेवाड़ा बदायूं के पुत्र चि० रामनिवास कि जिनकी अवस्था १४ वर्ष की है विवाह के लिये सूचित किये जाते हैं। गोत्र वशिष्ठ है। शेष बातें उक्त पते पर पूछिये।

(२१) श्रीमान पं० गयाप्रसाद जी गौड़—मुहल्ला चाहमीर बदायूँ के पुत्र चि० बद्रीनारायण कि जिनकी अवस्था १३ वर्ष की है और गोत्र भारद्वाज है विवाह के लिये सूचित किये जाते हैं। शेष बातें उक्त पते पर पत्र व्यवहार से निश्चय कर लीजिये।

(२२) श्री० पं० रामगोपालजी गौड़—मुहल्ला साहूकारा बदायूं के पुत्र चि० लक्ष्मीनारायण कि जिनकी अवस्था १५ वर्ष की है विवाह के लिये सूचित किये जाते हैं। गोत्र भारद्वाज है शेष बातें उक्त पते पर पत्र व्यवहार से मालूम कीजिये।

(२३) श्री० प० दामोदरदास जी महन्त—मुहल्ला चौधरी बदायूँ के पुत्र श्री निवासजी कि जिनकी अवस्था २४ वर्ष की है विवाह के लिये खाली है। गोत्र भारद्वाज है। शेष बातें उक्त पते पर पूछिये।

(२४) श्री० पं० श्यामसुन्दरलालजी महन्त मुहल्ला चौधरी बदायूँ के पुत्र चि० प्रेमनारायणजी कि जिनकी अवस्था १५ वर्ष की है अविवाहित है। गोत्र भारद्वाज है अन्य बातें उक्त पते पर मालूम कीजिये।

(२५) श्री० पं० लक्ष्मीनारायणजी वैद्य—बदायूँ के पुत्र चि० माधवदास जी कि जिनकी अवस्था १५ वर्ष की है अविवाहित हैं। गोत्र भारद्वाज है और शेष बातें उक्त पते पर पूछिये।

(२६) श्री० पं० हरस्वरूपजी शर्म्मा सब ओवरसियर डिस्ट्रिक्टबोर्ड बदायूं कि जो मेरठ जिले के रहने वाले हैं के पुत्र चि० अमरनाथ कि जिनकी अवस्था १३ वर्षकी की है और जो अंग्रेजी आठवें दर्जे में पढ़ते हैं विवाह के लिये सूचित किये जाते हैं। गोत्र वशिष्ठ है अन्य बातें उक्त पते पर पूछिये।

(२७) श्री० पं० छेदालालजी जिमींदार मौजा सिगोई पोष्ट कुमरगाँव जि० बदायूं के पुत्र चि० फूलचन्द कि जिनकी उम्र १८ वर्ष की है विवाह योग्य हैं गोत्र भारद्वाज है। शेष बातें उक्त पते पर पूछिये।

(२८) श्री० पं० राधेश्यामजी जिमींदार मौजा सिगोई पोष्ट कुमरगाँव जिला बदायूं के भाई चि० रामकिशन कि जिनकी अवस्था १४ वर्ष की है विवाह के लिये सूचित किये जाते हैं। गोत्र भारद्वाज है शेष बातें उक्त पते पर पूछिये।

(२९) श्री० पं० परमानन्दजी गौड़—जिमींदार गाँव सिगोई पोष्ट कुमरगाँव बदायूं के दो पुत्र चि० रामलाल और कामताप्रसाद कि जिनकी अवस्थाएँ क्रमशः २० और १७ वर्ष की है विवाह के लिये खाली है गोत्र भारद्वाज है। शेष बातें उक्त पते पर मालूम कीजिये।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(३०) श्री० पं० केवलरामजी गौड़ -गाँव सिगोई पोष्ट कुमरगाँव ज़िला बदायूं के पुत्र कि जिनकी अवस्था १४ वर्ष की है विवाह के लिये सूचित किये जाते हैं गोत्र भारद्वाज है। शेष बातें उक्त पते पर पूछिये ।

(३१) श्री० पं० रामसहायजी गौड़—मौजा सिगोई पोष्ट कुमरगाँव ज़िला बदायूँ के पुत्र चि० सुमेरदत्त कि जिनकी अवस्था १५ वर्षकी है विवाहके लिय सूचित किये जाते हैं गोत्र भारद्वाज है शेष बातें उक्त पते पर पूछिये ।

(३२) श्री० पं० काशीरामजी दुबे–मौजा सिगोई पोष्ट कुमरगाँव ज़िला बदायं के पुत्र चि० दुर्गाप्रसादजी कि जिनकी अवस्था २२ वर्ष की है अविवाहित हैं। गोत्र भारद्वाज है। शेष बातें उक्त पते पर पूछिये ।

(३३) श्री० पं० धारजोतजी गौड़ मौजा सिगौई पोष्ट कुमरगाँव जि० बदायूं के दो पुत्र चि० रामचन्द्र और गोकुलप्रसाद कि जिनकी उम्रें क्रमशः १७ और १४ वर्ष की हैं विवाह के लिये सचित किये जाते हैं। गोत्र भारद्वाज है शेष बातें उक्त पते पर पत्र व्यवहार से तै कीजिये ।

(३४) श्रीमान् पं० रामस्वरूप जी गौड़ – बिसौली ज़िला बदायूँ के छोटे भाई चि० विद्याधर कि जिनकी अवस्था १३ वर्ष की है विवाह के लिए सूचित किये जाते हैं. गोत्र भारद्वाज है। शेष बातें उक्त पते पर पूछिये ।

(३५) श्रीमान् पं० नन्हूमलजी गौड़ गाँव धुरे की मुड़िया पोष्ट ख़ास ज़िला बदायूँ के पुत्र गङ्गाप्रसाद कि जिनकी उम्र २० वर्ष की है विवाह के लिए ख़ाली हैं, गोत्र भारद्वाज है। शेष बातें उक्त पते पर पूछिये ।

(३६)श्रीमान् पं० पन्नालालजी गौड़—गाँव धुरेकी मुड़िया पोष्ट ख़ास ज़िला बदायूं के पुत्र चि० जगुन्नाप्रसाद कि जिनकी अवस्था १३ वर्ष की है विवाह के लिए सूचित किये जाते हैं, गोत्र भारद्वाज है शेष बातें उक्त पते पर पूछिये ।

(३७) श्रीमान् पं० रघुनन्दनजी शर्म्मा—गाँव धुरेकी मुड़िया पोष्ट ख़ास ज़िला बदायूं के पुत्र चि० रामचरण कि जिनकी अवस्था १५ वर्ष की है विवाह के लिए सूचित किये जाते हैं. गोत्र कौशिक है। शेष बातें उक्त पते पर पूछिये ।

(३८) श्रीमान् पं० दीनानाथजी गौड़ ज़िमींदार मौजा बिजैपुर पोष्ट करिया-मई ज़िला बदायूं के पुत्र रामचरण कि जिनकी अवस्था १६ वर्ष की है विवाहके लिए प्रस्तुत हैं, गोत्र वशिष्ठ है। शेष बातें उक्त पते पर मालूम हो सकती हैं ।

(३९) श्रीमान् पं० लक्ष्मणप्रसाद जी गौड़—ज़िमींदार मौजा बिजैपुर पोष्ट करियामई ज़िला बदायूं के पुत्र मोहनलालजी कि जिनकी उम्र २५ वर्ष की है विवाहके लिए ख़ाली हैं, गोत्र वशिष्ठ है। शेष बातें उक्त पते पर मालूम हो सकती हैं ।

(४०) श्रीमान् पं० फ़तहचन्द जी मुड़िया—गाँव बिजैपुर पोष्ट करियामई ज़ि० बदायूं के पुत्र चि० पूरणप्रसाद कि जिनकी उम्र १७ वर्ष की है अविवाहित हैं, गोत्र वशिष्ठ है। शेष बातें उक्त पते पर पूछिये ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रजिस्टर्ड नं० ए० २०८२

* श्री हरिः *

गौड़ महासभा पत्रिका

अखिल भारतवर्षीय गौड़ ब्राह्मण महासभा की
मासिक मुखपत्रिका ।

वर्ष १ } मुरादाबाद—अक्टूबर सन् १९३० ई० { सं० ४

भूतानां प्राणिनः श्रेष्ठाः प्राणिनां बुद्धिजीविनः ।
बुद्धिमन्सु नराः श्रेष्ठाः नरेषु ब्राह्मणाः स्मृताः ॥ मनु० ॥

सम्पादक और प्रकाशक—
पं० प्यारेलाल गौड़ 'हिन्दीरत्न'
मन्त्री, अखिल भारतवर्षीय गौड़ ब्राह्मण महासभा
मुरादाबाद ।

वार्षिक मूल्य २) रुपया | एक प्रति का मूल्य तीन आने | महासभाके सभासदों को बिना मूल्य

अखिल भारतवर्षीय गौड़ ब्राह्मण महासभा कार्य्यालय—मुरादाबाद से प्रकाशित

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गौड़ महासभा पत्रिका के नियम।

( ) यह पत्रिका 'अ० भा० गौड़ ब्राह्मण महासभा" की मासिक मुख पत्रिका है। इस लिये यह सदैव उक्त महासभा कार्य्यालय से प्रति अङ्गरेज़ी मास की अन्तिम तारीख को प्रकाशित हुआ करेगी।

(२) इस पत्र में केवल गौड़ ब्राह्मण जाति के हित के अतिरिक्त और कोई लेख स्थान नहीं पावेंगे।

(३) नमूने को पाकर जो सज्जन अस्वीकारी की सूचना न देंगे वे ग्राहक समझे जावेंगे और दूसरा अङ्क उनकी सेवामें एकवर्ष के मूल्य के वी० पी० में पहुँचेगा

(४) "पत्रिका" का वार्षिक मूल्य २) रु० है जो सब ग्राहकों से पेशगी लिया जावेगा।

(५) महासभा के वे सभासद जो अपना वार्षिक सदस्य शुल्क ६) रु० भेज चुके हैं उनको यह पत्रिका उस समय तक बिना मूल्य मिलेगी कि जब तक के लिये वे महासभा के सभासद हैं।

(६) जो ग्राहक और महासभा के सभासद अपना पता बदलवाना चाहें उनको पता बदलवाने के पत्र में अपना पुराना और नया पता स्पष्ट लिखना चाहिये।

(७) यदि किसी सज्जनके पास किसी मास की "पत्रिका" दूसरे मासके पहिले सप्ताह में न पहुँचे तो उनको तुरन्त अपने यहां के डाकखाने में पूछना चाहिये और जो उत्तर उनको पोस्टआफ़िस से मिले उसको कार्य्यालय को भेजना चाहिये। तो उनको उस अङ्क की दूसरी प्रति बिना मूल्य पोस्टिंग सार्टिफिकट पर भेजी जावेगी।

(८) गौड़ ब्राह्मण जातिके विवाह योग्य लड़के और लड़कियों के पते पत्रिका में निःशुल्क छाप दिये जावेंगे।

(९) लेख, सूचनाएँ, बदलेके समाचार पत्र, पत्रिका का मूल्य आदि पत्रिका संबंधी समस्त बातें "सम्पादक "गौड़ महासभापत्रिका" अखिल भारतवर्षीय गौड़ ब्राह्मण महासभा कार्य्यालय—मुरादाबाद" के पते से आनी चाहियें।

(१०) लेखों के छापने अथवा न छापने, घटा बढ़ा कर छापने, लौटाने या न लौटाने का पूर्ण अधिकार सम्पादक पत्रिका को है।

(११) सम्वाददाता तथा पत्र प्रेरक सज्जन अपने लेख और समाचारों के स्वयं उत्तर दाता होंगे।

(१२) विज्ञापनकी छपाई और कोड़ पत्र बटाई सम्पादक से पूछ कर तै होगी।

(१३) सब प्रकार के पत्र व्यवहार का पता:——

प० प्यारेलाल गौड़ "हिन्दीरत्न"
सम्पादक और मन्त्री—
अ० भा० गौड़ ब्राह्मण महासभा
मुरादाबाद (यू० पी०)

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रजिस्टर्ड नं०

* श्री हरः *

गौड़ महासभा पत्रिका

अखिल भारतवर्षीय गौड़ ब्राह्मण महासभा की
मासिक मुखपत्रिका।

वर्ष १ } जौलाई और अगस्त सन् १९२० ई० { सं० १७२

सम्पादक और प्रकाशक—
पं० प्यारेलाल गौड़ 'हिन्दीरत्न'
श्री अ० भा० गौड़ ब्राह्मण महासभा मुरादाबाद

वार्षिक मूल्य २) } { महासभा के सभासदों को मुफ्त

छोटेलाल जैन के प्रबन्ध से 'शर्मा मैशीन प्रिन्टिङ्ग प्रेस' मुरादाबाद में छपा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सूचना

अखिल भारतवर्षीय गौड़ ब्राह्मण महासभा की मुख पत्रिका आज आपकी सेवा में भेजी जाती है, आशा है कि आप इसको आद्योपान्त पढ़कर इसको अपनावेंगे और इसका वार्षिक मूल्य २) दो रुपया शीघ्र भेजकर अपना शुभ नाम पत्रिका के सहायकों में लिखावेंगे और इसकी उन्नति के सदैव इच्छुक रहेंगे।

अबतक महासभा का मुख पत्र अवैतनिक कार्य्यकर्त्ताओं द्वारा प्रकाशित होता रहता था, इसलिए वह अनियमित रूप से निकलकर अनिश्चित समय में ही बन्द हो जाया करता था, परन्तु अब इसका प्रबन्ध वैतनिक कार्यकर्त्ताओं द्वारा कराया जाना प्रारम्भ हुआ है। इसलिए अब यह बन्द न होगा और नियम से प्रतिमास प्रकाशित होता रहेगा।

२६ जून सन् ३० की मैनेजिङ्ग कमेटी महासभा ने इसका निकालना स्वीकार किया और ३ अगस्त सन् ३० की मैनेजिङ्ग कमेटी में इसके सम्पादक और प्रकाशक की स्वीकृति हुई इस कारण जुलाई और अगस्त का युग्माङ्क निकाला जारहा है। आयन्दा से एक ही अङ्क एक मास का निकला करेगा।

प्रत्येक मासिक या साप्ताहिक या दैनिक पत्र के घाटे का कारण ग्राहकों की न्यूनता बिना मूल्य दिये पढ़ने वालों की अधिकता और नादिहन्द ग्राहकों की बाहुल्यता ही हुआ करती है। इसलिए पत्रिका' के इस अङ्क को पढ़ते ही गौड़ बान्धवगण अपना अपना वार्षिक मूल्य २) रुपया तत्काल भेजदें, नहीं तो सितम्बर की पत्रिका उन सब महानुभावों की सेवा में २।) रुपये के वी० पी० में पहुँचेगी कि जिनके पास यह अङ्क पहुँच रहा है, क्योंकि बिना मूल्य कई कई अङ्क नहीं भेजे जावेंगे।

यदि किसी विशेष कारण से किसी विशेष भाई को 'पत्रिका' को अपनाना अभीष्ट न हो तो वे कृपाकर इन पंक्तियों के पढ़ते ही एक कार्ड से हमको अपनी इच्छा प्रगट करदें ताकि हम व्यर्थ वी० पी० भेजकर महासभा को हानि न होने दें। यदि ऐसी सूचना न आवेगी तो सितम्बर की पत्रिका अवश्य वी० पी० द्वारा पहुँचेगी। कृपया महासभा की सहायताकी दृष्टिसे आप सब लोग वी० पी० पहुँचते ही छुड़ालें।

—सम्पादक।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री गणेशाय नमः

गौड़ महासभा पत्रिका

अखिल भारतवर्षीय गौड़ ब्राह्मण महासभा की मुखपत्रिका।

वर्ष १ } मुरादाबाद–जौलाई, अगस्त सन् १९३० { संख्या १, २

ईश्वर–प्रार्थना

खर्वस्थूल तनुं गजेन्द्र वदनं लम्बोदरं सुन्दरम् ।
प्रस्यन्दन्मधुगन्ध व्याधि लुब्धमपं व्यालोल गण्डस्थलम् ॥
दन्ता घात विदारि तारि रुधिरैः सिन्दूर शोभा करम् ।
वन्दे शैलसुता सुतम् गणपतिं भक्त प्रदम् कामदम् ॥

—*—

पीताम्बर परिधान, ओज हो अमित अखण्डित ।
लोचन जलज समान, अधर कर मुरली मण्डित ॥
कोमल गोल कपोल, श्याम हो कलित कलेवर ।
मधुर बोलते बोल, हास्य अव्याज मनोहर ॥
बन माला डाले गले, मुकट मोर मस्तक धरे ।
राधायुत आओ चले, साधारण बाधा–हरे ॥

—»—

नन्दके दुलारे हम दास हैं तिहारे, सदा भक्तनके काज आप कोटि रूप धारे जू ।
गिरवर कर धारे प्रहाद जन उबारे, हिरणाक्ष मारे और ध्रू भक्त तारे जू ॥
इन्द्र मान मारे और दुष्ट सब दल डारे, काटे गज फन्द कष्ट देवी के निवारे जू ।
द्रोपदीकी लाज जैसी राखी कुरुसभा मांहि, ऐसीही हमारी लाज राखो कृष्णप्यारेजू ॥

———

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पत्रिका का ध्येय ।

श्री

परब्रह्म परमात्मा की पूर्ण कृपा से आज हमको यह सुअवसर प्राप्त हुआहै कि हम आपकी एकमात्र जातीय महासभा के मुखपत्र को लेकर आपकी सेवा में उपस्थित होते हैं। भगवान् मङ्गलमय अपने आशीर्वाद से आपकी इस पत्रिका को दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति दें यही बद्धाञ्जलि प्रार्थना है।

गौड़ जाति के अनेक प्रेमी इस बात को भली भाँति जानते हैं कि आज से ३४ वर्ष पहले इस आपकी महती महासभा का जन्म स्वनाम धन्य, प्रातःस्मरणीय, स्वर्गीय श्रीमान् प० रामचन्द्र जी बी० ए० रईस आज़म जगाधरी ज़िला अम्बाला ने शिमला शैल पर सन् १८९५ ई० में किया था। उसी समय से उक्त श्रीमान् ने इसकी उन्नति में अपना तन, मन, धन लगाया था और इसके सभी कार्य्यों को यथावत् चलाया था। अतः महासभाके तृतीय वार्षिकोत्सव में जो दिसम्बर सन् १८९८ ई० में मेरठ में हुआ सबसे पहले महासभा के मुखपत्र निकालने का प्रस्ताव प्रस्तुत हुआ जिस पर यह फ़ैसला हुआ कि समाचारपत्र निकालने के नियम बनाकर आगामी महोत्सव में पेश हों।

इसके बाद चौथे पाँचवे महोत्सवों में भी मुखपत्र के प्रस्ताव प्रस्तुत होते रहे इसके पश्चात् जनवरी सन् १९०१ में सबसे प्रथम "ब्राह्मण समाचार" नाम से महासभा का मुखपत्र महामन्त्री जी की संरक्षता में श्रीमान् मिश्र मुरारीलाल जी अध्यक्ष कृष्णेश्वरी प्रेस सम्भल ज़िला मुरादाबाद से निकलना प्रारम्भ हुआ। परन्तु ७ मास निकलकर ही बन्द हो गया।

फिर इसका प्रबन्ध श्रीमान् प० लुटनलाल जी स्वामी परीक्षितगढ़ ज़िला मेरठ निवासी को सौंपा गया जो अवैतनिक रूप से कई वर्ष तक इसका सम्पादन करते रहे। इसके पश्चात् सन् १९०९ ई० में मेरे पूज्य पिता स्व०श्रीमान् प० नारायणप्रसाद जी गौड़ इसके सम्पादक नियुक्त हुए जो ३ वर्ष तक ऑनरेरी सम्पादक का कार्य्य करते रहे। उनके समय में 'ब्राह्मण समाचार" की दशा बहुत कुछ सुधर गयी थी। और उस समय ग्राहक भी बहुत अधिक संख्या में हो गये थे परन्तु कारण वशात् सन् १९१२ में उन्होंने भी इस सेवा को छोड़ दिया। इसके बाद महासभा ने अपना निजी प्रेस बनाकर और 'ब्राह्मण समाचार' को अपने प्रेस जगाधरी से हो श्री प० रामचन्द्र जी बी० ए० महामन्त्री महोदय ने प्रकाशित किया। उस समय श्री प० उमादत्त जी शर्मा इसके सम्पादक थे, उन्होंने इसको खूब उन्नति दी। यहाँ तक कि

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

यह साप्ताहिक प्रकाशित होने लगा। इसमें सब प्रकार के लेख प्रकाशित होने लगे। इसकी ख्याति यहाँ तक बढ़ी कि गवर्नमेण्ट की निगाह भी इस पर पड़ी और इससे ज़मानत माँगी गयी। ज़मानत दाख़िल करने पर समाचारपत्र चलता रहा, परन्तु वहाँ से कार्य्यालय परिवर्तन होने पर उसका प्रकाशन बन्द हो गया। फिर कुछ दिनों यह बुलन्दशहर से निकला तबसे श्री प० राधाचरण जी गोस्वामी वृन्दावन, श्री प० किशोरीलाल जी गोस्वामी काशी, श्री प० छबीलेलाल जी गोस्वामी वृन्दावन थोड़े२ समय तक इसका सम्पादन करते रहे, परन्तु कोई स्थाई प्रबन्ध न होने के कारण इसकी विशेष उन्नति न हो सकी। जब महासभा का कार्य्यालय अम्बाला छावनी में श्री प० जगन्नाथ जी कौशलके पास पहुँचा तो उन्होंने इसका नाम "ब्राह्मण पत्रिका" रक्खा और २ वर्ष तक इसका किसी प्रकार चलाते रहे। जब सन् १९२८ ई० में इस महासभा का कार्य्यालय मथुरा आया तब १ वर्ष वहाँ नियम पूर्वक निकला, दूसरे वर्ष धनाभाव से इसका प्रकाशन बन्द रहा।

अब परमात्मा की पूर्ण कृपा से महासभा का कार्य्यालय श्रीमान् प० ऋषिराम जी महाराज रईसआज़म लाहौर के सभापतित्व और श्री प० केदारनाथ जी शर्म्मा हरिद्वार महामन्त्री जी के हाथों और श्रीमान् गौड़कुल भूषण मिश्र वंश उजागर, लब्ध प्रतिष्ठ श्रीमान् रायबहादुर प० बनारसीप्रसाद जी मिश्र बी० ए० एडवोकेट मुरादाबाद की संरक्षकता में यहाँ आ गया है और अब यहाँसे सब कार्य नियमानुकूल संचालन हो रहे हैं ऐसी दशा में महासभा के मुखपत्र का भी प्रबन्ध हुआ और यह विचार हुआ कि इस बार पत्रिका में वह विषय होने चाहियें कि जिनकी गौड़ ब्राह्मण भाइयों को वास्तविक आवश्यकता है कि जिससे यह पत्रिका सर्व प्रिय होकर उन्नति कर सके।

ऐसा विचार कर यह निश्चय किया गया है कि इसके प्रत्येक अङ्क में भारतवर्ष के उन प्रान्तों में से क्रमानुसार एक एक जिले का विवरण प्रकाशित हुआ करे कि जिनमें गौड़ भाई निवास करते हैं। जिससे यह पत्रिका भविष्य में गौड़ जाति के इतिहास का काम दे सके।

आजकल प्रत्येक गौड़ भाई को विवाह योग्य वर कन्याओं के अन्वेषण में जो कष्ट उठाना पड़ता है वह किसी भी सज्जन से छिपा नहीं है। अतः प्रत्येक मास में अधिक से अधिक वर कन्याओं का परिचय देने का प्रयत्न किया गया है। अपनी गौड़ जाति में जो प्रतिष्ठित विद्वान् और श्रीमान् जहाँ कहीं विराजमान हैं उनका संक्षिप्त जीवन चरित्र और उनका चित्र दिये जाने का भी आयोजन किया जारहा है। महासभा की प्रत्येक कार्य्यवाही इसमें समय समय पर प्रकाशित होती रहेगी। प्रबन्धकारिणी समिति और प्रतिनिधि सभा की प्रोसीडिंगस् (कार्य्यविवरण) सदैव इसमें प्रकाशित हुआ करेंगे। जो गौड़ भाई अपने प्रान्तों के गौड़ भाइयों का विव-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रण लिखकर भेजेंगे वह सहर्ष इसमें प्रकाशित किये जायेंगे । जातीय के सुख और दुःख के समाचार भी समय समय पर इसमें प्रकाशित होंगे । निदान गौड़ जाति से सम्बन्ध रखने वाले सभी आवश्यक कार्य्यों और वार्ताओं का इसमें प्रतिमास उल्लेख रहा करेगा ।

जहाँ इसके लिए महासभा के कर्णधारों ने इतना उद्योग किया है वहाँ आप लोगों का क्या कर्त्तव्य है यह अब आपको विचारना चाहिए । आपको प्रेम पूर्वक पत्रिकाके प्रकाशनमें सब प्रकारकी सहायता देना आपका प्रथम कर्त्तव्य होना चाहिए । तत्पश्चात् पत्रिका का प्रचार प्रत्येक गौड़ भाई तक हो जाय इसका उद्योग करना चाहिए । जिन गौड़ भाइयों को अपने स्थान के गौड़ भाइयों के प्राचीन ऐतिहासिक वृत्तान्त ज्ञात हों वह उनको पत्रिका में प्रकाशनार्थ भेजना चाहिए ।

निदान जब आप लोग पूर्ण सहानुभूति और प्रेम से इसे अपनावेंगे तो इस बार यिह आपकी पत्रिका निरन्तर प्रकाशित होती रहेगी और पिछली दशा को प्राप्त न होगी । भगवान् दीनबन्धु हमारे और आपके सहयोग से इस पत्रिका की उत्तरोत्तर उन्नति करे यह ही उस सर्वान्तरयामी से प्रार्थना की जाती है ।

—*—

अखिल भारतवर्षीय गौड़ ब्राह्मण महासभा
का
सूक्ष्म विवरण ।

अखिल भारतवर्षीय गौड़ ब्राह्मण महासभा, गौड़ ब्राह्मण जाति की एक मात्र जातीय संस्था है । जिसने अप्रेल सन् १८९६ ई० में शिमला के उच्च शिखर पर जन्म लेकर अब उसने अपना विस्तार समस्त भारतवर्ष में फैला रक्खा है । यद्यपि अधिकांश गौड़ भाइयों को इस अपनी जातीय महासभा के हालतों से पूरी जानकारी है तथापि समस्त गौड़ भाइयों को इसका पूरा पूरा हाल ज्ञात नहीं है । इसलिये आज समस्त गौड़ भाइयों की सूचना के लिये गौड़ महासभा का संक्षिप्त विवरण इस लेख द्वारा प्रगट किया जाता है और आशा है कि आप लोग इसे एक बार आद्योपान्त पढ़कर अपने अन्य जातीय भाइयों को इसे सुनावेंगे तथा पढ़ने को देंगे ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आज से ३५ वर्ष पहिले शिमले के गौड़ भाइयों के पवित्र हृदय में इस बात का विचार उत्पन्न हुआ कि वर्त्तमान समय में जब कि सभी जातियाँ अपनी अपनी उन्नति को कमर बाँधकर खड़ी हो गयी हैं तब हमारी गौड़ जाति ही जो भारतवर्ष में एक सिरे से दूसरे सिरे तक फैली हुई है क्यों घोर निद्रा में पड़ी रहे और अविद्या के कारण इस पवित्र जाति में जो बहुत तरह की कुरीतियाँ प्रचलित हो गयी हैं उनको यथाशक्ति शीघ्र दूर किया जावे ।

इन पवित्र विचारों की प्रेरणा से स्वर्गीय स्वनाम धन्य, जगाधरी निवासी श्रीमान् प० रामचन्द्र जी बी० ए० रईस ने शिमला के समस्त गौड़ भाइयों को इकट्ठा कर अपना विचार प्रगट किया जिसका ईश्वर की कृपा से सभी ने पसन्द किया और तुरन्त ही एक अपील पत्र छपवाकर जहाँ तक उनको जानकारी थी सभी स्थानों के प्रमुख और प्रतिष्ठित गौड़ भाइयों के पास भेजा । भगवान् की कृपा से उन पत्रों के प्रेमपूर्वक उत्साह भरे उत्तर आने लगे जिससे शिमला के गौड़ भाइयों को अपने परिश्रम का फल सफल होने की पूर्ण आशा होने लगी ।

सन् १८९६ ई०

निदान २८ और २९ दिसम्बर सन् १८९६ ई० को इस आपकी जातीय महासभा का प्रथम वार्षिकोत्सव भारतवर्ष के प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थान कुरुक्षेत्र जिला करनाल में एकत्रित हुआ । गौड़ कुल भूषण विद्याविशारद डासना निवासी श्रीमान् प० श्रीधर जी महाराज शास्त्री इस महोत्सव के सभापति निर्वाचित हुए और श्री० प० रामचन्द्र जी बी० ए० जगाधरी निवासी को समस्त महानुभावों ने महासभा का महामन्त्री निर्वाचित किया । दो दिन तक बड़े प्रेम और उत्साहसे यह महोत्सव होता रहा जिसमें गौड़ जगति के हित के अनेक प्रस्ताव पास हुए जो कुरीतियों के संशोधन और विद्या प्रचार के सम्बन्ध में थे ।

महासभा के प्रबन्ध के लिये एक कार्यकारिणी सभा बनायी गयी कि जो वर्ष भर तक महासभा का कार्य सम्पादन करती रहे और श्रीमान् प०जयदयालुसिंह जी महाराज-ऑनरेरी मजिस्ट्रेट सबरजिस्ट्रार जगाधरी ज़ि०अम्बाला प्रधान नियुक्त हुए, महामन्त्री के पद पर श्रीमान् प० रामचन्द्र जी महाराज बी० ए० ही नियुक्त रहे और महासभा का कार्य बड़ी उत्तमता से होने लगा ।

सन् १८९७ ई०

महासभा का दूसरा वार्षिकोत्सव ता० २७-२८ दिसम्बर सन् १८९७ ई० को श्रीमान् विद्याविशारद पूज्य प० श्रीधर जी महाराज शास्त्री डासना निवासी के सभा-

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पतित्व ही में अम्बाला शहर में मनाया गया। यद्यपि इस अवसर पर शेखूपुरा रियासत के गौड़ कुल भूषण श्रीमान् राजा हरवंशसिंह साहब भी पधारे थे और अधिकांश गौड़ भाइयों ने श्रीमान् राजा साहब को सभापति मञ्च पर विराजने का प्रस्ताव पेश किया भी था, परन्तु श्रीमान् राजा साहब ने शास्त्री जी के सामने सभापति बनना स्वीकार नहीं किया। अतः यह वार्षिकोत्सव भी शास्त्री जी महाराज के सभापतित्व में हुआ और वर्ष भर तक कार्यकारिणी सभा के प्रधान भी गत वर्ष के श्री० पण्डित जयदयालुसिंह जी ऑनरेरी मजिस्ट्रेट जगाधरी ही निर्वाचित हुए तथा महामन्त्री श्रीमान् प० रामचन्द्र जी बी० ए० ही सर्वसम्मति से नियत रक्खे गये। इस महोत्सव में भी जात्युन्नति के कई प्रस्ताव पास हुए और इसी महोत्सव में महासभा के नाम के साथ "कुरुक्षेत्र" लगाया गया क्योंकि महासभा का नियमानुसार जन्म कुरुक्षेत्र में माना गया।

सन् १८९८ ई०

महासभा का तीसरा वार्षिकोत्सव ता० २८ और २९ दिसम्बर सन् १८९८ ई० को भटियाना निवासी गौड़ वंश के गौरव श्रीमान् पूज्यवर श्री १०८ प० हरियशराम जी शास्त्री के सभापतित्व में मेरठ शहर में हुआ। जाति हित के लिए कई एक सुन्दर प्रस्ताव पास हुए। वर्ष भर के कार्य निमित्त कार्यकारिणी सभा के प्रधान मिश्रवंश उजागर सम्भल के प्रसिद्ध रईस श्रीमान् मिश्र शीतलप्रसाद जी महाराज और महामन्त्री श्री० प० रामचन्द्र जी बी० ए० जगाधरी निवासी निर्वाचित हुए।

सन् १८९९ ई०

इस वर्ष महासभा का चौथा सालाना जलसा मुरादाबाद में होना निश्चय हुआ था परन्तु कारणवशात् इस वर्ष महोत्सव यहाँ न हो सका। उसके बाद जगाधरी और वृन्दावन से महोत्सव के निमन्त्रण मिले मगर समय थोड़ा रह जाने से उक्त स्थानों में भी महोत्सव का प्रबन्ध न हो सका इस प्रकार इस वर्ष महोत्सव स्थगित रहा।

सन् १९०० ई०

उपरोक्त कारण से महासभा का चौथा वार्षिकोत्सव ता० २६-२७ दिसम्बर सन् १९०० ई० को भारत के पवित्र तीर्थस्थान, पतितपावनी भागीरथी के तट श्री हरिद्वार में हुआ। रुड़की निवासी श्री १०८ श्रीमान् प० श्रीनिवास जी महाराज शास्त्री महोत्सव के सभापति हुए। इसमें जाति हित के लिए अनेक उपयोगी प्रस्ताव

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पास हुए। वर्ष भर तक महासभा के कार्य निमित्त कार्यकारिणी सभा के सभापति श्रीमान् मिश्र शीतलप्रसाद जी महाराज रईस सम्भल और महामन्त्री श्रीमान् पण्डित रामचन्द्र जी बी० ए० जगाधरी निवासी नियुक्त हुए।

सन् १९०१ ई०

महासभा का पाँचवा वार्षिकोत्सव ता० २५–२६ दिसम्बर सन् १९०१ ई० को देहली में परिव्राजकाचार्य श्रीमान् प० सेवकराम जी महाराज शास्त्री मेरठ निवासी के सभापतित्व में एकत्रित हुआ और कई एक उपयोगी प्रस्ताव स्वीकृत हुए जिनमें एक प्रस्ताव यह भी था कि गौड़ महासभा के प्रबन्ध से लाहौर, देहली मेरठ और पटियाले में गौड़ विद्यार्थियों के रहने के लिये "गौड़ाश्रम" बनाये जावें। वर्ष भर तक प्रबन्ध के लिए कार्यकारिणी सभा के सभापति श्रीमान् मिश्र शीतलप्रसाद जी महाराज रईस सम्भल और महामन्त्री श्री०प०रामचन्द्रजी बी०ए०जगाधरी निवासी हुए।

सन् १९०२ ई०

महासभा का छठा वार्षिकोत्सव ता० २५।२६ दिसम्बर सन् १९०२ को मुरादाबाद में हुआ जिसमें काशी निवासी विद्वद्वर श्रीमान् प०राममिश्रजी शास्त्री सभापति निर्वाचित हुये। इस महोत्सव में भी गौड़ ब्राह्मण जाति की उन्नति के लिये कई एक उपयोगी प्रस्ताव पास हुये और काशी में गौड़ाश्रम बनाये जाने का प्रस्ताव पुनः स्वीकृत हुआ। वर्ष भर के लिये जो कार्य्यकारिणी समिति प्रबन्धार्थ बनती है उस के सभापति श्रीमान् मिश्र शीतलप्रसाद जी महाराज रईस सम्भल और श्री पं० रामचन्द्र जी बी० ए० रईस जगाधरी महामन्त्री निर्वाचित हुये।

सन् १९०३ ई०

महासभा का सातवां वार्षिकोत्सव ता० २६ २७ दिसम्बर सन् १९०३ को योगीराज भगवान् कृष्ण की जन्मभूमि श्री मथुरापुरी में बड़ी धूम धाम से हुआ। वृन्दावन निवासी श्रीमान् गोस्वामी प्रेमलाल जी महाराज ने सभापति का आसन ग्रहण किया। कई एक जाति हित के प्रस्ताव पास हुये। जिनमें महासभा की रजिष्ट्री कराये जाने का प्रस्ताव भी पास हुआ। गौड़ और सनाढ्यों के एक होने के लिये १० सज्जनों की एक उपसमिति बनाई गई जो वर्ष भर तक तहकीकात करके अपनी रिपोर्ट पेश करे श्रीमान् मिश्र लालाराम जी रईस रांदोर जिला करनाल कार्य्यकारिणी सभा के प्रधान और श्री पं०रामचन्द्रजी बी० ए० रईस जगाधरी महामन्त्री निर्वाचित हुये।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सन् १९०४ ई०

महासभा का आठवां वार्षिकोत्सव ता० २६। २७ दिसम्बर सन् १९०४ ई० को देहलीमें प्रसिद्ध औत्रिय वंशके भूषण बिजनौर निवासी श्रीमान् सोती पं०हरवंशलालजी महाराज रईस के सभापतित्व में हुआ इस वर्ष कोषवृद्धि के लिये चार आना फंड नियत किया गया और १०हजार टिकट छपवाये गये। इसी वर्षसे कार्य्यकारिणी सभा के अन्तर्गत एक प्रबन्धकारिणी सभा का आयोजन हुआ। वर्ष भर तक कार्य्य निमित्त मैनेजिंग कमेटी के सभापति श्रीमान् पं० हरवंशलाल जी रईस-बिजनौर और महा-मन्त्री पं० रामचन्द्र जी बी० ए० रईस जगाधरी नियत हुये।

सन् १९०५ ई०

महासभा का नवां वार्षिकोत्सव ता० २६। २७ दिसम्बर सन् १९०५ को काशी (बनारस) में हुआ। श्रीमान् महामहोपाध्याय श्री० १०८ प० राममिश्र जी शास्त्री महाराजने सभापति मंच को सुशोभित किया। इसमें भी अनेक सुन्दर २ प्रस्ताव पास हुये। गौड़ाश्रम-काशी में बनाये जाने को १५ सज्जनों की एक कमेटी बनी। अब से आगे महासभा का वार्षिकोत्सव ईस्टर की छुट्टियों में किये जाने का प्रस्ताव पास हुआ। लड़कोंके विवाहकी अवस्था १८वर्ष नियतकी गई। वर्ष भरतक कार्य्य करने के लिये मैनेजिंग कमेटी के सभापति श्रीमान् सोती हरवंशलाल जी महाराज रईस बिजनौर और महामंत्री श्री० प० रामचन्द्रजी बी०ए० रईस जगाधरी निर्वाचित हुए।

सन् १९०६ ई०

महासभा का १०वां वार्षिकोत्सव ता० ३० और ३१ मार्च सन् १९०६ ई० को महासभा के जन्मदाता श्रीमान् प० रामचन्द्र जी बी० ए० महामंत्री की जन्मभूमि जगाधरी जिला अम्बाले में हुआ। इस वर्ष वार्षिकोत्सव के सभापति श्रीमान् पं० श्रीनिवास जी शास्त्री रुड़की निवासी निर्वाचित हुये। कई एक उपयोगी प्रस्ताव पास हुये। आगरा निवासी पं० घासीराम जी महाराज ने जो मकान महासभा को दान किया था उस का बेच देना निश्चय हुआ। और उस रुपये के व्याज से जो मकान बेचने से आये एक छात्रवृत्ति घासीराम छात्रवृत्ति के नाम से सदैव दी जानी मंजूर हुई। निदान वह मकान १०००) रुपये में बिका जिसके व्याजसे५रु० मासिक की छात्रवृत्ति देना आरम्भ हुई। इस वर्ष कार्यकारिणी सभा के प्रधान श्रीमान् प० अमोरसिंह जी महाराज एकस्ट्रा असिस्टेण्ट कमिश्नर करनाल और महामंत्री श्र० प० श्रीराम जी शर्मा मुजफ्फरनगर वाले बनाये गये।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सन् १६०७ई०

महासभा का ११ वाँ वार्षिकोत्सव ता० १८ १६, अप्रेल सन् १६०८ को बुलन्द-शहर में हुआ। वृन्दावन निवासी सार्वभौम श्रीमान् पं० मधुसूदन जी गोस्वामी महाराज सभापति बनाये गये। जाति हित के अनेक प्रस्ताव पास हुये । महासभा का महोत्सव ईस्टर की छुट्टियों के बजाय बड़े दिन की छुट्टियों में दिसम्बर मास ही में हुआ करे यह फिर स्वीकृत हुआ। मैनेजिंग कमेटीके सभापति श्रीमान् पं० अमीरसिंह जी महाराज एकस्ट्रा असिस्टेन्ट कमिश्नर करनाल और महामंत्री श्री० पं० रामचन्द्र जी बी० ए० रईस जगाधरी निर्वाचित हुये ।

सन् १६०८ ई०

महासभा का १२वाँ वार्षिकोत्सव ता० २६।२७दिसम्बर सन् १६०८ को कानपुर में हुआ।वृन्दावन निवासी श्रीमान् पूज्य गोस्वामी श्री मधुसुदनलालजी महाराज सार्व भौम सभापति बनाये गये। इस महोत्सव में अनेक जाति हित के प्रस्ताव पास हुये। यथाः— (१) उपदेशकों द्वारा गौड़ ब्राह्मणों की एक सूची बनाई जावे (२) एक स्त्री के होते हुये कोई गौड़ भाई दूसरा विवाह न करे (३)गौड़ ब्राह्मणों को जमीदार जातियों में सम्मिलित कराने को गवर्नर पंजाब की सेवा में डेपूटेशन भेजा जावे (४)कोई गौड़ भाई कन्या विवाह में वर से रुपये न ले, मैनेजिंग कमेटी के प्रधान और महामंत्री गत वर्ष के ही दोनों महानुभाव रहे ।

सन् १६०६ई०

महासभा का १३ वाँ वार्षिकोत्सव ता० २५। २६ दिसम्बर सन् १६०६ ई० को रोहतक में हुआ। श्रीमान् परमहंस परिव्राजकाचार्य श्री १०८ स्वामी विमलानन्द जी सरस्वती इस महोत्सव के सभापति बनाये गये। जातिहित के लिये अनेक प्रस्ताव पास हुये। सब स्थानों की धड़ेवन्दी और थोकवन्दी तोड़ने का प्रस्ताव भी पास हुआ। १२ वर्ष से कम अवस्था की कन्या का विवाह गौड़ ब्राह्मणों में नही होना चाहिये यह प्रस्ताव भी पास हो गया और १८ वर्ष से कम लड़के का विवाह न हो। वर्ष भरके प्रबन्धके लिये मैनेजिंग कमेटीके सभापति श्रीमान् प० अमीरसिंहजी ई० ए०सी०करनाल और महामंत्री श्रीरामचन्द्रजी बी०ए० रईस जगाधरी निर्वाचित हुये।

सन् १६१० ई०

महासभा का १४ वां वार्षिकोत्सव ता० १५।१६ अप्रेल सन् १६११ को अजमेर शहर में हुआ। आरा (बिहार) निवासी श्री० पं० गोपीनाथ जी-सब जज-आरा

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महोत्सव के सभापती निर्वाचित हुऐ । बहुत से प्रस्ताव पास हुए । मैनेजिंग कमेटी के सभापती श्री० पं० अमीरसिंहजी महाराज ई० ए०सी० और महामंत्री पं० रामचन्द्र जी बी० ए० निर्वाचित हुए ।

सन् १९११ ई०

महासभा का १५ वां वार्षिकोत्सव ता० ६ और ७ अप्रेल सन् १९१२ को मुज़फ्फर नगर में हुआ । सभापती का आसन गौड़ कुल भूषण शेखपुरा धीश श्रीमान् राजा पं० फतहसिंह जी महाराज ने सुशोभित किया वर्ष भर के प्रबन्ध के लिये मैनेजिंग कमेटी के सभापति श्रीमान् पं० रामचन्द्र जी बी०ए०-रईस जगाधरी और महामंत्री श्रीमान् पं० रामजी लालजी-वकील-मेरठ नियुक्त हुए ।

सन् १९१२ ई०

महासभा का १६ वां वार्षिकोत्सव ता० २८ और २९ दिसम्बर सन १९१२ को करनाल में हुआ । श्रीमान् गौड़ कुल भूषण विद्वद्वर श्री० पं० हरनाम दत्तजी शास्त्री जगाधरी निवासी सभापति बनाये गये बहुत से प्रस्ताव जात्युन्नति के पास हुए । गौड़ जाति का इतिहास बनने का प्रस्ताव भी स्वीकृति हुआ । १६ वर्षका हिसाब ओडिट होनेको ओडीटर नियत हुए जिन्होंने शिमले में १ मासतक हिसाब जांचकर ठीक किया । इसवर्ष मैनेजिंग कमेटी के सभापती श्रीमान् सोती पं० रघुवंश लालजी सबजज मेरठ और महामंत्री श्रीमान् पं० मन्साारामजी शर्मा-जनरेल पोस्ट आफिस अम्बाला नियत हुए ।

सन् १९१३ ई०

महासभाका १७ वां वार्षिकोत्सव ता० २६ २७ और २८ दिसम्बर सन् १९१३ को सहारनपुर में हुआ वृन्दावन निवासी श्रीमान् पूज्य श्री१०८ गोस्वामी मधुसूदन लाल जी महाराज-सभापति निर्वाचित हुए इस वर्ष भी कई प्रस्ताव उपयोगी पास हुए जैसे गौड़ ब्राह्मणों को फौजों में भरती किया जावे (२) महासभा अपना निजका प्रेस खोले (३) गौड़ जाति के इतिहास के लिये १६० रु० पारितोषिक दिया जाना पास हुआ (४) आगरे में गौड़ बोर्डिंगहाउस खोलाजावे । मैनेजिंग कमेटी के सभापति श्रीमान् सोती पं० रघुवंश लालजी एम ए० जज और महामंत्री श्री० पं० ज्योतीप्रसाद जी एम० ए० एल-एल० बी०-वकील जगाधरी नियत हुए ।

सन् १९१४ ई०

महासभाका १८ वां वार्षिकोत्सव ता० २९,३० और ३१ दिसम्बर सन १९१४को

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आगरे में हुआ कविसम्राट श्री० पं० किशोरीलाल जी गोस्वामी-काशी निवासी ने सभापति का आसन सुशोभित किया अनेक जाति हितके प्रस्ताव पास हए। जिनमें मुख्य २ यह हैं (१) गौड़ और सनाढ्यों की महासभायें एक होकर जात्युन्नित करे (२) गौड़ भाई हिन्दी में अपना कार्य्य व्यवहार करे (३) जो अक्सर ब्राह्मण अपने को गौड़ ब्राह्मण ज़ाहिर करते हैं उनकी तहकीकात को एक कमेटी बनी (४) गौड़ भाई अपने मुकद्दमों को अदालत में न लजाकर पंचायतों द्वारा तै किया करें आदि। मैनेजिंग कमेटी के सभापति श्री० सोती पं० रघुवंश लालजी महाराज एम० ए० जज और महामंत्री श्री० पं० प्रभुदयाल जी शर्मा बी० ए० एल० एल० बी० वकील सोनीपत निश्चित हुए।

सन् १९१५ ई०

महासभा का १९ वार्षिकोत्सव ता० २६, २७ दिसम्बर सन् १९१५ ई० को हिसार में हुआ। महोत्सव के सभापति श्रीमान् राजा पं०फतहसिंहजी लाहौर (शेखूपुराधीश) बनाये गये। इस महोत्सव में अनेक जाति हित के सुन्दर सुन्दर प्रस्ताव पास हुए। गौड़ाश्रम लाहौर का गौड़ महासभा से क्या सम्बन्ध है, इस निर्णय को ५ मेम्बरों की एक कमेटी बनायी गयी। अगले वर्ष के लिये मैनेजिङ्ग कमेटी के सभापति श्री० सोती प० रघुवंशलाल जी एम० ए० जज और महामन्त्री श्री० प० रामचंद्र जी बी० ए० रईस जगाधरी बनाये गये।

सन् १९१६ ई०

महासभा का बीसवाँ वार्षिकोत्सव ता० ३०-३१ दिसम्बर सन् १९१६ ई० को नारनौल (रियासत पटियाला) में हुआ। गौड़ यशावतंस बिजनौर निवासी श्री० सोती पं० रघुवंशलाल जी एम० ए० जज साहबने सभापति मञ्च को सुशोभित किया अनेक जात्युन्नति के प्रस्ताव पास हुए। मैनेजिङ्ग कमेटी के सभापति श्रीमान् सोती पं० रघुवंशलाल जी एम० ए० जज साहब और महामन्त्री श्री० प० रामचन्द्र जी बी० ए० रईस जगाधरी निर्वाचित हुए।

सन् १९१७ ई०

महासभा का २१ वां वार्षिकोत्सव ता० २४, २५ और २६ दिसम्बर सन् १९१७ ई० को रिवाड़ी जिला गुड़गांव में हुआ। श्रीमान् राजा पं० फतहसिंह जी शर्मा शेखूपुराधीश लाहौर महोत्सव के सभापति निर्वाचित हुए। महोत्सव में कई एक जाति हित के प्रस्ताव पास हुए। अगले वर्ष के लिये मैनेजिङ्ग कमेटी के सभापति श्री० पं० सोती रघुवंशलाल जी एम० ए० जज साहिब और महामन्त्री श्रीमान् पं० रामचन्द्रजी बी० ए० रईस जगाधरी बनाये गये।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सन् १९१८ ई०

महासभा का २२ वां वार्षिकोत्सव ता० २४, २५ और २६ दिसम्बर सन् १९१८ ई० को देहली में हुआ सभापति का आसन श्री० पं० राजा फतहसिंह जी शर्मा – शेखुपुराधीश–लाहौर ने सुशोभित किया कई एक उपयोगी प्रस्ताव पास हुए स्वनाम धन्य श्री० पं० ऋ षरामजी महाराज रईस आज़म लाहौर को २५०००) रु० की लागत से श्री जनार्दन गौड़ाश्रम लाहौर बनादेने पर हार्दिक धन्यवाद दिया गया। आगामी वर्ष को मैनेजिंग कमेटी के सभापति श्री० पं० रामचन्द्र जी बी० ए० रईस जगाधरी और महामन्त्री श्री० रायसाहिब पं० प्रभुदयाल जी शर्मा बी० ए० एल-एल० बी० वकील सोनीपत नियत हुए।

सन् १९१९ ई०

महासभा का २३ वां वार्षिकोत्सव ता० २९, ३० और ३१ दिसम्बर सन् १९१९ को अम्बाले शहर में हुआ। सभापति का आसन श्री० गोस्वामी पं० मधुसूदनलाल जी महाराज वृन्दावन निवासी ने ग्रहण किया। कई एक उपयोगी प्रस्ताव पास हुए गौड़ ब्राह्मण सेन्ट्रल हाई स्कूल रोहतक पर महासभा का संरक्षक भाव रक्खा जाना पास हुआ। अगले साल के लिये मैनेजिंग कमेटी के सभापति श्रीमान् रायसाहिब पं० नन्दकिशोर जी शर्मा–ज़िला बाँद नियत हुए और महामन्त्री श्री० रायसाहिब पं० प्रभुदयाल जी शर्मा बी० ए० एल–एल० बी० वकील सोनीपत नियुक्त हुए।

सन् १९२० ई०

महासभा का २४ वाँ वार्षिकोत्सव ता० २५, २६ मार्च सन् १९२१ ई० को खुर्जा जिला बुलन्दशहर में हुआ। महोत्सव के सभापति श्रीमान् पूज्यपाद जगद्गुरु श्री महाराज द्वारिका मठाधीश निर्वाचित हुए। आचार विचार सम्बन्धी कई प्रस्ताव गौड़ ब्राह्मण जाति को पवित्र बनाने के लिये पास हुए। आगामी वर्ष की मैनेजिंग कमेटी के सभापति श्री० पं० छबीलेलाल जी वृन्दावन और महामन्त्री श्री० रा०सा० पं० प्रभुदयाल जी शर्मा बी० ए० एल—एल० बी० एक्स्ट्रा असिस्टेंट कमिश्नर पंजाब नियत हुए।

सन् १९२१ ई०

महा सभा का २५ वाँ वार्षिकोत्सव ता० १५। १६ अप्रेल सन् १९२२ को श्रीवृन्दावन धाम में हुआ। महोत्सव के सभापति श्रीमान् पं० ज्येष्ठमाधवाचार्य जी

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महाराज मथुरानिवासी निर्वाचित हुए गौड़ाश्रम लाहौर और श्री० पं० ऋषिरामजी महाराज के बीच में जो मुक़द्दमा चल रहा है उसके लिये ६ सभासदों की एक कमेटी बनाई गई कि उसको तय करदे। मैनेजिंग कमेटी के सभापति श्री० गो० मधुसूदन लाल जी महाराज और महामंत्री श्री० पं० शम्भूदत्त जी शर्मा बी० ए० एल-एल०बी० वकील बुलन्दशहर निर्वाचित हुए।

सन् १९२२ ई०

महासभा का २६ वाँ वार्षिकोत्सव ता० २९, ३० और ३१ मार्च सन् १९२३ को पानीपत जिला करनाल में हुआ। इस महोत्सव के सभापति श्रीमान् रायबहादुर चौधरी पं० रघुराजसिंह जी-रईस आज़म शिकारपुर ज़िला बुलन्दशहर थे। इस महोत्सव में महासभा के जन्मदाता श्री० पं० रामचन्द्र जी बी० ए० रईस जगाधरी की अकस्मिक मृत्यु पर बहुत शोक प्रकट किया गया और उनका कोई स्मारक स्थापित करनेके लिये ५ सज्जनों की १ कमेटी बनाई। प्रबन्धकारिणी समितिके सभापति श्री० रायसाहिब पं० प्रभुदयाल जी शर्मा बी० ए० सबजज देहली और महामन्त्री श्री० पं० शम्भूदत्तजी शर्मा बी० ए०-एडवोकेट-बुलन्दशहर बनाये गये।

सन् १९२४ ई०

महासभा का २७ वाँ वार्षिकोत्सव ता० २६, २७ और २८ दिसम्बर सन् १९२४ को बुलन्दशहर में हुआ। महोत्सव के सभापति श्री० पं० छबीलेलाल जी गोस्वामी वृन्दावन निर्वाचित हुए। इस महोत्सवमें "गौड़ ब्राह्मण विधवाश्रम" स्थापित करनेका प्रस्ताव पास हुआ। बरात ५० आदमियों से अधिक न जानी चाहिये और विवाह में किसी रस्म पर ५१) रु० से अधिक नक़द रुपया न दिये जाने के प्रस्ताव भी पास हुए। अगले वर्ष के लिये प्रबन्धकारिणी सभा के श्री० रायसाहिब पं० प्रभुदयाल शर्मा बी० ए० एल-एल० बी० एकस्ट्रा असिस्टेन्ट कमिश्नर मोन्ट गुमरी सभापति और श्रीमान् प० रामप्रसाद जी शर्मा मुख्तार बुलन्दशहर महामन्त्री निर्वाचित हुए।

सन् १९२५ ई०

महासभा का २८ वां वर्षिकोत्सव ता० २४, २५ और २६ दिसम्बर सन् १९२५ ई० को अम्बाला छावनी में हुआ जिसके सभापति सागर (सी० पी०) निवासी श्री० पं० जगन्नाथ प्रसाद जी पचौली-गवर्नमेंट पेन्शनर निर्वाचित हुए। इस महोत्सव में अम्बाला ज़िले के गौड़ भाइयों को भी जमीदार जातियों में माने जाने के लिये प्रस्ताव पास हुआ। अगले वर्ष के लिये प्रबन्धकारिणी सभा के श्री० रायसाहब पं० प्रभुदयाल जी शर्मा बी० ए० एल-एल० बी०, ई० ए० सी० अम्बाला सभापति और श्री० प०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जगन्नाथ जी कौशल एम० ए० एल-एल० बी० प्लीडर अम्बाला छावनी महामन्त्री निर्वाचित हुए।

सन् १९२६ ई०

महासभा का २९ वां वार्षिकोत्सव ता० २९, ३० और ३१ दिसम्बर सन् १९२६ को भिवानी जिला हिसार में हुआ। इस महोत्सव के सभापति महासभा के परम हितैषी स्वर्गीय श्रीमान् पं० शीतलप्रसाद जी महाराज सम्भल के सुयोग्य पुत्र गौड़ कुल कमल दिवाकर श्रीमान् रायबहादुर मिश्र पं० बनारसीप्रसादजी महाराज बी०ए० एडवोकेट –मुरादाबाद निर्वाचित हुए। इस महोत्सव में कन्या और पुत्र के विवाह अवसरों पर कई एक सुन्दर नियम पास हुए और सैनिक विभाग में पुनः गौड़ ब्राह्मणों को प्रविष्ट कराने के लिये प्रस्ताव और उपसामतियां बनायी गई हैं। इसी वर्ष महासभा के प्रबन्ध और निर्माण सम्बन्धी नियम परिवर्तित हुए कि जिनकी वजह से इस वर्ष से जो महानुभाव महोत्सव के सभापति होंगे वेही वर्षभर तक कार्य कारिणी सभा के भी सभापति समझे जावेंगे अतः श्रीमान् रायबहादुर मिश्र जी महाराज ही वर्षभर के लिये मैनेजिंग कमेटी के सभापति नियत रहे। और श्री० पं० जगन्नाथ जी कौशल एम० ए० एल—एल० बी० प्लीडर अम्बाला छावनी महामन्त्री रहे।

सन् १९२७ ई०

महासभाका ३० वां वार्षिकोत्सव ता० ३०और३१ दिसम्बर सन् १९२७ ई०को मुरादाबाद में हुआ इस महोत्सव के सभापति श्रीमान् रायबहादुर पं० लक्ष्मीनारायण जी शर्मा बी० ए० बार—एट—ला० प्राईवेट सेक्रेटरी महाराज जम्बू एण्ड काश्मीर निर्वाचित हुए। इस महोत्सव में कई एक सुन्दर सुन्दर प्रस्ताव पास हुए। समस्त गौड़ जाति को १२ हल्कों में बाँट कर हल्के ओफीसर बनाये गये और नये ढङ्ग से काम शुरू हुआ। इस वर्ष महासभा के महामन्त्री श्री० पं० छबीलेलाल गोस्वामी वृन्दावन निवासी निर्वाचित हुए।

सन् १९२८ ई०

महासभा का ३१ वाँ वार्षिकोत्सव ता० २८, २९ और ३० दिसंबर सन् १९२८ को कलकत्ते में सम्पन्न हुआ। इस महोत्सव के सभापति व्याख्यान-वाचस्पति श्री० पं० दीनदयालु जी शर्मा झज्जर जिला रोहतक निवासी निर्वाचित हुए। इस वर्ष महोत्सव में मारवाड़ी गौड़ ब्राह्मण और बंगाली गौड़ ब्राह्मणों का आनन्द दायक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्मेलन हुआ। महाराष्ट्र के आद्यगौड़ और बंगाल के गौड़ाद्य वैदिक ब्राह्मणों के अनुसन्धान के लिये विशेष प्रबन्ध किया गया। इस वर्ष महासभा में सदैव की भांति धन संग्रहार्थ अपील नहीं हुई जिस से महासभा के कोष में एक पैसा भी नहीं आया इस वर्ष भी श्री० गोस्वामी छबीलेलाल जी ही महामन्त्री रहे परन्तु कारण विशेष से वे ता० २८।१०।२६ को इस पद से प्रथक किये गये और उनके स्थान पर श्री० डाक्टर पं० विश्वपाल जी शर्मा – मथुरा महोत्सव तक के लिये स्थानापन्न महामंत्री चुने गये।

सन् १९२९ ई०

महासभा का ३२ वां वार्षिकोत्सव ता० २५ और २६ जनवरी सन् १९३० को कुम्भ के पवित्र अवसर पर श्री तीर्थराज प्रयाग (इलाहाबाद) में हुआ। इस महोत्सव के सभापति श्रीमान् पं० ऋषिरामजी महाराज रईस आज़म--लाहौर निर्वाचित हुए। इस महोत्सव में सनाढ्य, चौरासिया पालीवाल ब्राह्मणों का गौड़ ब्राह्मणों के साथ रोटी बेटी होनेका प्रस्ताव पास हुआ। महाराष्ट्र के आद्य गौड़ और बंगाल के गौड़ाद्य वैदिक ब्राह्मण अ० भा० गौड़ ब्राह्मण महासभा में प्रतिनिधि बनने के हक़दार घोषित किये गये। महोत्सव के दूसरे दिन अपील के समय अपील कर्त्ता की असावधानी से महोत्सव में विघ्न पड़ गया जिससे महोत्सव की कार्यवाही सम्पूर्ण हुए बिना ही सभापति जी को महोत्सव भंग करना अतः पड़ा शेष कार्योंकी पूर्तिके लिए महासभाका

विशेष अधिवेशन

ता० १६ अप्रेल सन् ३० को मुरादाबाद में किया जाना निश्चित हुआ। श्रीमान् मिश्रवंश उजागर रायबहादुर पं० बनारसी प्रसाद जी बी० ए०–एडवोकेट के सुप्रबन्ध से विशेष अधिवेशन इतने आनन्द पूर्वक सम्पन्न हुआ जिसका वर्णन लेखनी से नहीं होसकता। इस वर्ष महासभा के महामंत्री श्रीमान् पं० केदारनाथजी शर्मा जो ऋषि-कुल हरिद्वार के मंत्री हैं निर्वाचित हुए। इस महोत्सवमें कार्य्यालयका सदा सदा के स्थाया रूप से किसी केन्द्र स्थान में रक्खा जाने का प्रस्ताव पास हुआ और फिलहाल एक साल के लिये मुरादाबाद में कार्य्यालय रक्खा जाना पास हुआ। कार्य्य को विधिवत् नियमानुसार चलाने के लिये एक वैतनिक मंत्री का प्रस्ताव पास हुआ। बजाय १५ मेम्बरों के २७ मेम्बरों की मैनेजिंग कमेटी निर्माण हुई।

निदान इसप्रकार आपकी इस जातीय महासभा की कार्य्य प्रणाली एक दम नवीन प्रकार से प्रारम्भ हुई कि जिससे इन ३।४ महीनों में ही महासभा के कार्य्य में आशातीत सफलता हुई है और देश में इस समय स्वराज्यकी धूम न मची होती तो यह ४ मासका कार्य्य ही आप लोगों को पिछले ३४ वर्ष से अधिक प्रतीत होता।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जगन्नाथ जी कौशल एम० ए० एल-एल० बी० प्लीडर अम्बाला छावनी महामन्त्री निर्वाचित हुए।

सन् १९२६ ई०

महासभा का २९ वां वार्षिकोत्सव ता० २९, ३० और ३१ दिसम्बर सन् १९२६ को भिवानी जिला हिसार में हुआ। इस महोत्सव के सभापति महासभा के परम हितैषी स्वर्गीय श्रीमान् पं० शीतलप्रसाद जी महाराज सम्भल के सुयोग्य पुत्र गौड़ कुल कमल दिवाकर श्रीमान् रायबहादुर मिश्र पं० बनारसीप्रसादजी महाराज बी०ए० एडवोकेट –मुरादाबाद निर्वाचित हुए। इस महोत्सव में कन्या और पुत्र के विवाह अवसरों पर कई एक सुन्दर नियम पास हुए और सैनिक विभाग में पुनः गौड़ ब्राह्मणों को प्रविष्ट कराने के लिये प्रस्ताव और उपसामतियां बनायी गई हैं। इसी वर्ष महासभा के प्रबन्ध और निर्माण सम्बन्धी नियम परिवर्तित हुए कि जिनकी वजह से इस वर्ष से जो महानुभाव महोत्सव के सभापति होंगे वेही वर्षभर तक कार्य कारिणी सभा के भी सभापति समझे जावेंगे अतः श्रीमान् रायबहादुर मिश्र जी महाराज ही वर्षभर के लिये मैनेजिंग कमेटी के सभापति नियत रहे। और श्री० पं० जगन्नाथ जी कौशल एम० ए० एल—एल० बी० प्लीडर अम्बाला छावनी महामन्त्री रहे।

सन् १९२७ ई०

महासभाका ३० वां वार्षिकोत्सव ता० ३०और३१ दिसम्बर सन् १९२७ ई०को मुरादाबाद में हुआ इस महोत्सव के सभापति श्रीमान् रायबहादुर पं० लक्ष्मीनारायण जी शर्मा बी० ए० बार—एट—ला० प्राईवेट सेक्रेटरी महाराज जम्बू एण्ड काश्मीर निर्वाचित हुए। इस महोत्सव में कई एक सुन्दर-सुन्दर प्रस्ताव पास हुए। समस्त गौड़ जाति को १२ हल्कों में बाँट कर हल्के ओफीसर बनाये गये और नये ढङ्ग से काम शुरू हुआ। इस वर्ष महासभा के महामन्त्री श्री० पं० छबीलेलाल गोस्वामी वृन्दावन निवासी निर्वाचित हुए।

सन् १९२८ ई०

महासभा का ३१ वाँ वार्षिकोत्सव ता० २८, २९ और ३० दिसंबर सन् १९२८ को कलकत्ते में सम्पन्न हुआ। इस महोत्सव के सभापति व्याख्यान-वाचस्पति श्री० पं० दीनदयालु जी शर्मा झज्जर जिला रोहतक निवासी निर्वाचित हुए। इस वर्ष महोत्सव में मारवाड़ी गौड़ ब्राह्मण और बंगाली गौड़ ब्राह्मणों का आनन्द दायक

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्मेलन हुआ। महाराष्ट्र के आद्यगौड़ और बंगाल के गौड़ाद्य वैदिक ब्राह्मणों के अनुसन्धान के लिये विशेष प्रबन्ध किया गया। इस वर्ष महासभा में सदैव की भांति धन संग्रहार्थ अपील नहीं हुई जिस से महासभा के कोष में एक पैसा भी नहीं आया इस वर्ष भी श्री० गोस्वामी छबीलेलाल जी ही महामन्त्री रहे परन्तु कारण विशेष से वे ता० २८।१०।२६ को इस पद से प्रथक किये गये और उनके स्थान पर श्री० डाक्टर पं० विश्वपाल जी शर्मा—मथुरा महोत्सव तक के लिये स्थानापन्न महामंत्री चुने गये।

सन् १९२९ ई०

महासभा का ३२ वां वार्षिकोत्सव ता० २५ और २६ जनवरी सन् १९३० को कुम्भ के पवित्र अवसर पर श्री तीर्थराज प्रयाग (इलाहाबाद) में हुआ। इस महोत्सव के सभापति श्रीमान् पं०ऋषिरामजी महाराज रईस आज़म--लाहौर निर्वाचित हुए। इस महोत्सव में सनाढ्य, चौरासिया पालीवाल ब्राह्मणों का गौड़ ब्राह्मणों के साथ रोटी बेटी होनेका प्रस्ताव पास हुआ। महाराष्ट्र के आद्य गौड़ और बंगाल के गौड़ाद्य वैदिक ब्राह्मण अ० भा० गौड़ ब्राह्मण महासभा में प्रतिनिधि बनने के हक़दार घोषित किये गये। महोत्सव के दूसरे दिन अपील के समय अपील कर्त्ता की असावधानी से महोत्सव में विघ्न पड़ गया जिससे महोत्सव की कार्यवाही सम्पूर्ण हुए बिना ही सभापति जी को महोत्सव भंग करना अतः पड़ा शेष कार्योंकी पूर्तिके लिए महासभाका

विशेष अधिवेशन

ता० १६ अप्रेल सन् ३० को मुरादाबाद में किया जाना निश्चित हुआ। श्रीमान् मिश्रवंश उजागर रायबहादुर पं० बनारसी प्रसाद जी बी० ए०-एडवोकेट के सुप्रबन्ध से विशेष अधिवेशन इतने आनन्द पूर्वक सम्पन्न हुआ जिसका वर्णन लेखनी से नहीं होसकता। इस वर्ष महासभा के महामंत्री श्रीमान् पं० केदारनाथजी शर्मा जो ऋषि-कुल हरिद्वार के मंत्री हैं निर्वाचित हुए। इस महोत्सवमें कार्य्यालयका सदा सदा के स्थाया रूप से किसी केन्द्र स्थान में रक्खा जाने का प्रस्ताव पास हुआ और फिलहाल एक साल के लिये मुरादाबाद में कार्य्यालय रक्खा जाना पास हुआ। कार्य्य को विधिवत् नियमानुसार चलाने के लिये एक वैतनिक मंत्री का प्रस्ताव पास हुआ। बजाय १५ मेम्बरों के २७ मेम्बरों की मैनेजिंग कमेटी निर्माण हुई।

निदान इसप्रकार आपकी इस जातीय महासभा की कार्य्य प्रणाली एक दम नवीन प्रकार से प्रारम्भ हुई कि जिससे इन ३।४ महीनों में ही महासभा के कार्य्य में आशातीत सफलता हुई है और देश में इस समय स्वराज्यकी धूम न मची होती तो यह ४ मासका कार्य्य ही आप लोगों को पिछले २४ वर्ष से अधिक प्रतीत होता।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उपरोक्त ३४ वर्ष के प्रस्तावों में अधिकार प्रस्ताव विद्याप्रचार, कुरीति संशोधन और संस्कारों के सुधार तथा गौड़ ब्राह्मणों की आर्थिक दशा कैसे सुधर सकती है इन्हीं उपयोगी सम्बन्धों के हैं कि जिनके कारण से जाति में प्रेम एकता, परस्पर सहानुभूति, संगठन आदि कार्यों में बहुत बड़ी उन्नति हुई है। इन प्रस्तावों के कारण प्रायः स्थानों में विद्याप्रचार, संस्कार सुधार और कुरीतियों के बन्द होने का कार्य्य संतोष जनक हुआ है। विद्या की उन्नति का ज्वलन्त प्रमाण यही है कि आज से ३४ वर्ष पहिले गौड़ जाति में इतने विद्यावान और महान् पुरुष दृष्टि गोचर नहीं होते थे कि जितने आज भगवान की कृपा से मौजूद हैं हमें यह प्रकट करते हर्ष होता है कि आज हमारी गौड़ जाति में कलेक्टर, जज, डिप्टीकलेक्टर, एडवोकेट, बैरिस्टर वकील, डाक्टर, एंजीनियर रेलवे के उच्च पदाधिकारी, पुलिस इन्स्पेक्टर पुलिस सुपरटेंडेंट, एग्जीक्यूटिव औफिसर, प्रिंसिपल हेडमास्टर और इन्स्पेक्टर आफ स्कूल्स शास्त्री, आचार्य्य आयुर्वेदाचार्य्य और ज्योतिषाचार्य्य तक मौजूद हैं।

संस्कारों के ठीक समय पर और सांगोपांग रीति से किये जाने पर भी विशेष ध्यान गौड़ महानुभाव रखते हैं। कुरीतियों का बहिष्कार सर्वांश में नहीं तो अधिकांश में तो हो ही गया है और अब किसी भी स्थान की बिरादरी यथाशक्ति कुरीति प्रचार की ओर अग्रसर नहीं होती। यह सब आपकी इस महासभा के सतत उद्योग का ही फल है।

दूसरा बड़ा लाभ जो महासभा से गौड़ जाति को पहुंचा है वह एक दूसरे का परिचय और दूर दूर प्रांत के भाइयों की जानकारी का होजाना है आज से ३४ वर्ष पहिले कि जब महासभा का जन्म नहीं हुआ था पंजाब के गौड़ भाई यू०पी० के गौड़ भाइयों को नहीं जानते थे। और यू०पी० के गौड़ भाई पंजाब में ब्राह्मणों का होनाही नहीं समझते थे। महासभा के प्रभाव से आज पंजाब, यू०पी०, बंगाल, आसाम, बिहार, सी०पी० राजपूताना, सेन्ट्रल इण्डिया, बरार, बम्बई, और मदरास ही तक नहीं बल्कि भारतवर्ष से बाहर ब्रह्मा और पोर्चगीज़ इण्डिया के गोआ टापू तक में अपने भाइयों का पता लगा है और उनसे पत्र व्यवहार, प्रेम सहानुभूति और आहार व्यवहार का मार्ग खुलगया है।

महासभा ने कार्य्य कोविस्तार से फैलाने और उसे उन्नति की पराकाष्ठा पर पहुंचाने के लिये प्रारम्भ से ही उपदेशक, समाचारपत्र और कार्य्यालय की सुव्यवस्था पर ध्यान दिया परन्तु वह सदैव धनाभाव के कारण उतना ही प्रबन्ध कर सकी कि जितना उसके पास धन था और अधिकतर कार्य्य अवैतनिक कार्य्यकर्ताओं ही पर निर्भर रहा। जो आपको आगे चलकर विदित होगा।

उपदेशक

सन् १८९७ में सिर्फ श्री० पं० वासुदेवजी शर्मा उपदेशक महा सभा एकही थे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सज्जन नियत किये गये। सन् १८९८ ई० में श्री०पं० आत्मारामजी और पं०शिवरामजी दो उपदेशक नियत हुए। सन् १८९९ और १९०० दोनों वर्ष भी यही दोनों उपदेशक महासभा का प्रचार और उपदेश करते रहे।

सन १९०१ में भी उक्त दोनों उपदेशक ही वैतनिक रूप से महासभा का प्रचार कार्य्य करते रहे।

सन् १९०२ में केवल पं० शिवराम जी उपदेशक रहे और इन्हीं ने महासभा का प्रचार कार्य्य किया।

सन् १९०३ में श्री०पं० शिवरामजी और पं० जयदेवजी शर्मा उपदेशक पद पर कार्य्य करते रहे।

सन् १९०४ में भी उपरोक्त दोनों उपदेशक ही बदस्तूर काम करते रहे।

सन् १९०५ में भी उपरोक्त दोनों उपदेशकही बदस्तूर काम करते रहे २० नवम्बर सन् १९०७ में पं० जयदेव जी शर्मा अलग होगये और १० दिसम्बर सन् १९०७ से पं० चुन्नीलाल जी शर्मा इनकी जगह पर नियुक्त हुए।

सन् १९०८ में भी श्री० पं० शिवराम और पं० चुन्नीलाल उपदेशकी का काम करते रहे।

सन् १९०९ में भी उक्त दोनों उपदेशक ही महासभा का कार्य करते रहे। वार्षिकोत्सव रोहतक के अवसर पर तीसरे उपदेशक पं० हरद्वारीलाल जी की और नियुक्ति हुई।

सन् १९१० में पं० शिवरामजी, पं० चुन्नीलाल जी और पं० हरिद्वारीलाल जी तीन उपदेशक रहे जिनमें पं० चुन्नीलाल जी ६॥ महीने बीमार रहे और पं० हरिद्वारी लाल जी ४ महीने कलकत्ते महोत्सव का प्रबन्ध करने को ठहरे रहे और फिर भी जलसा कलकत्ते में न हुआ।

सन् १९११ में पं० शिवराम जी, पं० जगदीशप्रसाद जी, पं० चुन्नीलाल जी और पं० हरफूलसिंह जी ने कार्य किया। इसी वर्ष में पं० शिवरामजी, पं० चुन्नीलाल जी ने त्यागपत्र देदिया केवल पं० जगदीशप्रसाद और पं०हरफूलसिंह दो उपदेशक ही काम करते रहे। सन् १९१२ में केवल जगदीशप्रसाद ही उपदेशक पद पर कार्य करते रहे। सन् १९१३ और १९१४ में पं० जगदीश प्रसाद और पं० डालचन्द तथा पं० हरफूलसिंह उपदेशक गण प्रचार करते रहे।

सन् १९१५ में भी पं० जगदीशप्रसाद और पं० डालचन्द ही वैतनिक उपदेशक रहे।

सन् १९१६ और १९१७ में केवल पं० रामचन्द्रजी शर्मा ने प्रचार कार्य किया।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सन् १९१८ में कोई उपदेशक नहीं रहा पं०उमादत्तजी शर्मा क्लर्क द्वारा ही कुछ भ्रमण कराया गया सन् १९१९ में फिर पं० जगदीशप्रसाद जी उपदेशक ने वैतनिक रूप से कार्य किया ।

सन् १९२० में भी केवल पं० जगदीशप्रसाद जी उपदेशक ही प्रचार कार्य को करते रहे ।

सन् १९२१ में कोई उपदेशक धनाभाव के कारण नहीं रक्खा गया ।

सन् १९२२ में पं० रामस्वरूप शर्मा उपदेशक ने उपदेशकी और क्लर्क दोनों काम चलाये ।

सन् १९२३ और १९२४ में स्थायी रूप से कोई उपदेशक नहीं रक्खा गया । उत्सव के समय प्रचार करने को थोड़े दिन के लिये पं० रामस्वरूप जी उपदेशक नियत हुए ।

सन् १९२५ में कोई स्थायी उपदेशक नहीं रक्खा गया थोड़े दिन पं० रामस्वरूप उपदेशक ने और थोड़े दिन पं० शिवकुमार जी भारद्वाज क्लर्क ने विशेष समयों पर जाकर विशेष स्थानों से धन एकत्रित किया ।

सन् १९२६ में धनाभाव से थोड़े दिन के लिये पं० आत्माराम और पं० रामस्वरूप जी उपदेशक नियत किये गये और वे फिर शीघ्र ही अलग कर दिय गय ।

१९२७ में भी अस्थायी रूप से महोत्सव के समय दो उपदेशक रक्खे गये और फिर हटा दिये ग ये ।

सन् १९२८ में पं० दीनदयालु करनाल निवासी. पं० रामस्वरूप बुलन्दशहर निवासी और पं० जगदीश्वर जी शर्मा मुजफ्फर नगर निवासी जौलाई सन् २८ से दिसम्बर २८ तक प्रचारार्थ रक्खे गये । परन्तु दिसम्बर २८ में कलकत्ते में अपील न होने और धनाभाव के कारण अलग कर दिये गये ।

सन् १९२९ पूरे वर्ष भर तक कोई उपदेशक नहीं रक्खा गया क्योंकि महासभा के कोष में पूर्ण धनाभाव था ।

इस समय तक जो उपदेशक रहे वे केवल व्याख्यान देना और महासभा के लिये धन एकत्रित करना यही दो कार्य करते थे परन्तु इस वर्ष कि जब से कार्य्यालय मुरादाबाद आया है ४ उपदेशक निरन्तर कार्य कर रहे हैं जिनमें से दो उपदेशकों का १ वर्ष का वेतन ६००) श्री० पं० ऋषिराम जी महाराज सभापति महासभा ने अलावा उस ५००) रु० के प्रदान किया है कि जो इलाहाबाद में घोषित कर दिया था और उनका कार्य न केवल उपदेश करना और धन एकत्रित करना ही है बल्कि इन लोगों का मुख्य काम प्रत्येक ज़िले के उन सब गौड़ भाइयों के पवित्र नामों को पूरे पते सहित लिखना है कि जिनकी आमदनी ५०) रु० मासिक या उस से अधिक है । क्योंकि यह काम एक प्रकार से डायरेक्टरी का है कि जिसका प्रस्ताव आज से ३० वर्ष पहिले महासभा ने पास किया था । यद्यपि अधिकांश भाइयों

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की सम्मति प्रत्येक गौड़ भाई का नाम लिखने की है जिस से समस्त भारतवर्ष भर के गौड़ भाइयों की सूची बन जावे। परन्तु यह काम अधिक उपदेशकों से होसकता है एक दो या ४ उपदेशकों से नहीं हो सकता। इसलिये अगर उक्त प्रकार के महानुभावों की ही यदि पूर्ण सूची बनजावेगी तो इससे गौड़ जाति को बहुत लाभ पहुँचेगा।

इस समय महासभा की ओर से (१) श्री० पं० शिवकुमार जी भारद्वाज असौधा ज़िला रोहतक निवासी, ज़िला हिसार में भ्रमण करके गौड़ भाइयों की सूची बना रहे हैं और २) पं० ज्येष्ठाराम जी कौशिक जगाधरी निवासी ज़िला अम्बाले में भ्रमण करके सूची बना रहे हैं ३) पं० विष्णुदत्त जी शर्मा ने देहरादून प्रान्त में भ्रमण कर उस प्रान्त की सूची को तैयार किया है और वह १जून सन् १६३० से अपने घरेलू झंझटों से इस सेवा को छोड़ कर चले गये हैं। (४) श्री० पं० ज्ञानचन्द्र जी श्रोत्रिय रामपुर निवासी इस समय बिजनौर ज़िले में महासभा की ओर से भ्रमण कर रहे हैं और सूची तैयार कर रहे हैं। (५) श्री० पं० हनुमान जी शर्मा जो जयपुर राज्य के निवासी हैं और अ० भा० मारवाड़ी ब्राह्मण महासभा में उपदेशकी का कार्य कर चुके हैं राजपूताना प्रान्त के लिये उपदेशक नियत किये गये हैं जो शीघ्र ही राजपूताना प्रान्त में भ्रमण आरम्भ करने वाले हैं।

इस प्रकार से इस समय उपदेशकों से कार्य कराया जारहा है जिस से गौड़ भाइयों को शीघ्र ही अत्यन्त लाभ पहुँचने की आशा है क्योंकि यह उपदेशक लोग विवाह योग्य वर कन्याओं के अन्वेषण में भी पूरा परिश्रम कर रहे हैं और इनका यह सब कार्य प्रतिमास महासभा की मुखपत्रिका में क्रमानुसार एक एक ज़िलेका पूरा हाल छपा करेगा जिस में उन भाइयों की सूची भी होगी जिनकी आमदनी ५०) या इस से अधिक है। इस सूची और विवाह योग्य वर कन्याओं की सूचना से प्रत्येक गौड़ भाई को जो लाभ होगा उसका अनुमान आप लोग स्वयं लगा सकते हैं।

उपदेशक लोग धीरे धीरे और भी रक्खे जावेंगे। क्योंकि जब तक प्रत्येक प्रान्त में वहाँ की ताइाद के अनुसार उपदेशकों की नियुक्ति न होगी तब तक समस्त भारतवर्ष की सूची बनना सहल काम नहीं है परन्तु यह सब शनैः शनैः होगा कि जिससे महासभा का कार्य क्रियात्मक और रचनात्मक रूप से चलता रहे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छात्रवृत्ति

महासभा अपने जन्म काल से ही गौड़ जाति के असमर्थ, दीन, होनहार विद्या प्रेमी विद्यार्थियोंको यथा शक्ति छात्र वृत्तियाँ प्रदान कर उन्हें योग्य बनाने की चेष्टा करती रही है जिससे गौड़ जाति ने आज अनेकों विद्यार्थियों को सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करने योग्य बना दिया है। महा सभा ने सन् १८९६ से अब तक इस प्रकार छात्र वृत्तियों दी हैं:—

सन् १८९६ में	१५ विद्यार्थियों को	१२४—०—०
सन् १८९७ ई०	१३ विद्यार्थियों को	१२६—११—०
सन् १८९८ ई०	२८ विद्यार्थियों को	२९९—४—०
सन् १८९९ और सन् १९०० में	४१ ,,	३४७—१—०
सन् १९०१ में	४० ,,	२९६—६—०
सन् १९०२ में	४२ ,,	२७५—१२—०
सन् १९०३ में	४५ ,,	२७९—४—०
सन् १९०४ में	४७ ,,	३९१—६—६
सन् १९०५ में	२२ ,,	३७०—१२—०
सन् १९०६ में	२२ ,,	८७४—१२—०
सन् १९०७ में	२७ ,,	६२६—८—०
सन् १९०८ में	३१ ,,	५९१—१०—९
सन् १९०९ में	४२ ,,	४४३—८—०
सन् १९१० में	२९ ,,	४२५—९—०
सन् १९११ में	२६ ,,	४८५—०—०
सन् १९१२ में	१३ ,,	२६४—१—०
सन् १९१३ में	१६ ,,	६४८—०—०
सन् १९१४ में	२१ ,,	५४३—६—०
सन् १९१५ में	१८ ,,	३४९—९—०
सन् १९१६ में	१६ ,,	५००—०—०
सन् १९१७ में	२० ,,	८०४—५—६
सन् १९१८ में	२५ ,,	७३९—८—०
सन् १९१९ में	२७ ,,	६५२—०—०
सन् १९२० में	२७ ,,	३७३—०—०
सन् १९२१ में	१७ ,,	४२५—०—०
सन् १९२२ में	१५ ,,	६२३—०—०

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सन् १९२३ और सन् १९२४ में	४१ विद्यार्थियों को	७६५—१२—०
सन् १९२५ में	२ विद्यार्थियों को	४३ ६—०
सन् १९२६ में	२ ,,	५५—०—०
सन् १९२७ में	१० विद्यार्थियों को	३५०—०—०
सन् १९२८ और सन् १९२९	२० विद्यार्थियों को	१२८०—०—०
कुलयोग	८०० विद्यार्थी	१४२८३—७—९

इस प्रकार अब तक ८०० लड़कों को १४२८३।९)॥। महासभा ने दान किया है। इस वर्ष जब महासभा का कार्यालय मुरादाबाद आया तो ३००) सन् २९ का विद्यार्थियों का देना बाकी था अतः सब से प्रथम वह भेज कर सब विद्यार्थियों को कि जो उनको देने का गतवर्ष में आश्वासन दिया था पूरा किया गया।

इस वर्ष महासभा के विशेष अधिवेशन में श्रीमान् रायबहादुर पं० बनारसी प्रसाद जी मिश्र बी० ए० ने यह विचार किया कि अगर इस समय जनता से धनकी अपील की जाती है तो लोगों को शायद रुचिकर न हो इसलिये धन की अपील न कर छात्रवृत्तियों की अपील की गई और अत्यन्त नम्र शब्दों में यही कहा गया कि आप लोग अपने बच्चों की तरह यदि गौड़ जाति के असमर्थ, दीन और विद्याप्रेमी होनहार बालकों को अपनी इच्छानुसार १।१ मासिक छात्रवृत्ति प्रदान करदें तो वह आपकी तरफ से ही महासभा गौड़ब्राह्मण विद्यार्थियों को निश्चित कर देगी।

इस पर गौड़ जाति के २० उदार महानुभावों ने कि जिनके प्रतिष्ठित नाम आप आगे की तालिका में पढ़ेंगे ११७)रु० मासिक की छात्रवृत्तियां महासभा एक वर्षको प्रदान कीं। महासभा ने उसी समय देश के सामयिक पत्रों में छात्रवृत्ति के लिये दीन, असहाय विद्याप्रेमी गौड़ विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति के लिये आवेदन-पत्र भेजने की सूचना छपवादी जिसपर १२० आवेदन-पत्र प्राप्त हुए। परन्तु महासभा के पास सिर्फ ८० छात्रवृत्तियां थीं जिनको घटा बढ़ा कर ३२ बनाई और ३२ विद्यार्थियों को १ जौलाई सन् ३० से ३० जून सन् ३१ तक उन्हीं की ओर से प्रदान करदी और दाताओं को सूचना दे दी कि आपको छात्रवृत्ती अमुक विद्यार्थी को दी है। आप लोगों की विज्ञप्ति के लिये भी यह सूची नीचे प्रकाशित की जाती है जो महानुभाव शेष ८८ विद्यार्थियों में किसी को छात्रवृत्ति देना चाहें तो वे शीघ्रकार्य्यालय को सूचित करें यह दान उनका सात्विकी दान होगा और पुण्य के अतिरिक्त अपनी जाति की उन्नति में सहायक होगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ता० १ जौलाय सन् १९३० से ता० ३० जून सन् १९३१ ई० तक के लिये
ता० २९ जून सन् १९३० ई० की कार्यकारिणी कमेटी में—
निम्न लिखितछात्रों को छात्रवृत्तियां मंजूर की गईं

क्रमिक सं०	छात्र नाम मय पूरे पते के	मासिक धन छात्रवृत्ति	दाता का नाम मय पूरे पते के
१	श्री रामाधार शर्मा हरियाना गौड़ छात्र फर्स्ट ईयर आगरा कालेज आगरा	५)	श्री० पं० चतुर्भुज जी शर्मा रईस-प्रोप्राइटर शंकर फ्लोर मिल्स शहामत गंज बरेली ।
२	श्री० शान्तिप्रसाद पाठक-सेकिण्ड ईयर क्लास-एस० एम० इन्टर मिडियेट कालेज चन्दौसी ।	५)	,,
३	श्री० गोपालप्रसाद शर्मा—फर्स्ट ईयर क्लास-रामजस इन्टर कालेज दरियागञ्ज देहली ।	५)	,,
४	श्री० ताराचन्द्र शर्मा-सेकिण्ड ईयर क्लास-कमर्शियल कालेज देहली ।	५)	,,
५	श्री० आत्माराम गौड़ ६ वीं क्लास सेक्शन सी० बी०एन० एस० डी० इन्टर मिडियेट कालेज कानपुर ।	५)	,,
६	श्री० सन्तकुमार शर्मा—सेकिण्ड ईयर क्लास आर्ट्स सी० एच० सी० बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी बनारस	८)	श्री० पं० क्षेत्रपाल जी शर्मा रईस-मालिक सुख संचारक कम्पनी मथुरा
७	श्री० लक्ष्मीनारायण शर्मा-कक्षा ७ वर्नाक्यूलर मिडिल स्कूल कुम्हेर (भरतपुर)	२)	,,

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

क्रमिक सं०	छात्र नाम मय पूरे पते के	मासिक धन छात्रवृत्ति	दाता का नाम मय पूरे पते के
८	श्री० रामचन्द्रजी शर्मा—थर्ड ईयर क्लास—डी० ए० वी० कौलेज लाहौर।	५)	श्री० राय० पं० प्रभुदयालु जी शर्मा बी०ए०एल-एल० बी० ई० ए० सी० होशियापुर (पञ्जाब) —जयदेवी छा० वृ० नाम से।
९	श्री० जयदेवी छात्रा दर्जा ६ किशोरी रमण कन्या पाठशाला मथुरा।	४)	श्री० रायसाहिब पं० प्रभुदयालुजी शर्मा बी०ए०एल-एल० बी० ई० सी० होशियारपुर (पञ्जाब) —शकुन्तला छा० वृ० नामसे।
१०	श्री० हरिश्चन्द्रशर्मा—थर्ड ईयर क्लास—डी० ए० वी० कौलेज लाहौर।	८)	श्री० रा० ब० पं० बैनीप्रसाद जी मिश्र एम० ए० डिपुटी कलेक्टर देहरादून।
११	श्री० रमेशचन्द्रशर्मा—छठी क्लास—डी० ए० वी० हाई स्कूल देहरादून।	३)	श्री० पं० राजाराम जी गौड़—आड़तिया चूहड़पुर जि० देहरादून।
१२	श्री० हरिराम शर्मा विद्यार्थी ८ वीं क्लास उर्दू वर्नाक्युलर मिडिल स्कूल असौधा (रोहतक)	२)	,,
१३	श्री० रामावतार शर्मा ९ वीं क्लास—वी० सेक्शन गवर्नमेन्ट हाईस्कूल मुज़फ्फरनगर।	५)	श्री० पं० रघुनन्दन जी शर्मा-हिन्दी प्रेस-प्रयाग स्ट्रीट नं० २ इलाहाबाद।
१४	श्री० मुरारिलाल शर्मा ८ वीं क्लास—रामजस ए०वी० मिडिल स्कूल चावड़ी बाज़ार देहली।	२॥)	गौड़ ब्राह्मण नवयुवक मण्डल कठघर (मुरादाबाद)
१५	श्री० रघुवर दयालुशर्मा ८ वीं क्लास-रामजस ए०वी० मिडिल स्कूल चावड़ी बाज़ार देहली।	२॥)	,,
१६	श्री० राजकिशोर शर्मा—बी० कौम० सेकिण्ड ईयर एस० डी० कालेज कानपुर।	५)	श्री० पं० रामप्रसाद जी शर्मा-मुख्तार-बुलन्दशहर।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्रमिक सं०	नाम मय पूरे पते के	मासिक धन छात्रवृत्ति	दाता का नाम मय पूरे पते के
१७	श्री० ब्रजनन्दन शर्मा—क्लास ६ वीं सेक्शन ए०डी० ए० ए० वी० हाई स्कूल अजमेर ।	५)	श्री० पं० हरस्वरूप जी शर्मा पाठक बी० ए० डिप्टी कलेक्टर-पीलीभीत ।
१८	श्री० शिवलाल शर्मा—कक्षा ६ गवर्नमेंट हाईस्कूल रेवाड़ी ।	३)	श्री० पं० विश्वपाल जी शर्मा-सुखसञ्चारक कम्पनी मथुरा ।
१९	श्री० चन्द्रमणि शर्मा गौड़ -प्रथम परीक्षा—बिहारि संस्कृत विद्यालय चाँदपुर जि० बिजनौर ।	२)	श्री० पं० विश्वपाल जी शर्मा-सुखसंचारक कम्पनी मथुरा ।
२०	श्री० दयानन्द शर्मा गौड़ —फर्स्ट ईयर क्लास रामजस कालेज आनन्द पर्वत - देहली ।	५)	श्री० पं० जगत्सिंह जी रईस किसरोल मुरादाबाद ।
२१	श्री० जयनारायण गौड़ - नवाँ क्लास सेक्शन बी० गवर्नमेन्ट हाईस्कूल करनाल ।	३)	श्री० रा० सा० हकीम पं० वैजनाथ जी रईस मुह० गुजराती मुरादाबाद ।
२२	श्री० किशनचन्द्र विद्यार्थी जूनियर स्पेशल क्लास हिन्दू हाईस्कूल सोनीपत ।	२)	,,
२३	श्री० दिवाकर शर्मा गौड़ मध्यमा चतुर्थखण्ड बिहारि संस्कृत विद्यालय चाँदपुर (बिजनौर)	३)	श्री० प० शिवप्रसाद जगन्नाथ जी रईस मुह० कूँचा शीतलदास—मुरादाबाद ।
२४	श्री० बद्रीप्रसाद शर्मा-कक्षा ६ सेक्शन बी० सदर हाई स्कूल भरतपुर ।	२)	,,
२५	श्री० किशोरीलाल विद्यार्थी कक्षा ७ सेक्शन बी० गवर्नमेन्ट हाईस्कूल बुलन्दशहर ।	३)	श्री० रा० सा० डाक्टर पं० मुरारिलाल जी शर्मा मुह० दोनदारपुरा मुरादाबाद ।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

क्रमिक सं०	छात्र का नाम मय पूरे पते के	मासिक धन छात्रवृत्ति	दाता का नाम मय पूरे पते के
२६	श्री० सेवकराम विद्यार्थी दर्जा ६ मिडिल स्कूल अमरोहा जि० मुरादाबाद।	२)	श्री० पं० शिवप्रसाद जगन्नाथजी रईस मु० कूंचा शीतलदास मुरादाबाद।
२७	श्री० अतरचन्द्र गौड़—उर्दू मिडिल पास—मार्फ़त पं० टेकचन्द्र जी गौड़ पो० चिराग़ देहली मु० देहली।	३)	श्री० पं० देवीचन्द्र जी C/o "पं० बनारसीदासजी शर्मा लीडर" शिमला।
२८	श्री०भगवानदास गौड़ विद्यार्थी जूनियर स्पेशल क्लास गवर्नमेंट हाई स्कूल बहादुरगढ़ जि० रोहतक।	२)	"
२९	श्री० दयानिधि शर्मा-आयुर्वेदाचार्य चतुर्थ वर्ष-आयुर्वेद कालेज—हिन्दू यूनिवर्सिटी बनारस।	४)	श्री० पं० लक्ष्मीनारायण जी उपाध्याय वकील-मुरादाबाद।
३०	श्री० गिरिराज गौड़ विद्यार्थी दर्जा ५ मेकडानल हाईस्कूल झाँसी।	२)	श्री० पं० श्यामलाल जी गौड़ C/o सुखसंचारक कम्पनी मथुरा।
३१	श्री० गोवर्द्धन शर्मा गौड़—मध्यमातृतीय खण्ड—उदयराज हिंदू हाई स्कूल—काशीपुर।	२)	श्री० पं० शिवचरणजी तिवाड़ी मुख्तार अमरोहा जि० मुरादाबाद।
३२	श्रीमती सावित्री देवी छात्रा—दर्जा ३ गर्ल्स मिडिल स्कूल—काशीपुर (नैनीताल)	२)	श्री० पं० मोहनलाल जी तिवाड़ी-मोहनभवन-मु० हापुड़ जि० मेरठ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2
Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महासभा का मुखपत्र ।

ज ब से आपकी इस महासभा ने जन्म लिया है जाति के विचारशील पुरुषों ने तभी से महासभा से एक मासिकपत्र निकालने का आयोजन किया है जिसका संक्षिप्त विवरण हम इस अङ्क के प्रथम लेख "पत्रिका का ध्येय" शीर्षक में लिख चुके हैं। इस स्थान पर यह प्रगट कर देना कुछ अनुचित न होगा कि श्रीमान् प० रामचन्द्र जी बी० ए० महामन्त्री, श्रीमान् प० छुट्टनलालजी स्वामी मेरठ, श्री० प० नारायणप्रसाद जी गौड़ मथुरा, श्री० प० राधाचरणजी गोस्वामी वृन्दावन, श्री० प० किशोरीलालजी गोस्वामी काशी और श्री० प० छबीलेलाल जी गोस्वामी वृन्दावन कुछ कुछ समय तक महासभा के मुखपत्र "ब्राह्मण समाचार" के ऑनरेरी सम्पादक रहे। परन्तु इनसभी श्रीमानों के सम्पादकत्व में पत्र की जैसी उन्नति होनी चाहिए थी न हो सकी कि जिसकाकारण यही था कि उक्त श्रीमानोंको पत्रके सम्पादनके लिये पूरा अवकाश न था।

सन् १९१५ में जब महासभा ने जगाधरी में अपना निज का प्रेस खोला और श्री० प० उमादत्तजी शर्मा जो उस समय महासभा में क्लर्क थे को ही उसका सम्पादन करना पड़ा तब इसकी विशेष उन्नति हुई क्योंकि सम्पादक और प्रेस दोनों एक प्रकार से महासभा के ही थे। अच्छे अच्छे लेखों से पूरित हो यह समय पर निकलने लगा। ग्राहक वृद्धि भी तत्काल होने लगी, यहाँतक कि महासभाने "ब्राह्मण समाचार" को साप्ताहिक प्रकाशित करना प्रारम्भ कर दिया। यद्यपि सामयिक लेखों पर ओजस्वनी भाषा में टिप्पणी होने से उन्नति तो अवश्य हुई परन्तु गवर्नमेण्ट ने ५००) रुपये की ज़मानत माँगली। अतः जगाधरी में पत्र और प्रेस दोनों बन्द होगये। इसके बाद प्रेस जगाधरी से देहली लाया गया और यहाँ से पुनः साप्ताहिक रूप ही में 'ब्राह्मण समाचार' श्री० प० उमादत्त जी शर्मा के सम्पादकत्व ही में प्रकाशित हुआ उस समय कटारपुर केस बड़े जोरों में चल रहा था कि जिसके जोरदार लेख ब्राह्मण समाचार में प्रकाशित होते थे अतः देहली में भी ब्राह्मण समाचार से पुनः १०००) रु० की ज़मानत मांगी गई परन्तु श्रीमान् रायसाहिब पं० प्रभूदयाल जी शर्म्मा बी० ए० एल-एल० बी० महोदय की कोशिश से १०००) की जमानत घटाकर ५००) रु० करदी गई। महासभा ने येन केन प्रकारेण ५००) रु० नक़द जमानत दाखिल करदी और ब्राह्मण समाचार फिर चल पड़ा परन्तु इसके तेज़ लेखों के कारण १९ मई सन् १९१९ को इससे फिर २०००) रु० की ज़मानत मांगी गई जिससे ब्राह्मण समाचार और प्रेस दोनों बन्द होगये और इसी बीच में श्री० पं० उमादत्तजी शर्मा ने जो बड़ी उत्तमता से साप्ताहिक ब्राह्मण समाचार का सम्पादन कर रहे थे कारण विशेषों से ता० ८ जून सन् १९१९ ई० को त्याग पत्र देदिया। इसपर प्रेस और ब्राह्मण समाचार दिल्ली से पुनः जगाधरी लाया गया मगर यहां भी अम्बाले के कलेक्टर ने पुनः २०००) रु० की

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ज़मानत मांगी इस प्रकार जगाधरी से भी ब्राह्मण समाचार न निकल सका। और जगाधरी में ब्राह्मण समाचार और प्रेस दोनों बन्द रहे।

ता० १६।८।२० से "ब्राह्मण समाचार" और प्रेस फिर दिल्ली आया, इस समय श्रीमान् रायसाहिब पं० प्रभूदयाल जी शर्मा महासभा के महामंत्री थे अतः इन्होंने "ब्राह्मण समाचार" के सम्पादन का कार्य्य भी किया परन्तु १६ अगस्त सन् २० से १६मार्च सन् २१ तक सात महीनेमें साप्ताहिक रूपमें केवल १० ही अँक प्रकाशित हुऐ। रायसाहिब का उत्साह इस कारण और भी गिर गया कि ६०० ग्राहकों को मूल्य का वी० पी० भेजने पर केवल १०० ग्राहकों ने वी० पी० वसूल किये और शेष ८०० ने लौटा दिये।

२५।२६ मार्च सन् १६२१ को वार्षिकोत्सव खुर्जा में हुआ और उसमें श्रीमान् पं० शम्भूदत्त जी शर्मा बी० ए० एल० एल० बी० वकील बुलन्दशहर महामंत्री निर्वाचित हुये अतः उक्त तिथि से "ब्राह्मण समाचार" के प्रकाशन का भार उक्त श्रीमान पर रहा परन्तु वह सन १६२१ और १६२२ दो वर्ष तक समाचार पत्र नहीं प्रकाशित कर सके क्योंकि पत्र के लिये कोई सम्पादक न मिल सका। जनवरी सन् २३ से मेरठ निवासी श्रीमान् पं० छुट्टनलाल जी स्वामी से पुनः सम्पादक नियत होने की प्रार्थना की जो उन्होंने स्वीकार कर ली परन्तु धनाभाव के कारण सन् १६२३ में भी ब्राह्मण समाचार प्रकाशित नहीं हुआ।

सन्१६२४ में श्री पं० शम्भूदत्त जी ही महामंत्री रहे और उन्होंने पुनः ब्राह्मण समाचार के प्रकाशन का प्रबन्ध किया श्री० पं० बाबूरामजी शर्मा बुलन्दशहर निवासी जो उस समय प्रेसके मैनेजर थे को ही सम्पादनका भार सौंपा गया परन्तु सन्१६२४ में केवल एक अङ्क प्रकाशित हुआ।

सन् १६२५ में श्री० पं० रामप्रसाद जी शर्मा-मुख्तार बुलन्द शहर महामंत्री हुए परन्तु इनको कोषाध्यक्ष जी ने एक पैसा धन नहीं दिया क्योंकि महोत्सव पर बजट पास नहीं हुआ था इसलिये सन् १६२५में भी ब्राह्मण समाचार प्रकाशित न हो सका।

सन् १६२६ ई०में श्री० पं० जगन्नाथजी कौशल एम० ए० एल-एल० बी० वकील अम्बाला छावनी महामंत्री हुऐ इन्होंने जनवरी सन् २६ से ही "ब्राह्मण समाचार" प्रकाशन का उद्योग किया। प्रथम तो बुलन्दशहर से प्रेस आदि के आने में विलम्ब हुआ फिर मालूम हुआ कि "ब्राह्मण समाचार" नाम का उर्दू में एक पत्र लाहौर से निकलता है अतः इसका नाम "ब्राह्मण पत्रिका" रक्खा गया और जून सन् २६ से "ब्राह्मण पत्रिका" प्रकाशित हुई। परन्तु सम्पादक का प्रबन्ध न होने से पत्र ठीक न चल सका।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

१९२७ में भी श्री० पं० जगन्नाथ जी कौशल ही महामंत्री रहे अतः उन्होंने एक मैनेजिंग कमेटी में पत्रिका का विषय उपस्थित किया उसमें पं० छबीलेलाल गोस्वामी जीसे सम्पादन करने की प्रार्थनाकी गई और इस जाति सेवक को मथुरा से प्रकाशित करने का भार सौंपा गया अतः सितम्बर सन् २७ से यह पत्रिका मैं ने प्रकाशित की और दिसम्बर सन् २७ तक ४ मास नियम से प्रकाशित होती रही ।

सन् १९२८ में श्री० पं० छबीले लाल जी गोस्वामी महामंत्री निर्वाचित हुऐ और महासभा का कार्य्यालय मथुरा में स्थापित हुआ अतः उस वर्ष किशोरीलाल जी गोस्वामी के सम्पादकत्व में ब्राह्मण पत्रिका पूरे वर्ष नियम से प्रकाशित हुई ।

सन् १९२९ में महासभा के कोष में धनाभाव होने से पत्रिका बन्द रही क्योंकि दिसम्बर सन् २८ में कलकत्ता महोत्सव में धन संचयार्थ अपील नहीं हुई ।

अब सन् १९३० में महासभा का कार्य्यालय मुरादाबाद आजाने से पत्रिका यहां से निकालने का आयोजन हुआ । महासभा की मैनेजिंग कमेटी ने अपने २९ जून सन् ३० के अधिवेशन में पत्रिका का प्रकाशित करना स्वीकार किया और ता० ३ अगस्त सन् ३० के अधिवेशन में इसके सम्पादन और प्रकाशन का भार मुझे सौंपा गया । यह आप सज्जनों को विदित है कि मैं ३० वर्ष से अनवरत जाति की सेवाकर रहा हूं जब तक मैं विद्यार्थी और बालक था तभी से मैं इस जातीय महासभा का सेवक रहा । सन् १९१२ से मैं ने "गौड़ हितकारी" पत्र प्रकाशित किया जिसको १८ वर्ष तक मैं अपने ही बाहु बल से प्रकाशित करता रहा । भगवान् की कृपा से इस १८ वर्ष में मुझ पर गवर्नमेन्ट भी प्रसन्न रही और कभी मुझको गौड़ हितकारी के सम्बन्ध में गवर्नमेन्ट की ओर से कोई आपत्ति नहीं हुई इधर जातीय भाइयों ने भी इसके ऊपर प्रेम और रक्षा का हाथ रक्खा और आप भाइयों की कृपा से ही मैं इसको १८ वर्ष तक चला सका ।

जातीय पत्र सदैव सेवा और प्रचार के लिये प्रकाशित किये जाते है यदि कोई इनसे आर्थिक लाभ करना चाहे तो वह उसकी भूल है इसी उद्देश्य से मैं सदैव १०० । २०० रु० वार्षिक की हानि उठाता रहा अब जब इस हानि का योग ४०००) रु० होगया इधर राजनैतिक आन्दोलन के कारण प्रेस व्यवसाय कि जिसके कारण मैं इसे चला रहा था इकदम गिरगया और अहर्निश आर्थिक संकट में मैं ग्रसित रहने लगा तो गतवर्ष से मुझे रोगों ने घेर लिया और जनवरी सन् ३० से तो मैं चारपाई में गिर ही गया अतः जनवरी का "गौड़ हितकारी" प्रकाशित कर फिर मेरी सामर्थ्य "गौड़ हितकारी" प्रकाशन की न रही ।

मार्च सन् ३० में मैं मरणासन्न होगया परन्तु भगवान् दीनबन्धु ने गौड़जातिके

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सूर्य्य श्रीमान् रायबहादुर पं० बनारसीप्रसाद जी मिश्र के हृदयमें प्रेरणा कर मुझे इनकी शरण में पहुँचाया, मुझे यह लिखते तनिक भी सङ्कोच नहीं है कि श्रीमान् मिश्र जी के प्रताप से ही आज यह किङ्कर आपकी सेवा में फिर इस रूपमें उपस्थित होरहा है नहीं तो इस सेवक की यह निर्बल हड्डियां कभी की राख होगई होतीं । अप्रैल सन् ३० से और अब तक जिस चिन्ता और प्रेम से मिश्र जी महाराज ने मेरी चिकित्सा कराई है उस का बदला यह शरीर कैसे चुका सकेगा इसमें मुझे सन्देह है यद्यपि मेरा स्वास्थ्य अभी पूर्णतया अच्छा नहीं है तथापि जाति आज्ञा और मिश्र जी महाराज के अनुरोध से मैं अयोग्य होता हुआ भी इस सेवा को स्वीकार करता हूँ ।

मैं आप भाइयों से भी अब यह प्रार्थना करता हूँ कि आप लोग भी अब बिना विचारे इस पत्रिका की सहायता में तन मन, धन से संलग्न हो जावें तो अब यह पत्रिका कभी बन्द नहीं हो सकती क्योंकि महासभा की ओर से प्रकाशित होने के कारण इसका ठीक समय पर प्रकाशित होना अनिवार्य है । इसमें जातीय समाचार जातीय इतिहास और जातीय कार्योंके अतिरिक्त और कोई विषय प्रकाशित नहीं होगें जातीय भाइयों को जातीय वार्ताओं के पढ़ने का स्वाभाविक प्रेम होना चाहिये इस लिये यदि प्रत्येक जातीय भाई इसका वार्षिक मूल्य २) रु० भेजकर ग्राहक बन जावे तो फिर यह कभी बन्द नहीं हो सकती । क्यों कि अब इस के सम्पादन, प्रकाशन और मुद्रण का प्रबन्ध स्थायी और दृढ़ कर लिया गया है ।

आशा है कि "पत्रिका" के सम्बन्ध में आप महानुभावों की ओर से अब उदासीनता न रहेगी यह दृढ़ और पूर्ण आशा है।

महासभा का कार्य्यालय

जिस समयसे हमारी इस महासभाका जन्म हुआ है उस समयसे महासभाके जोमहामन्त्री होते रहे, महासभा का कार्यालय उन्हीं के पास रहता रहा । सन् १८९६ में जब कि इसका जन्म कुरुक्षेत्र में हुआ उस समय इसके महामंत्री श्री० पं० रामचन्द्र जी बी० ए० रईस जगाधरी नियत हुए परन्तु उक्त श्रीमान् अपने व्यवसाय निमित्त उन दिनों शिमले में रहा करते थे इस लिये सन १८९५ और १८९६ दो वर्ष महासभा का कार्यालय शिमले में रहा और बिना किसी क्लर्क इत्यादि की सहायता के श्रीमान् पं० रामचन्द्र जी ही कुल कार्य स्वयं चलाते रहे । क्योंकि उस समय आप की इस महासभा की दशा बिलकुल प्रारम्भिक थी ।

सन् १८९७ से सन् १९०६ तक महासभा का कार्य्यालय शिमला और जगाधरी (अम्बाला) में श्रीमान् पं० रामचन्द्र जी बी० ए० महामंत्री के पास रहा और उस समय तक उक्त श्रीमान् स्वयं ही सब कार्य्य करते रहे । ता० ३० और ३१ मार्च सन्

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तार का पता—Radheshiam—Bareilly.

निमन्त्रण-पत्र

श्रीयुत के उपयुक्त कहाँ, सेवा सत्कार दीन-जन के।
किन्तु हुए राजाधिराज भी प्रायः अतिथि अकिञ्चन के॥
पधारिए कृत कृत्य कीजिए अभिलाषी हम दर्शन के।
सेवा में बिछ रहे नेत्र, स्वागत में खड़े भाव मन के॥

स्वागत समिति—कार्य्यालय ३३ वां महाधिवेशन

अखिलभारतवर्षीय, गौड़ब्राह्मण महासभा

श्रीराधेश्याम-प्रेस, मुहल्ला बिहारीपुर

बरेली

१ दिसम्बर १९३० ई०

श्रद्धेय भाई,

परमात्मा की परम कृपा से, इस बार रुहेलखंड के सदर मुकाम बरेली शहर में, आप की महासभा का ३३ वाँ महाधिवेशन पोष शुक्ला ७ व ८ सम्वत् १९८७ तदनुसार तारीख २७ व २८ दिसम्बर सन् १९३० शनिवार व रविवार को "श्रीमान् पं० गोविन्दप्रसादजी कौशिक बी० ए० अटेची टू० एच० एच० महाराज ओफ़ सिरोही" के सभापतित्व में होगा। सानुरोध प्रार्थना है कि अवश्य पधार कर जाति सेवा के कार्य्य में सहयोग करते हुए, इस स्वागत समिति को कृतार्थ कीजिए।

भवदीय—

चतुर्भुज शर्मा
प्रधान-'स्वागत-समिति'

राधेश्याम कथावाचक
मन्त्री-'स्वागत-समिति'

नोट-(१) महासभाकी मैनेजिंग कमेटी और प्रतिनिधि समितिकी मीटिंगस, एक दिन पहले होंगी अतएव आपका एक दिन पहले ही पधारना उचित होगा।

(२) महासभामें पेश होने वाले प्रस्ताव २५ दिसम्बर तक मन्त्री स्वागत-समिति के पास पहुँच जाने चाहियें अन्यथा फिर वे पेश न होसकेंगे।

(३) सर्दीका मौसम होनेके कारण बिस्तरा सब भाइयोंको साथ लाना चाहिए।

(४) बरेली (Bareilly) स्टेशन E. I. Ry. का जङ्क्शन है, जो लखनऊ और मुरादाबाद के मध्य में है। उन दिनों बीक एण्ड रिटर्न टिकट भी मिलेगा तथा बड़े दिन का कन्सेशन टिकट भी।

(५) पहलेसे सूचना मिलने पर स्टेशन पर सेवक-दल तथा सवारी आदिका प्रबंध मिलेगा। अन्यथा मुहल्ला बिहारीपुर में "श्रीराधेश्यामप्रेस" में पधारियेगा।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अखिल भारतवर्षीय गौड़ ब्राह्मण महासभा के ३३वें महाधिवेशन का जो बरेली (रुहेलखण्ड) में ता० २७ और २८ दिसम्बर सन् १९३० को होगा।

सादर निमन्त्रण

स्वागत ! स्वागत !! अहोबन्धुवर, जात्युन्नति हित आओ।
आकर अपने कर्त्तव्यों को, प्रेम सहित अपनाओ॥
धन्य दिवस अरु धन्य घड़ी, जहँ दर्श आपके होंगे।
इसी भावना को लेकर के, हम सब वहां मिलेंगे॥

श्रीमान् पूज्य बन्धुवरो !

श्री भगवान् दीनबन्धु दीनानाथ की अपार कृपासे आपकी एकमात्र रजिस्टर्ड जातीय महासभा का ३३वाँ पुण्य पर्व आगामी शुभ तिथि पोष शुक्ला ७, ८ शनि, रवि संवत् १९८७ वि० तदनुसार ता० २७ और २८ दिसम्बर सन् १९३० ई० को रुहेलखण्ड कमिश्नरीके प्रधान स्थान बरेली शहरमें बड़े समारोह से मनाया जावेगा।

यह बात आप लोगों से छिपी नहीं है कि गत ४ वर्षों से महासभा की दशा उत्तरोत्तर शिथिल होती चली जारही थी कि जिसके ज्वलन्त प्रमाण कलकत्ते और प्रयाग के महोत्सव आपके सम्मुख हैं कि जिनमें महासभा की सहायतार्थ एक पाई प्राप्त नहीं हुई। तब गत १९।४।३० को महासभा का एक विशेष अधिवेशन मुरादाबाद में उसके उचित प्रबन्ध करने के लिए बुलाया गया। कि जिसका कार्यकाल इस महोत्सव पर समाप्त हो रहा है कृपाकर प्रेमपूर्वक पधारकर देखिये कि अब इस समय आपकी महासभा की क्या दशा है और इस वर्ष इसने कैसा काम किया। आपके पधारने से ही इस वर्ष के कार्य्यकर्त्ताओं को पूर्ण प्रसन्नता होगी और तभी वह अपने परिश्रम को सफल समझेंगे।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इस वर्ष के कार्य्यों का अनुमान आप इसी से लगा सकते हैं कि इस वर्ष महासभा को लगभग ४२००) रुपये के आमदनी हुई और ३५००) रुपये सभी विभागों में खर्च हुआ और यह उस दशा में हुआ जबकि इस वर्ष के प्रारम्भ में महासभा के कोष में एक पाई भी न थी।

इस साल महासभा में जिस प्रकार कार्य्य हुआ है उसके देखने और इस बात पर विचार करने की अत्यन्त आवश्यकता है कि भविष्य में इस प्रणाली में क्या परिवर्तन या संशोधन किया जावे कि जिससे महासभा का कार्य्य और भी उन्नति से चले। इसलिए आपके सत्परामर्श की अत्यन्त आवश्यकता है कि जिसके लिए आपका पधारना बहुत ही जरूरी है।

सबसे अधिक हर्ष की बात यह है कि इस वर्ष आप सभापति मञ्च पर एक ऐसे महानुभाव के दर्शन करेंगे कि जिनके दर्शनों से आप गद्गद् होकर प्रेम में विह्वल हो जावेंगे। वे श्रीमान्! राजपूताने की गौड़ जाति के सिरमौर, पोलिटिकल एजेण्ट राजपूताना के सुपरिण्टेण्डेण्ट और इस समय श्रीमान् एच० एच० सिरोही महाराजके प्रेटेची श्रीमान् पं० गोविन्दप्रसाद जी कौशिक बी० ए० व्यावर निवासी हैं, कि जिनके दर्शनों से आपको जाति प्रेम की सजीव मूर्ति का दर्शन हो जायगा। इस आनन्द के अवसर से लाभ उठाने के लिए भी आप आइये और अवश्य आइये।

सब से अन्तिम और आपकी प्रसन्नता को पराकाष्ठा पहुँचाने वाली जो बात है वह बरेली स्वागत समिति के प्रधान गौड़ कुल रत्न श्रीमान् पं० चतुर्भुज जी शर्म्मा अध्यक्ष "श्रीशंकर फ्लोर एण्ड राइस मिल्स" के औदार्य्य, प्रेम और पूर्ण उत्साह से आपका स्वागत सत्कार है कि जिसके लिये उन्हों ने अपने तन, मन, धन से पूर्ण प्रबन्ध किया है आपके वहाँ सुखपूर्वक निवास, प्रेम सहित भोजन, भजन और आनन्द के साथ सम्मिलनका जो उत्तम प्रबन्ध किया गया है इससे आप बहुत प्रसन्न होंगे। हमको तो ऐसी ही आशा है। इस लिये ऐसे स्वागताध्यक्ष के प्रेमपूर्वक सत्कार को यदि आप सन्मान और प्रेमपूर्वक नहीं स्वीकार करेंगे तो उनके प्रेमी हृदय को कैसी ठेस लगेगी इनका अनुमान आप स्वयं कर सकते हैं यह विचार कर आप इस वप बिना रुके हुए बरेली पधारिये और अपने दर्शनों से सबको कृतार्थ कीजिये। और इस निमन्त्रण को महासभा और स्वागत समिति दोनों की ओर से ग्रहण कीजिये।

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बरेली शहर यू० पी० की रुहेलखंड कमिश्नरी का सदर मुकाम है जो मुरादाबाद से ५० मील पूर्व या लखनऊ से १५० मील पश्चिम ई० आई० आर० लाइन पर एक जङ्क्शन के रूप में स्थित है। इसीके प्रसिद्ध मुहल्ले शहामतगंज में "श्रीमान् पं० चतुर्भुजजी के मिल" के नामसे "श्री शंकर फ्लोर एण्ड राइस मिल्स" प्रसिद्ध है प्रथम तो बरेली जंकशन स्टेशन पर आपको 'गौड़ दल" के स्वयं सेवक आपकी अभ्यर्थना के लिये प्लेटफार्म पर खड़े मिलेंगे जो आपको सुखपूर्वक स्टेशन से उक्त मिल तक पहुँचायेंगे तथापि आप लोग "श्रीमान पं० चतुर्भुजजी का मिल" याद रक्खें और स्टेशन से मिल पर पधारें कि जहाँ आपके ठहरनेका प्रबन्ध किया गया है।

अन्तमें सविनय निवेदन है कि इस वर्ष आप जाति हित कामनासे, अपनीजा[illegible] महासभाको उन्नति पथ पर अग्रसर होता हुआ देखने की इच्छा से और अपना प्रेम उसके प्रति दिखानेको बरेली अवश्य पधारिये और अपने दर्शनों से सबको [illegible] करते हुए हमको अनुगृहीत कीजिये। पधारने की सूचना 'मंत्री स्वागत- [illegible] श्रीराधेश्याम प्रेस बरेली" के पते पर पत्रद्वारा या "राधेश्याम बरेली" इस [illegible] तार द्वारा यदि आप देदेंगे तो बड़ी सुविधा होगी।

आपके दर्शनाभिलाषी—

लक्ष्मीचन्द्र शर्म्मा, बनारसीप्रसाद मिश्र बी०ए०, प्यारेलाल गौड़
(रायबहादुर)

महामन्त्री संयुक्त महामन्त्री मन्त्री
अ० भा० गौड़ ब्राह्मण

Kirtikant Sharma Collection, Najafgarh